सादर समर्पण ॥

चार वर्ष से श्रीमान् डाइरेक्टरसाहब बहादुर संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध की आज्ञानुसार वर्नाक्यूलर मिडिलमदारिस व नार्मल स्कूल की कक्षाओं में कहावतों का प्रचार हुआ है, मैंने कोई पुस्तक कहावतों के भावार्थ और प्रयोग की न देखकर यह कहावतरत्नमाला बनाकर श्रीमान् मान्यवर महोदय ई. एफ. हैरिस साहब बहादुर इन्स्पेक्टर अजमेर मेरवाड़ा के करकमलों में सादर समर्पण की ॥

प्रभुलाल शर्म्मा.

कहावत-रत्नमाला ॥

(१) अक़ल के पीछे लाठी लिये फिरना.

(अभिप्राय) *महा मूर्ख होना.*

(प्रयोग) एक लड़का कोई मूर्खता का काम कर रहा है एक बुद्धिमान् मनुष्य ने उसे मने किया कि ऐसा मतकर परन्तु वह लड़का नहीं माना तब उस बुद्धिमान् मनुष्य ने कहा कि तू तो अक़ल के पीछे लाठी लिये फिरता है.

(२) अकेला चना भाड़ फोड़ेगा क्या.

(अभि.) *एक मनुष्य बहुतसों के मुक़ाबिले में कुछ नहीं कर सक्ता.*

(प्रयोग) एक बहादुर जंगल में शत्रुओं से घिर गया दो चार का तो उसने मुक़ाबिला किया, परन्तु अन्त में सबने मिलकर उसे मार डाला, जब उसका ज़िकर उसके गांव में हुआ तो लोगों ने कहा कि अकेला चना भाड़ फोड़ेगा क्या.

(३) अकेली लकड़ी न जले न उजाला करे.

(अभि.) *अलग २ रहने में यश नहीं प्राप्त होता.*

(प्रयोग) तीन सहोदर भ्राता एक साथ रहते थे उनमें किसी कारण से ऐसी शत्रुता होने लगी कि सब अलग २ होने को तय्यार हो गये तब दो चार बुद्धिमान् मनुष्य उन्हें समझाने लगे कि अलग २ रहने में वह यश नहीं पाओगे जो इकट्ठे रहने में है, देखो अकेली लकड़ी न तो जलती है और न उजाला करती है.

(४) अब पछताये होय क्या चिड़िया चुग गई खेत.

(अभि.) *अवसर चूक जाने पर किसी कार्य्य के लिये रंज करने से वह अवसर हाथ नहीं आसक्ता.*

(प्रयोग) दो लड़के साथ दर्जा ६ तक पढ़े तब उन में से एक ने पढ़ना छोड़ दिया दूसरा पढ़ता रहा और पास होकर अच्छा खाने कमाने लगा तब वह लड़का जिसने पढ़ना छोड़ दिया था एक दिन पछताने लगा कि यदि मैं भी पढ़ता रहता तो आज मैं भी अच्छे आनन्द उड़ाता तब एक और मनुष्य ने उससे कहा अब पछताना व्यर्थ है अब वह बात हासिल नहीं हो सक्ती, अर्थात् चिड़िया चुग गई खेत.

(५) अटकल पच्चू काम करना.

(अभि.) *अन्दाज़ से काम करना.*

(प्रयोग) किसी लड़के ने एक चित्र खींचकर गुरू को दिखाया गुरूने पूछा किस विधि तुमने इसे बनाया उसने उत्तर दिया अटकल-पच्चू बनाया है.

(६) अपनी टेंट न निहारे आन की फूली *.

(अभि.) *अपने बड़े अवगुण पर खयाल न करके दूसरों के छोटे २ अवगुण बयान करना.*

(प्रयोग) एक डाकू एक दिन एक चोर से कह रहा था कि तुम तो चोरी करते हो चोर ने कहा कि तुम तो मेरे ऐब प्रकट करते हो मगर तुम डाके मारते हो उस पर कुछ भी खयाल नहीं

* आंख में छोटासा निशान हो तो उसे फूली कहते हैं, बड़ा-भारी निशान जो दूर ही से दीखे टेंट कहलाती है.

करते अर्थात् अपनी टेंटर तो देखते नहीं दूसरों की फूली देखते हैं.

(७) अनदेखा चोर राजा बराबर.

(अभि.) *जिस आदमी को चोरी करते नहीं देखा उसे कैसे चोर कहें.*

(प्रयोग) एक लड़के की पटरी खोगई थी जब गुरू के यहां यह शिकायत हुई तो गुरू ने कहा कि तुम्हारा शक किस के ऊपर है उस ने उत्तर दिया कि मैं किस पर शुबा करूं, अन देखा चोर राजा बराबर.

(८) अनोखी जुरुवा साग में शोरवा *.

(अभि.) *नये आदमी का नियमविरुद्ध कार्य्य करना, इसको यों भी कहते हैं नई नायन बांस का नहरना.*

(प्रयोग) एक नये वैद्य ने जुकाम के लिये एक शख्स को दस्तों की दवाई दी, उससे लाभ के बदले नुक्सान होने लगा तब पुराने वैद्य ने उसे उत्तम औषधि देकर अच्छा किया और नये वैद्य के लिये यह कहावत कही कि नई जुरुवा साग में शुरुवा.

(९) अपना सो अपना बाकी पाली का ढकना.

(अभि.) *दूसरों की अपेक्षा अपने को अधिक चाहना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी अमीर की ओर से मिठाई बांट रहा था परन्तु सब को थोड़ी २ दे रहा था मगर जब अपने सम्बन्धी को देने लगा तो अधिक २ देने लगा तब और लोगों ने कहा कि अपना सो अपना बाकी पाली का ढकना.

---

* शोरवा=गोश्त की तर तरकारी पकाने में जो तर पानी हो उसे कहते हैं।

(१०) अपना घर दूर से दीखता है.

(*अभि.*) *परदेश में भी अपने घर की दरिद्रता का ज्ञान रहता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य परदेश में ५०) रुपये माहवारी का नौकर था, परन्तु उसके घर पर परवार इतना बड़ा था कि सब तनख्वाह उसकी खाने पीने ही में खर्च होजाया करती थी, वह बहुत सादे कपड़े पहिनता था उसके मित्रों ने एक दिन उससे कहा कि तुम इतनी बड़ी तनख्वाह वाले तो आदमी हो क्यों इतनी कंजूसी करते हो? उसने उत्तर में कहा कि मित्र! अपना घर १०० कोस से दीखता है.

(११) अपना मरन जगत् की हांसी.

(*अभि.*) *अपना नुक्सान होना और दूसरों का प्रसन्न होना.*

(प्रयोग) एक घर में एक बुढ़िया और उस का मूर्ख पुत्र ये दो ही थे, वह पुत्र किसी के बहकाने से प्रतिदिन अपनी मां से लड़ा करे और जब उनकी लड़ाई हो तब बहकाने वाले प्रसन्न हुआ करें तब उसकी माने अपने पुत्र को समझाया कि बेटा! अपना मरन जगत् की हांसी अर्थात् ऐसा मत किया कर.

(१२) अपना माल खोटा तो परखने वालों का क्या दोष.

(*अभि.*) *जब हममें बुराई है तो अवश्य दूसरे हमें बुरा कहेंगे.*

(प्रयोग) एक सज्जन मनुष्य का पुत्र बड़ा लड़ाका था हमेशा उसके घर पर उसकी शिकायत आती थी उस मनुष्य ने उसे बहुत समझाया, मगर वह नहीं माना, एक दिन वह कहीं अधिक पीटा गया तब उसके बाप ने दुखी होकर कहा कि यदि यह अच्छा होता तो क्यों पिटता अर्थात् अपना माल खोटा तो परखने वाले का क्या दोष.

(१३) अपनी अक़ल और दूसरों का धन सबको बड़ा मालूम होता है.

(अभि.) *इसका अर्थ यही है.*

(प्रयोग) एक दिन कुछ आदमी एक जगह बैठे हुए अन्दाज़ कर रहे थे कि फलां आदमी के पास एक लाख रुपये नक़द होंगे, हालां कि उस के पास १० हज़ार भी नक़द नहीं थे तब किसी दूसरे आदमी ने जो यथार्थ भेद से जानकार था कहा कि मित्रो! अपनी अक़ल दूसरों का धन सब को बड़ा मालूम होता है.

(१४) अपनी २ खाल में सब मस्त हैं.

(अभि.) *अपनी दशा में सब प्रसन्न हैं.*

(प्रयोग) दो मित्र टहलते २ मज़दूरों के महल्ले में निकल गये वहां पर मज़दूरों को गाते बजाते और आनंद करते देखा, एक मित्र बोला कि इनको पेट भर तो खाना नहीं मुअस्सर होता और यह आनंद ऐसा करते हैं तब दूसरे मित्र ने कहा कि भाई! अपनी २ खाल में सब प्रसन्न हैं.

(१५) अपनी २ ढपड़ी अपना २ राग.

(अभि.) *एक का दूसरे से कुछ सम्बंध न रखना.*

(प्रयोग) पांच सात घरों का एक छोटा सा गांव था वहां के मनुष्यों में आपस में मेल न था तब और मेलवालों ने कहा कि अमुक गांव में तो यह हो रहा है कि अपनी २ ढपड़ी अपना २ राग.

(१६) अपनी करनी आप भरनी.

(अभि.) *किये हुए का फल स्वयं ही भोगना.*

(प्रयोग) एक शख्स बुढ़ापे में बहुत दुखी था, परन्तु उसने युवावस्था में बड़े आनंद उड़ाये थे जब एक मनुष्य ने कहा कि यह मनुष्य बहुत दुखी है इस पर किसी दूसरे मनुष्य ने कहा कि यह अपनी करनी का फल भोगता है.

(१७) अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है.

(अभि.) *अपने स्थानपर निर्बल भी बल दिखाने लगता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ऐसा था कि दूसरे स्थानों पर तो सब से बड़ी नम्रता से पेश आता परन्तु घर पर बुरी तरह पर गाली गुफ्तार से पेश आता तब दूसरों ने कहा कि अब तो कहले क्योंकि अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है फिर कभी दूसरे स्थान पर मिलना तब ठीक करेंगे.

(१८) अपनी छाछ को कौन खट्टी कहता है ?.

(अभि.) *अपनी वस्तु को कोई बुरी नहीं कहता.*

(प्रयोग) एक हलवाई अपनी बहुत दिन की मिठाई को, जो बिगड़ गई थी, बड़ी प्रशंसा करके बेचरहा था तब एक आदमी उसे खाकर बड़ा पछताया और अपने मित्र से कहने लगा कि यह हलवाई ऐसी सड़ी मिठाई कोबड़ी तारीफ करके बेचता है तब उसके मित्र ने कहा कि अपनी छाछ को कौन खट्टी कहता है?.

(१९) अपनी नाक कटी सो कटी पराई बदशगुनी तो हुई.

(अभि.) *दूसरों का नुक्सान करने के लिये अपने नुक्सान की परवाह न करना.*

(प्रयोग) एक आदमी ने ५) रु० एक बदमाश को देकर एक शरीफ़ आदमी को पिटवा दिया और दो चार आदमियों के सामने अपनी शेखी बघारने लगा तब उन लोगों ने कहा कि तुम्हारे हाथ क्या लगा तब उसने उत्तर दिया मेरे ५) रु० खर्च तो होगये, मगर वह पिटगया यानी अपनी नाक कटी सो कटी मगर पराई बदशगुनी तो हुई.

(२०) अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना.

(अभि.) *बेफ़िकर रहना.*

(प्रयोग) एक चिट्ठीरसा अपनी तकलीफ़ किसी काश्तकार से इस तरह बयान कर रहा था कि डाकखाने की नौकरी में सोने और खाने तक की भी फ़ुर्सत नहीं मिलती तब काश्तकार ने कहा कि हम तो अपनी नींद सोते हैं अपनी उठते हैं अर्थात् बे-फ़िकर रहते हैं.

(२१) अपने २ घर में हरकोई बादशाह.

(अभि.) *अपने घर में किसी का डर नहीं.*

(प्रयोग) एक लोहार जो अपने घरपर दिनभर लोहे की ठोक पीट करता रहता था जिसके कारण उसके पड़ोसी ने कहा कि तुम हरवक़ खुट २ करके हमारे आराम में विघ्न डालते हो तो लुहार ने उत्तर दिया कि तुमको यह कहने का हक़ नहीं सब अपने २ घर के बादशाह हैं.

(२२) अपने गांव का जोगड़ा आन गांव का सिद्ध.

(अभि.) *थोड़ा विद्वान् अपने गांव की अपेक्षा दूसरे गांव में अधिक प्रतिष्ठा पाता है.*

(प्रयोग) एक अध्यापक को उसके डिप्टी इन्स्पेक्टर ने उसीके गांव में बदलने के लिये कहा तब उसने इन्कार किया और कहा कि मेरी वहां कुछ प्रतिष्ठा नहीं होगी, डिप्टी इन्स्पेक्टर ने कहा कि क्यों? वह बोला कि कहावत प्रसिद्ध है कि अपने गांव का जोगड़ा आन गांव का सिद्ध.

(२३) अपने मुंहसे मियां मिट्ठू बनना.

(अभि.) अपनी बड़ाई करना.

(प्रयोग) एक आदमी सभामें बैठा हुआ अपने इल्म की बड़ाई कररहा था तब एक विद्वान् ने उससे कहा कि तुम स्वयं अपनी बड़ाई न करो अर्थात् अपने मुंह मियां मिट्ठू मत बनो.

(२४) अपने हाथ पांव में कुल्हाड़ी मारना.

(अभि.) अपना नुक्सान अपने आप करना.

(प्रयोग) एक अध्यापक ने कोशिश करके पुलिस में नौकरी करली तब वहां दिन रात की तकलीफ़ के सबब अपनी मुदर्रिसी को याद किया करता था और कहा करता था कि मैंने अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारली.

(२५) अफ़सर तो चून का भी बुरा होता है.

(अभि.) अफ़सर से लड़ाई करने में सर्वदा अपनी हार होती है.

(प्रयोग) एक आदमी हमेशा अपने अफ़सर से लड़ाई करता था और कभी खुश नहीं रखता था, अफ़सर ने उसे नौकरी से अलग कर दिया तो और बुद्धिमानों ने उससे कहा कि अफ़सर तो चून का भी बुरा होता है.

(२६) अस्तबल की बला बन्दर के सिर.

(अभि.) *बिला सम्बन्ध एक का काम दूसरे से कराना.*

(प्रयोग) एक अफसर के कई क्लर्क थे उसने एक मुहर्रिर का काम दूसरे से करने को कहा, तब वह करने तो लगा परन्तु घर आकर लोगों से कहने लगा कि भाई दूसरे मुहर्रिर का काम भी मुझे ही करना पड़ता है सो कहावत भी प्रसिद्ध है कि अस्तबल की बला बन्दर के सिर है.

(२७) अंत भले का है भला.

(अभि.) *अच्छे कार्य्य का फल अच्छा मिलता है.*

(प्रयोग) एक आदमी चोरी करके आनन्द से अपने दिन काटता था दूसरा उसका साथी कमाकर मुश्किल से अपनी गुज़र करता था. एक दिन चोरीवाला आदमी चोरी में पकड़ा गया और बंदीगृह भेज दिया गया और दूसरा आदमी वैसे ही बेखटके अपनी गुज़र करता रहा जब लोगों में उनकी चरचा हुई तो यह भी कहा गया कि अन्त भले का है भला.

(२८) अपने मरे बिन स्वर्ग किसने देखा है.

(अभि.) *अपने आप तकलीफ़ उठाये बिना अपना कार्य नहीं बनता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपना कुछ काम दूसरे को करने को दिया और जब करके लाया तब उसमें बहुत सी ग़लतियां पाईं यही काम कईबार कराया परन्तु उसने ठीक न बनाया तब उसने क्रोध में आकर यह कहा कि अपना काम आप ही करने से ठीक होता है अर्थात् अपने मरे बिन स्वर्ग किसीने नहीं देखा.

(२६) अंधा बांटे शीरनी फिर २ अपने देय.

(अभि.) *अन्याई अपना ही भला करता है.*

(प्रयोग) एक अध्यापक को सरकार से कुछ पुस्तकें लड़कों के बांटने के लिये मिलीं उसने उमदा और अधिक क़ीमत की पुस्तकें अपने बेटे को दी और मामूली औरों को तब उस अध्यापक के लिये यह कहावत कही गई.

(३०) अंधे के आगे रोवे अपने नैन खोवे.

(अभि.) *अन्यायी के आगे न्याय के लिये झगड़ना व्यर्थ है.*

(प्रयोग) एक गांव के पटवारी ने एक की ज़मीन का कुछ हिस्सा दूसरे को देदिया और इस हक़को अपने काग़ज़ों में पक्का कर दिया मालिक ज़मीन ने अपना बहुतसा हक़ पटवारी को दिखाया, परन्तु उसने कुछ ख़याल न किया तब और लोगों ने उस ज़मीदार से कहा कि इसके आगे कहना ऐसा है जैसा अंधे के आगे रोना.

(३१) अंधे के आगे हीरा, कंकड़ बराबर.

(अभि.) *मूर्ख के नज़दीक मूर्ख ज्ञानवान् सब यकसां.*

(प्रयोग) एक रियासत में एक कुपढ़ की और ज्ञानवान् की बराबर प्रतिष्ठा हुई तब यह कहावत कही गई.

(३२) अंधे को क्या चाहिये दो आंखें.

(अभि.) *इच्छा का पूर्ण होना.*

(प्रयोग) एक दीन मनुष्य ने एक अमीर आदमी से कहा कि मैं आज कल खाने बिना बहुत दुखी हूं, अमीर ने कहा कि तुम प्रतिदिन मेरे यहां आकर दो घंटा कुछ कार्य्य करजाया करो और खाना

खाजाया करो और १) या २) मासिक और अलग देदिया करेंगे, तब उसने कहा कि महाशय मैं यही चाहता था, अंधे को तो दो आंखें ही चाहियें.

(३३) अन्धेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा.

(अभि.) *मूर्ख विद्वान् की एकसी इज्जत होना.*

(प्रयोग) इसके प्रयोग के लिये एक पुस्तक बनी हुई है जिसमें यह वृत्तान्त इस तरह लिखा है कि एक नगर में मट्टी से सुवर्ण तक की चीजें टका सेर बिकती थीं वहां पर एक साधू अपने चेले समेत पहुंचे, साधू ने वहां के हालात देख वहां रहना स्वीकार न किया, परन्तु चेला न माना और लालचवश वहीं रहने लगा. एक दिन एक आदमी को फाँसी दीजारही थी परन्तु वह फाँसी चौड़ी थी इसलिये उस मनुष्य को उतार और उसके बदले चेलाजी फाँसी पर चढ़ाये, तब फिर उसको गुरू ने कहा कि हम तुम से कहते थे कि यहां मत ठहरो यहां तो अंधेर नगरी चौपट राजा है आदि.

(३४) अंधों में काना सर्दार.

(अभि.) *मूर्खों में थोड़ा विद्वान् भी पूजनीय होता है.*

(प्रयोग) एक गांव में थोड़े से पढ़े लिखे की बड़ी इज्जत होती थी जब विद्वानों में उसकी चरचा चली तब यह बात एक विद्वान् ने कही कि उसका ऐसा मामला है जैसे कि अंधों में काना सर्दार.

(३५) अंधे के हाथ बटेर लगना.

(अभि.) *जो मनुष्य किसी वस्तु के पाने की योग्यता न रखता हो और भाग्यवश उसे वह चीज़ मिलजावे.*

(प्रयोग) एक महा मूर्ख मनुष्य की स्त्री रूपवती, गुणवती और सुशीला थी तब लोगों ने कहा कि इस मूर्ख मनुष्य को उत्तम स्त्री का मिलना ऐसा है जैसे अन्धे के हाथ बटेर लगना.

(३६) आई मौज फ़कीर की दिया झूंपड़ा फूंक.

(अभि.) *एक दम प्रीति तोड़ देना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को एक घोड़ा निहायत ही प्यारा था, यहां तक कि उसका नहलाना धुलाना वह स्वयं अपने ही हाथ से किया करता था और लोगों ने उसे २००) रु० तक देने को कहा, परन्तु उसने नहीं बेचा, एक दिन उसके मन में उससे ऐसी नफ़रत हुई कि १००) रु० में ही घोड़ा बेचडाला तब उसके मित्रों ने कहा कि क्यों तुमने ऐसा किया ?, उत्तर में कहा कि मेरी मौज है अर्थात् आई मौज फक़ीर की दिया झूंपड़ा फूंक.

(३७) आ पड़ौसन मुझसी हो.

(अभि.) *अपने जैसा करना.*

(प्रयोग) एक लड़का पढ़ने लिखने में कुछ परिश्रम नहीं करता था और दिन रात प्रत्येक काम में आलस्य किया करता था और लड़कों को परिश्रम करते देखकर उन्हें बहकाता कि यह वक्त़ पढ़ने का नहीं है तब उनमें से एक लड़के ने कहा तुम्हारा तो वह मामला है कि आ पड़ोसन मुझसी हो.

(३८) आग और फूंस में वैर होता है.

(अभि.) *जिन दो वस्तुओं को इकट्ठा रखने में कुछ डर हो तो उनको अलग रखने के लिये सलाह देना.*

(प्रयोग) एक छात्रालय के अध्यक्ष ने एक छोटे और एक बहुत बड़ी अवस्था वाले लड़के को एक कोठरी में रख दिया. हेडमास्टर ने अध्यक्ष को बुलाकर कहा कि यह योग अनुचित है, इनको न्यारी २ कोठरियों में रक्खो क्या तुम नहीं जानते कि आग फूंस में बैर है.

(३९) आग जाने लुहार जाने धोकने वाले की बलाय जाने.

(*अभि.*) *अपना काम करना यदि उससे कुछ हानि हो तो बेपरवाही दिखाना.*

(प्रयोग) एक सुनार ने एक आदमी को धातु जलाते वक्त फूंकनी के द्वारा फूंक मारने पर नौकर रक्खा, एक दिन ऐसा हुआ कि धातु गलकर फूंक के ज़ोर से गिर गई मगर वह बराबर फूंक मारता रहा और धातु गिरने के नुक्सान का कुछ डर न किया जब सुनार उससे नाराज़ हुआ तो उसने कहा कि मेरा क्या दोष है तुम जानो धातु जाने मेरे लिये जो आज्ञा थी मैं करता रहा।

(४०) आग लगे वह सोना जिससे टूटे कान.

(*अभि.*) *ऐसी सजावट व्यर्थ है जिससे नुक्सान हो.*

(प्रयोग) एक महाजन ने दो हज़ार का कपड़ा उधार मँगाकर बजाजी की दुकान खोली, दैवयोग से तहसीलदार साहिब उधर आ निकले और उस का इस क़दर माल देखकर उस पर ६०) सालाना हैसियत नियत कर दी फिर उस महाजन ने बहुत कुछ कहा कि मैं उधार लाया हूं मगर हैसियत कम नहीं हुई अन्त में महाजन पछताया और कहने लगा कि आग लगे वह सोना जिससे टूटे कान.

(४१) आगे दौड़ पीछे चौड़.

(अभि.) *आगे को पढ़ते जाना और पिछला याद न होना.*

(प्रयोग) लड़कों ने एक पुस्तक के ५० पृष्ठ पढ़ लिये थे परन्तु पिछला पढ़ा हुआ याद न था जब पिछला सबक सुना गया और याद न निकला तब लड़कों को धमकाकर कहा गया कि तुम्हारा तो आगे दौड़ पीछे चौड़ का मामला हो रहा है.

(४२) आगे नाथ न पीछे पगा.

(अभि.) *केवल अकेले दम होना.*

(प्रयोग) एक आदमी ने किसी से पूछा कि तुम्हारे कै बच्चे हैं उत्तर दिया कोई नहीं, फिर पूछा कै भाई बंद हैं फिर उत्तर दिया कोई नहीं, इसी प्रकार सब सम्बन्धी पूछे परन्तु उत्तर "कोई नहीं" मिला तब उसने कहा तुम्हारा तो आगे नाथ न पीछे पगा का मामला है.

(४३) आग का जला आग से अच्छा होता है.

(अभि.) *जैसी वस्तु से नुक्सान होता है बहुधा वैसी ही वस्तु से लाभ भी होता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने विष खा लिया था, डाक्टर ने दूसरा विष पिलाकर इस विष द्वारा दूसरे विष का तेज शून्य करदिया और उस मनुष्य को मरने नहीं दिया तब लोगों ने कहा कि ठीक है आग का जला आग से ही अच्छा होता है.

(४४) आंख के अंधे नाम नैनसुख.

(अभि.) *यथार्थ में गुण तो है नहीं परन्तु नाम में गुण हों.*

(प्रयोग) एक लड़के का नाम बुद्धिमानसिंह था, परन्तु वह पढ़ने लिखने में सबसे गिरा हुआ रहता था, तब एक दिन गुरुजीने उससे कहा कि तेरा नाम तो है बुद्धिमानसिंह और पढ़ने लिखने में है मूर्खमानसिंह. तुम्हारे लिये तो वह कहावत ठीक है कि आंख के अंधे नाम नैनसुख.

(४५) आई बहू आया काम गई बहू गया काम.

(अभि.) *आदमी के होने से काम होता है.*

(प्रयोग) एक स्त्री जो हरवक्त काम करती रहती थी अपने सम्बन्धियों के कहीं चले जानेसे बैठी रहती थी दूसरी स्त्रियों ने उससे पूछा कि आजकल ठाली कैसे बैठी रहती हो, उसने उत्तर दिया कि बच्चे तो यहां हैं नहीं मुझे काम ही कुछ नहीं दीखता क्या करूं ?, सच कहा है कि आई बहू आया काम गई बहू गया काम.

(४६) आज मेरे लिये कल तेरे लिये.

(अभि.) *जैसा वर्ताव मुझ से किया है वैसा ही वर्ताव वह तुम से भी करेगा.*

(प्रयोग) एक स्कूल में बहुतसे अध्यापक थे एक विद्यार्थी ने किसी सहायक अध्यापक के साथ गुस्ताख़ी करदी, जब वह सहायक अध्यापक हेडमास्टर के पास शिकायत को चला तब दूसरे सहायक अध्यापक ने उसे मने किया कि जाने दो मत शिकायत करो तब तीसरे सहायक अध्यापक ने कहा कि अवश्य शिकायत करो आज उसने तुम्हारी गुस्ताख़ी की है कल हमारी करेगा.

(४७) आप काज महा काज.

(अभि.) *अपना काम अपने हाथ से अच्छा होता है.*

(प्रयोग) एक दिन एक मुदर्रिस ने मानीटर से कहा कि आज की हाजिरी लड़कों की रजिस्टर हाजिरी में भरदेना. मानीटर ने हाजिरी में बहुतसी जगह ग़लती और रोशनाई के धब्बे और काट पीट करदी जब मुदर्रिस ने हाजिरी का खाना देखा तो कहा कि सच है आप काज महा काज.

(४८) आठों गांठ कुम्मैत होना.

(अभि.) *बड़ाभारी चालाक होना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बड़ा चालाक था और लोगों ने उसे छलना चाहा मगर वह उनकी छलाई में नहीं आया तब लोगों ने कहा कि यह तो आठों गांठ कुमैत है.

(४६) आधे तीतर आधी बटेर.

(अभि.) *गपड़ शपड़ होना.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी ने एक कापी में कहीं तो उर्दू लिखदी और कहीं नागरी इंग्रेज़ी आदि तब गुरू ने उसे धमका कर कहा कि यह क्या गड़ बड़ करदी आधी में उर्दू आधी में हिन्दी. तुम्हारी कापी में तो आधी तीतर आधी बटेर कासा हिसाब है.

(५०) आधी छोड़ सारी को धावे ऐसा डूबे थाह न पावे.

(अभि.) *अधिक लालची नाश को प्राप्त होता है.*

(प्रयोग) एक सरकारी १०) रु० माहवार का नौकर १२) रु० माहवारी पर एक बनिये का नौकर होना चाहता था उसके मित्र ने उसे मने किया और समझाया कि जो आदमी आधी छोड़ सारी को धावे आदि.

(५१) आधे में राम आधे में गाम.

(अभि.) *बराबर हिस्सा न बांटना.*

(प्रयोग) एक आदमी आध सेर मिठाई बांटना चाहता था आधी तो उसने एक को दी और आधी बहुतसे आदमियों में बांटदी तब उन लोगोंने कहा कि आज तो आधे में राम आधे में गाम कैसा कहना होगया.

(५२) आप डूबे सो डूबे और को भी ले डूबे.

(अभि.) *स्वयं दुःख उठाना और साथियों को भी दुःख दिलाना.*

(प्रयोग) एक बड़ा आदमी रिशवत लेता था, जब उसका भेद खुला और उसको सज़ा मिली तो और भी दो चार अपने मातहतों को इसी बहाने फँसा दिया तब लोगों ने कहा कि वह आप डूबा सो डूबा मगर और को भी ले डूबा.

(५३) आपा झापी पड़ना.

(अभि.) *लूट खसोट करना.*

(प्रयोग) एक बाग़ का माली जब बाग़ में न होता था तब दो चार मनुष्य उसमें बड़ी लूट खसोट किया करते थे, एक सच्चे ईमानदार मनुष्य ने उनको समझाया कि ऐसी आपा झापी मत करो.

(५४) आप मरे जग परलय.

(अभि.) *अपने नुक़सान में दुनियां के नफे को भी नुक़सान समझना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को रुई के व्यौपार में कुछ हानि होगई, किसी दूसरे आदमी ने उससे कहा कि इस साल सब को लाभ हुआ, परंतु तुम्हें न हुआ तब उसने कहा कि मेरे नज़दीक तो किसी को भी फ़ायदा न हुआ अर्थात् आप मरे जग परलय.

(५५) आदमी भी अनाज का कीड़ा है.

(अभि.) *मनुष्य अनाज से ही जीता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य तमाम दिन किसी कार्य्य में लगा रहा यहांतक कि उस दिन उसे भोजन भी प्राप्त न हुआ जब वह शाम को घर आया और उसने भोजन खाया तब अपने मित्र से कहा कि मनुष्य तो अनाज का कीड़ा है.

(५६) आफ़तें अकेली नहीं आतीं.

(अभि.) *बहुतसे दुःख एक आदमी पर पड़ना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य का लड़का मर गया था, अगले दिन उसके घर में चोरी होगई और वह स्वयं भी बीमार हो गया तब उसकी हालत देखकर लोगों ने कहा कि आफतें भी अकेली नहीं आतीं.

(५७) आम के आम गुठली के दाम.

(अभि.) *अपने माल की इस प्रकार बड़ाई करना कि इसमें कोई वस्तु व्यर्थ नहीं.*

(प्रयोग) एक आदमी मिठाई के खिलौने बेच रहा था और पुकार कर कह रहा था, खालो खिलालो फूटजाय तो खालो अर्थात् यहां तो आम के आम और गुठली के दाम हैं.

(५८) आम खाने कि पेड़ गिनने.

(अभि.) *अपने मतलब से काम.*

(प्रयोग) एक शख्स ने एक नौकर को एक रु० महीना पर पानी भरने को नौकर रक्खा, वह नौकर उस शख्स से पूछने लगा कि जो दूसरा नौकर है उसे क्या तनख्वाह मिलती है और आप

क्या महीने में कमाते हैं तब उस शख़्स ने उसे कहा कि तुझे अपनी तनख्वाह से मतलब है या हमारी से तुझे, आम खाने से प्रयोजन है कि पेड़ गिनने.

(५६) आसमान का थूका मुँहपर गिरता है.

(अभि.) *बड़ों की बुराई करने में अपनी बुराई होती है.*

(प्रयोग) एक लड़का अपने गुरु की बहुत बुराई किया करता था कि अच्छी तरह नहीं पढ़ाते हैं बहुत मारते हैं आदि २ तब किसी दूसरे मनुष्य ने उसे समझाया और मने किया और कहा कि देखो आसमान का थूका अपने ऊपर गिरता है.

(६०) आंख का अंधा गांठ का पूरा.

(अभि.) *प्रकट में सीधा परंतु अंतःकरण से चालाक होना.*

(प्रयोग) एक लड़का देखने में बड़ा सीधा था इसलिये मुहल्ले वाले सब उस पर प्यार किया करते थे, परंतु जब उसका मौक़ा लगता तभी किसी न किसी का नुक़सान कर बैठता, एक दिन वह पकड़ा गया तब लोगों ने उसके लिये कहा कि देखने में तो सीधा है, परंतु है बड़ा चालाक अर्थात् आंख का अंधा गांठ का पूरा.

(६१) आंखों में धूर डालना.

(अभि.) *किसी के सामने से चीज़ उठा लेना और उसे ख़बर तक भी न होने देना.*

(प्रयोग) एक चोर लड़का एक बाग़ में से माली की मौजूदगी में भी कुछ फल चुरालाया, तब दूसरे चोर ने, जो उसका मित्र था, कहा कि मित्र तुम तो उसकी आंख में धूर डाल आये.

(६२) आंखों में घर करना.

(अभि.) अधिक प्रेम होना.

(प्रयोग) एक मनुष्य एक लड़के पर अधिक प्यार करता था और एक पल भी अपनी आंख से अलग न होने देता था तब और लड़कों ने उस लड़के से कहा कि तुमने तो अमुक मनुष्य की आंखों में घर कर रक्खा है.

(६३) आंखों में खून उतरना.

(अभि.) अधिक क्रोध आना.

(प्रयोग) एक मनुष्य और एक लड़के की आपस में शत्रुता थी, एक दिन वह लड़का रास्ते में मिल गया उस मनुष्य को उसे देख कर बड़ा क्रोध आया और लड़के से कहा कि तुमको देखकर मेरी आंखों में खून उतर आता है तुम मेरे सामने मत आया करो.

(६४) आप भले तो जग भला.

(अभि.) अच्छे बर्ताव वाले के साथ सब अच्छा बर्ताव रखते हैं.

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने पड़ोसियों की सर्वदा भलाई सोचा करता था, एक दिन उसके मकानपर बहुतसे चोर आगये तब पड़ोसियों ने मिलकर चोरों को मार भगाया तब, उसने पड़ोसियों को धन्यवाद दिया इस पर पड़ोसियों ने कहा कि साहब आप हमारी मदद करते हैं हमने आपकी की, अर्थात् दुनियां तो भले के साथ भला बर्ताव करती है.

(६५) आटे के साथ घुन भी पिसता है.

(अभि.) बड़ों के साथ छोटे के नुक़सान को कोई नहीं गिनता.

(प्रयोग) किसी जेलखाने में एक बड़ा आदमी क़ैद होकर आया उसके साथ उसके नौकर भी थोड़े से क़ैद होकर आये जब इनकी चर्चा लोगों में हुई कि उसने तो अपराध किया था मगर वे बेचारे उसके नौकर क्यों क़ैद हुए तब किसीने कहा आटे के साथ घुन भी पिसता है.

(६६) आदमी मान के लिये पहाड़ उठाता है.

(अभि.) *प्रतिष्ठा के लिये अधिक कार्य्य करना.*

(प्रयोग) एक मुदर्रिस अपने लड़कों को दिन रात पढ़ाता था, तब किसी मनुष्य ने उस के विषय में कहा कि इसे ऐसी क्या आवश्यक्ता है कि इतना परिश्रम करता है तब दूसरे आदमी ने उत्तर दिया कि आदमी मान के लिये तो पहाड़ उठाता है.

(६७) आग लगते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ.

(अभि.) *यदि सब चीज़ नाश होनेवाली हैं और थोड़ीसी उसमें से किसी तरह मिलजावें तो उसे लाभ समझना चाहिये.*

(प्रयोग) एक दुकानदार की दुकान में चोरी होगई, जब बहुतसा माल चोर ले गये तब जाग होगई और कुछ असबाब बच गया तब उसने अपने दिल समझाने के लिये कहा कि आग लगते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ.

(६८) ईद का चांद होना.

(अभि.) *बहुत दिनों पीछे मिलना.*

(प्रयोग) मेरा एक मित्र जो मुझसे प्रतिदिन मिलने आया करता था, एकबार एक महीने पीछे मुझ से मिला. मैंने उससे कहा मित्र अब तो आप ईदके चांद हो गये.

(६९) इधर के रहे न उधर के रहे न खुदा ही मिला न विसाले सनम.

(अभि.) *दोनों ओरसे अलग होजाना.*

(प्रयोग) एक आदमी सरकारी नौकरी २०) माहवार की छोड़कर एक बनिये के यहां २५) रु० पर चला आया, थोड़े दिनों पीछे बनिये ने उसे अलग कर दिया फिर उसने सरकारी नौकरी चाही तो वह भी उसे न मिली, तब लोगोंने उससे कहा कि तुम तो इधर के रहे न उधर के रहे न खुदा ही मिला न विसाले सनम.

(७०) इस कान सुनी उस कान उड़ादी.

(अभि.) *बात सुनना परन्तु याद न रखना.*

(प्रयोग) एक गुरु ने अपने शिष्य को एक रीति बतलाई उसी वक्त पूछी तो उस को याद थी अगले दिन फिर उसे पूछा तो वह रीति याद न निकली तब गुरु ने कहा कि तुम्हारा तो ऐसा हाल है कि इस कान सुनी उस कान उड़ादी।

(७१) ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया.

(अभि.) *कहीं सुख कहीं दुःख.*

(प्रयोग) एक मुहल्ले में एक घर विवाह था वहां खूब नाचना गाना हो रहा था, उसी मुहल्ले में एक दूसरे घर किसी के मरने पर रोना पीटना हो रहा था तब लोगोंने कहा-ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया.

(७२) ईश्वर के बहुत लम्बे हाथ हैं.

(अभि.) *परमात्मा सब की खबर लेता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने कहा कि बहुत दिन से मेरी तरक़ी नहीं हुई हालां कि मेरे साथी सब तरक्की कर गये, तब एक बूढ़े आदमी ने कहा कि ईश्वर के बहुत लम्बे हाथ हैं वह तुम्हारी भी तरक्क़ी करेगा मत घबराओ.

(७३) इन्द्र का वरसा मां का परसा.

(अभि.) *वारिश का होना और माका भोजन परोसना.*

(प्रयोग) एक काश्तकार ने तमाम दिन एक खेत में पानी दिया, मगर उस में जितने पानी की आवश्यकता थी न पहुंचा सका, तब उसने कहा कि इन्द्र के वरसे और माके परसे की होड़ नहीं हो सक्ती.

(७४) इब्तदाये इश्क है रोता है क्या, आगे आगे देखियो होता है क्या.

(अभि.) *जब शुरू में ही हिरासा है तो आगे कैसे काम करोगे.*

(प्रयोग) एक शख्स को ज़रूरत से पहाड़पर चढ़ना पड़ा, थोड़ीही सी दूर में उस ने अपने साथी से कहा अब मेरे बस का चलना नहीं तब साथी ने कहा मैय्या तो आगे याद आवेगी अभी चढ़े ही हो कितना, इब्तदाये इश्क है रोता है क्या, आगे आगे देखियो होता है क्या.

(७५) ईंटका घर मट्टी कर देना.

(अभि.) *उत्तम कामको बिगाड़ देना.*

(प्रयोग) मैंने अपने एक मित्र को हिन्दुस्तान का एक नक़्शा बहुत उमदा और खूबसूरत बनाकर दिया, उस में उस ने नाम इस तरहसे लिखे कि कहीं रोशनाई के धब्बे पड़ गये, नाम भी बदख़त लिखे तब मैंने उस से कहा कि तुम ने तो ईंट का घर मिट्टी कर दिया.

(७६) उखली में सिर दिया मूसलों का क्या डर.

(अभि.) *जब काम करना ही शुरू किया तब दिक्क़तों का क्या खौफ़.*

(प्रयोग) एक आदमी ने बढ़ई की कार सीखना शुरू की, एक दिन आरी चलाने में उसकी अंगुली कट गई तब लोगों ने कहा तुम यह काम छोड़ दो उसने उत्तर दिया कि जब मुझे बढ़ई का काम सीखना ही है तब अंगुली कटने का क्या खौफ़ यानी जब उखली में सिर दिया तब मूसलों का क्या डर.

(७७) उठाऊ चूल्हे की भांति बैठना.

(अभि.) *आराम से न बैठना.*

(प्रयोग) मेरे पास मेरा मित्र आया और इस तरह से बैठा कि मानो अभी उठकर चला जायगा, मैंने कहा मित्र! आराम से बैठो, उठाऊ चूल्हे की भांति मत बैठो.

(७८) उत्तम खेती मध्यम बनज निखद चाकरी भीक निदान.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने किसी से पूछा–नौकरी, खेती, बनज आदि में कौन अच्छा है तब उसने उत्तर दिया कि उत्तम खेती मध्यम बनज निखद चाकरी भीक निदान.

(७९) उतरगई लोई क्या करेगा कोई.

(अभि.) *बेशरम का कोई कुछ नहीं करसक्ता.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी अपनी शरारत से सबक़ याद न किया करे, गुरुजी बहुतेरा मारा पीटा करें मगर उसने कभी सबक़ याद ही नहीं किया, तब गुरुजी ने कहा तू बड़ा बेशरम है जिसकी उतरगई लोई उसका क्या करेगा कोई.

(८०) उतरा घाटी हुआ माटी.

(अभि.) *जो वस्तु खाई जाती है उसका मैला ही बनता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य की २० रु० माहवारी की आमदनी थी, वह सब खाने पीने में खर्च कर दिया करता था तब एक आदमीने उसे समझाया कि मामूली चीजें खाया करो कि तुम्हारे पास कुछ बचत हो क्योंकि जो खाओगे उसका मैला ही तो बनता है कहा भी है कि उतरा घाटी हुआ माटी.

(८१) उंगली पकड़कर पौंहचा पकड़ना.

(अभि.) *थोड़ासा सहारा मिलने पर जियादा मदद चाहना.*

(प्रयोग) मैंने एक दिन एक दीन मनुष्य को अपनी जाकट पहिनने को देदी, थोड़े दिन पीछे वही मनुष्य मेरे पास फिर आया और मेरा दुशाला मुझ से मांगने लगा तब मैंने उससे कहा कि तुम तो उंगली पकड़ते २ पौंहचा पकड़ने लगे

(८२) उधार मोल देना लड़ाई मोल लेना.

(अभि.) *उधार देने का परिणाम लड़ाई है.*

(प्रयोग) एक दूकानदार ने एक ग्राहक को २०) रु० का सामान उधार दिया, कई दफे मांगने पर भी रुपये नहीं मिले अंत में उनमें लड़ाई होगई तब लोगोंने कहा कि उधार देना लड़ाई मोल लेना, यह कहावत ठीक है.

(८३) उसकी तूती बोलना.

(अभि.) *उसकी बात चलना.*

(प्रयोग) मैंने एक आदमी से पूछा कि आजकल अमुक मनुष्य का क्या हाल है उसने उत्तर दिया कि [redacted] तो उसकी तूती बोल रही है.

(८४) उलटा चोर कोतवालको डांडे.

(अभि.) *दोषी निर्दोश पर दोष लगावे.*

(प्रयोग) मेरी एक वस्तु एक चोर के घर पर पाई गई, मैंने उससे कहा कि यह तो मेरी है, चोरने उत्तर दिया कि मेरे घर अज़मूदा रखने आया होगा, मैंने कहा तुम्हारा तो वह मामला है कि उलटा चोर कोतवाल को डांडे.

(८५) उलटी गंगा पहाड़ों चढ़ी.

(अभि.) *नियमविरुद्ध काम होना.*

(प्रयोग) एक गांव में बहुत अच्छा स्कूल था मगर वहां के दो विद्यार्थी अन्य गांव में पढ़ने जाया करते थे और और गांव के लड़के उनके गांव में पढ़ने आया करते थे तब वहां के मुदर्रिस ने उन दोनों लड़कों से कहा कि तुम्हारी तो वह मसल है कि उलटी गंगा पहाड़ों चढ़ी.

(८६) उघरे अंत न होय निबाहू कालनेमि जिमि रावण राहू.

(अभि.) *भेद खुल जानेपर निकाल दिया जायगा.*

(प्रयोग) एक आदमी के ज़िम्मे जो काम था उसमें वह चोरी किया करता था, लोगों ने उसके लिये कहा कि इसका भेद अवश्य खुल जायगा और यह निकाल दिया जायगा.

(८७) ऊधो के लेने न माधो के देने.

(अभि.) *कोई झगड़ा नहीं.*

(प्रयोग) एक आदमी ने जो कि उधार के लेन देन से बहुत दुखी था मुझ से पूछा कि तुम्हारा क्या हाल है मैंने कहा मुझे न ऊधो का लेना न माधो का देना.

(८८) ऊंची दुकान फीका पकवान.

(अभि.) *प्रकट में तड़क भड़क दिखाना यथार्थ में कुछ नहीं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ज्योतिषी बना हुआ पत्रा बगल में दबाये हुए लोगों को ठगता हुआ फिर रहा था, मैंने उससे पूछा कि आज क्या तिथि है उसने गलत बतलाई, तब मैंने कहा कि तुम्हारा तो वह मामला है कि ऊंची दुकान फीका पकवान.

(८९) ऊंचे से ऊंचा मिला, मिला नीच से नीच। पानी से पानी मिला, मिला कीच से कीच.

(अभि.) *एकसी प्रकृति वालों का मेल होता है.*

(प्रयोग) मुझ से एक लड़के ने पूछा कि क्या कारण है कि दूध दही से जमता है परन्तु खटाई से फट जाता है. तब मैंने उसे यह दोहा पढ़कर सुना दिया.

(९०) ऊंट के मुंह में ज़ीरा.

(अभि.) *जहां अधिक वस्तु की आवश्यक्ता हो और थोड़ीसी मिले.*

(प्रयोग) एक मनुष्य २ सेर मिठाई तक का खाने वाला था, एक दिन वह अपने मित्र के घर पर गया उसके मित्रने आधपाव मिठाई उसे खिलाई तब उसने कहा यह मिठाई मेरे लिये ऐसी है जैसे ऊंट के मुँह में ज़ीरा.

(९१) ऊंट जबतक पहाड़ के नीचे नहीं निकलता समझता है कि मुझ से बड़ा कोई नहीं.

(अभि.) *थोड़े विद्वान् जबतक अधिक विद्वान् की विद्या नहीं देखते तबतक अपने बराबर किसी को नहीं समझते.*

(प्रयोग) एक लड़के ने उर्दू का मिडिल पास करलिया वह अपने दिल में समझने लगा कि अब तो मैंने सब उर्दू पढ़ली, जब उसने एक शख्स को अपने से कहीं ज़ियादः विद्यावान् पाया तब दिल में शरमाया और यह कहावत कहने लगा.

(९२) ऊंट किस करवट बैठे.

(अभि.) *नहीं मालूम क्या फैसला हो.*

(प्रयोग) दो मनुष्यों का अदालत में अभियोग चल रहा था, दोनों थोक अपनी २ कोशिश कर रहे थे मैंने उनमें से एक से पूछा कि मुक़द्दमे की कैसी सूरत है, उसने उत्तर दिया कि नहीं मालूम ऊंट किस करवट बैठे.

(९३) ऊंट की चोरी निहुरे निहुरे.

(अभि.) *बड़े २ काम छिपकर नहीं होते.*

(प्रयोग) एक आदमी ने किसी शहर में डाका डाला, वहां से माल लेजाने में छिपकर जाने लगा तब उसके लिये कहा गया कि ऊंट की चोरी निहुरे निहुरे.

(९४) एक चुप सौ को हरावे.

(अभि.) *लड़ाई के समय मने करना.*

(प्रयोग) दो मनुष्यों में आपस में गाली गलोज होरही थी किसी तीसरे मनुष्य ने उनमें से एक को समझाया कि तुम खामोश हो जाओ क्योंकि एक चुप सौ को हराती है.

(९५) एक म्यान में दो तलवार नहीं समासक्तीं.

(अभि.) *एक ही जगह पर दो का अधिकार नहीं होसक्ता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी दूसरी स्त्री को अपनी स्त्री बना लाया. उन दोनों स्त्रियों की आपस में प्रतिदिन लड़ाई होती थी, उस मनुष्य ने अपनी पहिली स्त्री को समझाया कि इसको भी अपने घर में रहने दे, स्त्री ने उत्तर दिया कि एक म्यान में दो तलवार नहीं हो सक्तीं.

(९६) एक तो करेला कड़ुवा दूसरे नीमचढ़ा.

(अभि.) *बुरे मनुष्य को बुरी संगति मिलने से बुराई में विशेषता होजाती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य व्यभिचारी था, उसको एक साथी ऐसा ही और मिल गया तब उस का व्यभिचार और भी अधिक बढ़ गया तब उस के लिये कहा गया कि एक तो करेला कड़ुआ दूसरे नीमचढ़ा.

(९७) एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं.

(अभि.) *एकसी प्रकृति के जब दो मनुष्य मिलजाते हैं तब एकको दूसरे का बड़ा सहारा होता है.*

(प्रयोग) किसी अफ्सर के २ नायब थे, अफ्सर एक पर नाराज़ हुआ तब वे दोनों नायब आपसमें सलाह करने लगे कि अगर हम दोनों मिले रहेंगे तो यह किसी का भी कुछ नहीं कर सक्ता, देखो एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं.

(९८) एक हाथ से ताली नहीं बजती.

(अभि.) *दोनों ओर का अपराध हो तभी लड़ाई होती है.*

(प्रयोग) एक स्कूलमास्टर के पास दो लड़के अपनी लड़ाई की शिकायत लाये, एक ने दूसरे का क़सूर बतलाया अपने

आप को निर्दोष बतलाया तब स्कूलमास्टर ने कहा कि एक हाथ ताली नहीं बजती.

(९९) एक पंथ दो काज.

(अभि.) *एक कार्य में दो कार्य होना.*

(प्रयोग) मैं एक दिन अजमेर में किसी कार्य्य के लिये गया, वहां पहुँचकर यह सोचा कि यहां कब २ आना होता है इसलिये पुष्कर ही नहाते चलें अर्थात् एक पंथ दो काज ही कर चलें.

(१००) एक पापी नाव लेकर डूबता है.

(अभि.) *एक दोषी सब को दोष लगवा देता है.*

(प्रयोग) एक तहसीलदार की जेब में से कुछ रु० किसी नौकर ने निकाल लिये, तहसीलदार ने अपने सब नौकरों पर जुर्माना किया उन में से एक नौकर ने यह कहा कि एक पापी नाव लेकर डूबता है अर्थात् यह काम किया एक नौकर ने सज़ा सब ने पाई.

(१०१) एक मछली सब तालाब को गंदा करदेती है.

(अभि.) *एक बुरा आदमी सब को बिगाड़ देता है.*

(प्रयोग) एक पाठशाला में एक लड़का बदचलन था, उस की संगत से और भी लड़के बदचलन होने लगे तब अध्यापक ने उस लड़के को यह कहते हुए निकाल दिया कि एक मछली तालाब को गंदा कर देती है.

(१०२) एक से दो भले.

(अभि.) *एकका दिल दूसरे से बहलता है.*

(प्रयोग) मैं एक जगह रात को जा रहा था तब मैंने अपने साथी से कहा कि तुम भी चलो उसने उत्तर दिया कि क्या तुमको डर लगता है, मैंने कहा डरतो नहीं लगता मगर एक से दो अच्छे होते हैं.

(१०३) ओछा घड़ा छिलके घना.

(अभि.) *छोटा आदमी बड़ी डींग मारता है.*

(प्रयोग) एक आदमी बहुतसे आदमियों के बीच में अपनी बड़ाई कर रहा था तब आदमियों ने उससे कहा कि तुम खुद अपनी बड़ाई करते हो जैसे कि ओछा घड़ा छिलके घना.

(१०४) ओस के चाटे कहीं प्यास बुझती है.?

(अभि.) *अधिक आवश्यक्ता पर थोड़ी सी मिलना.*

(प्रयोग) एक किसान जिसका खेत विना बारिश के सूख रहा था वह अपने गगरे से पानी भरकर उसमें छिड़काव करने लगा, तब किसी ने उसको पानी छिड़कते देखकर कहा कि कहीं ओस के चाटे प्यास बुझती है.

(१०५) औसर चूकी डोमनी गावै आल पताल.

(अभि.) *समय चूकने पर और की और बातें बनाना.*

(प्रयोग) एक आदमी अपने इज़हार में असली बात कहना तो भूल गया और कुछ की कुछ बात कहने लगा, तब उसके लिये यह कहावत कही गई.

(१०६) कभी के दिन बड़े कभी की रात.

(अभि.) *कभी छोटा बड़ा कभी बड़ा छोटा.*

(प्रयोग) एक मनुष्य २५) रु० माहवारका नौकर था, उसका एक नायब १५) रु० माहवार से ३०) माहवार पर तरक्की पा गया तो उनके लिये यह कहावत कही गई कि कभी के दिन बड़े कभी की रात बड़ी.

(१०७) कभी सप्पम् सप्पा कभी रुक्खम् रुक्खा.

(अभि.) *कभी उत्तम भोजन (खीर आदि) पाना कभी रूखी सूखी रोटी पाना.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी समय के फेर से दरिद्र हो गया और उत्तम भोजन के बदले रूखी सूखी रोटी खाने लगा, तब उसने यह कहावत कही.

(१०८) कभी घी घना कभी मुट्ठी भर चना.

(अभि.) *इसका अर्थ और प्रयोग वही है जो नम्बर १०७ में है.*

(१०९) कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर.

(अभि.) *इसका अर्थ और प्रयोग कहावत नं० १०६ की भांति है.*

(११०) कटलू-वछलू हलचलें को न बसावें खेत.

(अभि.) *निर्बल सबल की भांति कार्य नहीं कर सकते.*

(प्रयोग) एक तार बाबू ने नौकरी छोड़ कर काश्तकारी का पेशा शुरू किया और जब उससे वह काम न चला तब और काश्तकारों ने उससे यह कहा कि यदि तुम जैसे खेती कर सकते तो दुनियां ही न करती अर्थात् कटलू वछलू हल चले तो को न बसावे खेत.

(१११) कड़ुवे से मिलिये मीठे से डरिये.

(अभि.) *जो मनुष्य कड़वी बात कहता है वह मीठे बोलने वाले से अच्छा होता है.*

(प्रयोग) एक अफसर अपने मातहतों से बड़ी मीठी २ बातें बनाया करता, मगर जब उसका मौका लगता तब उनको नुक़सान पहुंचा देता, तब मातहतों ने यह बात कही कि यह कहावत ठीक है कि मीठे से डरिये कडुवे से मिलिये.

(११२) कमज़ोर ग़ुस्सा ज़ियादह.

(अभि.) *निर्बल मनुष्य का अधिक क्रोध करना.*

(प्रयोग) एक दुर्बल और बूढ़ा मनुष्य अपने पुत्रों पर अधिक क्रोध करता था, तब उनमें से उसके एक पुत्र ने क्रोध में आकर कहा कि तुम्हारा वह हाल है कि कमज़ोर ग़ुस्सा ज़ियादह.

(११३) कम ख़र्च बालानशीन.

(अभि.) *थोड़े ख़र्च में अधिक शोभा दिखाना.*

(प्रयोग) मैं एक दिन एक बज़ाज़ की दूकान पर कपड़ा ख़रीदने गया, उसने मुझे बहुतसे कपड़े दिखाये, परन्तु मुझे पसंद न आये तब उसने मुझे कम क़ीमत और भड़कीला कपड़ा दिखाया और कहा कि यह कपड़ा ऐसा है कि कम ख़र्च और बालानशीन.

(११४) कमाऊ पूत किसको अच्छा नहीं लगता.

(अभि.) *कमेरा मनुष्य सब को अच्छा लगता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य के दो पुत्र थे जिनमें से एक पुत्र कमेरा था और दूसरा कामचोर था, पिता कमेरे पुत्र पर अधिक प्रेम करता था तब कामचोर पुत्र ने पिता से कहा कि मैं भी तो आपका पुत्र हूं क्यों विशेष प्रेम उस पर है, तब बाप ने उत्तर दिया कि कमाऊ पुत्र सब को अच्छा लगता है.

(११५) **कमर बांधे खड़ा है.**

(अभि.) *तय्यार है.*

(प्रयोग) हमने अपने नौकर से पूछा कि हमारा क्लर्क हमारे साथ दौरे में जाने के लिये तैय्यार है कि नहीं, तब उसने उत्तर दिया कि वह तो कमर बांधे खड़ा है.

(११६) **करेगा सेवा खावेगा मेवा.**

(अभि.) *बड़ों की सेवा का फल मीठा होता है.*

(प्रयोग) एक लड़का अपने गुरु की बहुत सेवा किया करता था, एक दिन उसके गुरु ने उसको प्रसन्न होकर यह आशीर्वाद दिया कि तुम बड़े योग्य पुरुष बनोगे क्योंकि यह कहावत प्रसिद्ध है कि करेगा सेवा खावेगा मेवा.

(११७) **कर्त्ता उस्ताद नकर्त्ता शागिर्द.**

(अभि.) *प्रत्येक कार्य अभ्यास से अच्छा होता है.*

(प्रयोग) दो मनुष्यों ने चित्ररचना सीखली, उनमें से एक तो उस काम को कर्त्ता रहा दूसरे ने छोड़ दिया, थोड़े दिनों पीछे अभ्यास वाला बड़ा हुशियार होगया और दूसरा बिना अभ्यास वाला चित्ररचना को भूल गया, तब उनके लिये यह कहावत हुई कि कर्त्ता उस्ताद नकर्त्ता शागिर्द.

(११८) **कर्महीन खेती करे बैल मरे कि सूका परे.**

(अभि.) *निर्भाग आदमी को सब जगह दुःख ही दुःख है.*

(प्रयोग) एक दरिद्री मनुष्य जो काम करता उसको उसी में हानि होती तो उसके लिये यह कहावत कही गई.

(११६) कफ़न बांधे सिर पर खड़ा है.

(अभि.) *मरने को तय्यार है.*

(प्रयोग) दो मनुष्यों में आपस में लट्ठ चल रहे थे तब लोगों ने उनको समझाया, परन्तु वे माने नहीं तब उनके लिये यह कहावत हुई कि वह तो मरनेको तय्यार हैं अर्थात् सिर पर कफ़न बांधे खड़े हैं.

(१२०) कहां राजा भोज कहां गांगू तेली.

(अभि.) *छोटे का बड़े से मुक़ाबिला करना.*

(प्रयोग) एकदिन बहुतसे लोग मिलकर अपने राजा की इस प्रकार बड़ाई करने लगे कि आपतो राजा रामचंद्रजी के समान हो, तब उस राजाने कहा कि कहां मैं और कहां रामचन्द्रजी अर्थात् कहां गांगू तेली कहां राजा भोज.

(१२१) कहे से कुम्हार गधेपर नहीं चढ़ता.

(अभि.) *कहने पर काम न करना.*

(प्रयोग) एक आदमी हमेशा गाता फिरा करता था एक दिन दो चार आदमियों ने उससे गाने को कहा तब उसने नहीं गाया तब उसके लिये कहाकि कहने से कुम्हार गधेपर नहीं चढ़ता.

(१२२) क़लई खुलगई.

(अभि.) *भेद मालूम हो गया.*

(प्रयोग) एक मनुष्य के कई नौकर थे, उनमें से एक प्रतिदिन कुछ न कुछ चुरा ले जाया करे था, एक दिन वह पकड़ा गया तब दूसरे नौकरों ने उससे कहा–आज तो क़लई खुल गई.

(१२३) कतहुं सिधायहुं तें बड़दोषू.

(अभि.) *कभी सीधा बनने में भी हानि होती है.*

(प्रयोग) एक अफसर के दो क्लर्क थे, अफसर उस क्लर्क से अधिक काम लेता जो सीधा था, तब उसने दुखी होकर यह कहा कि कतहुं सिधायहुं तें बड़दोषू.

(१२४) कर तो डर न कर तो डर.

(अभि.) *हर हालत में डरना चाहिये.*

(प्रयोग) एक आदमी घोड़ी पर सवार होकर जा रहा था, उस का बेटा उस के पीछे २ पैदल जा रहा था लोगों ने कहा यह कैसा मूर्ख है कि आप तो सवार और बेटा पैदल फिर उस ने बेटे को सवार कराया और अपने आप पैदल चलने लगा तब लोगोंने कहा यह लड़का कैसा मूर्ख है कि बूढ़ा बाप तो पैदल और खुद सवार है फिर वे दोनों सवार हो लिये तब लोगों ने कहा कि ये कैसे मूर्ख हैं कि कमज़ोर घोड़ी पर दोनों सवार हैं फिर दोनों पैदल चलने लगे तब लोगों ने कहा कि ये कैसे मूर्ख हैं कि सवारी तो साथ और पैदल चल रहे हैं तब उन्होंने कहा कि कर तो डर न कर तो डर.

(१२५) काठ का उल्लू है.

(अभि.) *मूर्ख है.*

(प्रयोग) एक आदमी अपने कार्य्य को ठीक तरह करना नहीं जानता था उसके अफसर ने उससे किसी कार्य्य के बिगड़ने पर कहा कि तू है तो काठका उल्लू.

(१२६) कागज़ की नाव आज न डूबी कल डूबी.

(अभि.) *कमज़ोर चीज़ जल्दी ही नाश को प्राप्त होती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने चीढ़ की लकड़ियों का एक नदी का पुल बनाया, उस के ऊपर भारी २ गाड़ी चलने लगीं और वह टूटने को हुआ तब उस के लिये, कहा गया कि कमज़ोर वस्तु आज न टूटी कल टूटी.

(१२७) कागज़ के घोड़े दौड़ते हैं.

(अभि.) *लिखित कार्य्यवाही होती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य का अभियोग कचहरी में चलरहा था, वह अलग जाकर मजिस्ट्रेट की खुशामद करके कहने लगा कि इसमें मेरी ही जीत होनी चाहिये. साहब ने फ़र्माया "हम ख़याल करेंगे" वह मनुष्य खुश होता हुआ घर आया और लोगों में बैठ कर डींग मारने लगा तब लोगों ने कहा कि वहां ज़ुबानी कुछ नहीं होता वहां तो जो कागज़ों में लिखा होगा उसके मुताबिक़ काम होगा अर्थात् वहां तो कागज़ के घोड़े दौड़ते हैं.

(१२८) काठ की हांडी दूसरी बार नहीं चढ़ सक्ती.

(अभि.) *छल का काम एकवार ही होसक्ता है फिर नहीं होसक्ता.*

(प्रयोग) एक बढ़ई ने एक पुरानी लकड़ी की एक चीज़ बनाकर उस पर रंग वारनिश चढ़ाकर अधिक क़ीमत में बेच दिया. थोड़े दिनों पीछे वैसी ही चीज़ बनाकर उसी आदमी के पास बेचने को फिर गया तब उसने कहा कि काठ की हांडी तो एक बार ही चढ़ती है अब हम तुम्हारी यह चीज़ नहीं लेंगे.

(१२६) काबुल में क्या गधे नहीं होते.

(अभि.) *अच्छी जगह पर बुरे भी होते हैं.*

(प्रयोग) एक डिप्टी इन्सपेक्टर मदारिस को जब मुदर्रिसों की आवश्यकता होती तो वह एक दूसरे ही सूबे से बुलाता था. उसने बहुतसे अच्छे २ मुदर्रिस बुलाये, परन्तु उनमें से एक दो अच्छे नहीं निकले तब उनके लिये कहा गया कि क्या काबुल में गधे नहीं होते.

(१३०) काबुल गये मुग़ल बनि आये बोलन लागे बानी,
आब २ कर मरगये सिरहाने रक्खा पानी.

(अभि.) *विना समझे नक़ल करना अच्छा नहीं.*

(प्रयोग) एक लड़का गांव का रहने वाला किसी स्कूल में इंग्रेज़ी पढ़ता था, जब वह छुट्टी में घर आया तो इंग्रेज़ों के बच्चोंकी भांति कोट पतलून टोप आदि पहन कर वैसे ही व्यवहार करने लगा, तब लोगों ने कहा कि तुम्हारा तो हाल ऐसा होगया कि काबुल गये मुग़ल बनि..........आद्यो पान्त.

(१३१) काम प्यारा कि चाम.

(अभि.) *काम करने वाले की सब जगह प्रतिष्ठा होती है.*

(प्रयोग) एक अफसर के दो नौकर थे, उनमें से एक बहुत अच्छा काम करने वाला था इसलिये अफसर उससे बहुत प्रसन्न था, दूसरा नौकर कामचोर था इसलिये वह निकाल दिया गया तब लोगों ने कहा कि काम प्यारा होता है चाम प्यारा नहीं होता.

(१३२) काली घटा डरावनी धौली घटा बर्सावनी.

(अभि.) बहुधा स्याह रंग के जो बादल आते हैं वह नहीं बरसते बल्कि सुफेद बादल अच्छा पानी बरसाते हैं.

(प्रयोग) जब बादल खूब घुमड़ के आवें और पानी अधिक न बरसे तब यह कहावत कही जाती है.

(१३३) काले के आगे चिराग़ नहीं जलता.

(अभि.) खौफ़नाक अफसर के आगे कुछ नहीं कहा जाता.

(प्रयोग) किसी महकमें का अफसर बड़ा ही डरावना था, उसका एक मातहत उसके पीछे लोगों से कह रहा था कि आज तो मैं अफसर का मुक़ाबला करूंगा, परन्तु जब अफसर आया तब उसकी ज़ुबान से कुछ भी न निकला बल्कि कांपता रहा, तब लोगों ने अपने दिल में कहा कि काले के आगे चिराग़ भी नहीं जलता.

(१३४) काल करे सो आज कर आज करे सो अब्ब, पलमें परलय होयगी बहुरि करोगे कब्ब.

(अभि.) जो काम करना है जल्दी कर लो.

(प्रयोग) एक अमीर आदमी लोगों में कह रहा था कि अगले साल यहां एक धर्मशाला बनवाऊंगा उसके अन्दर एक कूंआ भी बनवाऊंगा ताकि जो यात्री आया करें वे सुख पाया करें, तब लोगों ने कहा कि अगले साल क्या होगा अभी बनवाना शुरू करो फिर यह कहावत कह के समझाया.

(१३५) कागा चले हंस की चाल अपनी भी खो बैठे.

(अभि.) *जो जिसकी नक़ल करने की योग्यता न रखता हो, उस की नक़ल करने से हानि उठाता है.*

(प्रयोग) एक लुहारका लड़का जो कि अपनी कार सब सीख गया था अपनी कार छोड़कर बढ़ईपने की कार सीखने लगा. वह भी उसको न आई और अपनी भी कार भूल गया तब उस के लिये कहा गया कि कागा चला हंसकी चाल अपनी भी खो बैठा.

(१३६) काल के हाथ कमान बूढ़ा बचे न ज्वान.

(अभि.) *मौत सब को मारती है.*

(प्रयोग) किसी जवान मनुष्य के मरने पर लोग अफसोस कर रहे थे तब किसी ने समझाया कि मौत के लिये सब बराबर हैं.

(१३७) काजर की कोठरी में धब्बे का डर है.

(अभि.) *बुरी सोहबत से बदनामी होती है.*

(प्रयोग) मैं एक जुवारी के पास बैठने लगा था मेरे पिता ने मुझ से कहा कि उसके पास मत बैठा करो, मैंने कहा मैं जूआ नहीं खेलता हूं तब पिताजी ने कहा कि जूआ न खेलने पर भी तुम वहां बैठकर बदनाम होजाओगे, देखो काजर की कोठरी में धब्बे का डर.

(१३८) काम जो आवे कामली काले करे कमाच.

(अभि.) *छोटी चीज़ का काम बड़ी से नहीं निकलता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को बटन लगाने के लिये सुई की आवश्यकता है अगर उसको सूआ दिया जाय तब वह कह सक्ता है कि काम जो आवे कामली काले करे कमाच.

(१३९) क़ाज़ीजी दुबले क्यों शहर का अन्देशा.

(अभि.) *बेमतलब की चिन्ता में नहीं पड़ना चाहिये.*

(प्रयोग) मैं अपने एक दोस्त की दुकान पर गया वह मुझ से कहने लगा कि रेल की पटरी बहुत घिस गई कभी टूट न जावे, मैंने कहा रेल की पटरी की सोच रेल वाले करें तुम्हें क्या मतलब है, तुम्हारा कहना तो ऐसा होगया कि क़ाज़ीजी दुबले क्यों शहर का अन्देशा.

(१४०) काले अक्षर भैंस बराबर.

(अभि.) *बिलकुल अपढ़.*

(प्रयोग) मेरे पास एक नौकर एक चिट्ठी लाया, मैंने उससे कहा इसमें क्या लिखा है उसने उत्तर दिया मुझे नहीं मालूम इसमें क्या लिखा है मेरेलिये तो काले अक्षर भैंस बराबर.

(१४१) काले के काटे का जंत्र न मंत्र.

(अभि.) *असाध्य अवस्था का कोई उपाय नहीं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को ऐसी बीमारी ने पकड़ लिया कि उसको दुनियां भर की दवाई से भी आराम न हुआ तब उसने आशाहीन होकर कहा कि काले के काटे का जंत्र न मंत्र.

(१४२) कानी के व्याह में सौ जोखों.

(अभि.) *जिस काम में सन्देह हो उसमें अवश्य विघ्न होते हैं.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने एक मिडिल के ऐसे लड़के को, कि जिसके पास होने की थोड़ी आशा थी, परीक्षा में भरती करदिया वहां उस लड़के को ज्वर चढ़ आया परीक्षा न देसका तब अध्यापक ने कहा कि कानी के व्याह में सौ जोखम.

(१४३) काया बड़ी कि माया.

(अभि.) *धन से शरीर की रक्षा करनी चाहिये.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी बीमारी के कारण बहुतसा धन खर्च कर चुका था वह अच्छा तो होगया था, परंतु लोगों से इस बात को कहता था कि मेरा रुपया बहुत ख़र्च होगया तब लोगों ने कहा कि काया बड़ी कि माया.

(१४४) काफ़िया तंग होगया.

(अभि.) *दुखी होगया.*

(प्रयोग) मुझे एक दिन अपने अफसर के सामने प्रातःकाल से शाम तक खड़ा होकर काम करना. पड़ा उस दिन मैं बहुत थक गया मैं अपनी थकावट लोगों से इस प्रकार वर्णन करने लगा कि आज तो काफ़िया तंग होगया.

(१४५) काम को काम सिखाता है.

(अभि.) *अभ्यास करते २ काम ठीक होजाता है.*

(प्रयोग) हमारे स्कूल में एक ऐसा मास्टर है कि वह बिना गुरु रक्खे बढ़ई के काम में बहुत होशियार होगया, उससे पूछा कि तुम ने यह कैसे सीख लिया उसने उत्तर दिया कि काम को काम सिखाता है अर्थात् अभ्यास करते २ अपने आप आगया.

(१४६) किसी की ज़ुबान चले किसी का हाथ चले.

(अभि.) *बलवान् यदि निर्बल को पीटे तो निर्बल गालियां देगा.*

(प्रयोग) एक बलवान् मनुष्य ने एक निर्बल मनुष्य को पीटा निर्बल मनुष्य उसको गालियां देने लगा, तब उसने उस बेचारे को और पीटा और कहा कि गाली मत दे, उसने कहा आपका हाथ चलता है मेरी ज़ुबान चलती है.

(१४७) किसी जन्म के काले तिल चाबे हैं.

(अभि.) बड़े अहसान का बदला दे रहे हैं.

(प्रयोग) एक मनुष्य ने किसी लड़के को कठिन काम पर लगाया वह लड़का धूप के कारण थक कर बैठगया, स्वामी ने उससे कहा कि धूप में ही काम करो तब वह लड़का यह कहता हुआ कि "किसी जनम में आपके काले तिल चबाये हैं" काम पर लग गया.

(१४८) किस विते पर तत्ता पानी करूं.

(अभि.) किस आशा पर काम करूं.

(प्रयोग) एक मज़दूर से तमाम दिन काम लिया गया उसको मज़दूरी थोड़ी दीगई अगले दिन फिर उसको बुलाकर बड़े २ काम उसको बतलाये उसने कहा मज़दूरी तो आप हम को बहुत कम देते हैं फिर मैं किस आशा में काम करूं.

(१४९) किसी को बेंगन पथ बराबर किसी को विष बराबर.

(अभि.) एक ही वस्तु किसी को लाभ किसी को हानि.

(प्रयोग) दो मनुष्यों ने शाम को उड़द की दाल से रोटियां खाईं प्रातःकाल एक का तो पेट फूला हुआ पाया दूसरे को कोई शिकायत नहीं हुई तब उनके विषय में यह कहा गया कि किसी को बेंगन पथ बराबर किसी को विष बराबर.

(१५०) कीचड़ में ढेला डालोगे तो छींट आवेंगी.

(अभि.) नीच को नहीं छेड़ना चाहिये.

(प्रयोग) एक मनुष्य नीच मनुष्यों को कभी २ छेड़कर बराबरी करवाता था तब बड़े बूढ़े ने उससे कहा कि तुम यह अच्छा नहीं

करते हो क्योंकि कहावत है कि कीचड़ में ढेला डालने से छींट आती हैं.

(१५१) कूए की मट्टी कूए में लगती है.

(अभि.) *जहां की कमाई होती है वहीं व्यय होती है.*

(प्रयोग) एक दिन मेरे पिताजी ने मुझ से पूछा कि तुम २) रु० प्रतिदिन कमाते हो वह कहां खर्च होते हैं, मैंने उनको सब हिसाब ज्यों का त्यों समझा दिया तब उन्होंने फ़र्माया कि ठीक कूए की मट्टी कूए ही में खर्च होती है.

(१५२) कूए का मेंडक समुद्र को क्या जाने.

(अभि.) *जिसने एक परिमित सीमा से बाहर कभी भ्रमण नहीं किया तो वह बाहर का हाल नहीं जान सक्ता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य एक छोटे से क़सबे का बाशिन्दा था उसने कभी किसी बड़े शहर को नहीं देखा था, उससे एक दिन बातों २ में ही कलकत्ते शहर का ज़िकर आगया, मैंने कहा कि वह बहुत बड़ा शहर है तब वह बोला कि क्या कलकत्ता हमारे क़सबे से भी बड़ा है तब मैंने कहा कि कुए का मेंडक समुद्र को क्या जाने.

(१५३) कुछ खोके सीखता है.

(अभि.) *हानि उठाके होशियार बनता है.*

(प्रयोग) एक अध्यापक अपने डिप्टी इन्सपेक्टर से शत्रुता करता था इसलिये डिप्टीसाहिब ने उसकी तरक़्क़ी के मौक़े पर दूसरों को तरक़्क़ी देदी तब उस अध्यापक के कान खुले और पछताने लगा कि डिप्टीसाहिब से व्यर्थ शत्रुता की तब लोगों ने उससे कहा कि आदमी कुछ खोके सीखता है.

(१५४) कुछ दाल में काला है.

(अभि.) *कुछ भेद है.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्र मुझ से प्रतिदिन नियत समय पर मिलने आया करते थे, एक दिन वह नहीं आये तब मैंने उनके न आने पर कहा कि आज तो कुछ दाल में काला है.

(१५५) कुत्ता भी बैठता है तो दुम से झाड़के.

(अभि.) *मनुष्य को अपना स्थान स्वच्छ रखना चाहिये.*

(प्रयोग) एक बोर्डिंगहाउस के सुपरिण्टेण्डेण्ट ने बोर्डिंगहाउस का मुआइना किया, कोठरियों में अच्छी सफाई नहीं पाई तब सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने लड़कों को समझाया कि कुत्ता भी बैठता है तो दुम से झाड़ के, तुम मनुष्य होकर बिना सफाई बैठे हो.

(१५६) कुत्ते की दुम १२ वर्ष नलकी में रही जब निकली तब टेढ़ी ही निकली.

(अभि.) *संगत से प्रकृति नहीं बदलती.*

(प्रयोग) एक लड़के को चोरी की आदत पड़ गई उसके पिता ने उस का बुरा स्वभाव बदलने के लिये पंडितों की संगत में रक्खा, बहुत दिन पश्चात् उसने पंडित के भी घर चोरी करली तब उसके लिये कहा कि इसकी आदत नहीं छूट सक्ती अर्थात् कुत्ते की दुम १२ वर्ष नलकी में रही जब निकली तब टेढ़ी ही निकली.

(१५७) कुलिया में गुड़ फोड़ना.

(अभि.) *घर में पंचायत करना.*

(प्रयोग) दो तीन मनुष्य किसी के विषय में घर में बैठे हुये पंचायत कर रहे थे कि उसने ऐसा दुष्कर्म किया है वह बिरादरी से अलग होना चाहिये उनमें से एक मनुष्य ने कहा कि तुम तो कुलिया में गुड़ फोड़ना चाहते हो इसलिये सब आदमी इकट्ठे करो और चौपाल में पंचायत करो.

(१५८) कुम्हारी पर बस न चला गधे के कान जा उमेठे.

(अभि.) *बड़ों पर पार न वसाई छोटों को दुखी किया.*

(प्रयोग) एक नौकर को उसके स्वामी ने बहुत समझाया वहां तो उसका कुछ बस चला नहीं शाम को घर आकर अपनी स्त्री से लड़ने लगा तब स्त्री ने कहा स्वामी का क्रोध मेरे ऊपर उतारते हो अर्थात् कुम्हारी पर पार न बसाई गधे के कान जा उमेठे.

(१५९) कूंजड़ी अपने बेरों को खट्टा नहीं बताती.

(अभि.) *अपनी चीज़ को कोई बुरा नहीं कहता.*

(प्रयोग) इसका प्रयोग वही समझो जो कि "अपनी छाछ को कौन खट्टा कहता है" इस का प्रयोग है.

(१६०) कुछ लोहा खोटा कुछ लुहार खोटा.

(अभि.) *वस्तु खराब, बनाने वाला खराब तब फल उत्तम नहीं हो सक्ता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने पुरानी खराब लकड़ी एक बढ़ई को पाये बनाने को दी, बढ़ई भी नौसिख था पाये अच्छे न बना सका तब उसके लिये कहा गया कि कुछ तो लकड़ी का दोष कुछ बढ़ई का दोष अर्थात् कुछ लुहार खोटा कुछ लोहा खोटा.

(१६१) कुत्ते की मौत मरना.

(अभि.) *इस तरह मरना कि कोई ख़बर लेने वाला पास न हो.*

(प्रयोग) एक साल एक शहर में ऐसा सख्त प्लेग फैला कि जहां तहां सड़कों पर भी मुर्दे ही मुर्दे दृष्टि आते थे तब उसके लिये कहा गया कि फलां शहर में मनुष्य कुत्ते की मौत मरते हैं.

(१६२) कै हंसा मोती चुगें कै भूके मरजाहिं.

(अभि.) *प्रतिष्ठित मनुष्य प्रतिष्ठा के साथ ही समय व्यतीत करते हैं.*

(प्रयोग) एक साधारण मनुष्य के पास परमात्मा की कृपा से थोड़ासा धन होगया अब तो वह अपने आपको नव्वाब साहिब कह-लवाने लगे, थोड़े दिन पीछे दरिद्रता ने घेरा कि नैत्र आंध २ कर समय काटनेलगे तब किसी दूसरे मनुष्य ने उसकी दशा वर्णन करते हुए कहा कि हम ऐसा नहीं करसक्ते हैं. हम को मरजाना स्वीकार, मगर ऐसा नीच कर्म करना पसंद नहीं.

(१६३) कोदों देके पढ़ना.

(अभि.) *थोड़ी विद्या प्राप्त करना.*

(प्रयोग) मेरे एक पढ़े लिखे मित्र ने मुझ से एक पत्र लिखवाने को कहा, मैंने उससे कहा कि तुम अपने आप क्यों नहीं लिखते हो उसने उत्तर दिया कि मैं थोड़ा ही पढ़ा हूं तब मैंने कहा कि क्या तुम कोदों देके पढ़े हो.

(१६४) कोयला होय न ऊजरो नौमन साबुन खाय.

(अभि.) *मनुष्य चाहे जितनी स्वच्छता करे परन्तु उसके शरीर का रंग नहीं बदल सक्ता.*

(प्रयोग) एक काला मनुष्य बहुत नहाया धोया करे और शरीर को खूब साबुन से मला करे तब उसके एक मित्र ने कहा कि कोयला होय न ऊजरा नौमन साबुन खाय.

(१६५) कोस न चली बाबा प्यासी.

(अभि.) *बहुत थोड़ा काम करने पर ही थकावट प्रकट करना.*

(प्रयोग) एक लड़के को हमने कुछ कागज़ों की नक़ल करने को कहा. उसने नक़ल करना आरंभ किया, थोड़ी ही देर में वह कहने लगा कि कमर दुखने लगी, मैंने उससे कहा कि तुम्हारा तो वह काम होगया कि कोस न चली बाबा प्यासी.

(१६६) कोयले की दलाली में काले हाथ.

(अभि.) *व्यर्थ बातों में पड़कर कुछ तकलीफ़ उठाना.*

(प्रयोग) मेरा मित्र अपना हिसाब खानपान आदि का मुझ से लिखवाया करता था, महीने के अन्त में कुछ हिसाब मिलने में गड़बड़ होगई, बहुत देर तक कागज़ देखते रहे, मगर वह ग़लती मालूम नहीं हुई तब मैंने दुःख मानकर कहा कि कोयलों की दलाली में काले हाथ.

(१६७) कौनसा दरख़्त है जिसे हवा नहीं लगी.

(अभि.) *दुनियां में सब जीवधारियों को युवा अवस्था में जोश होता है.*

(प्रयोग) एक लड़का बहुत नेक था जब वह ठीक जवान हुआ तब उसके चालचलन के विषय में कुछ थोड़ी शिकायत फैली तब एक मनुष्य ने कहा कि वह कौनसा दरख़्त है जिसे हवा नहीं लगी.

(१६८) क्यों कांटों में घसीटते हो.

(अभि.) *क्यों व्यर्थ दुःख देते हो.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्रने मुझसे कहा कि मैं एक आदमी पर झूठा मुक़द्दमा चलाऊंगा तुम मेरी गवाही देदेना, मैंने कहा मैं झूठी गवाही नहीं दूंगा, व्यर्थ मुझे कांटों में मत घसीटो.

(१६६) क्या पैर में मँहदी लगी है.

(अभि.) *तुम्हारे चलने में तुम्हारा क्या नुक़्सान है.*

(प्रयोग) मैंने एक आदमी से कहा कि वह चारपाई उठा ला, उसने मुझसे कहा तुम खुद उठा लाओ, क्या तुम्हारे पैर में मँहदी लगी है ? जो मुझ से चार पाई मंगाते हो.

(१७०) कौड़ी नहीं गांठ में चलो बाग़ की सैर.

(अभि.) *रुपये विना सब व्यर्थ.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्रने मुझसे कहा चलो बम्बई की सैर कर आवें, मेरे पास किराया तक भी न था, मैंने कहा मेरे पास ख़र्च नहीं है खर्च विना कैसे चलूं, फिर उसने कहा चलो भी, तब मैंने कहा कौड़ी नहीं गांठ में चलो बाग़ की सैर.

(१७१) कौड़ी नहीं पास तो मेला लगे उदास.

(अभि.) *दौलत विना सब व्यर्थ है.*

(प्रयोग) मैं एक दिन एक मेले में गया वहां से बहुतसी चीज़ें ख़रीद लाया, एक निर्धन मनुष्य भी मेला देखने गया वह चिंता में फिरता था मैंने कहा—क्यों रंजीदह हो, उसने कहा—मेरे पास ख़र्च नहीं विना ख़र्च के यह मेला मुझे अच्छा नहीं मालूम होता तब मैंने अपने दिल में कहा कि जाके पैसा नहीं पास वाको मेला लगे उदास.

(१७२) कौन किसी के आवे जावे दाना पानी लावे.

(अभि.) *अन्न जल बलवान् है.*

(प्रयोग) मैं एकवार बद्रीनारायण की यात्रा को गया था वहां रास्ते में मुझे एक परिचित मनुष्य मिल गया वह मुझे अपने घर पर लेगया और उसने मेरी बड़ी खातिर तवज्जा की, वह मुझसे कहने लगा कि आपने बड़ी कृपा की जो मेरे घर को पवित्र करदिया तब मैंने कहा—कौन किसी के आवे जावे दाना पानी लावे.

(१७३) कंगाली में आटा गीला.

(अभि.) *दुःख पर दुःख होना.*

(प्रयोग) एक दीन मनुष्य ने बड़ी तकलीफ़ उठाकर अपना झोंपड़ा बनाया, दो तीन दिन पीछे इतनी ज़ोर से हवा चली कि उसके मकान का छप्पर भी उड़ गया तब उसने कहा कि कंगाली में आटा गीला अर्थात् इस छप्पर के चढ़ाने में अब और ख़र्च चाहिये.

(१७४) क्या वर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूकि पुनि का पछिताने.

(अभि.) *मौके पर काम करने से सफलता होती है.*

(प्रयोग) मुझे अपनी लड़की की शादी करनी है मैंने अपने मित्र से ५००) रु० मांगे उसने कहा—अभी तो मेरे पास रुपया नहीं है, परन्तु १ माह बाद आप को रुपया दूंगा, मैंने कहा—आवश्यकता तो मुझे अब है एक माह बाद रुपया लेकर क्या करूंगा क्या वर्षा जब कृषी सुखाने.........आदि.

(१७५) खग जाने खगही की भाषा.

(अभि.) *एकही देश के मनुष्य आपस की बोल चाल ठीक २ समझते हैं.*

(प्रयोग) मुझे तीन चार पहाड़ी मनुष्य आपस में वार्तालाप करते हुए मिले, मैं उनकी बात बिलकुल नहीं समझा, तब मैंने अपने साथी से पूछा कि तुमने इनकी बात समझी उसने कहा- "खग जाने खगही की भाषा" मैं कैसे उनकी बोली समझता.

(१७६) खड़ा खेल फरुखाबादी.

(अभि.) *साफ व्यवहार होना.*

(प्रयोग) मुझ से एक आदमी ने मेरी एक वस्तु मोल ली और कहने लगा कि इसकी क़ीमत १० दिन पीछे भेजदूंगा, मैंने कहा- नक़द रुपया देजाओ माल लेजाओ उधार यहां नहीं मिलता, यहां तो खड़ा खेल फरुख़ाबादी है.

(१७७) खरी मज़दूरी अच्छा काम.

(अभि.) *नक़द दाम देने में अच्छा काम.*

(प्रयोग) मैंने एक मज़दूर को मकान के सामने की घास छीलने को कहा, उसने दो घंटे के भीतर मामूली तौरसे छीलकर दाम माँगना चाहा, मैंने कहा-ठीक २ छीलो तब दाम मिलेंगे, यहां तो खरी मज़दूरी अच्छा काम का मामला है ठीक २ छीलो, ठीक ठीक दाम लो.

(१७८) खरबूज़े को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है.

(अभि.) *बुरे की संगत से अच्छे भी बुरे बनने लगते हैं.*

(प्रयोग) एक स्कूल में एक लड़के का चाल चलन ख़राब था, वहां के नायब ने हेडमास्टर को रिपोर्ट की कि उस लड़के को निकाल दें क्योंकि खरबूज़े को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है इसकी देखादेखी और लड़कों का चाल चलन ख़राब होगा.

(१८९) खरबूज़ा छुरी पर गिरे तो खरबूज़े का नुक़सान छुरी खरबूज़े पर गिरे तो खरबूज़े का नुक़सान.

(अभि.) *हर तरह से कमज़ोर की हानि है.*

(प्रयोग) किसी गांव के आदमी की वहां के थानेदार से अनबन हो गई, थानेदार उसके फांसने की फिकर में रहने लगा, तब और गांव के बाशिंदों ने उस आदमी को समझाया कि हर तरह से तेरा नुक़सान होगा जाओ थानेदार की ख़ुशामद करो.

(१८०) ख़राब ख़स्ता होना.

(अभि.) *बर्बाद होना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपने पुत्र को पढ़ाने के लिये बहुत कोशिश की, मगर उसने पढ़ना स्वीकार ही नहीं किया तब उसने पुत्र से कहा कि अगर नहीं पढ़ेगा तो ख़राबख़स्ता होता फिरेगा.

(१८१) खल गुड़ एक भाव बिकना.

(अभि.) *अच्छे बुरे की पहचान न करना.*

(प्रयोग) किसी राजा के यहां पंडितों की और मूर्खों की एकसी प्रतिष्ठा होती थी तब पंडितों ने कहा कि यहां तो खल गुड़ एक भाव बिकते हैं.

(१८२) ख़रादी का काट काटे से कटता है.

(अभि.) *ऋण देने ही से निबटता है.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्रपर बहुत कर्ज़ा होगया था, वह बहुत रंजीदा था और कहता था कि यह क़र्ज कैसे निबटेगा, तब मैंने कहा—यह तो देने ही से निबटेगा अर्थात् ख़राद़ी का काट तो काटे ही से कटता है.

(१८३) खाने को शेर कमाने को बिल्ली.

(अभि.) *काम थोड़ा करना बदला अधिक चाहना.*

(प्रयोग) बहुत से मज़दूर मैंने घास काटने पर लगाये, उनमें से एक मज़दूर ने बहुत थोड़ी घास काटी, जब मज़दूरी लेनेका समय आया तब सब से अधिक झगड़ने लगा तब मैंने उसको धमका कर कहा कि तेरा तो वह हाल है कि खाने को शेर कमाने को बिल्ली.

(१८४) ख़ारशी कुतिया मखमल की झूल.

(अभि.) *नीचका अधिक सत्कार.*

(प्रयोग) ब्याह के मौके पर एक आदमी ने १) रु० के हुक्के में ४) रु० की नै लगवाई, लोगों ने कहा कि तुमने तो हुक्के का वह हाल कर दिया कि ख़ारशी कुतिया मखमल की झूल.

(१८५) खाली से बेगार भली.

(अभि.) *खाली बैठने की अपेक्षा कुछ न कुछ करना अच्छा है.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी एक दिन अपनी चारपाई बुन रहा था, उसके मित्रों ने कहा कि नौकर से क्यों नहीं बुनवा लेते, तब उस अमीर ने कहा—आज मुझे कुछ काम नहीं था मैंने सोचा कि क्यों खाली बैठूं कुछ काम ही करूं तब मैंने खाट बुनना शुरू करदी क्योंकि कहावत है कि खाली से बेगार भली.

(१८६) खालाजी का घर नहीं है.

(अभि.) बहुत कठिन काम है.

(प्रयोग) मुझसे एक मनुष्य ने कहा कि मुझे ४, ५ दिन के भीतर घड़ी बनाना सिखादो, मैंने कहा–यह बहुत कठिन काम है, ४, ५ दिन में कभी नहीं आयेगा, उसने हठ करके कहा कि मैं अवश्य सीख लूंगा, तब मैंने कहाकि क्या खालाजी का घर है.

(१८७) खुदा की बातें खुदाही जाने.

(अभि.) *परमेश्वर का भेद कोई नहीं जानता.*

(प्रयोग) हम एक दिन परमेश्वर की अनूठी २ बातों का विचार कर रहे थे कि ये चांद सूर्य्य तारे आदि क्या हैं, कैसे बने हैं, तब मेरे मित्र ने कहा कि खुदा की बातें खुदा ही जाने.

(१८८) खुदा के घर से आना.

(अभि.) *मरते २ बचना.*

(प्रयोग) मेरा मित्र एक दिन ऐसा बीमार होगया कि उसके बचने की कोई सूरत न थी, परन्तु परमात्मा की कृपा से वह बच गया और थोड़े दिनों बाद चलने फिरने लगा तब मैंने कहा कि तुम तो खुदा के घर से आये हो अर्थात् मरते २ बचे हो.

(१८९) खुदा गंजे को नाखून न दे.

(अभि.) *परमात्मा करे कि अत्याचारी को अधिकार न मिले.*

(प्रयोग) एक गांव में एक मनुष्य बड़ा अत्याचारी था, लोग उससे बहुत दुखी थे, कुछ दिनों पीछे उसके थानेदार होने की खबर उड़ी तब लोगों ने कहा–हे परमात्मा इस को थानेदारी मत दे.

(१६०) खुदा मेहरबां है तो हैं सब मेहरबां.

(अभि.) *जिस मनुष्य पर ईश्वर की कृपा है सब उससे प्रसन्न हैं,*

(प्रयोग) यह कहावत किसी मनुष्य के सुख का हाल वर्णन करते समय कहा करते हैं.

(१६१) खुदा रिज़क़ का ज़ामिन है.

(अभि.) *परमेश्वर सब को भोजन देता है.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्र किसी कारण से अपनी नौकरी से अलाहिदा हो गये, उसने मुझे चिट्ठी में सब हाल लिख कर पीछे से यह लिखा कि मेरे पास खाने पीने तक को भी ख़र्च नहीं है तब मैंने उसे लिखा कि रिज़क़ का ज़ामिन खुदा है.

(१६२) खूब दांत फाड़ना.

(अभि.) *अधिक हंसना.*

(प्रयोग) यह कहावत किसी मनुष्य को अधिक हंसने पर कही जाती है.

(१६३) खून लगाकर शहीदों में मिल जाना.

(अभि.) *वेश बदल के रूप गांठना.*

(प्रयोग) एक डाकू किसी मौके पर साधुओं कैसे कपड़े पहन कर साधुओं की मंडली में मिल गया एक मनुष्य उस की जान पहिचान का उसे मिला उस मनुष्य ने डाकू का यह वेश देखकर कहा—खून लगाकर शहीदों में मिल जाना चाहते हो.

(१६४) खेत खाय गधा, मारा जाय जुलाहा.

(अभि.) *अपराध करनेवाला और हो सजा पानेवाला और कोई हो.*

(प्रयोग) एक दिन एक काश्तकार ने मुझ से कहा कि तुम्हारे मित्र के बैल ने मेरा खेत खा लिया, तुम उस का नुक़्सान पूरा करो तब मैंने कहा कि तुम्हारा तो कहना ऐसा हो गया जैसा कि खेत खाय गधा, मारा जाय जुलाहा.

(१९५) खेती खसम सेती.

(अभि.) *खेत का काम विना स्वामी के ठीक नहीं होता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने ५० बीघे ज़मीन नौकरों से बुवाई, अपने आप जाकर कभी खेत को देखा तक नहीं उसमें इतना भी अन्न पैदा नहीं हुआ जितनी लागत लगी थी तब लोगों ने उस से कहा कि खेती खसम सेती.

(१९६) खोदा पहाड़ निकली चुहिया.

(अभि.) *परिश्रम अधिक किया फल थोड़ा मिला.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने बड़े परिश्रम से खेती की, मगर बारिश की कमी से सब पौधे जल गये, बीज की क़ीमत से भी कम वसूल हुआ तब उसने कहा कि खोदा पहाड़ मिली चुहिया.

(१९७) गढ़े में मुंह धोलो.

(अभि.) *बेशरमी उतार लो.*

(प्रयोग) एक लड़के ने मुझ से कहा कि मैं दो गज ऊंची खाई को कूद जाऊंगा, मैंने कहा—तुम १ गज ऊंची भी नहीं फांद सक्ते, उसने बहुत हठ की, मैंने कहा कूदो तब उससे नहीं कूदा गया तब मैंने कहा गढ़े में मुंह धोलो.

(१९८) गधा भी कहीं घोड़ा हुआ है.

(अभि.) *जात नहीं बदली जा सक्ती.*

(प्रयोग) एक आर्य कह रहा था कि यदि चमार खूब पाक साफ़ रहे और भजन पूजा किया करे तो वह ब्राह्मण हो सक्ता है, तब किसी सनातनधर्मी ने कहा कि कहीं गधा भी घोड़ा हुआ है.

(१६६) गधा धोने से बछड़ा नहीं हो सक्ता.

(अभि.) *इसका अभिप्राय और प्रयोग नं० १६८ में देखो.*

(२००) गधेको दी हींग वह कहे मेरी आंख फोड़ी.

(अभि.) *मूर्ख मनुष्य को उत्तम शिक्षा देना हानिकारक होता है.*

(प्रयोग) एक मूर्ख मनुष्य दिन रात खाली फिरने के और कुछ न करता था, एक मनुष्य ने उसे समझाया कि तुम भैंस मोल लेलो उसकी सेवा करते रहना तो उसमें तुम्हारी गुज़र हो जायगी, मूर्ख मनुष्य यह समझकर कि यह मेरी हंसी करता है, उससे लड़ने लगा तब उसने कहा—मैंने तो तेरे समझाने की बात कही थी तेरा तो वह मामला है कि गधे को दी हींग वह कहे मेरी आंख फोड़ी.

(२०१) गया समय फिर हाथ नहीं आता.

(अभि.) *अवसर पर चूकना नहीं चाहिये.*

(प्रयोग) एक लड़का पढ़ने लिखने में दिल नहीं लगाता था, उसके पिता ने उसे यों समझाया कि बेटा! यह समय तुम्हारे लिखने पढ़ने का है, यह समय तुम को फिर हाथ नहीं आवेगा अगर नहीं पढ़ोगे तो बड़े होकर पछताओगे.

(२०२) ग़रीब की हाय बुरी होती है.

(अभि.) *ग़रीब को सताना अच्छा नहीं.*

(प्रयोग) एक ज़मीदार अपने नौकर को उसके किसी अपराध पर उस को बुरी तरह पीट रहा था तब किसी दूसरे ज़मीदार ने उस से कहा–इसे मत मारो, ग़रीब की हाय बुरी होती है.

(२०३) ग़रीब की जोरू उमदाख़ानुम नाम.

(अभि.) *ज़ात छोटी नाम बड़ा.*

(प्रयोग) एक माली की स्त्री का नाम शाहज़ादी था, तरकारी बेचती फिरती थी, किसी ने उसको पुकार कर कहा–शाहज़ादी तरकारी देजाओ तब एक शख़्सने कहा कि यहां तो वह मसल है कि ग़रीब की बेटी उमदाख़ानुम नाम.

(२०४) गरजा सो न बरसा.

(अभि.) *धूम धड़के से आना और कुछ न करना.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी बड़ी भारी बरात लेकर अपने पुत्र की शादी में गया, दूर २ के भंगी पैसों की बखेर लूटने के लिये इकट्ठे हुए मगर उसने बिलकुल भी पैसों की बखेर नहीं की तब उसके लिये कहा गया कि जो गरजा सो न बरसा.

(२०५) गले का हार होना.

(अभि.) *हमेशा साथ रहना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने छोटे बच्चे को बहुत प्यार किया करता, बच्चा भी उसे इतना चाहने लगा कि जहां उसका पिता जाता वह भी साथ हो लेता, तब उस आदमी ने बच्चे से कहा कि तूं तो मेरे गले का हार बनगया.

(२०६) गले पड़ी.

(अभि.) *मजबूर होकर लेनी पड़ी.*

(प्रयोग) मेरे मित्र ने मुझसे कहा कि हमारे लिये एक गाय ख़रीद दो, मैं बहुत तलाश कर के एक गाय ख़रीद लाया और अपने मित्र को दी, मित्र ने पसंद न की और गाय वाले ने भी वापिस नहीं ली, तब वह मेरे गले पड़ी अर्थात् मुझे लेनी पड़ी.

(२०७) गधों को खुश्का.

(अभि.) *योग्य वस्तु अयोग्य को नहीं देनी चाहिये.*

(प्रयोग) एक लड़के की शादी में कुछ रथ और कुछ छोटे २ छकड़े आदि गये थे वहां जाकर रथवालों के बैलों को एक २ सेर घी दिया तब छकड़े वाले कहने लगे कि हमारे बैलों को भी सेर २ घी दो, मालिक ने उन्हें आधा २ सेर घी दिलाना चाहा वे राज़ी न हुये और कहने लगे कि क्या हमारे बैल बैल नहीं हैं ?, तब मालिक ने कहा कि तुमतो वह बात करने लगे कि गधों को खुश्का दो.

(२०८) गाना रोना किसको नहीं आता.

(अभि.) *गाना और रोना दुनियां में सब जानते हैं.*

(प्रयोग) हमारा एक मित्र कुछ २ गाना जानता था मगर वह किसी के सामने कभी गाता न था बल्कि अलग एकांत में कभी २ वह गा बैठता था, एक दिन हमने उससे कहा—कुछ गाना सुनाओ वह कहने लगा—मैं जानता ही नहीं, हमने उससे कहा—भला गाना और रोना किसे नहीं आता.

(२०९) गाय न बाछी नींद आवे आछी.

(अभि.) *आलसी मनुष्यों की बिना काम आनन्द में गुज़रती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी आलसी मनुष्य से कह रहा था कि आज कल हमें दिनभर तो खेत में काम करना पड़ता है और रातभर खलियान में, तब आलसी ने कहा हम तो दिन रात मौज उड़ाते हैं, हमारा तो ऐसा हाल है कि गाय न बाछी नींद आवे आछी.

(२१०) गाल फुलाना.

(अभि.) *क्रोध में आना.*

(प्रयोग) जब किसी मनुष्य को क्रोध आवे तब उनके लिये कह सक्ते हैं कि आज तो वह गाल फुलाये फिरता है.

(२११) गांठ गुलामनी तनियां रेशमी.

(अभि.) *ग़रीब आदमी का ठाठ बाट बनाना.*

(प्रयोग) एक भिखारी एक दिन बहुत क़ीमती कपड़े पहिन कर किसी समाज में गया, वहां एक मनुष्य ने उसे पहिचान लिया और कहा–तुम्हारी तो वह मसल है कि गांठ गुलामनी तनियां रेशमी.

(२१२) गाड़ी चला करती है कुत्ते भौंका ही करते हैं.

(अभि.) *काम होते ही रहते हैं जलने वाले जलते ही रहते हैं.*

(प्रयोग) हमारे एक शिष्य ने हमसे कहा कि मैं रात को "दश बजे तक अपने मकान में पढ़ता हूं मेरा एक पड़ोसी बड़ २ किया करता है कि यह हमारी नींद में विघ्न डालता है" यदि आप की आज्ञा हो तो मैं स्कूल में पढ़ने चला आया करूं. हमने उससे कहा तुम वहीं पढ़ते रहा करो उस को बड़ २ करने दो, गाड़ी चला करती है तब कुत्ते भौंका ही करते हैं.

(२१३) गांठ से पलोथन लगाना.

(अभि.) *अपने पास से कुछ खर्च करना.*

(प्रयोग) मैं एक दिन एक वस्तु ॥) में बाज़ार से ख़रीद कर लाया, एक मनुष्य ने कहा—मैं ऐसी वस्तु ।-) में ख़रीद लासक्ता हूं, तीसरे आदमी ने उसको ।-) दिये और कहा लेआ तब वह अपनी बात रखने की ग़रज़ से ≡) आने अपने गांठ से ख़र्च करके ॥) में वैसी ही वस्तु ले आया और कहने लगा कि ।-) में लाया हूं तब मैंने उससे कहा कि गांठ से कितना पलोथन लगाया है.

(२१४) गीदड़ के मनाये कहीं ढोर मरते हैं.

(अभि.) *किसी के गाली देने से कुछ नुक़सान नहीं होता है.*

(प्रयोग) दो लड़कियां आपस में लड़ रही थीं, हमने उनको छुड़ाया और कहा—लड़ा नहीं करते हैं तब उनमें से एक ने कहा कि यह मेरे बाप के मरने की गाली देती है, मैंने उससे कहा कि कहीं गीदड़ के मनाये ढोर मरते हैं.

(२१५) गिने पूड़े सम्हाल खाये.

(अभि.) *शेष कुछ नहीं.*

(प्रयोग) मेरे एक नौकर ने मुझ से कुछ चीज़ मांगी मगर वह मेरे पास सब ख़तम हो चुकी थी तब मैंने कहा—गिने पूड़े सम्हाल खाये अर्थात् थोड़ीसी तो थी हां सब ख़र्च हो गई.

(२१६) गुरू तो गुड़ ही रहे चेला शकर हो गये.

(अभि.) *छोटे का बड़े से अधिक काम दिखाना.*

(प्रयोग) एक डिप्टी इन्सपेक्टर मदारिस का वर्ताव अध्यापकों के साथ बहुत बुरा था. दैवयोग से डिप्टी साहिब की बदली हो गई और वहीं का सब डिप्टी इन्सपेक्टर डिप्टी इन्सपेक्टर हो गया, उसका वर्ताव अध्यापकों के साथ में और भी अधिक बुरा हुआ तब अध्यापकों ने आपस में कहा कि गुरू तो गुड़ ही रहे चेला शक्कर हो गये अर्थात् यह उनसे भी बढ़ गया.

(२१७) गुनाह बेलज्ज़त.

(अभि.) *व्यर्थ पाप करना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने रात को किसी के घर में से एक सन्दूक चुराया उसको खोलकर देखा तो उसके अन्दर मट्टी के वर्तन भरे थे तब उसने दिल में कहा कि गुनाह बेलज्ज़त.

(२१८) गुड़ खाना गुलगुलों से परहेज़.

(अभि.) *छोटी चीज़ लेना बड़ी को इनकार.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने मित्र के घर से छोटी २ खाने पीने की वस्तु लेकर खा लेता था, एक दिन उस मित्र ने इसको अपने घर भोजन करने को बुलाया तब इसने किसी पुरानी बात के याद आने से भोजन करने से इनकार किया, तब इसके मित्र ने कहा कि तुम्हारी तो वह मसल है कि गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज़.

(२१९) गुड़ दिये मरे तो विष क्यों दें.

(अभि.) *छोटी वस्तु से काम चलजाय तो बड़ी क्यों खर्च की जावे.*

(प्रयोग) एक नौकर को उसका स्वामी धमकाकर काम करवा रहा था, स्वामी के मित्र ने स्वामी से कहा कि आप इसकी डंडे से ख़बर लीजिये तब काम अच्छा करेगा, स्वामी ने कहा कि जब धमकाने से काम चलता है तब डंडा मारने की क्या आवश्यकता है अर्थात् गुड़ दिये मरे तो विष क्यों दें.

(२२०) गूलर का फूल होना.

(अभि.) *किसी वस्तु का न मिलना.*

(प्रयोग) मैं आजकल अजमेर नगर में रहता हूं, एक दिन मेरे मित्र ने पूछा कि आपको यहां कभी परवलकी तरकारी भी मिल-जाती है, मैंने कहा–परवलकी तरकारी तो यहां गूलर का फूल हो गई अर्थात् देखने में भी नहीं आती.

(२२१) गुम्बज़ की आवाज़ है जैसा कहेगा वैसा सुनेगा.

(अभि.) *जैसा कहना वैसा सुनना.*

(प्रयोग) दो मनुष्य आपस में गाली गलोज कर रहे थे, किसी तीसरे मनुष्य ने उनको समझाया कि गाली गलोज करना अच्छा नहीं तब उनमें से एक ने कहा कि यहां तो गुम्बज़ जैसा मामला है जो जैसा कहेगा वैसा सुनेगा, इसने मुझे गाली दी मैंने भी इसे गाली दी.

(२२२) गुरु कीजे जान पानी पीजे छान.

(अभि.) स्पष्ट है.

(प्रयोग) एक मनुष्य ने रात के समय एक गिलास पानी पिया, पानी में बिच्छू था बिच्छू ने उसकी जीभ में काट लिया तब उस ने रोकर कहा कि पानी पीजे छान गुरु कीजे जान.

(२२३) गेहूं की रोटी को फौलाद का पेट चाहिये.

(अभि.) *दरिद्र का रोटियों के मिलने पर इतराना.*

(प्रयोग) मेरे पास एक ग़रीब आदमी भूखा मरता हुआ नौकरी के लिये आया, मैंने उसे नौकर रख लिया. दो चार माह बाद जब उस के पास दश पांच रुपये हो गये तब कहने लगा— अब मुझ से नौकरी नहीं होती तब मैंने कहा—गेहूं की रोटी को फौलाद का पेट चाहिये.

(२२४) गंजी कबूतरी महल में डेरा.

(अभि.) *इसका अभिप्राय और प्रयोग वही है जो नम्बर १८४ में वर्णन हो चुका है.*

(२२५) गोकुल से मथुरा न्यारी.

(अभि.) *अलहिदा रहना.*

(प्रयोग) दो सहोदर भ्राता अलग २ रहते थे, छोटे भाई से उस के एक मित्र ने पूछा कि तुम्हारे बड़े भाई का क्या हाल है, उसने उत्तर दिया—मुझे क्या ख़बर उसका क्या हाल है हमारा तो यह हिसाब है कि गोकुल से मथुरा न्यारी.

(२२६) गोकुल में कान्ह.

(अभि.) *स्त्रियों में रहना.*

(प्रयोग) मेरा एक मित्र ऐसी जगह रहता था कि जिसके पड़ोस में स्त्रियां बहुत रहती थीं, मैं एक दिन उनके मकान पर गया वहां की हालत देखकर मैंने कहा कि तुम तो आजकल ऐसे हो जैसे गोकुल में कान्ह (कृष्णजी) थे.

(२२७) घर आये तो कुत्ते को भी नहीं मारते.

(अभि.) *अपने घरपर शत्रुपर भी दया करनी चाहिये.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने घरपर अपने शत्रु को पीट रहा था, शत्रु ने कहा–घरपर तो कुत्ते को भी नहीं मारते हैं आप मुझे छोड़ दीजिये.

(२२८) घर आये नाग ना पूजियां बांबी पूजन जायँ.

(अभि.) *अपने घरपर आये हुए से भेट न करनी और उस के मकान पर मिलने जाना.*

(प्रयोग) एक अध्यापक के स्कूल में डिप्टीसाहिब ने मुआयना किया मुआयने के वक्त अध्यापक साहिब शिरदर्द का बहाना बनाकर घर चले गये, थोड़े दिनों पीछे डिप्टीसाहिब को सलाम करने के लिये जाने लगे तब उसके मित्र ने कहा–तुम्हारा तो वह हाल है कि घर आये नाग ना पूजियां बांबी पूजन जायँ.

(२२९) घर का भेदी लंका ढावे.

(अभि.) *आपस की फूट से हानि होती है.*

(प्रयोग) दो भाई अपने पिता के मरने के बाद आपसकी फूट में अलहिदा २ होना चाहते थे तब एक ज्ञानवान् मनुष्य ने उन्हें समझाया कि देखो घर का भेदी लंका ढावे अर्थात् आपस की फूट से हानि होती है.

(२३०) घर में चूहे कलाबादी मारते हैं.

(अभि.) *भूखे मरना.*

(प्रयोग) एक दीन मनुष्य एक दिन बड़ी डींग मार रहा था तब किसी शख्स ने कहा—यहां तो डींग मार रहे हैं घर में चूहे कला-बाज़ी खा रहे हैं.

(२३१) घर की मुरगी दालबराबर.

(अभि.) *घर की वस्तु की क़ीमत शुमार नहीं की जाती.*

(प्रयोग) हम एक दिन ५ ब्राह्मणों के जिमाने का विचार कर रहे थे और हिसाब जोड़ रहे थे कि ३) रु० का घी, २) की चीनी, १) की मेवा, इस तरह से ६) रु० खर्च होंगे तब मेरे मित्र ने कहा—आटा लकड़ी आदि का तो खर्च आप ने शुमार किया ही नहीं, तब मैंने कहा वे तो घर मौजूद हैं, वे कुछ मोल थोड़ा ही लानी हैं कहा भी है कि घर की मुरगी दाल बराबर.

(२३२) घर २ हैं माटी के चूल्हे.

(अभि.) *सब जगह एकसा हाल है.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्र ने मुझ से कहा कि रात हम सरदी से अकड़ गये यदि आप के पास कोई गरम कपड़ा जियादह हो तो हम को दे दिया करो, मैंने कहा—यहां भी कपड़ों की कमी है घर २ माटी के चूल्हे हैं.

(२३३) घर न बार बाहर मियां मुहल्लेदार.

(अभि.) *दरिद्र को अपनी बड़ाई करना.*

(प्रयोग) एक दीन मनुष्य अपनी बड़ाई दूसरी जगह इस विधि कर-रहा था—"मैं एक गांव का मालिक हूं" तब एक मनुष्य, जो इस को जानता था, बोला—अरे तेरा तो वह हाल है कि घर न बार बाहर मियां मुहल्लेदार.

(२३४) घर फूंक तमाशा देखना.

(अभि.) *रुपया ख़र्च करने पर काम होता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने बहुतसा रुपया लगाकर एक निहायत उमदा हवेली बनवाई, उसके मित्र ने एक दिन उससे कहा–मित्र! यह तो बड़ी उमदा हवेली बनवाई तब उसने उत्तर दिया-घर फूंक तमाशा देखना है.

(२३५) घर बार तेरा कोठी कुठले के हाथ मत लगाना.

(अभि.) *नाममात्र को स्वामी बनाना.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने अपने सहायक अध्यापक को स्कूल के सब काम सुपुर्द करदिये, एक बार सहायक अध्यापक ने किसी लड़के का नाम खारिज कर दिया, अध्यापक ने उससे जवाब तलब किया तब उसने बयान किया कि आपने तो मेरी वह मसल करदी कि घरबार तेरा कोठी कुठले को हाथ मत लगाना.

(२३६) घर व्याह बहू कंडों को डोले.

(अभि.) *लापरवाही करना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने बहुतसे मित्रों को अपने घर बुलाकर आप किसी दूसरे साधारण काम को बाहर चलागया और बहुत देर में आया तब मित्रों ने उससे कहा कि तुमने तो यह कहावत करदी कि घर व्याह बहू कंडों को डोले.

(२३७) घर रहे न तीरथ गये मूड़ फोरत मर रहे.

(अभि.) *बे ठिकाने रह कर दुःख उठाना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने यह सोचकर कि रुपया तो हमारे पास बहुत

है भगवत्भजनमें समय ख़र्च करेंगे, नौकरी छोड़दी, भजन भी उससे न होसका इधर उधर व्यर्थ फिरने लगा तब लोगों ने उससे कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि घर रहे न तीरथ गये मूड़ फोरत मर रहे.

(२३८) घाव पर नमक छिड़कना.

(अभि.) *दुखी को और दुःख देना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य का लड़का मरगया था उसी दिन उसके स्वामी ने किसी अपराध पर उसे बर्ख़ास्त कर दिया तब उस आदमी ने स्वामी से कहा–आपने तो घावपर नमक छिड़का.

(२३९) घर के पीरों को तेल का मलीदा.

(अभि.) *घरवालों की कम इज़्ज़त करना.*

(प्रयोग) एक गांव में एक छोटा सा थान माता का बना हुआ था एक लड़की मिठाई लेकर उसको थान पर बांटने को चली तब उसकी असली माता ने कहा–मुझे तो सूखी रोटी देती है उस माता को मिठाई, सच कहा है कि घर के पीरों को तेल का मलीदा.

(२४०) घर में भुनी भांग भी नहीं.

(अभि.) *अधिक कंगाली.*

(प्रयोग) मैंने अपने पड़ोसी से कहा कि अपने यहां से १ सेर गेहूं का आटा ले आ कल देदेंगे उसने उत्तर दिया आप गेहूं का आटा चाहते हैं यहां बाजरे का भी नहीं अर्थात् मेरे घर में तो भुनी भांग भी नहीं.

(२४१) घर का द्वार ख़सम के हाथ.

(अभि.) *जो जीमें आवे सोई करना.*

(प्रयोग) एक स्त्री घर में जो काम जी चाहता अपने आप किसी के बगैर पूछे कर बैठती, एक दिन किसी ऐसे ही कार्य्य के कारण उसकी ननद ने उसे धमकाया कि जो जीमें आवे सो कर बैठती है अबतो घर का द्वार खसम के हाथ है.

(२४२) घोड़ा घास से यारी करै तो खावे क्या ?.

(अभि.) *मज़दूरी लेने में शरम नहीं करनी चाहिये.*

(प्रयोग) हमने अपने पड़ोसी से एक दिन अपना चबूतरा लिपवाया, लीपने के बाद उसने मज़दूरी चाही हमने कहा–तुम तो पड़ोसी हो तुम हम से मज़दूरी लेते हुये अच्छे नहीं मालूम होते, उसने उत्तर दिया–यदि घोड़ा घाससे यारी करे तो खावे क्या.

(२४३) घोड़े से गिरना अच्छा पर नज़रों से गिरना अच्छा नहीं.

(अभि.) *मनुष्य को अपना चाल चलन ठीक रखना चाहिये.*

(प्रयोग) एक लड़का अपनी कुचाल के कारण अपने मा बाप की निगाह से गिर गया था, तब लोगों ने उस लड़के को समझाया कि अपना चाल चलन ठीक करो घोड़े से गिर पड़ना अच्छा पर नजरों से गिरना अच्छा नहीं.

(२४४) घोड़े का सवार ही गिरता है.

(अभि.) *बहादुर हारते भी हैं.*

(प्रयोग) एक पहलवान किसी दूसरे पहलवान से कुश्ती में हारगया उसने शरम के कारण कुश्ती करना छोड़ दिया तब एक मनुष्य ने उसे समझाया कि सवार ही गिरता है, पैराक ही डूबता है.

(२४५) घोड़े को जड़ी जाती थी नाल, मैंडकी ने भी पैर उठाये.

(अभि.) *बड़ों की बेजा नक़ल करके छोटे हानि उठाते हैं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने तिजारत करना शुरू की उसकी देखादेखी एक कंगाल मनुष्य ने भी एक दो रुपये से तिजारत करनी शुरू की, दैवयोग से कंगाल को हानि होगई तब लोगों ने उससे कहा कि तुम्हारी तो वह मसल है कि घोड़े के जड़ी जाती थी नाल मैंडकी ने भी पैर उठाये कि मेरे भी जड़ दे.

(२४६) चट मंगनी पट व्याह.

(अभि.) *काम शीघ्रता से होना.*

(प्रयोग) मैंने अपने मित्र को एक काम ३ घंटे के लिये करने को दिया उसने उसे २ घंटे में ही बहुत अच्छा करके दिखा दिया मैंने काम के शीघ्र करने की सराहना की तब उसने कहा यहां तो वह काम है कि चट मंगनी पट व्याह.

(२४७) चढ़ती जवानी मांझा ढीला.

(अभि.) *जवान लड़के का थोड़े से काम में थकजाना.*

(प्रयोग) एक जवान लड़का हमारे साथ शहर में गया, २ मील चलने के बाद कहने लगा कि मेरी तो कमर दुखने लगी, मैंने कहा—तुम्हारा तो वह हाल है कि चढ़ती जवानी मांझा ढीला.

(२४८) चना गुलाम मुंह लगा बुरा.

(अभि.) *चने को और गुलाम को बहुत मुंह लगाने से हानि होती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य एक दिन बहुत होरा खागया जिससे उसको दस्त होगये तब उसने अपने मित्र से कहा कि चना और ग़ुलाम मुंह लगे बुरे होते हैं.

(२४९) चमड़ी जाय दमड़ी न जाय.

(अभि.) *बहुत लोभ करना.*

(प्रयोग) एक आदमी १ मन बोझ एक मील से अपने सिर पर लारहा था वह आदमी अमीर था उसके मित्र ने उस से पूछा कि दो चार पैसे किसी मज़दूर को देकर क्यों नहीं बोझा लिवा लाये, उसने उत्तर दिया कि किसलिये दो चार पैसे खर्च करें तब उसके मित्र ने कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि चमड़ी जाय दमड़ी न जाय.

(२५०) चलती का नाम गाड़ी है.

(अभि.) *जिसकी चल जाय वही अच्छा.*

(प्रयोग) मैं बहुत दिनों से तिजारत करता था परन्तु दो चार साल से उस में ऐसी हानि हुई है कि मुझे तिजारत बंद करनी पड़ी, मेरे मित्र ने मुझ से पूछा कि अब तिजारत क्यों नहीं करते मैंने कहा-हानि के कारण मेरी तिजारत चलती नहीं तब मित्र ने उत्तर दिया-ठीक है चलती का ही नाम गाड़ी है.

(२५१) चल मेरे चर्खे चरखे चूं कहां की बुढ़िया कहां का तूं.

(अभि.) *दूसरों की बात ध्यान में न लाकर अपना काम बेफिकरी से करना.*

(प्रयोग) एक लुहार अपनी कार रात में बहुत देर तक किया करता था, एक ज़मींदार ने उससे कहा कि दिन भर तो हम खेत में काम करते हैं रात को तेरी खुट २ के कारण नींद नहीं आती लुहार ने कहा क्या मैं अपना काम तुम्हारे सबब से

बंद कर दूंगा इस पर ज़मींदार ने उस का हथौड़ा छीन लिया और धमकाया और कहा–तेरा तो वह हाल है कि चल मेरे चर्खे चरखं चूं कहां की बुढ़िया कहां का तूं.

(२५२) चतुर को चौगुणी मूर्ख को सौगुणी.

(अभि.) *दूसरे के धन का परिमाण बुद्धिमानों को चार गुणा और मूर्खों को १०० गुणा मालूम होता है.*

(प्रयोग) एक जगह बहुतसे मनुष्य बैठे हुए किसी अमीर आदमी के धन के विषय में बात चीत कर रहे थे कोई कुछ बतलाव था कोई कुछ. तब एक मनुष्य ने कहा दूसरे का धन चतुर को चौगुना मूर्ख को १०० गुना मालूम होता है.

(२५३) चमार को अर्श पर भी बेगार.

(अभि.) *दुखिया को उत्तम स्थान में भी दुःख ही मिलता है.*

(प्रयोग) एक विधवा किसी अमीर आदमी के यहां रोटी पोने पर नौकर हुई, गर्मी के दिनों में जब बहुतसी रोटी पोने में दुखी हुई तब कहने लगी कि चमार को अर्श पर भी बेगार.

(२५४) चार दिना की चान्दनी फेर अंधेरी रात.

(अभि.) *थोड़े दिन के लिये आनन्द होना.*

(प्रयोग) एक नायब मुदर्रिस कुछ दिन के लिये एवजी हेडमास्टर होगया, उन दिनों उसने खूब आनन्द उड़ाया. एक दिन उसके मित्र ने कहा कि खूब आनन्द उड़ाते हो यह तो थोड़े दिनों की हेडमास्टरी है फिर वही नियावत अर्थात् चारदिनों की चांदनी फेर अंधेरी रात.

(२५५) चाहे चींकर चाहे मींकर काले २ एक न छोड़ूंगा.

(अ.प्र.) इस कहावत में एक क़िस्सा यह है कि एक काबुली जामन के वृक्ष के नीचे से जामन उठा २ कर खा रहा था. एक भौंरा भी जामनों में मिला हुआ पड़ा था. उसे उठा कर उसने मुंह में दिया जब दांतों में दबा तो उसने चींमीं की आवाज़ करी तब काबुली ने कहा चींकर चाहे मींकर काले २ एक न छोड़ूंगा.

(२५६) चाहे मुर्ग बांग न दे तौभी सवेरा होगा.

(अभि.) *प्राकृतिक कार्य्य दुनियावी कार्य्य के कारण बन्द नहीं होते.*

(प्रयोग) हमने अपने नौकर को आज्ञा दी कि कल १० बजे हमारे यहां उपस्थित होना परन्तु वह १२ बजे आया. कारण पूछनेपर उसने उत्तर दिया ठीक १० बजे फलां स्कूल में घंटी बजती थी मैंने दिल में यह सोचा था कि घंटी बजते ही आप की सेवा में उपस्थित होऊंगा परन्तु वहां तो घंटी अबतक नहीं "बजी" हमनें उसे धमकाकर कहा कि जहां घंटी नहीं बजती क्या वहां दस नहीं बजते. क्या जहां मुर्ग बाँग न देगा वहां सवेरा न होगा.

(२५७) चाकर है तो नाचाकर ना चाकर तो ना नाचाकर.

(अभि.) *नौकरी में आज्ञा उलंघन नहीं करना चाहिये.*

(प्रयोग) एक नौकर अपने स्वामी की आज्ञा नहीं मानता स्वामी ने उसे अलग करदिया तब वह बहुत पछताया तब हमने उसे कहा—चाकर है तो नाचाकर ना चाकर तो ना नाचाकर.

(२५८) चिऊंटी के घर सदा मातम.

(अभि.) हर वक्त कमाने की फ़िक्र.

(प्रयोग) एक अध्यापक १० बजे से ३ बजे तक स्कूल में काम करता शेष समय में ४। ५ ट्यूशन करता था जिसके कारण भोजन तक की फुर्सत उसे नहीं मिलती थी. एक दिन उसने मुझ से कहा कि हमें तो खाने तक की फुर्सत भी नहीं मिलती, मैंने उत्तर दिया कि चिऊंटी के घर सदा मातम.

(२५६) चिराग़ तले अंधेरा.

(अभि.) *दूसरों की बुराई दूर करना अपनी बुराई पर ख़याल भी न करना.*

(प्रयोग) एक डिप्टी इन्सपेक्टर साहिब जब स्कूल का मुआयना करते तब अध्यापकों को धमकाते थे कि तुम्हारे लड़के कुंजियों से याद करते हैं, एक दिन अध्यापकों ने देखा कि डिप्टी साहिब के दोनों पुत्र, जो अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ते थे, कुंजियों से सबक़ याद करते हैं तब अध्यापकों ने आपस में कहा कि डिप्टी साहिब की तो वह मसल है कि चिराग़ तले अंधेरा.

(२६०) चीज़ न रखावे आपनी चोरों को गाली दे.

(अभि.) *अपनी असावधानी से चीज़ गवां देना और दूसरों को दोष देना.*

(प्रयोग) एक स्त्री अपने घर के किवाड़ बंद किये विना बाहर चली गई, पीछे कुत्ता दूध पी गया, जब वह बाहर से आई तो पड़ोसन को गाली देने लगी कि तुम ने कुत्ते को भी नहीं मने किया तब पड़ोसन ने कहा–तुम्हारी तो वह मसल है कि चीज़ न रखावे आपनी चोरों को गाली दे.

(२६१) चील के घर मांस कहां.

(अभि.) *अधिक चाहना में यदि थोड़ी सी प्राप्त हो जावे तो वह सब खर्च हो जाती है.*

(प्रयोग) एक दरिद्री को कहीं से पाव भर मिठाई मिल गई वह उसे उसी वक्त उड़ा गया उसके मित्र ने कहा–थोड़ी सी मिठाई मुझे भी देदो, उसने उत्तर–दिया चील के घोंसले में मांस कहां.

(२६२) चढ़े हलद होवे बलद.

(अभि.) *शादी होते ही लड़की बहुत जल्दी जवान हो जाती है.*

(प्रयोग) दो मनुष्य आपस में एक लड़की के विषय में बात कर रहे थे कि यह लड़की थोड़े से दिन हुए बहुत छोटी सी थी मगर अब एक दम जवान हो गई तब किसी तीसरे मनुष्य ने उन से कहा कि कहावत प्रसिद्ध है कि चढ़े हलद होवे बलद.

(२६३) चलना भला न कोस का बेटी भली न एक, लेना भला न बाप से जो हर राखें टेक.

(अभि.) *पैदल चलना, पुत्री का होना, उधार लेना ये तीनों अच्छे नहीं.*

(प्रयोग) किसी अमीर आदमी को एक दिन एक कोस पैदल चलने का मौका आ पड़ा, उसको १ कोस चलने में बहुत थकान हो गई जिससे उस को ज्वर आ गया तब उस ने यह कहावत कही कि चलना भला न कोसका वगैरह...

(२६४) चींटी के भी पर हुए.

(अभि.) *अंघाई लगी.*

(प्रयोग) एक बहुत सीधा और नेक लड़का था, दूसरे लड़के की देखा-देखी वह भी इतराने लगा तब गुरूजी ने उसे धमकाया कि चींटी के भी पर हुए.

(२६५) चुपड़ी और दो दो.

(अभि.) *उमदा और अधिक.*

(प्रयोग) एक दिन हमारे पास १० नारंगी आईं, हमारे बड़े पुत्र ने बड़ी २ और उमदा ८ छांटलीं तब हमने उससे कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि चुपड़ी और दो २.

(२६६) चुल्लू भर पानी में डूब मर.

(अ. प्र.) *बेशर्म को उसकी बेशर्मी पर धमका कर कहा करते हैं कि चुल्लू भर पानी में डूब मर.*

(२६७) चूहे को मिली हल्दी की गांठ वही पनसारी हो बैठा.

(अभि.) *अयोग्य मनुष्य को अच्छी वस्तु मिलजावे तो वह घमंड करता है.*

(प्रयोग) किसी स्कूल के एक छात्र को गणित के किसी प्रश्नकी अच्छी रीति मिलगई जब और छात्र उससे पूछते तो वह घमंड करता और न बतलाता तब लड़के उससे कहते कि तेरा तो वह हाल है कि चूहे को मिली हल्दी की गांठ वही पन्सारी हो बैठा.

(२६८) चेहरे पर हवाई उड़ना.

(अभि.) *अधिक घबड़ाना.*

(प्रयोग) एक लड़के का चाकू स्कूल में खोगया था उसकी शिकायत होने पर अध्यापक ने सब लड़कों की तलाशी लेनी शुरू की. जिस लड़के की जेब में वह चाकू था उसके चेहरे पर हवाई उड़ने लगी अर्थात् वह घबराया और अंत में उसे सज़ा भुगतनी पड़ी.

(२६९) चूहे का बचा बिल ही खोदता है.

(अभि.) *अपने बड़ों की कार करना.*

(प्रयोग) एक पटवारी का लड़का इंग्रेज़ी में इंट्रेंस पास होगया फिर भी उसने पटवारगीरी की ही नौकरी करने की अर्ज़ी दी, लोगों ने उसका यह हाल देखकर कहा कि चूहे का बच्चा बिलही खोदता है.

(२७०) चोर की डाढ़ी में तिनका.

(अभि.) *चोर अपनी हरकतों से ज़ाहिर करता है कि मैं चोर हूं.*

(प्रयोग) एक दिन हमारे पास एक विद्यार्थी ने सूचना दी कि मेरा चाकू खोया गया है थोड़ी देर बाद दूसरा लड़का आकर रोने लगा और कहने लगा कि मैंने चाकू नहीं उठाया है तब हमने उससे कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है जैसा कि चोर की डाढ़ी में तिनका.

(२७१) चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी जायगा.

(अभि.) *दोषी चाहे बड़े २ दोष न करे परन्तु छोटे २ दोष अवश्य करता है.*

(प्रयोग) एक चोर बड़ी भारी चोरी करने पर सज़ा को गया सज़ा से मुक्त होने पर उसने बड़ी २ चोरियाँ करना छोड़ दिया परंतु

छोटी २ चोरियां करने लगा तो लोगों ने कहा कि चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी जायगा.

(२७२) चोरी और मुँहजोरी.

(अभि.) *अपराध करना और लड़ने पर उद्यत होना.*

(प्रयोग) एक लड़के ने अपने सहपाठी की किताब फाड़दी, उसने पूछा कि तुमने मेरी किताब क्यों फाड़ी है तब इसने उसको गाली दी और कहा—मैंने नहीं फाड़ी, तब उसने कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि चोरी और मुँहज़ोरी.

(२७३) चोर से कहे चोरी कर मालिक से कहे जागता रह.

(अभि.) *दोनों तरफ बजाना.*

(प्रयोग) अगर कोई मनुष्य एक की बुराई दूसरे से और दूसरे की बुराई पहिले से करे तो उसके लिये यह कहावत प्रयोग में आती है.

(२७४) चौबे छब्बे होने गए थे दुबे हो आए.

(अभि.) *उन्नति की कोशिस करनेपर अवनतिको प्राप्त.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने २० रुपया लेकर लाभ की आशापर मेले में दुकान खोली परन्तु उसका रुपया चोर लेगये वह घरपर ५) रु० लेकर आया तो लोगों ने कहा कि चौबे छब्बे होने गये थे दुबे होआए.

(२७५) चोली दामन का साथ है.

(अभि.) *मेल की चीज़ों का एक जगह होना.*

(प्रयोग) एक लड़के ने अपनी वस्तुओं को बेतरतीब रक्खा था तब अध्यापक ने उससे कहा कि मेल की चीज़ों को एकत्रित करो, कहा भी है कि चोली और दामन का साथ है.

(२७६) चोर की मां कोठी में मुँह देकर रोती है.

(अभि.) *अपने सम्बन्धी की बुराई से आदमी अन्तःकरण में दुःख मनाता है.*

(प्रयोग) एक लड़का चोरी के कारण कारागार में भेज दिया गया जब उसके पिता को यह मालूम हुआ तो प्रकट में लोगों से यह कह दिया करे कि वह परदेश में नौकरी करने गया है परन्तु भीतर २ रोया करे तो जो मनुष्य इस भेद को जानता था कहता कि चोर की मां कोठी में मुंह देकर रोती है.

(२७७) चोर २ मौसाइते भैया.

(अभि.) *एक से व्यसन वाले मित्र होते हैं.*

(प्रयोग) दो लड़के जिनके चालचलन की बाबत शुबाह था हरवक्त एक साथ रहते थे एक मनुष्य ने उनकी बाबत किसीसे यह कहा कि क्या कारण है कि ये दोनों साथ रहते हैं तब उसने उत्तर दिया कि चोर २ मौसाइते भैया होते हैं.

(२७८) चौपड़ मीठी हार.

(अभि.) *जुआरी हारने पर बार २ खेलता है.*

(प्रयोग) एक जुआरी १००) रु० लेकर जुआ खेलने गया वह १००) रु० हारगया फिर यह सोचकर कि शायद अबके जीतूं फिर खेलने लगा और हारगया तब एक मनुष्य ने उसे समझाया कि अब मत खेलो क्योंकि चौपड़ मीठी हार होती है.

(२७९) चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भली न काठ.

(अभि.) *उत्तम वस्तु थोड़ी ही सी अच्छी होती है निकम्मी वस्तु बहुत भी अच्छी नहीं.*

(प्रयोग) एक डिप्टी इन्स्पेक्टर ने एक मिडिल स्कूल में मिडिल की कक्षा में ५ लड़के पाए वे पांचों निहायत होशियार थे किसी दूसरे स्कूल में २० लड़के पाए मगर वे सब पढ़ने लिखने में बहुत कमज़ोर थे तब डिप्टी इन्स्पेक्टर ने पहिले मदरसे के लड़कों का ध्यान दिलाकर अध्यापक को समझाया और कहा कि "चंदन की चुकटी भली गाड़ी भली न काठ"

(२८०) छछूंदर के सिर में चमेली का तेल.

(अभि.) *अयोग्य के हाथ अच्छी वस्तु लगना.*

(प्रयोग) एक मेहतर के लड़के को कहीं से रेशमी कोट मिलगया एक दफा वह उसे पहिनकर अकड़ कर जारहा था तब किसी मनुष्य ने उसके विषय में कहा कि छछूंदर के सिर में चमेली का तेल.

(२८१) छठी का दूध ज़बान पर आगया.

(अभि.) *कड़ी मिहनत करनी पड़ी.*

(प्रयोग) एक लड़का नार्मल पास करके अपने गांव गया वहां के लोगों ने उससे पूछा कि नार्मल स्कूल में कितनी पढ़ाई है ? तो उसने उत्तर दिया कि वहां इतनी पढ़ाई है कि मिहनत करते २ छठी का दूध ज़बान पर आगया.

(२८२) छाती पर मूंग दलना.

(अभि.) *शत्रु के मुक़ाबिले में रहना.*

(प्रयोग) दो पड़ौसियों में आपस में शत्रुता होगई एक ने दूसरे के निकालने का बहुतेरा यत्न किया, परन्तु निष्फल हुआ तब दूसरे ने कहा तुम कितना ही यत्न करो मैं तो तुम्हारी छाती पर ही मूंग दलूंगा.

(२८३) छाती पर रखकर कोई नहीं लेगया.

(अभि.) *व्यर्थ लोभ नहीं करना चाहिये.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी अपने खाने पीने में बहुत तंगी किया करता था तब उस के मित्र ने कहा खाने पीने में तंगी मत करो छातीपर धर के कोई नहीं ले जायगा.

(२८४) छींकते ही नाक कटी.

(अभि.) *बुरे काम का फल तुरन्त ही मिला.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने पहली मरतबा ही चोरी करी चोरी करते ही पकड़ा गया और सज़ा पा गया तब लोगों ने कहा कि छींकते ही नाक कटी.

(२८५) छोटा मुंह बड़ी बात.

(अभि.) *योग्यतासे बढ़कर बात कहना.*

(प्रयोग) बड़े २ मनुष्य कुछ सलाह की बातें कर रहे थे उन में एक लड़का बीच में अपनी राय प्रगट करने लगा तब उन लोगों ने उसे समझाया कि तुम्हारा तो वह काम है कि छोटा मुंह बड़ी बात.

(२८६) छोड़े गांव से नाता क्या ?.

(अभि.) *बे संबन्ध मतलब न रखना.*

(प्रयोग) एक लड़के ने मेरे स्कूल से हिन्दी मिडिल पास किया अब वह दूसरे स्कूल में इंग्रेज़ी पढ़ता है उस के बाप ने मुझ से कहा कि आप इस लड़के को छुट्टियों में कुछ पढ़ा दिया करें तब मैंने कहा छोड़े गांव से नाता क्या ?.

(२८७) जगन्नाथ का भात होना.

(अभि.) सब एक रस होना.

(प्रयोग) किसी छात्रालय में भोजन का प्रबंध यह था कि एक ब्राह्मण रसोइया के हाथ की सब लड़के रोटी खाते थे एक मनुष्य ने किसी लड़के से पूछा कि तुम को उस ब्राह्मण के हाथ की रोटी नहीं खानी चाहिये क्यों कि तुम उससे उच्चश्रेणी के ब्राह्मण हो तब उस लड़के ने उस आदमी को उत्तर दिया कि वहां तो सब जगन्नाथ का भात है.

(२८८) जबतक स्वांस तबतक आस.

(अभि.) जबतक स्वांस चलता है तबतक उस से आशाहीन नहीं होना चाहिये.

(प्रयोग) एक लड़का अधिक बीमार होगया उस का पिता उस को अच्छा होता हुआ न जानकर रोने लगा तब लोगों ने उसे समझाया कि जबतक स्वांस चलता है तबतक आशाहीन नहीं होना चाहिये,

(२८९) जब दांत न थे तब दूध दियो जब दांत दियो तो क्या अन्न न दे है.

(अभि.) हमनि में सोच नहीं करना चाहिये.

(प्रयोग) कोई मनुष्य किसी कारण से नौकरी से अलग होगया किसी ने उससे पूछा अब क्या करोगे ? तब उस ने उत्तर दिया परमात्मा खाने को देगा जब दांत न थे तब दूध दियो जब दांत दिये तो क्या अन्न न देगो.

(२६०) जब हाथ लिया कांसा तब रोटियों में क्या सांसा ?.

(अभि.) *जब मांगना ही शुरू किया तब रोटियों में क्या संदेह ?.*

(प्रयोग) कोई भिखारी भीख मांगता फिरता था किसी ने उससे पूछा कि तुम को इस क़द्र आटा मिलता कि नहीं जो खाने पीने का पूरा परजावे तब उसने उत्तर दिया कि जब हाथ लिया कांसा तब रोटियों में क्या सांसा.

(२६१) जल में रहना मगरमच्छ से वैर.

(अभि.) *स्वामी से बिगाड़ करने में नुक्सान होता है.*

(प्रयोग) एक नायब अपने हेडमास्टर से लड़ाई किया करता था तब उसके मित्र ने उसे समझाया कि स्वामी से लड़ाई मत किया करो क्यों कि कहावत है कि "जल में रहना और मगर मच्छ से वैर".

(२६२) जले वह सोना जिससे टूटे कान.

(अभि.) *ऐसी सजावट व्यर्थ है जिससे हानि हो.*

(प्रयोग) इसका प्रयोग आकार के वर्णन में होचुका है.

(२६३) जलेपर नमक छिड़कना.

(अभि.) *दुःख पै दुःख देना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने रोज़गार से अलग होगया था जिसके कारण वह बहुत दुखी रहता था इसी बीच में किसी ने उसे खबर दी कि तुम्हारा लड़का मरगया तब वह रोकर कहने लगा कि तुमने तो और जलेपर नमक छिड़का.

(२६४) जहां रूख नहीं वहाँ रेंड़ ही रूख.

(अभि.) जहां विद्वान् नहीं होता वहां एक थोड़ा विद्वान् ही अधिक विद्वान् समझा जाता है.

(प्रयोग) एक थोड़ीसी संस्कृत पढ़ा हुआ मनुष्य एक गांव में बहुत सत्कार के साथ पुजता था उसके विषय की चर्चा करते हुए लोगों ने कहा कि सच है जहां रूख नहीं तहां रेंड़ ही रूख होता है.

(२६५) जहां जाय भूखा तहां परे सूखा.

(अभि.) दुखिया सब जगह दुख पाता है.

(प्रयोग) एक भूखा मनुष्य नौकरी की तलाश में कई जगह गया, मगर उसे कहीं नौकरी न मिली तब उसने अपने दिल में कहा कि यह कहावत सच है कि जहां जाय भूखा तहां परे सूखा.

(२६६) जबतक जीव कुरंग में तबतक वीण बजाय.

(अभि.) मनुष्य मरता २ भी अपने प्रियको नहीं भूलता.

(प्रयोग) एक मनुष्य मरते समय अपने उस पुत्र को याद कर रहा था जो परदेश में था तब लोगों ने उससे कहा राम को याद करो जब बाहर इस बात की चर्चा हुई तब लोगों ने कहा कि सच है जबतक जीव कुरंग में तबतक वीण बजाय.

(२६७) ज़बरदस्त का ठेंगा सिरपर.

(अभि.) *स्वामी की उचित अनुचित नहीं चाहिये सब माननी पड़ती है.*

(प्रयोग) मुझ से एक मनुष्य ने अपने स्वामी की निस्बत कहा कि हमारा स्वामी कभी कुछ आज्ञा देता है कभी कुछ, उस का भेद ही समझ में नहीं आता तब मैंने उसे समझाया कि ज़बरदस्त का ठेंगा सिरपर.

(२६८) ज़बान शीरी मुल्कगीरी.

(अभि.) *सबसे सर्वदा प्रिय वचन बोलो.*

(प्रयोग) मेरा लड़का बी. ए पास कर के नौकरी पर जाने लगा तब मैंने उसे नसीहत की कि बेटा! "जबान-शीरी मुल्कगीरी" अर्थात् सबसे प्रिय वचन बोलना.

(२६९) ज़बान ही हाथी चढावे ज़बान ही सिर कटवादे.

(अभि.) *ज़बान से जो बात निकालो खूब सोच विचारकर निकालो.*

(प्रयोग) एक क़ैदी किसी मनुष्य की गवाही देने से फांसी से बच गया तब लोगों ने उस की सराहना करते हुए कहा कि ज़बान ही हाथीपर चढ़ा दे ज़बान ही सिर कटवादे.

(३००) ज़र को ज़र खींचता है.

(अभि.) *रुपये ही से रुपया कमाया जाता है.*

(प्रयोग) एक दीन मनुष्य ने ५००) रु० उधार लेकर दूकान खोली, कुछ तो दूकान में हानि हुई कुछ ५००) रु० का व्याज चढ़ा तब बहुत दुखी हुआ लोगोंने उसे समझाया कि घर का ज़र जर खेंचता है अर्थात् जो मनुष्य घर का रुपया खर्च करते हैं वे ही कमाते हैं.

(३०१) ज़र तो नर, नहीं तो खर.

(अभि.) *धन विना मनुष्य की प्रतिष्ठा नहीं होती.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी बहुत अच्छी गाड़ी में सवार हुआ जा रहा था उसके नौकर उसे पंखा झलते जा रहे थे तब एक दरिद्री मनुष्य जो बड़े बोझ की गठरी सिरपर रखकर पैदल दुखी होता हुआ जा रहा था उस अमीर आदमी को देखकर मन में कहने लगा कि ज़र है तो नर, नहीं तो खर.

(३०२) ज़र नेस्त इश्क टैं टैं.

(अभि.) *धनहीन का टीपटाप दिखाना.*

(प्रयोग) एक १०) रु० मासिक वेतनवाला अध्यापक अपने साथी से कहरहा था कि अब की तनख्वाह मिलने पर ५) रु० का जूता ४) की टोपी खरीदूंगा तब उसके साथी ने उत्तर दिया कि तुम्हारा तो वह हाल है कि ज़र नेस्त इश्क टैं टैं.

(३०३) जबतक कानी सिंगार करेगी तबतक पैंठ भी उखड़ जायगी.

(अभि.) *अपने ही कार्य में समय व्यतीत करना.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी ने अपने सहपाठी से एक प्रश्न घरपर पूछा सहपाठी ने उत्तर दिया कि पहिले मैं अपना काम कर लूं तब समझाऊंगा तब उस ने कहा कि जबतक तुम अपना काम करोगे तबतक तो स्कूलटाइम की भी घण्टी हो जायगी, अर्थात् "जबतक कानी *सिंगार करेगी तबतक पैंठ* भी उखड़ जायगी.

(३०४) जागते की कटिया सोते का कटड़ा.

(अभि.) *कार्य की सफलता पर जो मौजूद होता है उसको सब से ज्यादा लाभ मिलता है.*

(प्रयोग) एक आदमी तिजारत करने के लिये खुद माल खरीदने व बेचने गया, उसको बहुत नफ़ा हुआ और दूसरे आदमी ने यही काम अपने नौकरद्वारा कराया, तो वह नुक़सान में रहा। जब दोनों व्यौपारी आपस में मिले और इस बात की चर्चा चली तब पहले ने दूसरे से कहा "जागते की कटिया सोते का कटड़ा".

(३०५) जागे सो पावे सोवे सो खोवे.

इसका अर्थ व प्रयोग वही है जो नं ३०४ का है.

(३०६) जाट मरा जब जानिये जब तेरहवीं होजाय.

(अभि.) *जाट का वादा पक्का जब समझना चाहिये जब वह काम पूरा हो जाय.*

(प्रयोग) एक जाटपर हमारे ५) रु० चाहते थे जब हम उससे मांगते तब आजकल का वादा करता था, मगर देता न था हमने यह हाल अपने मित्र को सुनाया, तब मित्र ने कहा कि "जाट मरा जब जानिये, जब तेरहवीं होजाय".

(३०७) जाट की बेटी सुन्दर नाम.

(अभि.) *नीच मनुष्य का नखरा ज़ाहिर करना.*

(प्रयोग) एक मज़दूर को हमने खेत काटने को लगाया दो घंटे बाद कहने लगा कि मैं तो थक गया, तब हमने उससे कहा कि तेरा तो वह हाल है, "जाट की बेटी सुंदर नाम".

(३०८) जात पांत पूँछे ना कोय, हरको भजे सो हरका होय.

(अभि.) *परमेश्वर के यहां सब बराबर है.*

(प्रयोग) एक कुम्हार भगवतभजन किया करता था एक ब्राह्मण ने उससे कहा भजन करने से तू ऊंच जात नहीं होगा तब कुम्हार ने कहा, "जात पांत पूँछे ना कोय हरको भजे सो हरका होय".

(३०९) जान के लाले पड़ना.

(अभि.) *बड़ा दुःख उठाना.*

(प्रयोग) एक आदमी मेला देखने गया, वहां पर आदमी की इस क़द्र भीड़ थी कि वहां पर जाना बड़ा ही मुश्किल था। उसने बहुत तक़लीफ उठाई, मगर मेला भी न देख सका। जब वह घर आया और घर के लोगों ने मेले का हाल पूछा। तब उसने उत्तर दिया कि वहां तो जान के लाले पड़रहे हैं.

(३१०) जान न पहचान, बड़ी खालाजी सलाम.

(अभि.) रूखापन जाहिर करना.

(प्रयोग) एक आदमी कहीं यात्रा को गया था वहां रास्ते में किसी गांव में ठहर गया जिनके यहां ठहरा था उनसे अपने आराम के लिये सामान मांगने लगा तब उसने कहा जान न पहचान बड़ी खालाजी सलाम.

(३११) जान है तो जहान है.

(अभि.) *दुनियां का आनन्द शरीर के साथ है.*

(प्रयोग) एक बुड्ढे आदमी से किसी लड़के ने यह बात कही कि यहां पर रेल निकलने वाली है जिससे हमको बड़ा आनंद हो जायगा तब बुड्ढे ने कहा जबतक मैं जिंदा रहा तो मैं यह आनंद देखही लूंगा नहीं तो नहीं, कहा भी है कि "जान है तो जहान है."

(३१२) जान पर नौबत आगई.

(अभि.) मरने का अंदेशा होगया.

(प्रयोग) एक मनुष्य को उसके शत्रुओं ने घेर लिया तब उस ने अपने दिल में सोचा कि अब तो जानपर नौबत आगई तब डंडा लेकर उस ने एक को मारा और फिर भागने का मौक़ा मिलते ही भाग गया.

(३१३) जा विधि राम राखे ता विधि रहिये.

(अभि.) *दुःख में सन्तोषजनक यह कहावत है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य की धनहानि और मनुष्यहानि दैवयोग से हो गई उसके मित्र ने तसल्ली देने निमित्त यह कहावत उससे कही.

(३१४) जाकर जिहिंपर सत्य सनेहू सो तिहिं मिलि है न कुछ सन्देहू.

(अभि.) *जिस वस्तुपर सच्चा स्नेह हो वह अवश्य मिलती है.*

(प्रयोग) हमारे मित्र के पास एक निहायत अच्छी वस्तु थी उस वस्तु के ऊपर हमारा सच्चा प्रेम था, परन्तु हम मित्र से मांगना पसंद नहीं करते थे थोड़े दिनों पीछे हमारे मित्र की बदली होगई और हमारे मित्र ने वही चीज़ हम को विना मांगे दे दी तो हमें यह चौपाई याद आई.

(३१५) जामन होय मलीन, पर सम्पदा सहै न.

(अभि.) *जिस का मन मैला होता है वह दूसरों की बढ़ोतरी नहीं देख सकता.*

(प्रयोग) एक ज़मीदार के यहां बहुतसा अनाज और घास पैदा हुआ उसने अपने मकान के पास घास की ढेरी लगादी एक मैले दिल के आदमी ने जो ज़मीदार की बढ़ोतरी देखकर जलता था उस घास में आग लगादी जब लोगों को यह भेद मालुम हुआ तब उन्होंने कहा कि यह कहावत सच है कि "जा मन होय मलीन, पर संपदा सहै न".

(३१६) जाको राखे साइयाँ, मारि न सकि है कोय।
बार न बांका करिसकै, जो जग बैरी होय ॥

(अभि.) *परमात्मा जिसकी रक्षा करता है उसको कोई नहीं मार सक्ता.*

(प्रयोग) मैं एक दिन सड़क पर टहल रहा था दैवयोग से मेरे पैरों के नीचे एक साँप आगया, मगर वह मुझे काट नहीं सका यह हाल मैंने अपने मित्र से कहा तब मेरे मित्र ने कहा "जाको राखे साइयाँ" आद्योपांत.

(३१७) जिसका खाइये टूका, उसका गाइये गीता.

(अभि.) *जिसका खाना उसका बजाना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने अफसर की बहुत बुराई करता था एक बुद्धिमान मनुष्य ने उसे समझाया कि जो तुम्हें खाने को देता है उसीकी बुराई करते हो तुम्हें ऐसा नहीं चाहिये तुम्हें तो उसकी बड़ाई करनी चाहिये देखो कहा भी है कि "जिसका खाइये टूका, उसका गाइये गीता".

(३१८) जिसके पाँय न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई.

(अभि.) *जिसपर मुसीबत पड़ती है वही जानता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य के घर में चोरी होगई थी सब माल उसका जाता रहा था उसके मित्र ने आकर उससे कहा चलो बाज़ार का तमाशा देख आवें तब उसने उत्तर दिया कि "जिसके पांय न फटी" आदि.

(३१९) जितने मुँह उतनी बातें.

(अभि.) *न्यारी २ सलाह देना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने बहुत से मनुष्यों से एक मामले में सलाह ली सब ने न्यारी २ सलाह दी तब उसने अपने दिल में कहा कि यहां तो जितने मुँह उतनी बातें हैं इसीलिये मुझे अपनी अक़ल से काम करना चाहिये.

(३२०) जिसकी लाठी उसकी भैंस.

(अभि.) *बलवान् ही की जीत होती है.*

(प्रयोग) एक बलवान मनुष्य और एक निर्बल की लड़ाई होगई बलवान ने निर्बल को खूब पीटा और यह मामला जब सरकार में चला तो गवाहों ने गवाही भी बलवान ही की तरफ़दारी में दी तब दुर्बल मनुष्य ने कहा कि ठीक है. "जिसकी लाठी उसकी भैंस".

(३२१) जिसको पिया चाहे, वही सुहागन.

(अभि.) *जिसको मालिक चाहे वही अच्छा नौकर.*

(प्रयोग.) एक अफ़सर के कई नायब थे वह अफ़सर छोटे नायब से बहुत प्रसन्न रहता था किसी मौक़े पर छोटे नौकर को तरक़्क़ी

देदी बाकी सब देखते रहगए और कहने लगे कि सच "जिसको पिया चाहै, वही सुहागन".

(३२२) जितना गुड़ डालोगे, उतना ही मीठा होगा.

(अभि.) *अधिक खर्च करने से काम अच्छा बनता है.*

(प्रयोग.) हमने किसी छापेखाने के मैनेजर से कहा कि हमारी पुस्तक कम ख़र्च में अच्छी छाप देना तो उसने कहा कि साहब "जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा" अर्थात् जितना अधिक ख़र्च करोगे उतना ही कार्य अच्छा बनेगा.

(३२३) जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ.

(अभि.) *परिश्रम का फल अवश्य मिलता है.*

(प्रयोग.) एक लड़के ने मिडिल का इम्तिहान कई बार दिया, परन्तु वह फेल ही होता गया एक दूसरे लड़के ने एकही बार के इम्तिहान में पास कर लिया तो फेल लड़का बोला भाई मेरी क़िस्मत ही ऐसी कि मैं पास ही नहीं होता तो पास लड़के ने कहा कि भाई" जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ".

(३२४) जिस राह नहीं जाना, वहाँ की कोस गिनने से क्या फायदा.

(अभि.) *व्यर्थ बातें नहीं करनी चाहिये.*

(प्रयोग.) एक दरिद्री ने हम से पूछा कि तुम्हारे शहर में सोना, चांदी का क्या भाव है हमने उससे कहा कि तुम कितना सोना चांदी खरीदोगे उसने बयान किया कि मुझे खरीदना तो नहीं है वैसे ही भाव पूँछ रहा हूँ तब मैंने कहा कि "जिस राह नहीं जाना वहां की कोस गिनने से क्या लाभ".

(३२५) ज़िन्दा दर गोर होना.

(अभि.) अधिक मुसीबत में होना.

(प्रयोग) मेरे मित्र का किसी दूसरी जगह तबादला होगया था बहुत दिनों पीछे वह मुझसे मिला और अपना हाल वह इस तरह बयान करने लगा कि वहाँ खाने, पीने नहाने आदि तक की भी तकलीफ़ है यानी हम तो वहाँ "ज़िन्दा दरगोर हैं".

(३२६) जिसका बनियां होगया यार, उसको दुशमन क्या दरकार.

(अभि.) बनिये से उधार लेन देन न करना चाहिये.

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी बनिये की दूकान से सामान उधार लेकर खाता रहा और अपनी आमदनी के रुपये बनिये को देता रहा कुछ वर्षों बाद उस मनुष्य पर ब्याज वग़ैरः बढ़कर अधिक कर्ज़ा होगया अंत में बनिये ने नालिश करके उसके घर पर भी क़ब्ज़ा कर लिया तब लोगों ने उस मनुष्य से कहा कि "जिसका बनियां होता यार, उसको दुशमन क्या दरकार".

(३२७) जिसकी उतरगई लोई, उसका क्या करेगा कोई.

(अभि.) बेशर्म मनुष्य का कोई कुछ नहीं कर सक्ता.

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपने पुत्र को खोटी संगत में बैठने से बहुत रोका पर वह नहीं माना और उलटे जवाब देने लगा तब उस मनुष्य ने अपने पुत्र से कहा कि "जिसकी उतरगई लोई, उसका क्या करेगा कोई".

(३२८) जीवे मेरा भाई, तो घर २ हैं भौजाई.

(अभि.) *असल वस्तु के होते हुए उसकी सम्बंधी जीजें आसानी से मिलजाती है.*

(प्रयोग) एक व्यौपारी ने एक जगह से व्यौपार में थोड़ासा नफा उठाया, मगर वह नफा किसी शख्सने मार लिया तब लोगों ने व्यौपारी से कहा कि क्या तुमको इसका अफ़सोस नहीं हुआ ? तब व्यौपारी ने कहा कि हमारा रुपया और व्यौपार बना रहे हमको ऐसे २ नफे बहुत मिलेंगे कहा भी है कि "जीवे हमारा भाई, तो घर २ हैं भौजाई".

(३२९) जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई.

(अभि.) *बलवान के सब साथी होते हैं.*

(प्रयोग) एक थानेदार और एक मनुष्य में लड़ाई होगई जब उनका मुक़द्दमा कचहरी में गया तब थानेदार को बहुत से गवाह मिल गए और उसे एक भी न मिला तब उसने कहा कि "जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई".

(३३०) जीते बाप को लात और मरे को भात.

(अभि.) *अपने बड़ों की सेवा करना चाहिये.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने बूढ़े पिता को बहुत दुखी रखता था और कभी २ गुस्से में आकर उसे गाली तक दे बैठता था और खाने को रूखा सूखा भोजन देता था जब उस बूढ़े का देहान्त होगया तब वह मनुष्य उसके नामके ब्राह्मण जिमाया करता था तब लोग उस मनुष्य के वास्ते कहते थे कि इस मनुष्य का वह हाल है कि "जीते बाप को लात और मरे को भात".

(३३१) जिसके पैसा नाहीं पास, उसको मेला लगै उदास.

(अभि.) *बिन धन सब सूना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बग़ैर कुछ पैसे लिए मेला देखने गया वहां पर भांति २ की चीज़ें देखकर इसके दिलको बड़ा रंज हुआ और अपने दिल में कहने लगा कि "जिसके पैसा नाहीं पास उसको मेला लगै उदास".

(३३२) जिय बिनु देह नदी बिनु वारी, तैसेहि नाथ पुरुष बिन नारी.

(अभि.) *अपने स्वामी के बिना स्त्री की शोभा नहीं होती.*

(प्रयोग) यह जानकीजी ने रामचन्द्रजी के साथ बनजाने के लिये कहा था.

(३३३) जैसा देश वैसा भेष.

(अभि.) *जैसा मौक़ा हो वैसा ही करना.*

(प्रयोग) मेरा एक मित्र जो बड़े स्नान ध्यान के पश्चात् कपड़े निकालकर बड़ी स्वच्छता से भोजन किया करता था दैवयोग से उसका परिवर्त्तन ठंडेमुल्क में होगया वहां पर यह नियम उसका छूटगया हमने पूछा क्यों ? मित्र यहां तुम्हारे स्नान ध्यान क्या हुए तब उसने उत्तर दिया कि जैसा देश वैसा भेष.

(३३४) जैसी बहै बयार, पीठि तब तैसी दीजै.

(अभि.) इसका अभिप्राय और प्रयोग वही है जो नं० ३३३ का है.

(३३५) जैसी रूह वैसे ही फरिश्ते.

(अभि.) *दोनों एकसे.*

(प्रयोग) एक डिप्टीइन्स्पेक्टर मदारिस अध्यापकों के साथ बड़ा सख्त बर्ताव करते थे उनके सब डिप्टीइन्स्पेक्टर भी वैसे ही थे अध्यापक उनके वास्ते यह कहा करते थे कि जैसी रूह वैसे ही फरिश्ते।

(३३६) जैसे स्वामी वैसे सेवक.

(अभि.) *इसका अभिप्राय व प्रयोग नं० ३३५ में देखो.*

(३३७) जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ.

(अभि.) *इसका अभिप्राय व प्रयोग नं० ३३५ के अनुसार ही है.*

(३३८) जैसे कंथा घर रहे वैसे रहे विदेश.

(अभि.) *निकम्मे का घर रहना और बाहर रहना बराबर है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बड़ा आलसी था कोई भी काम घरका नहीं करता था उसकी स्त्री ने उससे कहा कि प्रातःकाल उठकर गायों को दूह लिया करो उसने उत्तर दिया कि ये काम मैं नहीं करूंगा फिर वह मनुष्य दो चार दिन के लिये कहीं चला गया और आकर अपनी स्त्री से पूछा कि मेरे पीछे गाय किसने दूही तब उस स्त्री ने उत्तर दिया कि तुम्हें क्या मतलब तुम्हारा तो वह हाल है कि जैसे कंथा घर रहे वैसे रहे विदेश.

(३३९) जैसी तेरी कोमरी वैसे मेरे गीत.

(अभि.) *जैसा खर्च वैसा काम.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी ने अपना लड़का प्राइवेट तौर से एक अध्यापक के सिपुर्द किया और ५) रु० महीना ठहराया दो महीने पीछे उस आदमी ने अपने लड़के को बहुत तरक्की न करते देखकर अध्यापक से कहा कि आपने तो इसे कुछ पढ़ाया ही नहीं तब अध्यापक ने उत्तर दिया जैसी तेरी कोमरी वैसे मेरे गीत.

(३४०) जैसे गंगा नहाये तैसे फल पाये.

(अभि.) *जैसा किया वैसा पाया.*

(प्रयोग) एक लड़का पढ़ने में परिश्रम नहीं करता था अध्यापक उसे बार २ समझाता था, मगर वह कुछ खयाल न करता था परीक्षा में वह लड़का फेल हो गया और बहुत कुछ रोने चिल्लाने लगा तब अध्यापक ने उस से कहा कि जैसे गंगा नहाये वैसे फल पाये अर्थात् जैसी तुमने मिहनत की थी वैसे ही पास हुए.

(३४१) जैसी करनी वैसी भरनी.

(अभि.) *इस का अभिप्राय व प्रयोग नं० ३४० में होचुका है.*

(३४२) जैसी नीयत वैसी बरकत.

(अभि.) *इस का भी अभिप्राय व प्रयोग वही समझना चाहिये जो नंबर ३४० में हुआ है.*

(३४३) जैसा सोता वैसी धारा.

(अभि.) *जैसी आमद वैसी ही शोभा.*

(प्रयोग) हमारा मित्र ५०) रु० माहवार पर डिप्टी इन्सपेक्टर मदारिस है उस ने अपनी सवारी के लिये एक मरियलसा ऊंट रक्खा हमने उन से कहा कि डिप्टी इन्सपेक्टर होकर तुम को यह दुबला पतला ऊंट शोभा नहीं देता तो उसने उत्तर दिया कि जैसा सोता वैसी धारा अर्थात् जैसा मेरा थोड़ा वेतन वैसा मेरा ऊंट.

(३४४) जो कोई किसी के लिये गढ्ढा खोदता है उसके लिये कूप तैयार है.

(अभि.) *जो किसी का थोड़ासा नुक़सान करता है उस का परमात्मा की ओर से अधिक नुक़सान होता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य रात के वक़ अपने शत्रु को मारने के लिये जा-रहा था रास्ते में उस को सांप ने काटखाया और वह मर-गया तब उसके शत्रु ने लोगों से कहा कि यह कहावत बिलकुल ठीक है कि खाड़ खने जो और को ताको कूप तयार.

(३४५) जो ख़ाल हद से गुज़रा वह बेशक मसा हुआ.

(अभि.) *सुन्दर चीज़ अपनी सीमा से बड़ी हो जायगी तो बुरी मालूम होगी जैसे ख़ाल (तिल) बढ़कर मस्सा कहलाने लगता है.*

(प्रयोग) एक अध्यापक का अपने नायबों के साथ में बहुत ही नर्मी का बर्त्ताव था जिस से वे नायब लोग उस से बिलकुल डरते ही न थे न स्कूल का काम ही अच्छा करते थे वहां के

डिप्टी-इन्सपेक्टर को जब यह भेद मालूम हुआ तब उसने अध्यापक को समझाया कि जो खाल हद से गुज़रा वह बेशक मला हुआ.

(३४६) जो चढ़ेगा वह गिरेगा.

(अभि.) *जिस कार्य में नफ़ा होता है उसमें कभी हानि भी होजाया करती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य तिजारत के कारण बड़ा भारी अमीर होगया था इस साल उसको रुई के व्यापार में बड़ी भारी हानि हुई उसने बहुत रंज किया तब उसे हमने समझाया कि जो चढ़ेगा वह गिरेगा.

(३४७) जो चोरी करता है वह मोरी भी रखता है.

(अभि.) *बुरा काम करने वाला अपना बचाव भी सोचलेता है.*

(प्रयोग) किसी महक्मे का एक नौकर बहुतसा सरकारी रुपया ग़बन करगया जब उसपर मुक़द्दमा कायम हुआ तब उसने ऐसे २ सबूत दिये कि वह साफ़ बचगया तब लोगों ने उसके लिये कहा कि जो चोरी करता है वह मोरी भी रखता है.

(३४८) जो बिंधगया सो मोती.

(अभि.) *जो समयपर काम आया वही अच्छा.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने मुझ से कहा कि एक लड़का जो सब से होशियार था वह फ़ेल होगया और जो उससे कमज़ोर लड़का था वह पास होगया तब मैंने कहा कि बिंधगया सो मोती.

(३४९) जो बोवेगा सो पावेगा.

(अभि.) *जैसा काम करोगे वैसा फल मिलेगा.*

(प्रयोग) नं० ३४७ का देखो.

(३५०) जोगी किसके मीत और पुतरिया किसकी नार.

(अभि.) *जोगी और वेश्या किसी से प्रीत नहीं रखते.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बड़ा अमीर था उसके पीछे वेश्यागमन करने का दोष बड़ा भारी था इस कारण वह इतना धनहीन होगया कि खाने तक को भी मोहताज़ होगया तब वेश्या ने भी अपने यहाँ आने को मने करदिया तब उसने कहा कि यह कहावत सच है कि जोगी किसके मीत ? और पुतरिया किसकी नार ?.

(३५१) जोड़ २ मर जायंगे माल जमाई खायंगे.

(अभि.) *कंजूस का माल दूसरे ही खाते हैं.*

(प्रयोग) एक कंजूस आदमी बड़ा अमीर होगया था हमने उससे एक दिन कहा कि तुम गोशाला के चंदे में ।) देदो उसने मने करदिया तो हमने कहा कि तुम्हारा तो वही हाल है कि जोड़ २ मर जायंगे माल जमाई खायंगे.

(३५२) जोरू न जाँता अल्लाह मियाँ से नाता.

(अभि.) *विना स्त्री के घरपर कुछ काम न होना और भगवद्भजन में समय व्यतीत करना.*

(प्रयोग) हमारे एक मित्रने हमने कहा कि तुम दिनभर घर के धंधों में फँसे रहते हो कभी टहलते भी नहीं और हम दिनभर घूमते फिरते हैं तब हमने कहा तुम्हारा तो वह हाल है कि जोरू न जाता अल्लाह मियां से नाता अर्थात् तुम्हारे भी स्त्री होती तो तुम भी हमारी तरह घर के धंधों में फसे रहते.

(३५३) जो तोकूं काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल.

(अभि.) *जो तेरा बुरा चाहे तू उसके साथ भलाई कर.*

(प्रयोग) हम एक दिन अपने शत्रु के साथ बहुत बड़ी बुराई करने को तैयार थे हमने अपने मित्र से यह भेद कहा तब मित्र ने हमें समझाया कि जो तुम्हारे साथ बुराई करे उसके साथ भलाई करो.

(३५४) जो बोले सो तेल को जाय.

(अभि.) *जो बतलावे वही काम करे.*

(प्रयोग) हमने लड़कों से कहा कि हमारे मित्र का घर कौन जानता है ? उनमें से एक ने कहा कि मैं जानता हूं तब हमने उसी से कहा कि तू जाकर हमारे मित्र को दो सेर मिठाई देआ तब उस लड़के ने साथियों से कहा कि भाई यह तो वही मसल हुई कि जो बोले सो तेल को जाय.

(३५५) जोगी था सो उठगया आसन रही भभूत.

(अभि.) *आदमी के मरने के पीछे उस का काम ही दीखता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने मित्र के मरजाने पर उसकी बनाई हुई चीज़ों को देख२ कर उसको याद किया करता था तब हम ने उस से कहा कि तुम्हारा रंज करना व्यर्थ है क्योंकि जोगी था सो उठगया आसन रही भभूत.

(३५६) जौ २ हिसाब सौ २ बख़्शिश.

(अभि.) *हिसाब साफ़ रखना.*

(प्रयोग) मैंने बाज़ार में कोई वस्तु २ पैसे में खरीदी थी मेरे पास पैसे नहीं थे अपने मित्र से पैसे लिये थे जब मैं अपने मित्र

को २ पैसे देने लगा तब उसने कहा २ पैसे का क्या लेना तब मैंने कहा मित्र ! जौ २ हिसाब सौ २ बख़्शिश अर्थात् तुम्हें यह लेना पड़ेगा.

(३५७) जंगल में मोर नाचा किसने देखा.

(अभि.) *बे मौक़ा शोभा दिखाने से क्या लाभ.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी दूसरे गाँव में अध्यापक था उसने अपनी पुत्री की शादी वहीं पर की, खूब शोभा दिखलाई, बहुत अच्छा कन्यादान में दिया वह अपनी इस बातकी बड़ाई अपने गाँव में कर रहा था तब गांव के लोगों ने कहा जंगल में मोर नाचा किसने देखा.

(३५८) ज्यों ही सिर मुंड़ाया ओले पड़े.

(अभि.) *काम करते ही विघ्न हुआ.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने तिजारत करनी शुरूकी ४ हज़ार रुपये की रुई भरली दैवयोगसे अग्नि में सब रुई स्वाहा होगई तब बहुत कुछ रंज करने लगा और कहने लगा हमारा तो यह हाल होगया कि ज्योंही सिर मुंड़ाया ओले पड़े.

(३५९) जहां मुर्गा नहीं वहां क्या सबेरा नहीं होता.

(अभि.) *कोई काम किसी के विना नहीं रुकता.*

(प्रयोग) हम अपने लड़के की शादी में दो चार अपनी बिरादरी के मनुष्यों को मनारहे थे, मगर वे मानते नहीं थे तब और लोगों ने हमसे कहा कि अगर वे मनुष्य तुम्हारे पुत्र की शादी में नहीं जावेंगे तो क्या ब्याह नहीं होगा ? क्यों इन की इतनी ख़ुशामद करते हो क्या जहां मुर्गा नहीं वहां सबेरा नहीं होता.

(३६०) टके की मुर्गी ६ टके महसूल.

(अभि.) *थोड़ी कीमत की चीज़पर अधिक ख़र्च चाहना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने १) गजका कपड़ा कोट के लिये ख़रीदा दर्ज़ी के यहां लेगया उसने नापने के पीछे कहा कोट पतलून की सिलाई ३) रु० लूंगा तब उस मनुष्य ने कहा तुम्हारा तो वह काम है कि टके की मुर्गी ६ टके महसूल.

(३६१) टट्टी की आड़ शिकार खेलना.

(अभि.) *आड़ में बुरा काम करना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य कहीं आड़ में बुरा कार्य्य करते पाया गया उस के मित्र ने उसे देख लिया तब उस से कहा तुम तो खूब टट्टी की आड़ में शिकार खेलते हो.

(३६२) टके की बुढ़िया ६ टका मूंड़ मुंड़ाई.

(अभि.) *इस का अर्थ और प्रयोग वही है जो नं० ३६० में बयान हुआ है.*

(३६३) टके के वास्ते मस्जिद ढाना.

(अभि.) *थोड़े लोभ के लिये अनुचित काम करना.*

(प्रयोग) एक लुहार को अपने किसी कार्य्य के लिये थोड़े से लोहे की आवश्यकता थी वह उस के लिये रेल की पटरी उखाड़ने लगा उस को एक आदमी ने यह काम करते हुए देखकर कहा तुम्हारा तो वह काम है कि टके के लिये मस्जिद ढाना.

(३६४) टेढ़े पेड़ की छाया भी टेढ़ी होती है.

(अभि.) *बुरी चीज़ का प्रभाव भी बुरा होता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य का चालचलन खराब था उस की देखा देखी उसकी औलाद भी चालचलन में खराब होगई तब लोगों ने कहा कि टेढ़े पेड़की छाया भी टेढ़ी होती है.

(३६५) टूटे टूटनहार तरु वायुहिं दीजत दोष.

(अभि.) *होनहार अवश्य होती है किसी को दोष नहीं देना चाहिये.*

(प्रयोग) किसी आदमी का लड़का बहुत बीमार था एक वैद्यजी उस की औषधि कररहे थे, मगर कुछ आराम नहीं हुआ और वह लड़का मरगया तब वह आदमी कहने लगा कि इस वैद्य का दोष है इसने मेरे लड़के को अच्छी औषधि नहीं दी तब वैद्यजी ने कहा टूटे टूटन हार तरु वायुहिं दीजत दोष.

(३६६) डरा सो मरा.

(अभि.) *डरना नहीं चाहिये.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने जब अपने लड़के परीक्षा के लिये कमरे में भेजे तो उन को समझाया कि बेधड़क पर्चे हल करना, डरकी कोई बात नहीं कहावत भी है कि डरा सो मरा,

(३६७) डरे लोमड़ी से, नाम दलेरखां.

(अभि.) *नाम के बराबर गुण नहीं होना.*

(प्रयोग) इसका प्रयोग वही है जो कहावत "आंख के अंधे नाम नैन सुख" का है जो बयान हो चुका है.

(३६८) डाल का चूका बन्दर और बांसका चूका नट दोनों खराब हैं.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) कोई नट खेल करते २ बांस से गिरगया और गिरते ही मर गया तब लोगों ने कहा कि डाल का चूका बंदर और बांस का चूका नट दोनों खराब हैं.

(३६९) डेढ़ चावल की खिचड़ी न्यारी पकाना.

(अभि.) *सब से अलहदा रहना.*

(प्रयोग) एक दर्जे के कुछ लड़के इकट्ठे होकर गणित के प्रश्न निकाला करते थे उनमें का एक लड़का सब से अलहदा होकर गणित निकालता था सब लड़कों ने उससे कहा कि तुम भी हमारी साथ प्रश्न हल किया करो उसने मना किया तब लड़कों ने उससे कहा तुम्हारी तो डेढ़ चावल की खिचड़ी न्यारी पकती है.

(३७०) डूबते को तिनके का सहारा बहुत है.

(अभि.) *दुखी को थोड़ीसी भी मदद बहुत होती है.*

(प्रयोग) एक भिखारी को २ दिन से भोजन नहीं मिला था वह भूख के कारण बहुत दुखी था. उसको एक मनुष्य ने एक मुट्ठी चने दिये वह उन चनों को खाकर बहुत प्रसन्न हुआ और उस मनुष्य को कहने लगा कि डूबते को तिनके का सहारा बहुत है.

(३७१) डूबे वंश कबीर का उपजे पूत कमाल.

(अभि.) *कपूत के होने से सर्व नाश होजाता है.*

(प्रयोग) एक अमीर और नेक मनुष्य का एक लड़का बड़ा नालायक होगया उसने वेश्यागमन करने में सब धन बर्बाद कर दिया

यहांतक कि रोटियों को भी मुहताज़ होगया तब लोगों ने कहा कि डूबे वंश कबीर का उपजे पूत कमाल.

(३७२) डंडासी पूंछ बुढ़ाने का रस्ता.

(अभि.) *सीधी सड़क का रास्ता होना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने हमसे अजमेर का रास्ता मीरशाली से पूछा हमने बतलाया इस सड़क पर सीधे चले जाना. यह सड़क सीधी अजमेर को ऐसी चली गई है कि डंडासी पूंछ बुढ़ाने का रस्ता.

(३७३) ढलती फिरती छाया.

(अभि.) *दशा बदल जाना.*

(प्रयोग) दो पड़ोसियों में एक अमीर था और एक ग़रीब, कुछ दिन पीछे अमीर ग़रीब होगया और ग़रीब अमीर होगया तब लोगों ने कहा कि ढलती फिरती छाया होती है.

(३७४) ढाक के सदा तीन पात.

(अभि.) *एकसी हालत होना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने हमसे कहा कि अब तो तुम्हारी तरक्क़ी होगई है अब तो तुमने कुछ रुपया जमा कर लिया होगा हमने उत्तर दिया कि जितनी हमारी आमदनी होती है उतना ही खर्च हो जाता है यहां तो सदा एकसी हालत रहती है अर्थात् वही ढाक के तीन पात.

(३७५) ढंढोरा शहर में लड़का बग़ल में.

(अभि.) *अपने पास की वस्तु न दीखना.*

(प्रयोग) मेरा एक १०) रु० का नोट खोगया मैंने बहुत तलाश किया, मगर मुझे न मिला वही नोट मेरे दोस्त ने तलाश किया तो मेरी किताब के अंदर रक्खा हुआ मिल गया तब मेरे दोस्त ने कहा कि तुम्हारा तो वह हाल होगया कि ढंढोरा शहर में लड़का बग़ल में.

(३७६) तलवार के घाव से ज़ुबान का घाव बड़ा होता है.

(अभि.) *ऐसी बात नहीं कहनी चाहिये जिससे कोई बुरा माने.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपने मित्र से एक ऐसी बात कहदी कि वह उसका शत्रु होगया और उसकी जान लेने के पीछे पड़ गया जब उसकी हालत देख कर लोगों ने कहा कि सच है तलवार के घाव से ज़ुबान का घाव बड़ा होता है.

(३७७) तन पर नहीं लत्ता पान खाने अलबत्ता.

(अभि.) *ग़रीब का शौकीन बनना.*

(प्रयोग) एक ग़रीब आदमी ने अपने मित्र से कहा कि मेरी सलाह ऐसी है कि अब के जाड़ों में अपने लिये सर्ज का कोट बनवाऊंगा मित्र ने उत्तर दिया कि गाढ़े के कपड़े बनवाओ उसने कहा मैं तो सर्ज के ही बनवाऊंगा तब मित्र ने कहा तुम्हारा तो वह हाल है कि तन पर नहीं लत्ता पान खाने अलबत्ता.

(३७८) तमाम रात रोये एक ही मरा.

(अभि.) *अधिक परिश्रम से थोड़ा फल मिलना.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी ने तमाम दिन अपनी पुस्तक याद की, मगर

गुरूजी के रूबरू सिर्फ़ एक दोहा सुनाया तब गुरूजी ने कहा तुम्हारा तो वह हाल है कि सारी रात रोये एकही मरा.

(३७९) तमाम रात मिमयानी एक ही बच्चा ब्यानी.

(अभि.) इसका अर्थ व प्रयोग वही है जो नम्बर ३७८ में बयान किया है.

(३८०) तमाम रात पीसा पारी में सकेला.

(अभि.) इसका भी अर्थ व प्रयोग नम्बर ३७८ में देखो.

(३८१) तले की सांस तले और ऊपर की सांस ऊपर रहगई.

(अभि.) बहुत घबड़ा गये सन्नाटे में आगये सन्न पड़गये.

(प्रयोग) एक मनुष्य को उसके अफ़सर ने किसी क़सूर पर पुलिस के सिपुर्द करने को कहा तब मनुष्य इतना घबड़ाया कि उसकी तलेकी सांस तले रहगई और ऊपरकी ऊपर रहगई अर्थात् सन्नाटे में होगया.

(३८२) तन सुखी तो मन सुखी.

(अभि.) शरीर नीरोग होने पर दिल भी प्रसन्न रहता है.

(प्रयोग) एक अमीर आदमी हमेशा बीमार रहता था इस कारण से उसने नाचने गाने की मजलिस में जाना भी बंद कर दिया था उसके मित्र ने कहा तुम तो नाचने गाने की मजलिस देखने के बड़े शोक़ीन थे अब क्यों बंद कर दिया ? तब उसने उत्तर दिया मेरी तन्दुरुस्ती तो ठीक है ही नहीं इसलिये मेरा दिल नहीं चाहता कहा भी है कि तन सुखी तो मन सुखी नहीं तो नहीं.

(३८३) तबेले की बला बन्दर के सिर पर.

(अभि.) *किसी का काम किसी से कराना.*

(प्रयोग) एक दिन मेरे अफ़सर ने अपने दोस्त का बहुतसा काम मुझे करने को दिया मैंने उस काम को तमाम रात में पूरा किया, मेरे मित्र ने मुझ से कहा तुम तमाम रात क्यों जगते रहे ? मैंने उत्तर दिया कि मैं उनका काम करता रहा यहां तो वह हाल है कि तबेले की बला बंदर के सिर पर.

(३८४) तथा राजा वैसी प्रजा.

(अभि.) *जैसा स्वामी वैसा सेवक होता है.*

(प्रयोग) किसी स्कूल का हेडमास्टर बड़ा परिश्रमी था उसकी देखा देखी उसके सहायक भी बड़े परिश्रम से काम करते थे उनकी ऐसी दशा देख कर लोगों ने सहायकों से कहा कि इस हेड-मास्टर के पहिले तो तुम लोग ऐसी मिहनत नहीं करते थे तब सहायकों ने उत्तर दिया कि जैसा राजा वैसी ही प्रजा होती है अर्थात् पहिला हेडमास्टर भी तो इतना परिश्रमी नहीं था फिर हम इतना परिश्रम क्यों करते ?.

(३८५) तन्दुरुस्ती हज़ार न्यामत है.

(अभि.) *स्वास्थ्य बड़ी अच्छी वस्तु है.*

(प्रयोग) एक बीमार मनुष्य को न बैठने में आराम होता था न खड़ा होने में और न लेटने में, तब उसने कहा कि तन्दुरुस्ती हज़ार न्यामत है.

(३८६) ताज़ी पर वश नहीं, तुरकी के कान उमैठे.

(अभि.) *इसका अर्थ और प्रयोग वही है कि "कुम्हारी पर पार न बसाई गधे के कान उमैठे" इस कहावत में बयान हुआ है.*

(३८७) तिरिया तेल, हमीरहट, चढ़ै न दूजी वार.

(अभि.) *प्रतिष्ठित मनुष्य रीति रिवाज़ नहीं छोड़ते.*

(प्रयोग) एक लड़की शादी होते ही विधवा होगई, लोगों ने उस लड़की को समझाया कि दूसरा विवाह करले उसने कहा मेरे बड़ों के यहां दूसरा विवाह करने की रीति ही नहीं फिर मैं कैसे करलूं ? कहा भी है कि तिरिया-तेल, हमीर-हट, चढ़ै न दूजी वार.

(३८८) तिनके की ओट पहाड़ ओट.

(अभि.) *थोड़ीसी लिहाज़ बहुत लिहाज़दार बनाती है.*

(प्रयोग.) हमारी पतोहू हमारा इतना अदब क़ायदा करती थी कि जब-तक हम घर के भीतर रहते वह अलग एकांत में खड़ी रहती थी हमने कहा बेटी ! दूसरी तर्फ़ मुँह करके बैठ जाओ कहा भी है कि तिनके की ओट पहाड़ ओट.

(३८९) तिरिया, वायु, लक्ष्मी ये तीनों नहिं स्थिर.

(अभि.) *स्त्री, हवा, धन यह तीनों चंचल हैं.*

(प्रयोग.) एक अमीर मनुष्य दैवयोग से ग़रीब होगया वह अपनी अमीरी हालत को याद करके बहुत दुःख मानता था तब उसके मित्रने उसे समझाया कि तिरिया, वायु, लक्ष्मी ये तीनों नहीं स्थिर.

(३९०) स्त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः.

(अभि.) *स्त्री के चरित्र, मनुष्य का भाग्य देवता भी नहीं जान सके.*

(प्रयोग) एक ज्योतिषीजी किसी लड़के के पैदा होने पर उसके घर गये और कहने लगे मेरे विचार में ऐसा आता है कि यह लड़का राजा होगा तब किसी आर्य्य ने ज्योतिषीजी से कहा क्यों इनको बहकाते हो ? सुनो श्लोक-"स्त्रिया चरित्रं ....आदि.

(३६१) तीन बुलाये तेरह आये.

(अभि.) *थोड़े बुलावे में अधिक आना.*

(प्रयोग) एक बनिये ने एक ब्राह्मण को भोजन कराने के लिये न्योता दिया वह ब्राह्मण अपने चारों पुत्रों को भी भोजन करने के लिये लेगया उस बनिये ने अपने दिल में कहा कि यहां तो तीन बुलाये तेरह आयेकासा मामला होगया.

(३६२) तीन तेरह होना.

(अभि.) *तित्तर वित्तर होना.*

(प्रयोग) एक स्कूल में ५ मास्टर थे उनके आपस के द्वेषभाव के कारण अफ़सर ने सबको बदल दिया तब लोगों ने कहा कि यहां के मास्टर सब तीन तेरह होगये.

(३६३) तीन लोक से मथुरा न्यारी.

(अभि.) *सब से निराला ढंग.*

(प्रयोग) एक नार्मल स्कूल के हेडमास्टर ने ब्याज पर सबक पढ़ाने की आम रीति बताई, सब लड़कों ने वह रीति याद करली, मगर एक लड़के ने किसी दूसरी रीति से याद की और हेडमास्टर से कहा कि मैंने इस प्रकार रीति याद की है तब हेडमास्टर ने कहा कि तुम्हारी तो तीन लोक से मथुरा न्यारी रहती है.

(३६४) तीतर के मुंह लक्ष्मी.

(अभि.) *हाकिम की ज़बान में सब कुछ.*

(प्रयोग) एक अफ़सर के तीन नौकर थे एक ५), दूसरा ६), तीसरा ८), वेतन पाता था, ८) की जगह खाली हुई, अफ़सर ने छोटे नौकर को वह जगह दी बीच के नौकर ने अपील की, मगर कुछ न हुआ तब वह बहुत उदास हुआ लोगों ने उसे समझाया कि तीतर के मुंह लक्ष्मी अर्थात् हाकिम की ज़बान में सब कुछ है.

(३९५) तीन में न तेरह में.

(अभि.) *सब झगड़ेसे अलग किसी में भी शामिल न होता.*

(प्रयोग) मुख्य अध्यापक की उसके दो नायबों से लड़ाई रहती थी, हमने तीसरे नायब से पूछा तुम किस तर्फ़ हो? उस ने उत्तर दिया मैं ना तीन में न तेरह में अर्थात् सब से अलग हूं.

(३६६) तुझे पराई क्या पड़ी तू अपनी निवेड़.

(अभि.) *अपनी बात में दखल देनेको मने करना.*

(प्रयोग) जब हम अपने मित्र से किसी बात में कोई सलाह पूछते तब एक तीसरा आदमी बीच में बोल पड़ता कि इसकी सलाह यों करो हमें यह काम उसका बुरा मालूम हुआ हमने उससे कहा तुझे पराई क्या पड़ी तू अपनी निवेड़.

(३६७) तुमतो मनके लड्डू खाते हो.

(अभि.) *काल्पित बातों में प्रसन्न होते हो.*

(प्रयोग) एक लड़का कि जो आठवीं क्लास में इंग्रेज़ी पढ़ता था अपने मित्रसे कहता था जब मैं ग्रेजुएट होजाऊंगा तब डिप्टी-

कलेक्टर बनूंगा उसके मित्र ने कहा–तुमतो खूब मनके लड्डू खाते हो.

(३९८) तुरत दान महा कल्याण.

(अभि.) *जो काम करना हो उसे जल्दी करलो.*

(प्रयोग) मेरे स्वामी ने मुझे एक लेख लिखने के लिये अगले दिनके वास्ते दिया मैंने उसको उसी समय लिखना आरंभ कर दिया, स्वामी ने फ़र्माया क्या अभी से करना शुरू कर दिया ?, मैंने कहा–हां साहब, तुरतदान महा कल्याण अर्थात् जो काम करना है जल्दी क्यों न करूं ?.

(३९९) तू मुझको तो मैं तुझको.

(अभि.) *तुम मुझे मित्र समझोगे तो मैं भी तुम्हें मित्र समझूंगा नहीं तो नहीं.*

(प्रयोग) मेरे एक शत्रु ने मुझ से कहा कि तुमने मेरे साथ में क्यों ऐसी बदसलूकी की ?, मैंने कहा–तुमने भी तो बदसलूकी की थी, यहां तो वह मामला है कि तू मुझको तो मैं तुझको.

(४००) तू तो गधी कुम्हार की तुझे राम से क्या काम.

(अभि.) *मूर्ख और ग़रीब आदमी को बुद्धिमान् और धनी मनुष्यों की बातों में नहीं बोलना चाहिये.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी ने एक निहायत उम्दा हवेली बनवाई, एक मूर्ख मनुष्य उससे कहने लगा कि साहिब आपने किवाड़ों में रंगीन शीशा व्यर्थ लगाया तब अमीर ने उससे कहा–तूं तो गधी कुम्हार की तुझे राम से क्या काम.

(४०१) तुम डार डार हम पात पात.

(अभि.) *अय्यार को ताड़ देना.*

(प्रयोग) एक स्त्री पर दो मनुष्य मोहित थे, पहिला मनुष्य दूसरे के हरवक्त ताक में रहता तब दूसरे मनुष्य ने कहा कि तुम क्यों मेरा पीछा करते हो, तब उसने उत्तर दिया-तुम डार डार हम पात पात.

(४०२) तेल देख तेल की धार देख.

(अभि.) *काम को धीरज के साथ कर.*

(प्रयोग) हम ने एक मनुष्य को पानी भरने के लिये नौकर रक्खा वह दोही दिन पीछे कहने लगा कि मेरे बसकी आपकी नौकरी नहीं है, हमने कहा-तेल देख तेल की धार देख अर्थात् सब्र के साथ नौकरी कर अभी से क्यों घबड़ाता है.

(४०३) तेरी माने खसम किया तो बहुत बुरा किया, करके छोड़ दिया तो और भी बुरा किया.

(अभि.) *बुरे काम तो बुरे ही होते हैं यदि बुरे काम से कोई फल प्राप्त हो और उसे भी छोड़ दे तो और भी बुरा होता है.*

(प्रयोग) एक चोर ने मुझ से बयान किया कि मैंने फलां आदमी के घर चोरी की थी, मैंने कहा-तुमने बहुत बुरा काम किया फिर उस ने कहा-" मैंने वह चोरी का माल नहीं लिया वह तो और ले गये " मैंने इस के जवाब में कहा-तुमने और भी बुरा किया. तुम्हारा तो वह मामला है कि तेरी माने खसम किया तो बुरा किया यदि करके छोड़ दिया तो और भी बुरा किया.

(४०४) **तेल जले घी, घी जले तेल.**

(अभि.) *तेल जितना अधिक वार कढ़ाई में चढ़ेगा अच्छा होगा और घी जितनी वार कढ़ाई में चढ़ेगा उतना ही खराब होगा.*

(प्रयोग) एक हलवाई ने कई वार के चढ़े हुये घी में पूरी बनाईं तो पूरियां कुछ २ मैली और बुरी उतरीं अर्थात् वह पूरियां ऐसी मालूम होने लगीं जैसी कि तेल की होती हैं तब हलवाई ने कहा कि यह कहावत सच है कि घी जले तेल और तेल जले घी होता है.

(४०५) **तेल तो तिलों ही में निकलता है.**

(अभि.) *उसका खर्च उसी में से निकलता है.*

(प्रयोग) एक इक्के वाले का घोड़ा बड़ा मज़बूत था, हमने उससे पूछा कि तुम्हारा घोड़ा जितना खाता होगा उतना तो कमाता भी न होगा, उसने कहा—साहब ! इसका ख़र्च इसी से निकलता है, भला मैं गरीब आदमी अपने घर से कहां से खिलादूं तेल तो तिलों ही से निकलता है.

(४०६) **तेली का तेल जले मशालची का दिल जले.**

(अभि.) *किसी का खर्च हो कोई बुरा माने.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपनी लड़की की शादी में बरात के लिये बहुत अच्छे २ भोजन बनाये, जिस समय बरात भोजन पा-रही थी वह मनुष्य बड़े प्रेम से बरात को भोजन करा रहा था और बार २ यही कहता कि खूब आनन्द के साथ भोजन पाओ, इस बीच में उसका पड़ोसी भी वहां आगया और वह बरात के लोगों से कहने लगा—भोजन के पदार्थ जब

तुम्हारे सामने न रहा करें तब लिया करो और भोजन परोसनेवालों से नाराज़ होकर कहने लगा कि थोड़ा २ परोसो, तब लोगों ने उस के लिये कहा कि इस की तो वह हालत है कि तेली का तेल जले मशालची का दिल जले.

(४०७) तेली का बैल होना.

(अभि.) *सदा एक ही ढर्रे पर काम करना.*

(प्रयोग) एक अध्यापक अपनी पुरानी चाल से लड़कों को तालीम देता था जब कभी डिप्टीसाहिब उसको नवीन शिक्षाप्रणाली बतलाते तो वह हांजी २ तो कह देता, मगर फिर भी पुरानी चाल से शिक्षा देता, उसका यह कर्तव्य देखकर डिप्टीसाहिब ने कहा—तुम तो तेली के बैल हो अर्थात् एक ही ढर्रे पर काम करनेवाले हो.

(४०८) तैराक ही डूबता है.

(अभि.) *जो मनुष्य तैरना जानता है वही डूबता है.*

(प्रयोग) मैं और मेरा मित्र एक दिन तालाब पर स्नान करने गये, मैं तो तैरना जानता नहीं था इसलिये डर के कारण किनारे पर बैठ कर नहा लिया, परन्तु मेरा मित्र खूब तैर २ कर नहाया, दैवयोग से जल के अन्दर तैरते २ उस के हाथ दुखने लगे उस से तैरा नहीं गया वह डूबने लगा मैंने अपनी धोती उस के पास फेंककर उसको धोती के ज़रिये से खैंच तो लिया, मगर वह बाहर आते ही कहने लगा—मित्र ! तैराक ही डूबता है.

(४०९) थूक कर चाटना अच्छा नहीं.

(अभि.) *दान देकर फिर नहीं लेना चाहिये.*

(प्रयोग) एक राजा ने किसी दरिद्री को एक गाँव दान में दिया, थोड़े दिनों पीछे जब वह दरिद्री उस गाँव की आमदनी से अमीर बन गया तब उसने वेश्यागमन करना आरम्भ किया, यह बात राजा के कान तक भी पहुंची, राजा ने अपना गांव वापिस ले लिया इस पर उस दरिद्री ने कहा—महाराज! थूक कर चाटना अच्छा नहीं.

(४१०) थूक में सत्तू नहीं सनते.

(अभि.) *थोड़े खर्च से बड़ा काम नहीं होता.*

(प्रयोग) मेरे मित्र ने मुझे थोड़ासा धन देकर उससे कई गुने दामों की चीज़ मँगाने को कहा और यह भी कहा कि तुम बुद्धिमान् हो अपनी बुद्धिमानी से वह चीज़ अवश्य ले आओगे, मैंने कहा—मित्र! थूक में सत्तू नहीं सनते हैं.

(४११) थुक्का फज़ीहत होना.

(अभि.) *गालीगलोज होना.*

(प्रयोग) मेरे मित्र ने मुझसे कहा कि आज मैं अपने लड़के को लेकर तुम्हारे बाग़ में गया था वहां पर मेरे लड़के ने एक अनार तोड़ लिया इस पर तुम्हारे माली ने लड़के को थप्पड़ मारा फिर उससे मेरी भी बहुत थुक्का फज़ीहत हुई, मैंने कहा—कल उसको अलग कर दूंगा.

(४१२) थाली के बैंगन होना.

(अभि.) *मुंह देखी बातें करना.*

(प्रयोग) एक राजा ने अपने मन्त्री से कहा कि ६ बज गये होंगे, मन्त्री ने कहा नौ तो बहुत देर हुई बज गये, थोड़ी देर बाद फिर राजा ने मंत्री से कहा कि अभी तो शायद ८ भी नहीं बजे हैं,

मंत्री ने कहा—हुज़ूर ! अभी आठ कहां से बज गये ?, राजा ने कहा अभी तो कहते थे कि ६ बज गये फिर कहने लगे ८ भी नहीं बजे यह झूंठ क्यों बोला ? मंत्री ने कहा—मैं ६ और ८ बजे का नौकर थोड़ा ही हूं मैं तो आपका नौकर हूं जैसा आपका रुख देखूंगा वैसी ही कहूंगा तब और लोगों ने मंत्री के लिये कहा कि यह तो थाली का बैंगन है कि जिधर को टेढ़ी हो उधर ही लुढ़क जावे.

(४१३) थोथा चना बाजे घना.

(अभि.) *हलका आदमी अपनी बहुत शेखी बघारता है.*

(प्रयोग) एक दूसरे ज़िले के अध्यापक ने किसी डिप्टी इन्सपेक्टर के सामने अपने काम की बहुत बड़ाई की, उससे डिप्टी साहिबने कुछ बातें शिक्षाप्रणाली की पूछीं तब सिवाय खामोशी के कुछ न बन पड़ा, तब डिप्टीसाहिब ने फर्माया, सच कहा है कि थोथा चना बाजे घना.

(४१४) थोड़ा खाना अंग लगाना, घना खाना कुड्ढ बढ़ाना.

(अभि.) *कम भोजन करने से तन्दुरुस्ती ठीक रहती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी दिन रात को भूख से भी अधिक खागया इस कारण उसे रात को कई मर्तबा टट्टी जाना पड़ा, प्रातःकाल उसे ज्वर ने घेर लिया तब उसने लोगों से कहा कि थोड़ा खाना अंग……आयो पांत की कहावत ठीक है.

(४१५) थोड़ी पूंजी ख़सम को खाय.

(अभि.) *थोड़े धन वाले को दुःख ही रहता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्यने १००) रु० की तिजारतसे १२५) करलिये तब उसको यह दुःख हुआ कि यदि मेरे पास लाख दोलाख रु० होते तो मुझे बड़ा भारी नफा होता, फिर कहने लगा कि थोड़ी पुंजी खसम को खाय, यह कहावत बिलकुल ठीक है.

(४१६) दबी बिल्ली चूहे से कान कटाती है.

(अभि.) *बलवान को भी कभी निर्बल से दबना पड़ता है.*

(प्रयोग) किसी थानेदार पर रिशवत का मुक़द्दमा कायम होगया था, जिस दिन उसके मुक़द्दमे की तारीख़ अदालत में नियत थी उस दिन वह सब गांव वालों से बड़े प्रेम और नर्मी से खुशामदाना बातें कररहा था ताकि लोग उसकी तरफ़ से अदालत में अच्छा कहदें, तब गांव के लोगों ने आपस में कहा कि आज तो थानेदार साहिब का वह हाल है कि जैसे दबी बिल्ली चूहों से कान कटावे.

(४१७) दबे पर तो चींटी भी काट खाती है.

(अभि.) *अधिक दुःख दिये जाने पर छोटे भी मुक़ाबला कर बैठते हैं.*

(प्रयोग) किसी गांव के ज़मींदार के यहां एक चमार खेतक्यार का काम करने पर नौकर था, छोटे २ अपराधों पर वह ज़मींदार उसकी जूते से खबर लेता था, एक दिन उसको बहुत मारा तब उसने क्रोध में आकर मुक़ाबिला किया और कहा–साहिब! दबेपर तो चिउंटी भी काट खाती है.

(४१८) दमड़ी का घोड़ा ६ पंसेरी दाना.

(अभि.) *छोटी वस्तु के लिये बड़ा भारी सामान.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपनी बांस की छड़ी में गांठ २ पर चांदी के तार कसवाये और उसके सिरेपर भी चांदी की मूठ चढ़वाई, उसके मित्र ने इस छड़ी को देखकर इससे कहा कि तुमने यह कहावत सच ही करदी कि दमड़ी का घोड़ा ६ पंसेरी दाना.

(४१९) दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुंडाई.

(अभि.) *इसका अर्थ और प्रयोग वही है जो नं० ४१८ में वर्णन हुआ है.*

(४२०) दमड़ी की हांडी गई तो गई कुत्ते की ज़ात तो पहिचानी गई.

(अभि.) *थोड़े से नुक्सान में बेईमानी मालूम करना.*

(प्रयोग) हमारे घर से एक दिन हमारी पड़ौसन पीतल की कटोरी मांग कर लेगई, मगर फिर वापिस करने नहीं आई, दो चार दिन बाद जब हमने कटोरी की मांग भेजी तब उसने कहा— मैं तो दे आई थी, इसपर हमने कहा—जाने दो नहीं मिली तो नहीं सही, दमड़ी की हांडी गई तो गई मगर कुत्ते की ज़ात पहिचानी गई.

(४२१) दमड़ी की हांडी भी ठोक बजा के लेते हैं.

(अभि.) *छोटी बड़ी चीज़ों को खूब देख भाल के लेना चाहिये.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्र पुराने ख़याल के थे उन्हों ने अपने लड़के की मंगनी नाई ब्राह्मण के द्वारा कराई, जब शादी हुई और बहू अंधी मिली तब नाई ब्राह्मण को गाली देने लगे तब मैंने उस मित्र से कहा कि जब दमड़ी की हांडी भी ठोक बजा के लेते हैं तो ऐसी हांडी जो कि तुम्हारे पुत्र का सर्वदा साथ देने वाली है, क्यों अपने आप खूब जांच करके नहीं ली ?.

(४२२) दर्ज़ी की सूई कभी गज़ी में कभी कीमख़ाब में.

(अभि.) *कामदार को कभी तंगी कभी आसूदगी.*

(प्रयोग) एक कारीगर प्रतिदिन ॥।) कमाता था, इसलिये उसके दिन बड़े आनन्द से व्यतीत होते थे, दैवयोग से वह काम से अलग होगया बहुत तलाश करने पर उसे ।) प्रतिदिन की नौकरी मिली, एक दिन उसके मित्रने पूछा–अब कैसी गुज़रती है ? उसने उत्तर दिया हम लोग तो दर्ज़ी की सूई की भांति हैं कि कभी गज़ी में कभी कीमख़ाब में.

(४२३) दया बिन संत क़साई.

(अभि.) *दया के विना मनुष्य सुजन नहीं कहावेगा.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बड़ी पूजा किया करता था, उसने एक दिन अपने नौकर को ठीक काम न करने पर निकाल दिया और उसकी पिछली तनख़्वाह भी उसे न दी तब उसके पड़ोसी ने कहा-तुम ऐसे भक्त होने पर भी उसकी तनख़्वाह नहीं देते हो ?, उसकी तनख़्वाह देदो क्योंकि दया के विना संत भी क़साई कहलाता है.

(४२४) दाता दे और भंडारी का पेट फूले.

(अभि.) *स्वामी दे और उसके मातहत बुरा मानें.*

(प्रयोग) हमने अपने नौकर से कहा कि सब ग़रीबों को, जो यहां मौजूद हैं, फीकस पाव पाव भर चने भुने हुये देदो, उसने बड़े मनुष्यों को तो पाव पाव भर दिये, मगर जो छोटे २ थे उनको फीकस आधपाव देने लगा तब ग़रीबों ने हमारे नौकर से कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि दाता दे और भंडारी का पेट फूले.

(४२५) दाता से सूम भला जो जल्दी करदे नांह.

(अभि.) *दाता को दान देने में शीघ्रता करनी चाहिये.*

(प्रयोग) एक आर्य्यसमाज में वहां के मनुष्यों ने किसी काम के लिये एक रुपया प्रति मनुष्य चन्दे का देना स्वीकार किया उनमें से बहुतसों ने तो जल्दी दे दिया और कुछ ने आज-कल २ देंगे कहते २ बहुत दिन व्यतीत कर दिये तब वहां के प्रधान ने उनसे कहा कि अगर तुम्हें देना है तो देदो नहीं तो मने करदो, कहावत भी है कि दाता से सूम भला जो जल्दी करदे नांह.

(४२६) दान वित्त समान.

(अभि.) *अपनी सामर्थ्य से अधिक दान नहीं करना चाहिये.*

(प्रयोग) एक जगह गोशाला के लिये चन्दा इकट्ठा होरहा था वहां पर किसी ग़रीब आदमी ने जोश में आकर ५) देना स्वीकार किया जब घर आया और रुपयों का बन्दोबस्त नहीं हुआ तब सोच फिकर में पड़गया, उसके मित्रने उससे कहा कि तुमको पहिले ही सोचकर चन्दा देना स्वीकार करना चाहिये था, कहा भी है कि दान वित्त समान.

(४२७) दाम करे काम.

(अभि.) *रुपये पैसे से ही काम होता है.*

(प्रयोग) एक अध्यापक से उसी गांव के एक मनुष्य ने प्राइवेट तौर से अपने बच्चे को प्रतिदिन एक घंटा पढ़ाने को कहा, अध्यापकने कहा–क्या वेतन दोगे? उसने कहा–जैसा हमारा लड़का

वैसा ही आपका लड़का तब फिर तनख्वाह कैसी ?, अध्यापक ने कहा-यह ठीक है, मगर मैं मुफ्त नहीं पढ़ाऊंगा, कहा भी है कि दाम करे काम.

(४२८) दाल गलना.

(अभि.) *प्रयोजन सिद्ध होना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को नौकरी की तलाश थी वह बहुत जगह फिरा, मगर कहीं उसे नौकरी न मिली, तब घर आकर उसने कहा-मैं तो सब जगह फिर लिया, मगर कहीं भी दाल न गली अर्थात् प्रयोजन सिद्ध न हुआ.

(४२९) दिया न बाती माड़ो फिरे उचाती.

(अभि.) *लेने देने को कुछ नहीं केवल बड़ाई की बातें बघारना.*

(प्रयोग) दो कंगले मनुष्य आपस में बहस कररहे थे, एक कहता था आज रात को बारिश होगी, दूसरा कहता था नहीं होगी, इस पर सौ २ रुपये की आपस में शर्त होगई इसपर तीसरे मनुष्य ने उनसे कहा-तुम्हारा १०० पैसे का घर तो है ही नहीं शर्त बदते हो सौ रुपये की, तुम्हारा भी वह काम है कि दिया न बाती माड़ो फिरे उचाती.

(४३०) दाता के तीन गुण-देवे, दिलावे, छीनले.

(अभि.) *परमेश्वर ही देता है और वही लेलेता है.*

(प्रयोग) एक अमीर मनुष्य दैवसंयोगवश कंगाल होगया, वह अपने सुख के दिनों को याद करके पछताया करेथा, उसके मित्रने उससे कहा-परमात्माने ही धन दिया उसीने लेलिया, कहा भी है कि दाताके तीनगुण देवे, दिलावे, छीनले, इसलिये सब्र करो.

(४३१) दाई से पेट नहीं छिपता.

(अभि.) *जानकार से भेद नहीं छिपता.*

(प्रयोग) एक कचहरी का दफ्तरी कचहरी की रद्दी आदि चीज़ें बाज़ार में बेचकर उसके पैसे अपने घर में रखता था वहां का चपरासी भी ये बातें उसकी जानता था, एक दिन बातों बातों में चपरासी ने दफ्तरी से कहा-मैं तुम्हारा सब हाल जानता हूं तब दफ्तरी ने कहा-दाई से पेट नहीं छिपता लो दोचार पैसे तुम भी लेलो.

(४३२) दाने २ पर मुहर है.

(अभि.) *जो जिसके भाग का है अवश्य उसको मिलता है.*

(प्रयोग) एक दिन मैं और मेरे मित्र आपस में कह रहे थे कि अबकी तातील में पुष्करस्नान करने चलेंगे, तातील से एक दिन पहिले हमें प्रयागराज का हमारे अफ्सर का तार मिला कि फौरन यहां आओ हमें जाना पड़ा, जब हम प्रयागराज में भोजन कररहे थे तब हमारे मित्र ने कहा कि पुष्कर चलने का विचार था, मगर आज प्रयागराज में भोजन कररहे हैं मैंने कहा-मित्र ! दाने २ पर मुहर है.

(४३३) दिलके फफ़ोले फोड़ना.

(अभि.) *भीतरी दुःख बयान करना.*

(प्रयोग) एक दिन हमारा मित्र किसी से अपना दुःख इस तरह बयान करने लगा कि फलां सन् में मेरा लड़का मरा उसी साल चोरी हुई और घर में आग लगी, तब मैंने अपने मित्र से कहा-क्यों दिलके फफोले फोड़ते हो.

(४३४) दिल को दिल से राहत है.

(अभि.) *जो कोई किसी को चाहेगा वह भी उसे चाहेगा.*

(प्रयोग) हम एक दिन यह सोचकर कि मित्र से बहुत दिन से भेट नहीं उस से मिलने चले वह भी यही सोच कर हम से मिलने चला जब दोनों रास्ते में मिले तब कहा-दिल को दिल से राहत है.

(४३५) दिये का प्रकाश स्वर्गतक है.

(अभि.) *दान देना बड़ी चीज़ है.*

(प्रयोग) इस के लिये एक उर्दू में शेर है "कि चिरागों की तो ज़ाहिर में चमक है, दिये की रोशनी महशर तलक है" किसी धनी ने एक दरिद्री को एक रुपया दान दिया तब धनी के लिये दरिद्री ने कहा कि आप का यश दूरलों पहुंचेगा.

(४३६) दिन ईद रात शब्बरात.

(अभि.) *दिन रात आनन्द में गुजरना.*

(प्रयोग) हमारे मित्र की तरक़्क़ी हुई थी और उन्हीं दिनों उन के घर में पुत्र उत्पन्न हुआ था, मुलाक़ात पर एकदिन हमने पूछा-आज कल कैसी गुजरती है? उसने उत्तर दिया आजकल तो दिन ईद और रात शब्बरात की भांति गुजरती है.

(४३७) दिल को हो करार तब सूझे त्यौहार.

(अभि.) *चित्त प्रसन्न हो तब सब बातें अच्छी मालूम होती हैं.*

(प्रयोग) हमारे एक मित्र जेलर थे उनको हारमोनियम सितार आदि बजाने का बहुत शौक़ था उन के यहां एक तेज़ मिजाज़ अफ्सर बदल कर आगये जिससे जेलर साहिब दिन रात

काम में मशगूल रहने लगे, सितार हारमोनियम बजाना सब छोड़ दिया, एक दिन हमने पूछा—क्यों मित्र सितार आदि बाजे अब क्यों नहीं बजाते ? उस ने उत्तर दिया कि दिल को हो करार तब सूझे त्योहार.

(४३८) दीवार के भी कान होते हैं.

(अभि.) *घर में भी बैठकर किसी को बुरा भला नहीं कहना चाहिये.*

(प्रयोग) एक मनुष्य की उसके अफसर से अनबन होगई थी वह अपने घरपर बैठा अपने अफसर को गाली देरहा था, उसके मित्र ने उसे समझाया कि देखो गाली मत दो दीवार गोश दारद अर्थात् दीवार भी कान रखती है क्या मालूम कोई सुनता हो और अफसर से कह दे.

(४३६) दुधाली गाय की लातें भी सहनी पड़ती हैं.

(अभि.) *फ़ायदा पहुंचाने वाले मनुष्य की एक दो कड़ी बातें भी झेलनी चाहिये.*

(प्रयोग) एक टौनस्कूल के हेडमास्टर और वहां के नायब मुदर्रिस में आपस में अनबन होगई. वह नायब तमाम स्कूल का काम सम्हाले हुए था. हेडमास्टर की रिपोर्ट पर डिप्टीसाहिब आये उन्हों ने दोनों का राज़ीनामा कराया और हेडमास्टर से कहा कि देखो दुधाली गाय की लातें भी सहनी पड़ती हैं अर्थात् यह नायब तुम्हारा सब काम सम्हाले हुए है इसकी एक दो बातें तुम्हें झेलनी भी चाहिये.

(४४०) दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम.

(अभि.) *दो जगह चित्त होने से काम ठीक नहीं होता है.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने दूसरी जगह तरक्की के साथ जाने की कोशिश की, वहां के अफ्सरों ने उस से ज़ुबानी कहदिया कि हम तुम्हें अपने यहां लेलेंगे, मगर बाज़ाब्ता मंजूरी में ४ माह व्यतीत होगये. अध्यापक साहबने बदली की उम्मेद में काम सरकारी भी ढीला कर दिया था इसी बीच में डिप्टीसाहब मुआयना करने चले आये उन्होंने कामकी खराबीकी रिपोर्ट करदी जिससे उनका तनज़्ज़ुल होगया और बदली भी न हुई तब अध्यापक साहबने कहा–दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम.

(४४१) दुश्मन अपने हाथ पांव.

(अभि.) *मनुष्य के हाथ पांव ही उसके शत्रु होते हैं इसलिये उन्हें काबू में रक्खे.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने एक जाली नोट बनाया जब उसको ख़ज़ाने पर भुनाने गया तब पकड़ा गया, क़ैदखाने पहुंचा. तब उसने कहा–मेरे हाथ ही मेरे दुश्मन हैं.

(४४२) दुश्मनों में ऐसे रहता हूं जैसे दांतों में जीभ.

(अभि.) *बहुत से शत्रुओं में दबकर रहना.*

(प्रयोग) मैं एक दफ्तर में क्लर्क था वहां छोटे बड़े जितने भी नौकर और अफ्सर थे सब कायस्थ थे, वहां पर मैं ही अकेला बनिया था सब मुझसे नाराज़ रहते थे, एक दिन मैंने वहां से दुखी होकर विसर्जनपत्र देदिया, उसपर बड़े साहब ने मुझ से पूछा क्यों इस्तीफ़ा देते हो? तब मैंने कहा–मेरा रहना वहां ऐसा है जैसे दांतों में विचारी जीभ.

(४४३) दूधका जला छाछ भी फूंककर पीता है.

(अभि.) *एक वार का ठगा मनुष्य हमेशा हुशियार रहता है.*

(प्रयोग) मैंने एक दफा रेल में सफ़र करते हुए किसी स्टेशनपर एक पैसे के बदले सेव वाले को एक अठन्नी रात को देदी जब मैंने अपना हिसाब देखा तब मुझे याद आई तब से मैं जहां कहीं भी रुपया पैसा देता हूं खूब देख भाल कर देता हूं, मेरे मित्र ने कहा कि तुम पैसे देने में बहुत देर करते हो तब मैंने कहा–दूध का जला छाछ फूंक २ कर पीता है.

(४४४) दूध का दूध पानी का पानी होगया.

(अभि.) *इन्साफ़ होगया.*

(प्रयोग) एक बदमाश ने दो चार बदमाशों को अपना गवाह बनाकर एक अमीर आदमीपर एक हज़ार रुपये की नालिश करदी, मुनसिफ साहिब ने नालिश ख़ारिज करदी तब लोगों ने कहा कि दूध का दूध पानी का पानी होगया.

(४४५) दूधन न्हाओ पूतन फलो.

(अभि.) *यह आशीर्वाद है जिसका अभिप्राय यह है कि तुम्हारे दूध और पुत्रों की बढ़ोतरी हो.*

(प्रयोग) किसी ग़रीब विधवा ब्राह्मणी को एक अमीर ने जाड़ों की ऋतु में एक लिहाफ़ दान दिया, तब उसने आशीर्वाद दी कि तुम दूधन न्हाओ पूतन फलो.

(४४६) दूर के ढोल सुहावने.

(अभि.) *प्रत्येक वस्तु दूर से भली मालूम होती है.*

(प्रयोग) मैं एक दिन ८ बजे के क़रीब रात को सड़कपर टहलता हुआ फिररहा था मेरे कानों में बहुत अच्छी गाने की आवाज़ आई. मैं आवाज़ के सहारे २ वहीं पहुंच गया जहां से आवाज़ आई थी, वहां जाकर उसका गाना ऐसा भला नहीं मालूम हुआ जैसा दूर से था, तब मैंने कहा—दूर के ढोल सुहावने लगते हैं.

(४४७) दुबले मारै शाह मदार.

(अभि.) *दीन को ही सब सताते हैं.*

(प्रयोग) अमीर और ग़रीब के दो लड़के एक स्कूल में पढ़ते थे, एक दिन स्कूल से लौटती बार उनमें आपस में गाली गलोज होगई, जब घर पर आये तो अमीर ने ग़रीब के लड़के को पीटा और शिकायत लेकर उसके घर गया वहीं उसके बाप ने भी उसे पीटा तब उस लड़के ने कहा कि दुबले मारै शाह मदार.

(४४८) दूल्हे के साथ बरात.

(अभि.) *स्वामी के साथ सेना.*

(प्रयोग) एक जगह दो बादशाह अपनी २ फौज लिये हुए लड़ रहे थे, एक तरफ़ का बादशाह मारा गया, मरतेही उसकी फौज सब भाग गई तब लोगों ने कहा कि दूल्हे के साथ बरात है जब स्वामी ही नहीं तो फौज क्यों न भागती.

(४४९) देह धरे का दंड है सब काहूको होय.

(अभि.) *दुःख सब पर पड़ता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपनी तमाम उम्र में क़रीब २ हमेशा बीमार रहा करता था हमने उससे पूछा—क्या हाल है ?, उसने उत्तर दिया—देह धरे का दण्ड है यह सब किसी को होता है.

(४५०) देखी तेरी कालपी बामन पुरा उजाड़.

(अभि.) *बिलकुल वीरान.*

(प्रयोग) एक मनुष्य हमसे अपने शहर की बड़ी बड़ाई कररहा था, हम उसके शहर का हाल भी जानते थे, कोई वस्तु वहां प्रशंसनीय नहीं थी हमनें उससे कहा-देखी तेरी कालपी बामन पुरा उजाड़.

(४५१) देख भाल के कूए में गिरना.

(अभि.) *सोच विचार के काम करना चाहिये.*

(प्रयोग) एक अध्यापक की बहुत इच्छा थी कि मैं पुलिस में नौकरी करलूं हमने उसे समझाया कि वहां थोड़ीसी गफ़लत होने पर जेलख़ाना जाना पड़ता है इसलिये खूब सोच विचारके वहांके लिये अर्जी देना अर्थात् देख भाल के कूए में गिरना.

(४५२) देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी.

(अभि.) *दूसरों की अच्छी वस्तु देखकर लालच मत करो.*

(प्रयोग) एक ग़रीब आदमी किसी अमीर आदमी के तकिये तोशक देखकर अपने मित्रसे कहने लगा कि मेरे पास भी ऐसे ही होते तो अच्छा था, उसके मित्रने उसे समझाया कि देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी.

(४५३) देखिये ऊंट किस करवट बैठता है.

(अभि.) *नहीं मालूम क्या फ़ैसला होगा.*

(प्रयोग) हमारे मित्र का अदालत में मुक़द्दमा चलरहा था, हमने पूछा तुम्हारे मुक़द्दमे की क्या सूरत है? उसनें उत्तर दिया-सूरत तो अच्छी है, मगर देखिये ऊंट किस करवट बैठता है! अर्थात् क्या फ़ैसला होता है.

(४५४) देने के नाम तो कभी घर के किवाड़ भी नहीं देते.

(अभि.) दान न करना.

(प्रयोग) गोशाला के लिये चन्दा इकट्ठा किया, एक मनुष्य ने देने से साफ़ इन्कार किया, किसी दूसरे मनुष्य ने हमसे पूछा कि उस ने क्या चन्दा दिया ? तब हमने कहा—देने के नाम तो वह घर के किवाड़ भी नहीं देता है.

(४५५) देश के लिये बूढ़ा लड़ाई के लिये जवान.

(अभि.) कार्य्य के लिये इन्कार लड़ाई के लिये तय्यार रहना.

(प्रयोग) दो लड़के एक छात्रालय में इकट्ठे रहा करते थे वे दोनों भोजन भी इकट्ठा ही बनाते थे, एकने दूसरे से कहा—रोटी बना ले, उसने उत्तर दिया मेरे तो सर में दर्द है तूंही बनाले, भोजन करने के वक्त दूसरे ने कहा—दाल में नमक भी थोड़ा है कुछ सवाद भी नहीं बनी तब पहिले ने उत्तर दिया तुम्हारा तो वह हाल है कि देश के लिये बूढ़ा लड़ाई के लिये जवान, अर्थात् काम करने को बीमार लड़ाई के लिये तय्यार.

(४५६) देशी घोड़ा मरहटी चाल.

(अ०प्र०) एक गांव का लड़का किसी शहरी स्कूल में इंग्रेज़ी पढ़ता था वह किसी तातील में अपने घर आया तो गांव के लोगों ने उसे इंग्रेज़ी कोट पतलून पहने हुए देखकर कहा कि तुम्हारा तो इतना जल्दी वह हाल होगया कि देशी घोड़ा मरहटी चाल.

(४५७) दो तो चून के भी बुरे होते हैं.

(अभि.) दो कमज़ोर मिलने से बलवान होजाते हैं.

(प्रयोग) किसी स्कूल के प्रथम अध्यापक और द्वितीय अध्यापक में लड़ाई होगई, द्वितीय अध्यापक ने तृतीय अध्यापक को अपनी

ओर करने को कहा कि दो तो चून के भी बुरे होते हैं अर्थात् हम दोनों नायब मिल जावेंगे तो इनसे जीत जावेंगे.

(४५८) दो दिल राज़ी तो क्या करेगा क़ाजी.

(अभि.) *आपस की प्रीति में किसी का भय न करना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य की किसी विधवा स्त्री से अधिक प्रीति होगई थी, उस ने उस को बिलकुल अपने घर पर ही रखने को कहा स्त्री ने कहा—मुझे तुम्हारे यहां चलने में कुछ उज्र तो नहीं है मगर दुनियाँ क्या कहेगी ? तब उस ने उसे समझाया कि दो दिल राज़ी तो क्या करेगा क़ाजी.

(४५९) दोनों दीन से गये पांडे हलुआ भये न मांडे.

(आभि.) *कहीं भी ठिकाना न लगा.*

(प्रयोग) हमारे यहां से हमारे पानी भरनेवाले को १०) रु० महीना मिलता था वह लोभवश नौकरी छोड़ कर दूसरी जगह चला गया वहां भी उसे नौकरी नहीं मिली, तब लोगों ने उस के लिये कहा—दोनों दीन से गये पांडे हलुआ भये न मांडे.

(४६०) दोनों हाथ से ताली बजती है.

(आभि.) *लड़ाई में दुतर्फ़ा ही क़सूर होता है.*

(प्रयोग) हमारे पास दो लड़के लड़ाई करके आये, एक दूसरे का क़सूर बतलाने लगा और अपने आप को बेक़सूर कहने लगा. तब हमने उन से कहा—दोनों हाथों से ताली बजती है.

(४६१) दो दोस्त तो मिल जाते हैं पर दो पहाड़ नहीं मिलते.

(अभि.) *दो मनुष्यों का एक दफ़ा अलग होकर फिर मिलजाना सम्भव है.*

(प्रयोग) मैं अपने घर से ५०० मील के फ़ासिले पर नौकर था, वहां बहुत दिन रहने के कारण बहुत से मनुष्यों से मित्रता होगई थी, परमात्मा की कृपा से मेरी बदली मेरे देश में होगई, जब मैं वहां से चलने लगा तब वहां के अपने मित्रों से कहने लगा कि भला अब हमारी आपकी भेट तो शायद अगले जन्म में होगी, तब उन्होंने धीरज के लिये कहा कि दो दोस्त फिर मिल भी जाते हैं मगर दो पहाड़ नहीं मिलते अर्थात् सम्भव है कि कभी फिर भी मुलाक़ात हो जावे.

(४६२) दोनों हाथों में लड्डू हैं.

(अभि.) *सब प्रकार लाभ है.*

(प्रयोग) हमारा एक मित्र फौज में नौकर था उसको फौज के साथ कहीं लड़ाई पर जाना पड़ा, जब जाने लगा हमने कुछ सोच किया, उसने कहा–मित्र ! सोच मत करो, अगर जीत गये तो लाभ है, अगर मरगये तो यश है. मेरा तो दोनों प्रकार भला है इसलिये व्यर्थ सोच मत करो.

(४६३) देखा देखी साध्यो जोग, छीजी काया बाढ्यो रोग.

(अभि.) *व्यर्थ नक़ल करने से हानि होती है.*

(प्रयोग) किसी बजाज के यहां एक नौकर १०) रु० माहवार का कपड़ा लेनेदेने का नौकर था, उसने सोचा ये लोग बहुत नफ़ा खाते हैं, मैं ऐसा क्यों न करूं वह भी १००) रु० उधार करके कपड़े की दूकान खोल बैठा उसकी बिक्री न हुई, जब दश पन्द्रह दिन बाद नुकसान खूब उठा चुका तब कहा–देखा देखी साध्यो जोग छीजी काया बाढ्यो रोग.

(४६४) दौड़ धूप करना.

(अभि.) *बहुत परिश्रम करना.*

(प्रयोग) एक सहायक अध्यापक ने बड़ी कोशिश करके मुख्य अध्यापक का ओहदा प्राप्त करलिया, लोगों ने उसके लिये कहा कि यह मुख्य अध्यापक तो होगया, परन्तु इसे बड़ी दौड़ धूप करनी पड़ी.

(४६५) दौल डालकर शामिल होना.

(अभि.) *थोड़ीसी वस्तु देकर साझी होना.*

(प्रयोग) हमारा नौकर थोड़े से रुपये देकर और शारीरिक सहायता देने के वादे पर हमारी तिजारत में शामिल होगया तब लोगों ने उसके लिये कहा कि यह तो दौल डालकर साझी हुआ है.

(४६६) धन तो गांठ का ही काम आता है.

(अभि.) *जो धन अपने पास हो वही काम बनाता है.*

(प्रयोग) हमारा एक हज़ार रुपया एक बैंक में जमा था, दैवयोग से उसका दिवाला निकलगया, जब हमने यह हाल अपने दोस्तों से कहा तो उन्होंने कहा—धन तो गांठ का ही काम आता है.

(४६७) धड़ीभर का शिर तो हिलाया, मगर टकेभर की ज़ुबान नहीं हिलाई.

(अभि.) *शिर हिलाकर इन्कार का इशारा बतलाना.*

(प्रयोग) मैंने एक मनुष्य से पूछा कि मेरठ का रास्ता क्या यही है ?, उसने शिर हिला कर "नहीं" जाहिर किया तब मैंने कहा—इसने धड़ीभर का शिर तो हिलाया, मगर टकेभर की ज़ुबान नहीं हिलाई.

(४६८) धर्म की सदा जय होती है.

(अभि.) *धर्मिष्ठ मनुष्य हमेशा विजय प्राप्त करते हैं.*

(प्रयोग) एक अफसर ने अपने मातहत को कोई कार्य्य धर्मविरुद्ध करने को कहा, उसने मने किया अफसर ने उसे एकदम निकाल दिया उसको दूसरी जगह उससे भी अच्छी जगह मिलगई तब लोगों ने कहा कि धर्म की सदा जय होती है.

(४६९) धर्म का धर्म कर्म का कर्म.

(अभि.) *स्वार्थ परमार्थ दोनों.*

(प्रयोग) एक अध्यापक से किसी ने कहा कि पाठशाला की नौकरी अच्छी नहीं होती, तब अध्यापक ने उत्तर दिया कि इस नौकरी कोतो कोई नौकरी मिलती ही नहीं, इस में धर्म और कर्म दोनों बातें होती हैं.

(४७०) धनि रहीम जल पंकको लघुजिय पियत अघाय ।
उदधि बड़ाई कौन है जगत पियासो जाय ॥

(अभि.) *छोटी वस्तु जिससे दुनियां को फ़ायदा हो उस बड़ी वस्तु से अच्छी कहाती है जो कुछ फ़ायदा न दे.*

(प्रयोग) एक भिखारी को किसी ग़रीब के यहां से एक चुकटी आटा मिला मगर किसी धनवान के यहां से कुछ न मिला, तब उस भिखारी ने यह दोहा पढ़ा.

(४७१) धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपतिकाल परखिये चारी.

(अभि.) *धैर्य्य, मित्र, स्त्री, धर्म की परीक्षा दुःख में होती है.*

(प्रयोग) एक धनवान के बहुत से मित्र थे, परन्तु एक दफ़ा उसपर कोई बड़ाभारी मुक़द्दमा क़ायम होगया, उसने अपने मित्रों

से उस समय रुपये की सहायता माँगी, तब मित्रों ने यह सोचकर कि कभी इस को फाँसी होजावे और फिर हमारा रुपया न मिले साफ़ इन्कार कर दिया, तब उसने कहा कि धीरज धर्म मित्र अरु नारी आपतिकाल परखिये चारी.

(४७२) धूनी पानी का संयोग है.

(अभि.) *खाने पीने में साझा है.*

(प्रयोग) दो मनुष्य जिन के गांओं में ५०० कोस का अंतर था एकही जगह सरकारी नौकर थे, उन का खाना एकही जगह इकट्ठा बनताथा, हमने एक दिन उन्हें पूछा कि क्या आप लोगों में कोई रिश्तेदारी है ? उन्हों ने उत्तर दिया–"नहीं" केवल धूनी पानी का संयोग है.

(४७३) धोबी का कुत्ता घर का न घाटका.

(अभि.) *न इधर के न उधर के, कहीं के भी नहीं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ८) रु० माहवारी की नौकरी छोड़कर अधिक की इच्छा से परदेश गया, वहां कहीं भी उसे नौकरी नहीं मिली फिर उसने पुरानी जगहपर आना चाहा वह भी उसे न मिली तब वह मारा २ फिरने लगा, लोगों ने उसके लिये कहा–धोबी का कुत्ता घरका न घाटका.

(४७४) नई नायन बांस का नेहरना.

(अभि.) *नये आदमी का नीतिविरुद्ध काम करना.*

(प्रयोग) एक ट्रेंडटीचर ने बहुतसी रीतियां अपनी अक़ल से बनाईं कि जिन के निकलवाने में बहुत से प्रश्न करने पड़ते थे और पुस्तकों में उन के लिये साधारण रीति दी हुई थी तब इस पर और ट्रेंडटीचरों ने कहा–नई नायन बांसका नेहरना.

(४७५) नई मुसलमानी अल्ला ही अल्ला पुकारे.

(अभि.) *नवीन ढंग अख्तयार करने वाले का उस ढंग की बड़ाई अधिक करना.*

(प्रयोग) एक हिन्दू ने ईसाई मजहब अख्तयार किया वह हरवक्त यही भजन कहा करता "ईसू मसीह मेरे प्राण बचैयो" तब लोगों ने उसके लिये कहा कि इसकी तो वही कहावत है कि नई मुसल मानी अल्लाह ही अल्लाह पुकारे.

(४७६) नक़ारख़ाने में तूती की आवाज़.

(अभि.) *छोटों की बात बड़ों में न चलना.*

(प्रयोग) किसी मनुष्य ने लाट साहिब की कचहरी में नौकरी करने के लिये तहसीलदार साहिब से कहा कि आप हमारी सिफ़ारिश कर दीजिये, तहसीलदार साहिब ने कहा–मेरी सिफ़ारिश को कौन पूछता है ?, मेरी सिफ़ारिश वहां ऐसी है जैसी नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़.

(४७७) नदी नाव संयोग.

(अभि.) *संयोग से मिलना.*

(प्रयोग) दो आदमी बहुत दूर के रहने वाले एक ही जगह रहते थे एक दिन उनमें इस प्रकार की बातें हो रही थीं कि कहां के आप कहां का मैं अब एक जगह कैसे प्रेम से रहते हैं तब दूसरे ने कहा–नदी नाव संयोग.

(४७८) नकटे की नाक कटी सवागज और बढ़ी.

(अभि.) *बेशर्म आदमी मने करने पर अधिक बेशर्मी करता है.*

(प्रयोग) एक लड़का अपना स्कूल का काम ठीक करके नहीं लाता था, गुरुजी ने एक दो दफ़ उसको शर्म दिलाई, मगर उस शर्म का उसपर कुछ असर न हुआ बल्कि और भी ख़राब काम करके लाने लगा तब गुरुजी ने उससे कहा—नकटे की नाक कटी सवागज और बढ़ी.

(४७९) नमाज़ को गये रोज़ा गले पड़ा.

(अभि.) *भलाई के लिये काम करना उसमें और कष्ट पड़जाना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने मित्र की भलाई के लिये उसके मुक़द्दमे का गवाह बन गया, गवाही में उस मनुष्य पर भी मुक़द्दमा कायम होगया तब उसने कहा कि हमारा तो वह हाल होगया कि नमाज़ को गये रोज़ा सिर पड़ा.

(४८०) नये सिरे से जन्म पाया है.

(अभि.) *अधिक बीमारी से अच्छा होना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को प्लेग की बीमारी होगई, मगर वह बड़ी तकलीफ़ों के बाद बच गया तब लोगों ने उस के लिये कहा कि तुमने तो नये सिरे से जन्म पाया है.

(४८१) न अन्धे को न्योतै न दो जने बुलावे.

(अभि.) *अयोग्य पुरुष से काम लेने में लाभ के बदले हानि होती है.*

(प्रयोग) हमने अपनी घड़ी अपने मित्र से, कि जो कुछ २ घड़ी ठीक कर सक्ता था, ठीक करवाना चाहा उसने ठीक करने में और बिगाड़ दी, जब हम उसको घड़ीसाज के पास लेगये तो उसने कहा कि इसको किसी अनाड़ी ने अधिक बिगाड़ दिया है इसलिये अब इस में अधिक ख़र्च बैठेगा तब हमने कहा—न अन्धे को न्योतते न दो जने बुलाते.

(४८२) न कुत्ता देखेगा न भौंकेगा.

(अभि.) *छिपकर काम करना.*

(प्रयोग) कुछ आदमी मिलकर जूआ खेलना चाहते थे उनमें से एक ने कहा कि यदि बाहर बैठकर खेलेंगे तो कोई मने करेगा इसलिये घर के भीतर खेलें वहां न कोई देखेगा न मने करेगा अर्थात् न कुत्ता देखेगा न भौंकेगा.

(४८३) न नाम लेवा न पानी देवा.

(अभि.) *सर्वनाश होजाना.*

(प्रयोग) एक बूढ़े आदमी के सिवाय उसके घर वाले सब प्लेग में मर गये थे तब उसने कहा—मैं तो ऐसा हूं कि न कोई मेरा नाम लेवा रहा और न पानी देवा रहा.

(४८४) न नौ मन तैल होगा न राधिका नाचेगी.

(अभि.) *किसी बहाने से काम न करना.*

(प्रयोग) एक गवैये से कहा कि भजन सुनाओ, उसने उत्तर दिया कि साज लाओ साज मिलना वहां असम्भव था, हमने कहा-विना साज ही गाओ उसने मने किया, तब हमने कहा—तुम्हारी तो वह मसल है न नौमन तैल होगा न राधिका नाचेगी.

(४८५) न बासी बचे न कुत्ता खाय.

(अभि.) *शेष न बचना.*

(प्रयोग) एक हमारे मित्र ने हमसे रुपया उधार मांगा. हमारी तनख्वाह आते ही सब खर्च होजाया करती थी इसलिये हमारे पास रुपया नहीं था, हमने मित्र से कहा हमारी तनख्वाह का तो वह हिसाब है कि बासी बचे न कुत्ता खाय.

(४८६) न मैं कहूं तेरी न तू कह मेरी.

(अभि.) *एक दूसरे की बात छिपाना.*

(प्रयोग) किसी दफ्तर के चपरासी को वहां के दफ्तरी ने कुछ बेई-मानी करते हुए देख लिया, इत्तिफाक़ से दफ्तरी को भी चप-रासी ने कुछ बेईमानी करते हुए देखा तब दोनों ने आपस में कहा—न तू कह मेरी न मैं कहूं तेरी.

(४८७) न रहे बांस न बजे बांसुरी.

(अभि.) *जड़ मूल से खो देना.*

(प्रयोग) किसी स्कूल में एक लड़का बदचलन था, हेडमास्टर ने उसे निकालना चाहा इसपर सहायक अध्यापकों ने उस की सिफ़ारिश की, तब हेडमास्टर ने नायबों से कहा कि मेरा तो उसूल यह है कि न रहे बांस न बजे बांसुरी अर्थात् मैं तो इसे बिलकुल निकाल ही दूंगा.

(४८८) नये चिकनिया अंडी का फुलेल.

(अ.प्र.) *इस का अर्थ और प्रयोग नं० ४७४ के सदृश है.*

(४८९) नदी में रहना और मगरमच्छ से वैर.

(अ.प्र.) *ज की तख्ती में वर्णन हो चुका है कि जल में रहना और मगरमच्छ से वैर.*

(४९०) नायन धोवै सबके पांव, अपने धोते आवै लाज.

(अभि.) *दूसरों का काम करना वही काम अपने घर न करना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य दूसरे घर पानी भरने की नौकरी किया करता था एक दिन उस की स्त्री ने कहा कि आज मेरी तबियत

ख़राब है अपने घर पानी भरलो, उसने मने किया कि तुम्हीं भरलाओ, तब स्त्री ने कहा कि तुम्हारी तो वह मसल है कि नायन धोवै सबके पांव अपने धोते आवै लाज.

(४६१) नया नौ दिन पुराना सौ दिन.

(अभि.) *नई चीज़ थोड़े दिनों पीछे पुरानी कहलाती है इसलिये पुरानी चीज़ों से घृणा नहीं चाहिये.*

(प्रयोग) हमारे एक मित्र ने हम से थोड़े दिनों की बनी हुई वस्तुओं के नीलाम करने की और नई वस्तुओं के बनवाने की सलाह ली, हमने कहा—नया नौ दिन पुराना सौ दिन अर्थात् ये चीज़ें अलग कर देने के क़ाबिल नहीं हैं.

(४६२) नाई बाल कितने, यजमान आगे आजावेंगे.

(अभि.) *जो बात शीघ्र मालूम होने वाली है उस की पूछपाछ करनी व्यर्थ है.*

(प्रयोग) एक क्लर्क से एक अध्यापक ने पूछा कि मेरी तरक्की के काग़ज़ात जो पेश थे उन में क्या हुक्म हुआ ?, उसने उत्तर दिया कि कल परसों कमेटी होगी तब मालूम होगा फिर अध्यापक साहिब ने पूछा कि आप की राय में कैसी उम्मेद है ?, क्लर्क ने उत्तर दिया—नाई बाल कितने यजमान आगे आजावेंगे अर्थात् जब कल मालूम हो ही जावेगा तब बहुत पूछ पाछ की क्या आवश्यकता है ?.

(४६३) नाई की बरात में सबही ठाकुर.

(अभि.) *विना अफ्सर के इंतज़ाम ठीक नहीं रहता.*

(प्रयोग) एक अध्यापक छुट्टी पर गया था लड़कों ने उस के पीछे खूब दंगा किया, आपस में किसी का भी खौफ़ न किया एक बड़े लड़के ने उनको समझाया, मगर किसी ने कुछ ख़याल न किया तब उस लड़के ने कहा कि आज यहां तो वह हाल है कि नाइयों की बरात में सब ही ठाकुर.

(४६४) नाच न जाने आंगन टेढ़ा.

(अभि.) *काम करना तो आवे नहीं औरों का दोष बतलावे.*

(प्रयोग) एक मनुष्य कोट पतलून पहिने जा रहा था हमने एक इंग्रेज़ी की चिट्ठी उसको देकर प्रार्थना की कि इस में क्या लिखा है ?, वह इंग्रेजी पढ़ा तो था ही नहीं उसने उत्तर दिया कि मेरा चश्मा यहां नहीं है तब हमने अपने मित्र से कहा कि इस का तो वह हाल है कि नाच न जाने आंगन टेढ़ा.

(४६५) नाक का बाल होना.

(अभि.) *हरवक्त आंखों के सामने रखना, अधिक प्यारा होना.*

(प्रयोग) एक अफसर अपने मातहत से बहुत प्यार किया करता था और उस को दिन रात अपने पास रखता था तब लोगों ने उस मातहत के लिये कहा कि यह तो अफसर के नाक का बाल है.

(४६६) नाक में दम आना.

(अभि.) *बहुत दुःख मानना, तंग आना.*

(प्रयोग) एक अफसर अपने मातहतों को हरवक्त काममें लगाये रखता था कि खाने पीने की भी बहुत कम फुर्सत देता था तब मातहतों ने आपस में कहा कि इस अफसर की मातहती में तो नाक में दम आरहा है.

(४९७) **नामी चोर मारा जाय, नामी बनियां कमा खाय.**

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक बनिये ने बजाजे की दूकान की, एक सालभर तक उस ने कुछ नफा नहीं लिया इसलिये वह लोगों की निगाहों में बड़ा सस्ता और उम्दा माल बेचने वाला बन गया अब उसकी दूकान पर बड़ी बिक्री होती है वह खूब नफा उठाता है अब लोग उसकी हालत देख कर कहते हैं कि ठीक है नामी चोर मारा जाय नामी बनियां कमा खाय.

(४९८) **नादान मित्र से दाना दुश्मन अच्छा है.**

(अभि.) *मूर्ख मित्र से बुद्धिमान् शत्रु अच्छा होता है.*

(प्रयोग) किसी मनुष्य की एक मूर्ख मनुष्य बहुत सेवा किया करता था इसलिये वह मनुष्य भी उस मूर्खपर स्नेह करने लगा, एक दिन उस मूर्ख ने किसी स्त्री का जेवर छीन लिया जब मुक़द्दमा चला तब अपने स्नेही की गवाही लिखवा दी तब उस मनुष्य ने कहा कि सच है मूर्ख मित्र से दाना दुश्मन अच्छा.

(४९९) **नाम बड़े दर्शन छोटे.**

(अभि.) *गुण के विरुद्ध बड़ाई.*

(प्रयोग) एक साधु बहुत ही नेक प्रसिद्ध था, एक दिन हमने उसको एक कार्य्य बहुत ही भद्दा करते देखा तब हमने कहा कि इस साधु का तो वह हाल है कि नाम बड़े और दर्शन छोटे.

(५००) **नाना के आगे ननहर की बातें.**

(अभि.) *अपने से अधिक किसी विषय जानने वाले के सामने उस विषय की बातें कहना अच्छा नहीं.*

(प्रयोग) किसी इतिहास लिखने वाले के सामने एक मनुष्य कोई इतिहास की बातें सुनाने लगा तब उसने कहा—तुम्हारा कहना ऐसा है जैसा नाना के आगे ननहूर की बातें.

(५०१) नानी तो क्वारी मर गई नवासे के नौ २ व्याह.

(अभि.) *अपनी बड़ाई मारने पर दूसरे आदमी का धमकाना.*

(प्रयोग) किसी जाट के घर में खेती क्यारी का काम होता था उसका लड़का इंग्रेज़ी पढ़ता था, एक दिन वह लड़का अपने और साथियों में कह रहा था कि मैं बड़ा अमीर हूं तब किसी जानने वाले ने कहा तेरे बाप तो हल पीटते २ मर गये तू अमीर बना है अर्थात् नानी तो क्वारी मर गई नवासे के सौ २ व्याह.

(५०२) नाम भानवती और झोली में सिर.

(अ.प्र.) *इसका अर्थ और प्रयोग वही है जो कि ४९९ का है.*

(५०३) निन्नानवे के फेर में पड़ना.

(अभि.) *हविस करके रुपया इकट्ठा करना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने ९९ रु० इकट्ठे कर लिये अब वह सोचने लगा—किसी तरह १) रु० और होता तो पूरे १००) रु० हो जाते १००) रु० भी उसके पास होगये फिर वह सोचने लगा किसी तरह १०१) रु० होजाते इसी तरह हविस बढ़ाते २ उसने अपने हरएक खर्च में कमी करदी तब लोगों ने उसके लिये कहा कि यह निन्नानवे के फेर में पड़ गया.

(५०४) नीयत की बरकत.

(अभि.) *ईमान्दारी से धन बढ़ता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने ईमान्दारी के साथ दूकान्दारी शुरू की थोड़े दिनों पीछे वह अच्छा मालदार होगया तब लोगों ने कहा– नीयत की बरकत से इसके पास धन बढ़ा है.

(५०५) नेकी और पूछ २.

(अभि.) *भलाई कराना सब चाहते हैं.*

(प्रयोग) हमारा एक मित्र हमारे मकान पर आया वह हुक्का पीने का बड़ा शौकीन था हमने पूछा–क्या हुक्का पीओगे ? उसने उत्तर दिया–नेकी और पूछ २.

(५०६) नौकरी की जड़ सवागज ऊपर.

(अभि.) *नौकरी का कुछ भरोसा नहीं.*

(प्रयोग) एक अफ्सर ने अपने किसी मातहत को किसी छोटे से अपराध पर अलग कर दिया तब उसने अपने मित्रों से कहा– नौकरी की जड़ सवागज ऊपर.

(५०७) नौ दिन चले अढ़ाई कोस.

(अभि.) *अधिक परिश्रम का थोड़ा फल.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी ने एक पुस्तक तमाम दिन याद करी, मगर एक ही सफा याद हुआ, तब गुरु ने उसको कहा–तुम्हारा तो वह हाल है कि नौ दिन चले अढ़ाई कोस.

(५०८) नौ नक़द न तेरह उधार.

(अभि.) *उधार से नक़द थोड़ा मिलना भी अच्छा है.*

(प्रयोग) किसी मनुष्य ने एक बजाज़ के यहाँ से दश रुपये का कपड़ा लिया और कहा दश रुपये २ माह बाद दूंगा. बजाज़ ने कहा—अभी लाओ उस मनुष्य ने कहा—२ माह बाद १०) रु० का ब्याज भी ले लेना, तब बजाज़ ने कहा—हमारी तो रीति यह है कि नौ नक़द न तेरह उधार अर्थात् १०) रुपये नक़द देदो हम १०) से अधिक उधार को पसंद नहीं करते हैं.

(५०९) नंगी क्या न्हावे और क्या निचोड़े.

(अभि.) निर्धन क्या खावे और क्या दान करे अर्थात् कुछ नहीं.

(प्रयोग) एक जगह किसी कार्य्य के लिये चन्दा इकट्ठा हो रहा था अमीरों ने तो दे दिया, मगर ग़रीबों ने कुछ नहीं दिया तब उन ग़रीबों के लिये कहा गया कि नंगी क्या न्हावे क्या खावे.

(५१०) नौ सौ चूहे खाय बिलाई हज्ज को चली.

(अभि.) *पापी का कोई भक्ति का कार्य्य करने लगना.*

(प्रयोग) एक चोर ने तमाम उम्र चोरी की, बुढ़ापे में वह यह सोच कर कि अब मेरे बसका चोरी करने का काम नहीं, है परमात्मा की भक्ति करने लगा तब लोगों ने उसके लिये कहा कि इस का वह हाल है कि नौ सौ चूहे खाय बिलाई हज्ज को चली.

(५११) नीम * हकीम खतरे जां नीम मुल्ला खतरे ईमां.

(अभि.) *आधे वैद्य से जान का अंदेशा है आधे मुल्ला से ईमान का अंदेशा है.*

---

* *"नीम" यह शब्द फ़ारसी का है इसके मायने आधे के हैं.*

(प्रयोग) किसी बीमारने अपना इलाज थोड़े ख़र्च के कारण मामूली वैद्य से कराना चाहा तब उसके मित्र ने कहा—ख़र्च चाहे अधिक हो मगर इलाज बहुत अच्छे वैद्य से कराओ क्योंकि कहा है कि नीम हकीम ख़तरे जां नीम मुल्ला खतरे ईमां.

(५१२) नामर्दी तो ईश्वरने दी, मार २ तो किये जाओ.

(अभि.) अशक्त होने पर भी कुछ न कुछ करते रहो.

(प्रयोग) एक कृषक को दो तीन साल से विना बारिश अपने खेत से कुछ हाथ पल्ले न पड़ता था उसने मजबूर होकर यह काम छोड़ना चाहा तब किसी बुद्धिमान् ने उससे कहा कि नामर्दी तो ईश्वर ने दी, मार २ तो करते रहो अर्थात् पानी कूप से लेकर खेत में दो, मगर यह काम मत छोड़ो.

(५१३) पढ़े फ़ारसी बेचें तेल यह देखो कुदरत के खेल.

(अभि.) भाग्य की किसी को खबर नहीं.

(प्रयोग) एक मनुष्य ने इंग्रेज़ी में इन्ट्रेन्स पास करलिया सब जगह नौकरी तलाश की, मगर कहीं भी न मिली तब उसने मजबूर होकर मज़दूरी का काम करना शुरू किया लोगों को उसके लिये यह कहावत याद आई कि पढ़े फ़ारसी बेचें तेल यह देखो कुदरत के खेल.

(५१४) पढ़े न लिखे नाम मुहम्मदफ़ाज़िल.

(अभि.) गुण विन नाम पड़ना.

(प्रयोग) एक मनुष्य का नाम शेरसिंह था एकदिन वह गीदड़ को देख कर डर भागा दूसरे मनुष्यने कहा—नाम तो तुम्हारा शेरसिंह डरते हो गीदड़ों से, तुम्हारी तो वही मसल है कि पढ़े न लिखे नाम मुहम्मदफ़ाज़िल.

(५१५) पत्थर का कलेजा होना.

(अभि.) *बड़ा मज़बूत दिल होना.*

(प्रयोग) किसी मनुष्य का लड़का गुज़र गया, मगर उस मनुष्य को आंसू तक नहीं आए तब लोगों ने उसके लिये कहा–यह तो पत्थर का कलेजा रखता है.

(५१६) पराया सेर पन्सेरी बराबर.

(अभि.) *दूसरों का माल अधिक दीखता है.*

(प्रयोग) दो चार मनुष्य इकट्ठे बैठे हुए किसी बजाज़ के कपड़े का अंदाज कर रहे थे कि इसकी दुकान में १२ हज़ार रु० का कपड़ा होगा, हालां कि कपड़ा उस में ६ हज़ार का था तब किसी और आदमी ने जो कपड़ों की कीमत से जानकार था कहा कि दूसरों का सेर पंसेरी बराबर अर्थात् वहां तो ६ हज़ार का ही कपड़ा है.

(५१७) पहाड़ी गधा पूर्वी रेंक.

(अभि.) *चाल विरुद्ध कोई कार्य्य करना.*

(प्रयोग) एक गांव का लड़का एक हाईस्कूल में इंग्रेज़ी पढ़ता था वह किसी छुट्टी में अपने गांव में आया, उसके पड़ौसी ने पूछा मिज़ाज कैसे हैं?, उसने उत्तर दिया–"आई एम काइट व्यल" तब पड़ौसी ने कहा–तुम्हारी तो वह मसल है कि पहाड़ी गधा पूर्वी रेंक.

(५१८) पढ़े तो हैं पर गुने नहीं.

(अभि.) *पढ़ लिये परन्तु व्यवहार की शिक्षा नहीं पाई.*

(प्रयोग) एक लड़के ने उर्दू मिडिल पास किया उससे एक बनिये ने पूछा कि साढ़े पांच छटांक ३ सेर के भाव २ मन साढ़े ६ सेर जिन्स कितने की हुई? उसने आधे घंटे में स्लेटपर यह प्रश्न हल किया एक छोटे बनिये के लड़के ने इस प्रश्न को बात की बात में ज़बानी हल कर दिया, तब लोगों ने मिडिल पास लड़के के लिये कहा कि यह पढ़ा तो है पर गुना नहीं.

(५१९) पराधीन सपनेहु सुख नाहीं.

(अभि.) *दूसरों के आधीन रहने में कभी भी सुख नहीं मिलता.*

(प्रयोग) एक कृषक ने एक नौकर से कहा कि मुझे भी अपने महकमे में नौकरी दिलवादो तब नौकर ने कहा कि यहां तुम स्वाधीन हो वहां पराधीन होगे इसलिये नौकरी मत करो कहा भी है कि पराधीन सपनेहु सुख नाहीं.

(५२०) पहिले मारै सोई मीर.

(अभि.) *जो पहिले काम करे वही जीत में रहे.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने कुछ लड़कों को दौड़ के खेल में दौड़ाया और कहा कि जो सब से आगे दौड़ में रहेगा उसको पावभर मिठाई दी जावेगी, जो लड़का सब से आगे आया उस को मिठाई देदी गई और लड़कों ने कहा हमको भी मिठाई दीजिये तब थोड़ी २ मिठाई देते हुए अध्यापक ने कहा जो पहिले मारै सोई मीर.

(५२१) पराया घर थूक का भी डर.

(अभि.) *दूसरों के सहारे रहने में छोटी २ बातों में भी दबना पड़ता है.*

(प्रयोग) हमारा एक मित्र एक छोटासा मकान किराये लेकर उसमें रहता था हमने उससे कहा क्यों किराया देते हो? हमारे घर में आकर रहो तब उसने कहा यहीं अच्छा है पराया घर थूक का भी डर आपके पास आने में मुझे हर तरह से डरना पड़ेगा.

(५२२) परदेशी की प्रीति झोल का तापना.

(अभि.) *परदेशी की प्रीति की कुछ बुनियाद नहीं होती.*

(प्रयोग) हम अपने घर से बहुत फासले पर दूसरे देश में दुकान करते थे वहां के आदमियों से हमारी बहुत प्रीति होगई थी हम अपनी दुकान उठाकर अपने देश में लाने लगे तब वहां के हमारे मित्रों ने कहा कि परदेशी की प्रीति झोल का तापना.

(५२३) पकाई थी खीर होगया दलिया.

(अभि.) *परिश्रम का फल उलटा प्राप्त होना.*

(प्रयोग) एक गांव के मनुष्य ने अपने लड़के को शहर के स्कूल में इसलिये पढ़ने को भेजा कि वहां सभ्यता सीख जावेगा, वहां शहर के लड़कों में रहने के कारण उसका चाल चलन बिगड़ गया, तब उस मनुष्य ने कहा अच्छाई के लिये काम किया था फल बुरा मिला अर्थात् पकाई थी खीर होगया दलिया.

(५२४) परहित घृत जिनके मन माखी.

(अभि.) *दुष्ट मनुष्य दूसरों का काम बिगाड़ने के लिये अपनी जान तक देदेते हैं.*

(प्रयोग) एक दुष्ट मनुष्य ने यह सोचकर कि मेरे तो औलाद है नहीं मेरे पड़ौसी के लड़का है इसको भी अपने ही जैसा रक्खूं

उसके लड़के को विष देदिया वह दुष्ट इस काम के करने के कारण फांसी पर चढ़ाया गया तब और लोगों ने दुष्ट के लिये यह कहा कि परहित घृत जिनके मन माखी.

(५२५) पानी कासा बुलबुला.

(अभि.) *थोड़ी ही देर में नाश होने वाला.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अधिक बीमार हुआ जब उसको यह मालूम हो गया कि अब मैं नहीं बचूंगा तब उसने लोगों को नसीहत की कि मनुष्य की ज़िन्दगी पानी के बुलबुले की भांति है इसलिये इसमें पाप कदापि नहीं करने चाहिये.

(५२६) पानी का हगा ऊपर आता है.

(अभि.) *बुरा काम छिपकर भी किया जावे तब भी ज़ाहिर होता है.*

(प्रयोग) किसी विधवा स्त्री का चाल चलन खराब था, जो कोई उस को समझाता कि अपना चाल चलन ठीक रक्खो, तब उस को उत्तर देती मैं विधवा हूं इसलिये तुम मुझे बदनाम करते हो, एक दफ़ा वह गर्भवती होगई तब लोगों ने कहा कि हमतो तुम से पहिले ही कहते थे कि पानी का हगा ऊपर आता है.

(५२७) पानी २ होना.

(अभि.) *बहुत शर्माना, शर्म के कारण मुंह नीचे कर लेना.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी ने अपने सहपाठी की एक पुस्तक चुराकर अपने सन्दूक में रखली जब तलाशी लीगई तब उसके सन्दूक में से निकली तब वह इतना शर्माया कि पानी २ होगया.

(५२८) पांचों उंगली घी में होना.

(अभि.) *हर तरह लाभ में होना.*

(प्रयोग) एक पटवारी को किसी गांव में बड़ी आमदनी थी उसकी दो रुपये माहवार की तरक्की हुई, परमात्मा की कृपा से उस के घर में लड़का भी उत्पन्न हुआ जब उसकी चर्चा हुई तब लोगों ने कहा कि आज कल तो उसकी पांचों उंगली घी में हैं.

(५२९) पानी पीकर जात पूछना.

(अभि.) *काम करके पीछे भलाई बुराई सोचना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने किसी अपरिचित मनुष्य को नौकर रक्खा वह नौकर कुछ माल लेकर भाग गया तब उस मनुष्य ने उसका पता लोगों से पूछा कि वह कहां का था? तब लोगों ने कहा कि आपका तो वह मामला है कि पानी पीकर जात पूछना पहिले ही उसका ठीक २ हाल जानकर नौकर रखते.

(५३०) पाप की नाव एक न एक दिन अवश्य डूबती है.

(अभि.) *बुरा काम कभी न कभी नाश कर देता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य हमेशा चोरी किया करता था एक दिन पकड़ा गया और कारागार में भेज दिया गया तब लोगों ने उसके लिये कहा कि पाप की नाव एक न एक दिन अवश्य डूबती है.

(५३१) पांचों उंगली बराबर नहीं होतीं.

(अभि.) *सब आदमी एक से नहीं होते.*

(प्रयोग) एक अध्यापक की ५) रु० की जेबी घड़ी स्कूल में से गायब होगई अध्यापक ने सब नौकरों को बुलाकर धमकाया और कहा कि यदि घड़ी का पता नहीं लगेगा तो तुम सबको निकाल दूंगा तब उस में एक ईमान्दार नौकर ने कहा कि हुजूर! पांचों उंगली बराबर नहीं होती जो चोर है उसको निकालिये.

(५३२) पांचों मिलके कीजे काज हारे जीते आवे न लाज.

(अभि.) *सब की सलाह से जो काम किया जावे फिर उस में पछ्-तावा नहीं होता.*

(प्रयोग) एक ग़रीब आदमी अपनी लड़की के कन्यादान में १००) रु० देने के लिये कहीं से उधार मांगने लगा, तब लोगों ने उसे समझाया कि दान में उतना ही रुपया दो जितना सब भाई बतावें नहीं पीछे पछताओगे क्योंकि कहा भी है कि पांचों मिलके कीजे काज हारे जीते आवे न लाज.

(५३३) पांसा पड़े सो दाव राजा करे सो न्याव.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) किसी मनुष्य का मुक़द्दमा उसके मुताबिक फैसल नहीं हुआ वह लोगों से कहने लगा कि डिप्टी कलेक्टर साहिब ने बेईमानी करी न्याव नहीं किया तब लोगों ने कहा कि जो कुछ उन्होंने किया वही न्याव है कहा भी है कि पांसा पड़े सो दाव राजा करे सो न्याव.

(५३४) पांच पंच तहां परमेश्वर.

(अभि.)- *पंचों की बात अवश्य माननी चाहिये.*

(प्रयोग) किसी जगह पंचों ने मिलकर एक बात ते की, एक दो मनुष्य उसके मानने में राजी न हुए तब लोगों ने उन्हें समझाया अवश्य मानो कहा भी है कि पांच पंच तहां परमेश्वर.

(५३५) पंच कहें बिल्ली सो बिल्ली.

(अभि.) *पंचों का झूठ कहना भी सच्चा माना जाताहै.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी ने गुरुजी से शिकायत की कि ये सब लड़के मुझे चोर कहते हैं तब गुरुजी ने कहा–यदि ये सब तुम्हें चोर कहते हैं तो तुमने कोई चोरी ज़रूर की होगी, उसने कहा–ये सब झूठ बोलते हैं, तब गुरुजी ने कहा कि कहावत है कि पंच कहैं बिल्ली सो बिल्ली अर्थात् इन सब की झूठ बात भी सच माननी पड़ेगी.

(५३६) पानी तो नीचे ही को बहता है.

(अभि.) *नीचगमन तो बुरे ही काम करता है.*

(प्रयोग) किसी आर्य्यसमाजी मनुष्य ने एक चोर को चोरी के ऐब समझाये और उसके दिल में परमेश्वर की भक्ति के अंकुर जमाये, सिवाय इसके भजन कहने संध्या करनी आदि सब उत्तम बातें सिखाई, एक दिन वह चोर उसी मनुष्य का २००) रु० का सोनेका तोड़ा लेकर चलदिया और पता तक न दिया, तब लोगों ने उस आर्य्यसमाजी से कहा–तुमतो खूब दुनियां का सुधार करते हो, उत्तर दिया गया कि पानी तो नीचे ही को बहता है.

(५३७) पानी तक न मांगना.

(अभि.) *बहुत जल्दी मरजाना.*

(प्रयोग) मैं एक दिन हिरन का शिकार खेलने जंगल में गया, एक हिरन को देखकर उसपर गोली छोड़ी, गोली लगते ही मरगया, उसने पानी तक न मांगा.

(५३८) पीठपीछे तो बादशाह को भी बुरा कह देते हैं.

(अभि.) *अभिप्राय स्पष्ट है.*

(प्रयोग) मुझसे मेरे एक शिष्यने कहा कि अमुक मनुष्य आपकी बुराई कर रहा था, मैंने शिष्य से कहा कि पीठ पीछे तो बादशाह को भी बुरा कह देते हैं.

(५३९) प्रीति का निबाहना खांडे की धार होता है.

(अभि.) *स्नेह का निबाहना बहुत ही कठिन होता है.*

(प्रयोग) दो मनुष्यों में आपस में बहुत कुछ प्रीति थी किसी बात पर उन दोनों में अनबन होगई तब उनकी हालत देखकर लोगों ने कहा कि प्रीतिका निबाहना खांडे की धार होता है.

(५४०) पीर भिश्ती बबर्ची ख़र.

(अभि.) *पूजनीय, पानीभरने वाला, रोटीबनाने वाला, बोझ लेजा-ने वाला.*

(प्रयोग) यह बहुधा अनपढ़ ब्राह्मण के लिये कहा जाता है, यह कहा-वत इस तरह पर है कि किसी रानी ने बांदी से कहा कि "बांदी लाओ ऐसा नर पीर भिश्ती बबर्ची ख़र" तब वह एक अनपढ़ ब्राह्मण को नौकरी के लिये यह समझ कर ले आई कि यह चारों कामों में ठीक होगा.

(५४१) पूत के पांव पालने ही में पहिचाने जाते हैं.

(अभि.) *छोटी अवस्था में ही बच्चे की बुद्धि की परीक्षा होजाती है.*

(प्रयोग) एक लड़के ने ४ वर्ष की अवस्था में ही १०० तक की गिन्ती याद करली, तब किसी मनुष्य ने उसकी गिन्ती सुनकर कहा कि यह लड़का बड़ा बुद्धिमान् होगा, कहा भी है कि पूत के पांव पालने में ही पहिचान लिये जाते हैं.

(५४२) पेट कुआं मुंह सुई.

(अभि.) *छोटी अवस्था में बड़ी बातें कहना.*

(प्रयोग) बड़े २ मनुष्यों की पंचायत में एक लड़का भी बड़ी २ बातें कहने लगा तब लोगों ने उसको कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि पेट कुआं मुंह सुई.

(५४३) पेट में चूहे दौड़ना.

(अभि.) *अधिक भूक लगना.*

(प्रयोग) मैं और मेरा मित्र एक पहाड़ की सैर को इस इरादे से गये कि दुपहर तक वापिस आजावेंगे परन्तु वहां पहाड़ की चढ़ाई और उतराई में शाम होगई, भूक के कारण भी परेशान होगये तब हमने मित्र से कहा कि आज तो पेट में चूहे दौड़ रहे हैं.

(५४४) पैदा हुआ सो न पैद को.

(अभि.) *दुनिया में सभी जीवधारी मरते हैं.*

(प्रयोग) किसी जवान मनुष्य की मौत होजाने पर लोगों ने कहा कि पैदा हुआ सो न पैद को.

(५४५) पंछी करै न चाकरी, अजगर करै न काम ।
दास मलूका यों कहैं, सबके दाता राम ॥

(अभि.) *परमात्मा सब को खाने को देता है.*

(प्रयोग) एक अफसर ने किसी नौकर को अलग कर दिया किसी ने उस नौकर से पूछा कि अब कहां से खाओगे, तब नौकर ने कहा—पंछी करै न चाकरी अजगर करै न काम, दास मलूका यों कहैं सब के दाता राम.

(५४६) फुई करके तालाव भरता है.

(अभि.) *थोड़ा २ इकट्ठा करने से बहुत कुछ होजाता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपनी सब तनख्वाह चाट जाया करता था उसके मित्र ने उसे समझाया कि यदि अधिक न बचा सको तो थोड़ा २ बचाया करो, देखो फुई २ करके तालाव भरता है.

(५४७) फूल न पाती देवी हाहा.

(अभि.) *विना खर्च काम निकालना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपने मुक़द्दमे में एक वकील से वकालत करानी चाही, दिन रात उसके पास रहकर अपना मुक़द्दमे का हाल सुनाने लगा, वकील ने पूछा कि मुक़द्दमे में जीत होने पर मुझे कितना रुपया दोगे, उसने उत्तर दिया मैं क्या दूंगा, मैं तो आपका पड़ोसी हूं तब वकील ने कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि फूल न पाती देवी हाहा.

(५४८) फटे में पांव देना.

(अभि.) *दूसरे की बुराई में शामिल होना.*

(प्रयोग) हमारे एक मित्रपर एक मुक़द्दमा चल रहा था हमने उसका साथ देना चाहा तब हमारे एक सम्बंधी ने हमसे कहा—क्यों फटे में पांव देते हो.

(५४९) बकरे की मां कबतक खैर मनावेगी.

(अभि.) *कभी न कभी अवश्य दुःख में फँसेगा.*

(प्रयोग) एक मनुष्य चोरी से अपना गुज़र करता था, मगर वह चालाक ऐसा था कि पकड़ने में नहीं आता था तब हमने उसके लिये

अपने मित्रसे कहा कि बकरे की मां कबतक खैर मनावेगी अर्थात् कभी न कभी तो वह अवश्य पकड़ा जायगा और ज़ेल में जायगा.

(५५०) बड़े बोल का सिर नीचा.

(आभि.) *घमंडी को अवश्य शर्मिन्दा होना पड़ता है.*

(प्रयोग) एक पहलवान ने दो चार कुश्ती जीतली थीं इस कारण उसे बहुत घमंड हुआ और कहता फिरता था कि मेरे बराबर गंगा जमना के बीच में कोई पहलवान नहीं है, थोड़े दिनों पीछे किसी दूसरे पहलवानने उसे गिरादिया तब लोगोंने कहा कि बड़े बोलका सिर नीचा.

(५५१) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद, च दानद बूज़ना लज्ज़ात अदरक.

(आभि.) *मूर्ख गुणों को नहीं समझता.*

(प्रयोग) मेरे एक ट्रेंड मित्रने एक बहुत अच्छा पाठ पढ़ाया, एक पुराने अध्यापक ने कहा कि हमने तो इनके पाठ में कोई बात नई नहीं पाई, तब हमने कहा—बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद.

(५५२) बगुलाभक्त बनना.

(आभि.) *दूसरों के नुक्सान करने के आभिप्राय से जाहिर में अच्छा रूप बनाना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य दिनभर माला हाथ में लिये जाहिर में राम २ करता फिरा करता था जब उसका मौका लगता तभी किसी की कोई वस्तु उठा लेता था उसकी चोरी का हाल खुलने पर लोगों ने कहा कि यह तो बगुलाभक्त है.

(५५३) बछड़ा खूँटे के बल कूदता है.

(अभि.) *घर के ही धनपर हिम्मत होती है.*

(प्रयोग) एक मकान नीलाम होने वाला था, हम अपने मित्रों में बैठे हुए सलाह कर रहे थे कि हम उसकी बोली दो हज़ार रु० तक बोल देंगे तब एक मित्र ने कहा कि अमुक मनुष्य ढाई हज़ार रु० तक बोलने को कहता है, हमने कहा—उसके पास तो इतना रुपया भी नहीं है तब मित्र ने कहा कि वह भी इतने रुपये रखता ही होगा नहीं तो ऐसा क्यों कहता? कहा भी है कि बछड़ा भी खूँटे के बल ही कूदता है.

(५५४) बग़ल में सोटा नाम ग़रीबदास.

(अभि.) *नाम अच्छा काम बुरा.*

(प्रयोग) एक मनुष्य का नाम "हरिभक्त" था मगर वह दिन रात पाप-कर्म में प्रवृत्त रहता था, उसका कोई भारी पापकर्म देखकर एक सज्जन ने कहा कि नाम तो तुम्हारा "हरिभक्त" है मगर काम पापियों के से करते हो, तुम्हारा तो वही हाल है कि बगल में सोटा नाम ग़रीबदास.

(५५५) बड़े मियां तो बड़े मियां छोटे मियां सुबहान अल्ला.

(अभि.) *जैसे बड़े वैसे ही छोटे.*

(प्रयोग) एक पुलिस के इन्स्पेक्टर बड़े रिशवती थे उनके यहां जो छोटे इन्स्पेक्टर थे वे भी रिशवत लेने लगे, तब लोगों ने उन के लिये कहा—बड़े मियां सो बड़े मियां छोटे मियां सुबहान अल्ला.

(५५६) बदली की धूप जब निकलती है तब तेज़ निकलती है.

(अभि.) स्पष्ट है.

(प्रयोग) मैं और मेरा मित्र एक दिन सफ़र कर रहे थे, रास्ते में बड़ी भारी वारिश हुई, थोड़ी देर बाद धूप इस क़दर तेज़ निकली कि थोड़ी ही देर में हमारे सब कपड़े सूख गये और अधिक गर्मी मालूम होने लगी तब कहा गया कि बादल की धूप जब निकली तब तेज़ ही निकली.

(५५७) बन आये की फक़ीरी भली.

(अभि.) *रास आने पर छोटा काम भी अच्छा होता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य कबाड़े की दूकान करते २ बहुत मालदार हो गया तब लोगों ने उस के लिये कहा कि बन आये की तो फक़ीरी भली.

(५५८) बनियां मारे जान, ठग मारे पहिचान.

(अभि.) स्पष्ट है.

(प्रयोग) हमारा एक मित्र कपड़े की दूकान किया करता था, जब हमें कपड़े की आवश्यकता होती उसके यहां से ले आते और जब हम उसे क़ीमत देना चाहते तब कहता था कि जल्दी क्या है, दाम कोई मार में थोड़ा ही है ऐसी २ बातें करके वह दाम नहीं लेता, ३ साल बाद उसने उन रुपयों का व्याज परव्याज लगाके हमसे कहा—५६०) रु० दिलाओ, हमने कहा—हमारे पास एक दम रुपये नहीं हैं तब उसने नालिश करदी और मयखर्चे के ८००) रु० वसूल किये. (२) एक चोर ने अपने पड़ौस में रात को नक़ब लगाया, मगर पड़ौसी ने उसे यह

काम करते हुए देख कर पहिचान लिया और चोर से कहा कि मैंने तुझे पहिचान लिया है इस पर चोर ने यह सोच कर कि कलको यह मुझे पकड़वा देगा, अपने पड़ौसी को जान से मार डाला, ये दोनों हालात मालूम कर के लोगों ने कहा कि सच है जान मारे बनिया पहिचान मारे चोर.

(५५६) बनी २ के सब कोई साथी बिगड़ी का नहिं कोई.

(अभि.) *अमीरी में बहुत मित्र होते हैं ग़रीबी में कोई नहीं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बहुत बड़ा अमीर था दुनियां में उसकी प्रतिष्ठा होती थी और बहुतसे उसके मित्र थे, उसके घरपर चोरी होगई, सब धन माल चोर लेगये कंगाल होगया तब कोई भी मित्र उसका नहीं रहा जिस किसी से वह दो चार रुपये उधार भी मांगत तो न मिलते तब उसने कहा—सच है बनी २ के सब कोई साथी बिगड़ी का नहिं कोई.

(५६०) बन में रोना.

(अभि.) *कुछ सुनाई न होना.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने उस गांवकी अपने लिये आबहवा मुआफिक न आने की अर्ज़ी दी, मगर कुछ न हुआ. फिर ज़बानी जाकर अफसरों से शिकायत की मगर तोभी कुछ सुनाई नहीं हुई तब उसने दूसरे अध्यापक से कहा कि यहां के अफसरों से अपना दुःख कहना तो जंगल का रोना है.

(५६१) बर्तन से बर्तन खटक ही जाता है.

(अभि.) *पास २ रहने से दो मनुष्यों में थोड़ीसी लड़ाई होना मामूली बात है.*

(प्रयोग) दो भाइयों की आपस में कुछ अनबन होगई, बड़े भाई ने छोटे भाई को भोजन करने के वक़् बुलाया, मगर वह बोला तक नहीं तब उसने उसका हाथ पकड़ कर उठाया और समझाया कि बर्तन से बर्तन खटक ही जाता है.

(५६२) बहती गंगा में हाथ धोना.

(अभि.) *थोड़ीसी बात में जस प्राप्त करना.*

(प्रयोग) मेरे एक पुराने शिष्यने मुझ से कहा कि यदि आप मुझे मेरे उत्तम चालचलन का सर्टीफिकेट लिख दें तो मुझे कलेक्टरी में नौकरी मिल जावेगी, मैंने उससे कहा-तुम बड़े शरीर थे मैं तुम्हारा चाल चलन उत्तम कैसे लिखदूं, मेरे मित्र ने मुझ से कहा-तुम्हारा क्या नुक्सान है तुम तो छोटासा काग़ज़ लिखकर बहती गंगा में हाथ धोलो अर्थात् थोड़ीसी बात में जस प्राप्त करलो.

(५६३) बहुत गई थोड़ी रही.

(अभि.) *बुढ़ापा आनेवाला है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य की अवस्था ४० वर्ष की थी उसका लड़का १६ वर्ष की अवस्था में होने को आया, मगर वह चौथी क्लास में ही पढ़ता था जब वह मनुष्य उस लड़के को पढ़ने में परिश्रम न करने के कारण धमकाता तभी वह मुक़ाबिले में खड़ा होजाता तब वह कहता कि मेरी अवस्था बहुत गई और थोड़ी रही तुम अपनी कैसे बिताओगे.

(५६४) बग़ल में तोशा किसका भरोसा.

(अभि.) *ज़रूरी सामान अपने पास होना चाहिये.*

(प्रयोग) मैं और मेरे मित्र की सलाह पुष्कर कार्तिकी स्नानकी ठहरी, मैंने कहा–पुष्कर में मेरे जान पहिचान वाले बहुत हैं यहांसे कपड़े बर्तन आदि लेजाने की ज़रूरत नहीं, मेरे मित्रने कहा– नहीं साहब बग़ल मे तोशा किसका भरोसा, कपड़े बर्तन ज़रूरी सामान अपने साथ लेचलेंगे.

(५६५) बद अच्छा बदनाम बुरा.

(अभि.) *बदचलन आदमी उस नेक आदमी से अच्छा समझा जाता है जो बदचलन प्रसिद्ध हो.*

(प्रयोग) एक मनुष्य चोर था उसकी सोहबत हमारे मित्र का लड़का करने लगा इस कारण लोग उसे भी चोर कहने लगे, तब हमने मित्र के लड़के को समझाया कि "बदकी सोहबत में मत बैठो इसका है अंजाम बुरा, बद न बने तो बद कहलावे बद अच्छा बदनाम बुरा".

(५६६) बन्दर के गले में मोतियों की माला.

(अभि.) *नासमझ के पास नाज़ुक वस्तु नहीं रखनी चाहिये.*

(प्रयोग) मेरा मित्र अपनी बहुतसी तसवीरें कि जिनमें शीशा लगा हुआ था, एक गंवार मनुष्य के सुपुर्द करके कहने लगा कि, इन को हमारे घर जो वहां से १० मील के फासले पर था पहुंचाओ, हमने मित्र को समझाया तुमतो बन्दर के गले में मोतियों की माला जैसा हिसाब करते हो, यह तो इन सब को तोड़ देगा किसी होशियार मनुष्य के हाथ भेजो.

(५६७) बजाज़ की गठरी का झींगुर मालिक.

(अभि.) *दूसरों की वस्तु पर घमंड करना.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी के यहां एक नौकर १०) रु० माहवार का था वह एक दिन लोगों में बैठा हुआ कहरहा था कि सेठजी की सब चीजें मेरी ही हैं, मुझे अख्त्यार है कि मैं जो चीज़ जिसे चाहूं दूं और न दूं तब किसी ने उससे कहा कि तुम्हारी तो वह मसल है कि बजाज़ की गठरी का भींगुर मालिक.

(५६८) बलवान् के बीसों बीसे मारे और रोने न दे.

(अभि.) *बलवान् की सब बातें झेलनी पडती हैं.*

(प्रयोग) एक इन्स्पेक्टर पुलिस ने किसी मनुष्य से एक मुक़द्दमे में एक हज़ार रुपये लेकर कह दिया कि अगर कहीं इस बात का ज़िकर करोगे तो तुम्हारे ऊपर मुक़द्दमा चला दूंगा यह भेद उस मनुष्य ने अपने मित्र से कहकर सलाह की तब मित्र ने कहा कि बलवान् के बीसों बीसे मारे और रोने न दे.

(५६९) बनियां अपना गुड़ भी छिपा के खाता है.

(अभि.) *बनियां छोटीसे छोटी बात भी छिपाता है.*

(प्रयोग) एक बनियां अपनी बिक्री के पैसों की सम्हाल रातको किवड़ा बंद करके किया करता था, पड़ौसी उसका यह काम देखकर कहा करते थे कि बनियां अपना गुड़ भी छिपा के खाता है.

(५७०) बराती खा पीकर अलग होजाते हैं दुलहा दुलहिन से काम पड़ता है.

(अभि.) *बहकाने वाले लड़ाई कराके अलग होजाते हैं.*

(प्रयोग) एक जवान लड़के को लोगों ने बहका दिया कि अब तो तुम्हारे बाप ने दूसरी शादी करली है इसलिये नई स्त्री से जो बच्चे होंगे वही जायदाद के मालिक बन जावेंगे तुम अभी

से जायदाद के मालिक होने की कोशिश करो इस बात पर उस लड़के ने अपने बाप से लड़ना शुरू कर दिया तब बाप ने उसे समझाया कि बराती तो खा पीकर अलग होजाते हैं काम तो दुलहा दुलहिन से पड़ता है.

(५७१) वसंत की ख़बर ही नहीं.

(अभि.) *तुम्हें कुछ भी नहीं मालूम.*

(प्रयोग) दो लड़के मिडिल क्लास के ज्योमेटरी की शक्लें पृथ्वी पर खैंचकर कोई बात सिद्ध कर रहे थे वहां कोई तीसरा कुपढ़ आदमी आकर उनसे कहने लगा जैसी लकीरसी तुम खैंच रहे हो ऐसी तो मैं भी खैंचदूं, लड़कों ने उससे कहा—आगे चलो तुम्हें वसंत की ख़बर ही नहीं.

(५७२) बाबा आवे न घंटा बजे.

(अभि.) *मुखिया के आये बिन काम न होना.*

(प्रयोग) एक थियेटर के तमाशे को ७ बजे शुरू होने की ख़बर थी, बहुतसे लोग उसे देखने के लिये गये, सवा सात बजे पर लोगों ने खिलाड़ियों से कहा अब तमाशा शुरू करदो खिलाड़ियों ने कहा—नायक के आने पर खेल शुरू होगा, तब लोगों ने कहा—तुम्हारा तो यह काम है कि बाबा आवे न घंटा बजे.

(५७३) बाज़ार की मिठाई जिसका जी चाहा उसी ने खाई.

(अभि.) *बाज़ार में बिकती हुई चीज़ को सब मोल ले सक्ते हैं.*

(प्रयोग) हमारा एक मित्र कह रहा था कि फलां वेश्या बड़ी नेक है वह सिवाय मेरे किसी से बात तक नहीं करती तब हमने कहा—यह तुम्हारा ख़याल ग़लत है वह तो बाज़ार की मिठाई

है जिसका जी चाहा उसी ने खाई अर्थात् जो उसे पैसे देदे उसी की स्त्री बन जाती है.

(५७४) बात रहजाती है वक्त नहीं रहता.

(अभि.) *दुःख में मदद करनी चाहिये.*

(प्रयोग) एक दुखिया मनुष्य अपने मित्र के पास सहायता चाहने के लिये गया उसने मने कर दिया तब दुखिया ने कहा—मित्र! बात रहजाती है समय नहीं रहता.

(५७५) बार २ चोर की तो एक बार साह की.

(अभि.) *जो मनुष्य हमेशा लोगों को कष्ट देता है वह भी कभी कष्ट उठाता है.*

(प्रयोग) एक चोर हमेशा चोरी करके लोगों को दुःख देता था, एक रात को उस चोर के घर में भी चोरी होगई सब जिस क़दर माल असबाब था चोरी में जाता रहा तब लोगों ने कहा कि बार २ चोर की तो एक बार साह की.

(५७६) बाहर वाले खागये घर के गावें गीत.

(अभि.) *ऐसा कार्य्य करना जिससे औरों को लाभ हो अपने को कुछ नहीं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने ५०) रु० में अनारों की एक फ़सल का खेत लिया, उसने अपने आप कभी एक अनार भी न खाया उस की बेपरवाही से और लोगों ने खूब अनार खाये, अन्त में उसे ५०) रु० भी वसूल होने मुश्किल हो गये उसकी यह हालत देखकर लोगों ने कहा—तुम्हारा तो वही हाल होगया कि बाहर वाले खागये घरके गावें गीत.

(५७७) बापै पूत पिता पै घोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा.

(अभि.) *मनुष्य और घोड़े की आकृति और स्वभाव बहुधा उनके पिता से मिलती है.*

(प्रयोग) हमने एक मित्र के लड़के की सूरत बिलकुल उसके पिता से मिलती जुलती देखकर कहा कि यह कहावत बिलकुल सच है कि बापै पूत पिता पै घोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़.

(५७८) बारा वर्ष दिल्ली में रहे मगर भाड़ भी झोंकना न आया.

(अभि.) *बहुत दिन की संगत का कुछ भी प्रभाव न होना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य हैज़े की औषधि अपने गांव में रहने वाले पेन-शनयाफ्ता कम्पाउराडर से पूछने गया, उसने उत्तर दिया—मैं नहीं जानता, तब वह कहता हुआ वापिस लौटा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि बारह वर्ष दिल्ली में रहे भाड़ भी झोंकना न आया अर्थात् बहुत दिन डाक्टर की सोहबत में रहे, मगर कुछ भी न सीखा.

(५७६) बाराबाट होना.

(अभि.) *खराबखस्ता होना.*

(प्रयोग) एक गांव का लड़का किसी शहर के स्कूल में तालीम पाता था वहां उसकी संगत अच्छी न थी जिससे वह बाराबाट होगया.

(५८०) बाप न मारी पोदनी बेटा तीरंदाज़.

(अभि.) *छोटे आदमी का बड़ी बात कहना.*

(प्रयोग) एक भिखारी का लड़का १०) रु० माहवार का किसी दूसरे गांव में पटवारी होगया था, एक दिन वह लोगों में बैठा हुआ कह रहा था कि मैंने ५००) रु० ख़र्च करके पटवारगिरी हासिल की है, तब किसी ज़मींदार ने जो उसके बाप की हालत तक जानता था कहा–तुम्हारा तो वह हाल है कि बाप न मारी पोदनी बेटा तीरंदाज़ अर्थात् तेरे बाप ने तो हमेशा भीख मांगी तुम ५००) कहां से लाये.

(५८१) बाप की पोखर है तो क्या कीच खानी है.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने बाग़ में से उमदा २ फल तोड़कर खालेता था और मामूली छोटे २ फल बेचदिया करता था उसके किसी मित्रने समझाया कि अच्छे २ फल बेचदिया करो और छोटे २ फल तुम खालिया करो कि जिससे अधिक पैसे आवें तब उस मनुष्य ने कहा बाप की पोखर है तो क्या कीच खानी है अर्थात् बाग़ अपना होते हुये क्यों बुरे २ फल खावें.

(५८२) बावन तोले पाव रत्ती.

(अभि.) *बिल्कुल ठीक.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपनी २० तोले भर वस्तु तुलाने की गर्ज़ से हमारे पास लाया और कहने लगा कि देखना यह २० तोले भर से कम तो नहीं है हमने तोलकर कहा–कि बावन तोले पाव रत्ती है अर्थात् बिल्कुल ठीक है.

(५८३) वारेकी मां बुड्ढे की जोरू न मरे.

(अभि.) *छोटे बच्चे की मां और बूढ़े मनुष्य की स्त्री मर जाने से उन्हें बहुत ही कष्ट होता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य का लड़का ६ माह का था कि उसकी स्त्री का देहांत हो गया उस मनुष्य ने अपनी दूसरी शादी करली उस बच्चे का पालन पोषण ठीक न होता देखकर पड़ौसियों ने कहा—बारे की मां बुड्ढ की जोरू न मरे.

(५८४) बावले गांव में ऊंट आया.

(अभि.) *मूर्खों को साधारण वस्तु ही विचित्र होती है.*

(प्रयोग) एक बाजीगर ने किसी गांव में अपने कार्य से लोगों को अचम्भे में कर दिया, तमाम गांव में उसकी बड़ाई होने लगी. किसी जानकार आदमी ने कहा कि इस बाजीगर का यहां आना तो बावले गांव में ऊंट आने की मानिन्द होगया.

(५८५) बारह वर्ष में घूरे की दशा भी फिरती है.

(अभि.) *मनुष्य की हालत बदलती रहती है.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी दैव इच्छा से कंगाल हो गया, वह आशाहीन होकर कहा करता था कि नहीं मालूम मेरी दशा फिर वैसी ही होगी या नहीं तब किसी आदमी ने संतोष के लिये उससे कहा कि १२ वर्ष में घूरे की भी दशा बदलती है क्या कभी तुम्हारे अच्छे दिन न आवेंगे? अर्थात् अवश्य आवेंगे.

(५८६) बाल की खाल निकालना.

(अभि.) *(१) व्यर्थ की नुक़ताचीनी करना, (२) गहरी जांच से असल बात मालूम करना.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने नमूनेका पाठ पढ़ाया और अध्यापकों ने उसकी बहुतसी व्यर्थ नुक़ताचीनी की, तब उसने अध्या-

पकों से कहा-आप लोग तो बालकी खाल निकालते हैं, (२) एक पुलिस अफ्सर ने बहुत गहरी छानबीन से मुलज़िम का पता लगा लिया तब उसके लिये कहा गया कि उसने बालकी खाल निकालली.

(५८७) बांह गहे की लाज निभानी.

(अभि.) कही हुई बात को पूर्ण करना.

(प्रयोग) हमारा एक नौकर बहुत ही बफ़ादार था उसके देहांतपर हमने उसे वचन दिया था कि तुम्हारे लड़के को भी हम अपने यहां नौकर रक्खेंगे उसका लड़का नालायक़ था, मगर हम ने बात पूर्ण करने की ग़र्ज़ से उसे नौकर रक्खा, हमारे मित्र ने कहा-इसे निकाल दो, तब हम ने कहा-बांह गहे की लाज निभानी पड़ती है.

(५८८) बासी बचे न कुत्ता खाय.

(अभि.) आवश्यकतानुसार भोजन बनाकर सब खा लेना.

(प्रयोग) हमारे एक पड़ौसी ने हम से पूछा कि क्या आपके यहां कुछ पकी हुई तरकारी शेष रही है, हम ने कहा-बासी बचे न कुत्ता खाय.

(५८९) बासी कढ़ी में उबाल आया.

(अभि.) समय बीतने पर कोई काम करने की इच्छा करना.

(प्रयोग) छोटे २ लड़कों का कबड्डी का खेल देखकर एक बूढ़े के दिल में भी खेलने का जोश आया और लोगोंसे कहने लगा कि मैं भी खेलूंगा तब लोगोंने कहा-"अहा, आज तो बासी कढ़ी में उबाल आया."

(५६०) बिना सींग के बैल हो.

(अभि.) *मूर्ख हो.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने एक छोटीसी रीति कई दफ़ा एक लड़के को समझाई, मगर उस को याद न हुई तब अध्यापक ने उस से कहा–तुम तो बिना सींग के बैल हो.

(५६१) बिल्ली के भागों छीका टूटा.

(अभि.) *आशा से अधिक मिलजाना.*

(प्रयोग) एक २००) रु० माहवार के एक डिप्टीइन्सपेक्टर मदारिस को ३००) रु० की असिस्टेंटी इन्सपेक्टरी मिली, उन्हीं दिनों इन्स्पेक्टर साहिब के देहांत होनेपर उसे ५००) की इन्स्पेक्टरी मिली तब लोगोंने कहा कि बिल्लीके भागों छींका टूटा.

(५६२) बिल्ली खायगी नहीं, तो लुढ़काय तो देगी.

(अभि.) *दुष्ट मनुष्य व्यर्थ भी हानि करते हैं.*

(प्रयोग) हमने चौकीदारसे कहा कि आज कल चोर बहुत आते हैं तुम रातभर जागा करो, उसने उत्तर दिया–यहां सिवाय कागज़ों के और क्या रक्खा है जो चोर आवेंगे, हमने कहा–अगर कुछ चुरावेंगे नहीं तो नुकसान तो कुछ न कुछ कर ही जावेंगे, कहा भी है कि बिल्ली खायगी नहीं तो लुढ़काय ज़रूर देगी.

(५६३) बिच्छू का काटा रोवे सांप का काटा सोवे.

(अभि.) *मीठी मार बुरी होती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने शत्रु को मारना चाहता था उसने यह सोचकर कि ज़ाहिरा शत्रुता करने पर वह चौकसा रहेगा

उससे ज़ाहिरा प्रेम कर लिया और उसको बहका सिखाकर उससे ऐसा काम कराया जिस में उसकी जान के लाले पड़गये, तब उस ने, कहा कि सांप का काटा सोवे बिच्छू का काटा रोवे.

(५९४) बिल्ली को ख़्वाब में भी छीछड़े ही नज़र आते हैं.

(अभि.) *बुरे हरवक़्त बुराई ही सोचा करते हैं.*

(प्रयोग) एक पण्डित की कथा की समाप्ति पर ५०) चढ़े, एक चोर ने उन से कहा कि या तो मुझे इस में से हिस्सा बांट दो नहीं तो तुम जानते ही हो कि सब से हाथ धोना पड़ेगा, तब पण्डित ने उससे कहा–तुम हरवक़्त चोरी की ही बात सोचते रहते हो जैसे कि बिल्ली को ख़्वाब में भी छीछड़े ही नज़र आते हैं.

(५९५) बिन मांगे मोती मिलें मांगी मिले न भीख.

(अभि.) *मांगने पर न मिलना और न मांगने पर मिलना.*

(प्रयोग) एक साल जेठ के ही महीने से पानी बर्षना शुरू हो गया, सब काश्तकारों ने अपनी ज़मीन बोदी, सावन के महीने में सूखा पड़गया पानी बिलकुल नहीं बरसा, सब लोग पानी बरसने की प्रार्थना परमात्मा से करते थे, मगर बारिश हुई ही नहीं, तब लोगों ने कहा कि परमात्मा के यहां से भी बिन मांगे मोती मिलें मांगी मिले न भीख.

(५९६) बांझ क्या जाने प्रसूत की पीड़.

(अभि.) *जिस मनुष्य ने जो दुःख नहीं उठाया वह उसकी तकलीफ़ नहीं जान सकता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य की आंखें दुखनी आ रही थीं वह उसकी तकलीफ़ की वजह से तमाम रात हाय हाय करता रहा, किसी दूसरे मनुष्य ने, जिसने कभी यह दुःख नहीं उठाया था, उस से कहा कि क्या आंखें दुखने में ऐसी तकलीफ़ होती है कि तमाम रात हाय २ करते रहे ?, तब उसने कहा—बांझ क्या जाने प्रसूत की पीड़.

(५६७) बुड्ढी घोड़ी लाल लगाम.

(अ.प्र.) *इसका अभिप्राय और प्रयोग वही है जो कि "खारिशी कुतिया मखमल की झूल" का है.*

(५६८) बुढ़ापे में मट्टी ख़राब होती है.

(अभि.) *बड़ी अवस्था में शरीर बहुत दुःख पाता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बुढ़ापे में चलने फिरने देखने सुनने आदि सब शक्तियों से हीन हो गया था, घर वाले उस बेचारे की कुछ ख़बर तक नहीं लेते थे वह बूढ़ा प्रत्येक बात का दुःख मानकर यही कहता कि बुढ़ापे में मट्टी ख़राब होती है.

(५६९) बूर का लड्डू खायगा सो पछतायगा न खायगा सो पछतायगा.

(अभि.) *अस्वादिष्ट वस्तु जो देखने में अच्छी हो उस के मिलने पर भी पछताना और न मिलने पर भी पछताना पड़ता है.*

(प्रयोग) एक कृपण मनुष्य की खरबूज़े बिकते देखकर राल टपकी, अपने दिल में कहने लगा कि खरबूज़े तो खालूं, मगर दाम ख़र्च होंगे, उसने दुःख मानकर)। का खरबूज़ा ले ही लिया, खाने पर वह इतना फीका निकला कि फेंक देना पड़ा तब

उसने कहा कि बूर का लड्डू खायगा सो पछतायगा न खायगा सो पछतायगा.

(६००) बुढ़िया मरी तो मरी प्रयाग तो देखा.

(अभि.) *नुक़सान होने पर मनसमझौनी करना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने ५००) की रुई ३ सेर के भाव से ख़रीदी, भाव बढ़ने के कारण कुछ हानि हो गई, एक दूसरे मनुष्य ने कहा–कहो व्योपारीजी अब तो तुम को हानि हो गई, तब उस ने उत्तर दिया–हानि हुई तो हुई व्योपारी तो कहलाये यानी बुढ़िया मरी तो मरी प्रयाग तो देखा.

(६०१) बुरी संगत से अकेला अच्छा.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक लड़का यह सोचकर कि मेरा कोई भी मित्र नहीं एक ख़राब लड़के की सोहबत में बैठने लगा उस के बाप ने उस से कहा कि तुम फलां के पास क्यों जाया करते हो, लड़के ने उत्तर दिया कि अकेले बैठे २ मेरा जी नहीं लगता इसलिये उस के पास जा बैठता हूं, बाप ने कहा–बुरी संगत से अकेला अच्छा.

(६०२) बेटा बनकर सब ने खाया बाप बनकर किसी ने न खाया.

(अभि.) *छोटा होकर रहने में सब ने लाभ उठाया है बड़ा होकर रहने में किसी ने लाभ न उठाया.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने स्वामी से बिगाड़ रखता था उसको कुछ समझता ही न था तब किसी बुद्धिमान् मनुष्य ने उसे समझाया कि बेटा बनकर सब ने खाया बाप बनकर किसीने न खाया.

(६०३) बैठे बिठाये बरों को छेड़ना.

(अभि.) *व्यर्थ किसी बदमाश को छेड़ना.*

(प्रयोग) हमारे शिष्यने एक काने को काना कहदिया, इस पर काने ने शिष्य को सैकड़ों गाली सुनाना शुरू किया तब हमने शिष्य से कहा–नाहक़ तुमने बरे को छेड़ लिया.

(६०४) बैठे से बेगार भली.

(अभि.) *कुछ न कुछ करना चाहिये.*

(प्रयोग) एक अध्यापक छुट्टियों में अपने घर गया, वह अपने हाथ से रस्सी बँट रहा था किसी ने उससे कहा–आप क्यों रस्सी बाँटते हैं किसी से बँटवा लीजिये तब अध्यापक साहिब ने उत्तर दिया, मैंने यह सोचकर कि बैठे से बेगार भली रस्सी बँटना ही शुरू करदी.

(६०५) बैठा ठाली बनियां सेर बाट तौले.

(अभि.) *पुरुषार्थी कुछ न कुछ करता ही रहता है.*

(प्रयोग) मेरे मित्र ने मुझ से कहा कि फलाँ मनुष्य जब नौकरी से छुट्टी पाता है तब भी घर बैठा हुआ कुछ न कुछ काम करता रहता है, मैंने उत्तर दिया–बैठा ठाली बनियां सेर बाट तौले.

(६०६) बैल न कूदा कूदी गौन.

(अभि.) *विना सम्बंध दूसरों के बीच में पड़ना.*

(प्रयोग) मेरी एक दिन एक मनुष्य से अधिक लड़ाई होगई, कोई तीसरा मनुष्य उसे भड़काने लगा कि पुलिस में रिपोर्ट करदो, उसने मने किया तब मैंने उस तीसरे आदमी से कहा–तुम्हारा तो यह हाल हुआ कि बैल न कूदा कूदी गौन.

(६०७) बैले दीजे जाय फल क्या बूझे क्या खाय.

(अभि.) *मूर्ख को गुण की पहिचान नहीं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को हमने पान खाने के लिये दिया उसने पान खाकर कहा क्योंजी मनुष्य इसे क्यों खाया करते हैं? न यह मीठा है न नमकीन है, तब मैंने कहा-बैले दीजे जाय फल क्या बूझे क्या खाय.

(६०८) बोये पेड़ बबूल के आम कहां ते खाय.

(अभि.) *जैसा किया वैसा ही फल भोगो.*

(प्रयोग) एक छोटा मनुष्य कह रहा था कि हमारी सारी उम्र दुःख ही में बीती कभी भी पेट भर खाने को नहीं मिला और दुनियां में सब आदमी आनंद उड़ाते हैं, मैंने उससे कहा-बोये पेड़ बबूल के आम कहां ते खाय अर्थात् जैसा तुमने पिछले जन्म में किया था वैसा ही फल अब भोगते हो.

(६०९) ब्याहे न गये तो क्या बरात भी न देखी है.

(अभि.) *किसी काम की बाबत कुछ न कुछ जानना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य एक काम को ग़लत कर रहा था मैंने उसे टोका कि तुम ग़लत करते हो उसने मुझ से कहा कि तुम क्या जानो, मैंने कहा कि मैंने यह किया नहीं तो क्या औरों को करते भी न देखा है? ब्याहे न गये तो क्या बरात भी न देखी?.

(६१०) बात का बतकड़ किया.

(अभि.) *छोटीसी राड़ (लड़ाई) का बहुत बढ़ाना.*

(प्रयोग) दो बड़े आदमियों में इसलिये आपस में गाली गलोज होने लगी कि उनके छोटे २ बच्चों में आपस में मार पीट होगई थी, हमने उन दोनों को समझाया कि क्यों बात का बतकड़ करते हो.

(६११) भगवान् देता है छप्पर फाड़के.

(अभि.) *परमात्मा देता है तब घर पर बैठे हुये धन मिलजाता है.*

(प्रयोग) एक १०)रु० माहवार का अध्यापक ३ माह की छुट्टी लेकर अधिक रुपयों की नौकरी तलाश करता हुआ फिरा, मगर कहीं भी मतलबबरारी न हुई, फिर अपनी उसी जगह पर चला आया, थोड़े दिनों पीछे उसकी वहीं पर २०)रु० की तनख्वाह हो गई तब उसने कहा-भगवान् जब देता है छप्पर फाड़के.

(६१२) भरे में भरता है.

(अभि.) *जहां जिस चीज़की अधिकता होती है वहां और भी परमात्मा देता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य के घर में औलाद नहीं होती थी उसने एक मनुष्य के घर में आठ पुत्र होने के बाद नवाँ पुत्र होता हुआ सुनकर कहा कि भगवान् भरे में भरता है.

(६१३) भरी जवानी मांझा ढीला.

(अभि.) *युवा अवस्था में सुस्त रहना.*

(प्रयोग) एक अध्यापक ने अपने शिष्य को किसी काम में सुस्ती करते हुये देखकर कहा कि भरी जवानी मांझा ढीला.

(६१४) भरे समुद्र में घौंघा हाथ.

(अभि.) *अधिक लाभ की जगह से थोड़ासा हाथ लगना.*

(प्रयोग) एक पंडितने एक अमीर आदमी के यहां १०) रु० मिलने की आशा में व्याह कर्म्म कराया, मगर वहां से बिचारे को एकही रुपया मिला, तब उसने अपने मित्र से कहा कि आज तो हमारा वह हाल हुआ कि भरे समुद्र में घौंघा हाथ.

(६१५) भरभूजे की लड़की केसर का तिलक.

(अभि.) *इसका अभिप्राय और प्रयोग वही है जो "जाट की बेटी सुन्दर नाम" या "खारिशी कुतिया मखमल की भूल" का है.*

(६१६) भागते भूत की लंगोटी ही बहुत है.

(अभि.) *जाते हुए माल में से जो कुछ मिले वही बहुत है.*

(प्रयोग) मेरे मित्र के नौकर पर मेरे २)रु० चाहते थे वह नौकरी छोड़ कर जाने लगा, मैंने उससे अपने २) रु० मांगे, उसने कहा– साहब ! मेरे पास रुपये तो नहीं है, अगर आप चाहें तो मेरा कटोरा ॥) का है वही ले लीजिये, मैंने यह कहकर कि "भागते भूत की लंगोटी ही सही" वह कटोरा ही लेलिया.

(६१७) भाड़ा, ब्याज, दक्षिना पीछे रहे सो कुछ ना.

(अभि.) *ये तीनों चीज़ें अवसर पर नहीं छोड़नी चाहियें.*

(प्रयोग) एक ज़मीदार ने बनियें को उसके रुपये तो देदिये और ब्याज के लिये एक महीने की मुहलत मांगी, बनियें ने उन रुपयों में से ब्याज काट लिया और असल रुपयों में से बाक़ी उस के नाम लिख दिये और कहा–भाड़ा, ब्याज, दक्षिना पीछे रहे सो कुछ ना.

(६१८) भांग खाना सहज है उसकी मौजें झेलना कठिन है.

(अभि.) *विना सोचे काम करना तो सहज है, मगर उसका परिणाम भुगतना कठिन होता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य यह सोच कर कि चोरी में बड़े माल मुफ्त हाथ आते हैं चोरी करने गया, वहां पकड़ा गया, फिर तो वह रोने लगा तब एक मनुष्य ने उससे कहा–भांग खाना तो सहज है, परन्तु मौजें झेलना कठिन है.

(६१६) भीख के टुकड़े बाज़ार में डकार.

(अभि.) *दूसरों के सहारे कार्य करके घमंड करना.*

(प्रयोग) एक दरिद्री मनुष्य अपने मित्र की बाईसिकल पर चढ़कर राजकुमारों के साथ जाता हुआ बड़ा घंमड कर रहा था, तब किसी दूसरे जानने वाले ने कहा कि इसका तो वही हाल है कि भीख के टुकड़े बाज़ार में डकार.

(६२०) भुस में चिनगी डाल जमालो दूर खड़ी.

(अभि.) *लड़ाई कराके अलग होजाना.*

(प्रयोग) एक चुग़लख़ोर ने इधर की उधर और उधर की इधर करा के लड़ाई करादी और अपने आप दूर होगया, तब लोगों ने चुग़लखोर के लिये कहा कि भुस में चिनगी (थोड़ीसी आग) डाल जमालो दूर खड़ी.

(६२१) भूख में गूलर ही पकवान.

(अभि.) *भूक में मामूली चीज़ भी बहुत स्वाद होती है.*

(प्रयोग) किसी बाबू को कहीं सफ़र में एक दिन भोजन प्राप्त न हुआ दैवयोग से एक पैसे के भुने हुये चने मिलगये, बाबू साहिब उन्हें खाकर और पानी पीकर प्रसन्न हुये और अपने नौकर से कहने लगे कि चना तो बहुत स्वाद होता है, तब नौकर ने कहा-हुजूर भूख में गूलर पकवान.

(६२२) भूला बनियां भेड़ खाई, अब खाऊं तो रामदुहाई.

(अभि.) *कोई काम भूलसे करके फिर न करने की इच्छा प्रगट करना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य एक दिन इस क़दर गुस्से में आया कि उसने अपने नौकर के सिरमें लाठी मारदी, जिससे पीछे उसको पछताना पड़ा और बहुतसा रुपया उसके इलाज कराने में खर्च किया और कहने लगा-भूला बनियां भेड़ खाई अब खाऊं तो राम-दुहाई.

(६२३) भूख में सूखी रोटी ही पापड़.

(अ.प्र.) *इसका अभिप्राय और प्रयोग नं० ६२१ में देखो.*

(६२४) भूखा बंगाली भात ही भात पुकारता है.

(अभि.) *जिस किसी को किसी वस्तु की आदत पड़गई हो वह उसके न मिलने पर बेचैन होता है.*

(प्रयोग) एक हुक्की को एक दिन सफ़र में हुक्का नहीं मिला उसने अपने साथी से कई दफ़ा कहा-आज तो हमने हुक्का नहीं पिया, साथी ने कहा-आज तुम हुक्का ही हुक्का कर रहे हो, जैसे भूखा बंगाली भातही भात पुकारता है.

(६२५) भूलगये रागरंग भूलगये छकड़ी तीन चीज़ याद रही नून तेल लकड़ी.

(अभि.) *गृहस्थ की फ़िकर में घिर जाना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने २० वर्ष की अवस्था तक अपना समय खूब आनन्द में उड़ाया, बाजे में हारमोनियम, सितार, और सवारी में घोड़ागाड़ी आदि प्रयोग कीं, फिर पिताजी के देहान्त के पीछे सब चीज़ों से शौक़ हटा कर घर के कामकाजकी फिकर में लगगये, उनके मित्रने पूछा कि कभी अबभी गाने बजाने का शौक़ करते हो कि नहीं, उसने कहा—अब तो नून तेल की फिकर में लगे रहते हैं, अबतो हमारा वह हाल है कि भूलगये रागरंग............आदि.

(६२६) भेड़ जहां जायगी वहीं मुँडेगी.

(अभि.) *मूर्ख जहां जायगा वहीं नुक्सान उठायेगा.*

(प्रयोग) एक मूर्ख मनुष्य अपने पड़ोसीसे लड़ाई करके पुलिस में रिपोर्ट करने गया और वहां ५ सात रुपये दे आया, फिर गवाहोंके ठीक करने में कुछ रुपये ख़र्च किये, एक मनुष्य ने उससे कहा—जैसे भेड़ जहां भी जाती है वहीं मुँडती है वैसे ही तुम भी जहां जाओगे मुँडोगे.

(६२७) भेड़की लात घोंटू तक.

(अभि.) *बस अधिक से अधिक इतना करसक्ता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अपने मित्रों में बैठा हुआ कहरहा था कि मेरा स्वामी ज़ियादह से ज़ियादह मेरी रिपोर्ट करदेगा और क्या करसक्ता है, कहा भी है कि भेड़ की लात घोंटू तक.

(६२८) भैंस * बड़ी कि अक़ल ?.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक गँवार मनुष्य ने कहा कि ये जितने मनुष्य पढ़े लिखे हैं सब कहते हैं पृथ्वी घूमती है और सूरज नहीं घूमता मेरी समझ में नहीं आता, एक मास्टर ने उसे समझाया, मगर फिर भी बहस करने लगा और नहीं माना तब मास्टर ने उसे कहा–भैंस बड़ी कि अक़ल.

(६२९) भैंसा भैंसन में या कीच भरो है.

(अभि.) *बेढंगे तौर पर काम करना कि यातो लाभ होगया नहीं तो नुक्सान तो है ही.*

(प्रयोग) मैं और मेरा मित्र एक दिन ताश खेल रहेथे, उसने यह कहते हुए कि 'यातो भैंसा भैंसन में नहीं कीच भरो है' कहते हुए बेढंगी चाल ताश की करदी.

(६३०) मछली के जाये किन तिराये.

(अभि.) *किसी काम का अपने आप विना सीखे आजाना.*

(प्रयोग) बच्चा पैदा होते ही दूध पीना अपने आप सीखलेता है इस- पर किसी मनुष्य ने पूछा कि ये विना सिखाये कैसे पीने लगते हैं ?, उत्तर में दूसरे मनुष्यने कहा–मछली के जाये किन तिराये अर्थात् परमात्मा ही सिखाते हैं.

(६३१) मन उमराव कर्म अभागा.

(अभि.) *दरिद्री का मन अमीर होना.*

---

* कोई २ भैंस की जगह बहस भी कहते हैं.

(प्रयोग) एक मनुष्य कहरहा था कि यदि मेरे पास रुपया होता तो मैं उम्दा २ महल बनवाता और अपने नाम से स्कूल खोलता, तब दूसरे मनुष्यने उससे कहा–तुम्हारा मन उमराव कर्म अभागा है.

(६३२) मनके लड्डूखाना.

(अभि.) *मन के संकल्प विकल्प से प्रसन्न होना.*

(प्रयोग) एक छोटासा अध्यापक कह रहा था कि जब मैं डिप्टी इन्स्पेक्टर होऊंगा तब अध्यापकों को बड़ी तरक्कियां दूंगा और बड़ा उम्दा इन्तज़ाम करूंगा, तब दूसरे अध्यापकने उससे कहा–क्यों मनके लड्डू खाते हो.

(६३३) मनमानी घरजानी.

(अभि.) *स्वामी का कुछ भय न करके स्वतंत्रता से काम करना.*

(प्रयोग) किसी स्त्री ने पति के मने करने पर भी कोई काम किया, तब पति ने उससे कहा–तुम तो मनमानी घरजानी हो.

(६३४) मरता क्या न करता.

(अभि.) *दुखिया बुरे काम भी कर लेता है.*

(प्रयोग) एक अकाल में एक मनुष्य ने विना भोजन के प्रास हुए दुखी होकर एक नीचकर्म कर डाला, तब और लोगों ने उसके लिये कहा कि मरता क्या न करता.

(६३५) मन चंगा तो कठौती में गंगा.

(अभि.) *मन शुद्ध है तो कहीं यात्रा करने की आवश्यका नहीं.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्रने मुझ से कहा चलो पुष्कर नहा आवें, मैंने उससे कहा–मन चंगा तो कठौती में गंगा, इसलिये हम नहीं जावेंगे.

(६३६) मन सुखी तो तन सुखी.

(अभि.) *मन के आनन्द में रहने के कारण शरीर भी हृष्ट पुष्ट रहता है.*

(प्रयोग) मेरा एक मित्र किसी सोच फ़िकर में फँसा रहता था इसलिये उसका शरीर दुर्बल होता जारहा था, मैंने उससे सोच फ़िकर दूर करने के लिये कहा कि मन सुखी तो तन सुखी.

(६३७) मन के हारे हार मन के जीते जीत.

(अभि.) *(१) मन से काम ठीक होता है, (२) हानि लाभ सब मानने का है यथार्थ में कुछ नहीं (३) जो मनुष्य दिलको अपने वश में रखता है उसकी जीत होती है और जो मनके वश में होता है उसकी सब जगह हानि होती है.*

(प्रयोग) हमने एक मनुष्य से एक काम करने के लिये कहा, उसने कहा ऐसी कड़ी धूप में भला मैं यह काम कैसे करूं, हमने कहा–मनके हारे हार मनके जीते जीत होती है, मनसे करना चाहोगे तो कर ही लोगे.

(६३८) मक्खी बैठी शहद पै, रही पंख लपटाय।

हाथ मलै और शिर धुने, लालच बुरी बलाय॥

(अभि.) *लालच नहीं करना चाहिये.*

(प्रयोग) एक लालची ने किसी काम में बहुत दुःख माना, तब दूसरे मनुष्य ने यह दोहा पढ़कर उसे सुना दिया.

(६३६) मन में भावे मूंड हिलावे.

(अभि.) *प्रकट में मनै करना, मगर दिल में इच्छा करना.*

(प्रयोग) मेरा मित्र मेरी एक बहुत उम्दा वस्तु देखकर उस को दिल से लेना चाहता था, और २ मनुष्यों में उसने यह बात भी प्रकट की, मगर जब मैंने उससे कहा कि तुम लोगे तब उस ने यह सोचकर कि मित्र की वस्तु है इनकार करने के लिये सिर हिला दिया, तब हमने कहा-मन में भावे मूंड हिलावे अर्थात् दिल तो तुम्हारा चाहता है, मगर प्रकट में इनकार करते हो.

(६४०) मान न मान मैं तेरा महमान.

(अभि.) *ज़बरदस्ती सिर पड़ना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बहुत दूर का कोई पुराना सम्बन्ध निकाल कर मेरे मित्र के मकान पर ठहरा, हमारे मित्र ने उसकी कुछ पूछ पांछ न की, मगर वह तौभी बहुत बार उनके यहां आकर ठहरा, तब उसके लिये कहागया कि मान न मान मैं तेरा महमान.

(६४१) मान का पान भी बहुत होता है.

(अभि.) *प्रतिष्ठाके साथ थोड़ी चीज़ मिलना भी अच्छा होता है.*

(प्रयोग) मैं इलाहाबाद अपने किसी कार्य्य से गया था, वहां के ४ अमरूद मैंने अपने मित्रको लाकर दिये, मित्रने कहा-बस इतना ही दिया, मैंने कहा-जनाब ! मान का पान भी बहुत होता है.

(६४२) मार के आगे भूत भागता है.

(अभि.) *पिटने पर बदमाश की अक़ल ठिकाने आजाती है.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी ने अपने सहपाठी के ५) रु० चुरा लिये, गुरुने बहुत कुछ उससे पूछा वह मनेही करता रहा कि मैं नहीं जानता, गुरुजी ने क्रोध में आकर २ डंडे उसकी कमर में जमाये, तब उसने सच्चा २ बयान करदिया और रुपये देदिये तो गुरुने कहा कि मार के आगे भूत भागता है.

(६४३) मांगें भीख पूछें गांव की जमा.

(आभि.) *दीन मनुष्य का बड़ी बात कहना.*

(प्रयोग) एक ब्राह्मण किसी डिप्टीकलेक्टर के यहां रसोइया था, वह रसोइया जब कभी छुट्टी पर अपने गांव आता तो लोगों में कहा करता कि मैं डिप्टीसाहबका मित्र हूं वे सब काम मेरी सलाह ही से करते हैं तब लोगों ने उससे कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि मांगें भीख पूछें गांव की जमा.

(६४४) मान का बीड़ा हीरा के समान.

(अभि.) *आदर की थोडी चीज़ भी अच्छी.*

(प्रयोग) देखो नं० ६४१.

(६४५) मानो तो देव नहीं तो पत्थर.

(अभि.) *विश्वास से फल मिलता है.*

(प्रयोग) एक सनातनधर्मावलंबी लोगों में कह रहा था कि यह जो महादेवजी का मन्दिर बना है इस में महादेव की पूजा जो कोई करेगा वह मनइच्छित फल पावेगा उससे एक आर्य्य महाशय ने कहा—क्यों लोगों को बहकाते हो भला वह पत्थर क्या लेरहा है जो देगा, तब सनातनधर्मावलंबी ने कहा—महाशय ! मानो तो देव नहीं तो पत्थर.

(६४६) माले हराम बूद वजाये हराम रफ़्त.

(अभि.) *पाप का धन जैसे आता है तैसे ही निकल जाता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने ५००) लेकर अपनी लड़की एक बूढ़े मनुष्य से ब्याह दी, उस मनुष्य पर एक मुक़द्दमा ऐसा चला कि घर से ६००) रुपये ख़र्च होगये, तब लोगों ने कहा कि माले हराम बूद वजाये हराम रफ़्त.

(६४७) माले मुफ़्त दिले बेरहम.

(अभि.) *मुफ़्त मिले हुए धन के ख़र्च करने में दिल को कुछ दुःख नहीं होता है.*

(प्रयोग) मेरे मित्र ने मुझ से कहा कि तुम ५०) रु० तनख़्वाह पाते हो तुम इतना भी ख़र्च नहीं करते कि जितना १०) रु० पाने-वाले कचहरी के लोग ख़र्च कर डालते हैं, मैंने कहा—उनकी तो वह मसल है कि माले मुफ़्त दिले बेरहम.

(६४८) माह नंगे वैशाख भूखे.

(अभि.) *बहुत ही निर्भाग्य.*

(प्रयोग) जो मनुष्य अच्छी फसल में भी भूखा रहे तो यह कहावत उसके लिये कही जाती है.

(६४९) मार २ तो किये जाओ नामर्दी तो ईश्वर ने दी.

(अ.प्र.) *इसका अर्थ और प्रयोग "ना" की तख़्ती में दर्ज है.*

(६५०) मारा घोंटू फूटी आंख.

(अभि.) *कुछ का कुछ हो गया.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपने लड़के को स्कूल में न जाने के कारण पीटा वह कहीं छिपकर चला गया, उसके ढूंढने में बड़ी दिक़्क़त हुई, तब उस मनुष्य ने कहा कि धमकाया था स्कूल जाने को वह कहीं भाग ही गया अर्थात् वही हाल होगया कि मारा घोंटू फूटी आंख.

(६५१) माल पर ज़कात है.

(अभि.) *हैसियत के मुताबिक खर्च किया जाता है.*

(प्रयोग) मुझ से मेरे मित्र ने कहा कि अमुक मनुष्य बड़ा ख़र्च करता है तब मैंने कहा—माल पर ज़कात है.

(६५२) मिल गये की हरगंगा.

(अभि.) *साधारण जान पहिचान होना.*

(प्रयोग) मेरे भाई ने मुझ से कहा कि फलां आदमी से आजकल तुम्हारी बहुत मित्रता होगई है वह मनुष्य ठीक नहीं है उसके पास मत बैठा करो, तब मैंने उत्तर दिया—वह मेरा मित्र नहीं है, मिल गये की हरगंगा है.

(६५३) मीठा और भर कठौती.

(अ.प्र.) *इसका अभिप्राय और प्रयोग वही है जो चुपड़ी और दो दो का है.*

(६५४) मीठा २ लप २ कड़ुआ २ थू थू.

(अभि.) *सुख दुःख दोनों ही बर्दाश्त करने चाहियें.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने गर्मी के दिनों में पहाड़ों में आनन्द देखकर वहां एक मकान बनवा लिया, लेकिन् जाड़ों के दिनों में जब

यहां जाड़े से अधिक तकलीफ़ हुई तब कहने लगा कि यहां रहना ठीक नहीं, तब उसके मित्र ने कहा कि तुम्हारी तो वह मसल है कि मीठा २ लप २ कड़ुआ २ थू थू.

(६५५) मुँह देख थाप मारले रावजी.

(अभि.) *मेरी हैसियत के मुताबिक लेलो.*

(प्रयोग) एक वकील ने किसी आदमी की मुक़द्दमे में जीत करादी, वकील ने इसके बदले उससे २००) रु० मांगे तब उस मनुष्य ने कहा कि मुँह देख थाप मारले अर्थात् जितनी मेरी हैसियत है उतना मुझ से लेलो.

(६५६) मुख में राम पेट में छुरी.

(अभि.) *प्रकट में अच्छा भीतर से बुरा.*

(प्रयोग) एक मनुष्य हरवक्त दिखाने के लिये तो माला फेरता रहता था मगर जब उसका मौका लगता तब किसी का नुकसान कर बैठता था उसके लिये कहा गया कि इसके मुख में राम पेट में छुरी है.

(६५७) मुर्गी को तकुए का घाव ही बहुत है.

(अभि.) *दीन मनुष्य को थोड़ासा भी नुक्सान बहुत मालूम होता है.*

(प्रयोग) एक मज़दूर प्रतिदिन मज़दूरी करके ≡) आने लाता था, एक दिन उसके मज़दूरी के पैसे कहीं गिर गये उसने इस क़दर दुःख माना कि रोने लगा, उसके पड़ौसीने कहा-इतना रंज मत करो तब मज़दूर ने कहा कि मुर्गी को तकुए का घाव भी बहुत है अर्थात् मेरे लिये तो यही नुक्सान बहुत अधिक है.

(६५८) मुर्ग़ी अपनी जान से गई खाने वाले को मज़ा नहीं आया.

(अभि.) *छोटे मनुष्य का बहुत बड़े परिश्रम का काम भी पसंद न आना.*

(प्रयोग) एक अफसर ने कुछ कागज़ात लिखने के लिये अपने क्लर्क को दिये, क्लर्क ने तमाम रात कागज़ात तय्यार कर प्रातः-काल स्वामी को पेश किये, स्वामी को पसंद न आये फेंक दिये और क्लर्क को बहुत धमकाया तब अलग जाकर क्लर्क ने किसी दूसरे मनुष्य से कहा-मुर्ग़ी अपनी जान से गई खाने वाले को मज़ा नहीं आया.

(६५९) मुल्ला की दौड़ मसजिद तक.

(अभि.) *अधिक से आधिक इतना कर सक्ता है.*

(प्रयोग) एक डिप्टीकलेक्टर ने अपने छोटे क्लर्क को बरखास्त कर-दिया हेडक्लर्क ने डिप्टीसाहिब से कहा कि वह अपील करेगा, डिप्टीसाहब ने फ़र्माया कि मुल्ला की दौड़ मसजिद तक अर्थात् वह अधिक से अधिक साहब कलेक्टर को अपील करेगा सो उनसे मैंने पहिले ही मंज़ूरी लेली है.

(६६०) मुल्ला न होगा तो क्या मसजिद में अजां भी न होगी.

(अभि.) *किसी के विना कोई काम नहीं बंद होता.*

(प्रयोग) एक दिन एक स्कूल के हेडमास्टर ने छुट्टी ली लड़कों ने आपस में कहा-आज तो हमारी भी छुट्टी रहेगी तब एक नायब ने उनसे कहा कि हेडमास्टर आज नहीं है तो क्या स्कूल भी न खुलेगा, मुल्ला न होगा तो क्या अजां भी न होगी.

(६६१) मुँह मांगी मुराद नहीं मिलती.

(अभि. स्पष्ट है.

(प्रयोग) एक अध्यापक कुछ परिश्रम पढ़ाने लिखाने में नहीं करता था और कहता था कि हे भगवन् मेरे सब लड़के पास हो जावें तब उसके मित्र ने उनसे कहा—मुंह मांगी मुराद नहीं मिलती बल्कि करतबसे मिलती है.

(६६२) मुंह में दांत न पेट में आंत.

(अभि.) बहुत ही बुड्ढा.

(प्रयोग) एक बहुत बूढ़े मनुष्य से किसी बच्चे ने कहा कि अब तो तुम्हारा मर जाना अच्छा है इसपर बुड्ढा बहुत बिगड़ा और कहने लगा कि तू मरजा तब किसी तीसरे मनुष्य ने बुड्ढे से कहा न तो तेरे मुंह में दांत हैं न पेट में आंत है मरने के नाम से बुरा मानता है.

(६६३) मुंडा जोगी पीसी दवा जानी नहीं जाती.

आभि.) स्पष्ट है.

(प्रयोग) एक मनुष्य बाज़ार में बैठा हुआ कुछ पिसी हुई दवाई बेच रहा था मेरा मित्र लेने लगा, मैंने उस को समझाया कि पिसी दवा मुंडा जोगी जाना नहीं जाता इसलिये मतलो.

(६६४) मुफ्त की शराब क़ाज़ी को भी रवां है.

(अभि.) मुफ्तकी चीज़ सब को अच्छी मालूम होती है.

(प्रयोग.) मेरे एक मित्र कहा करते थे कि मुझे आम खाना पसंद नहीं है एक दिन उनके यहां बहुतसे आम किसी उनके मित्र ने भेज दिये तब तो वे बहुत प्रसन्न हुए, मैंने कहा—आप तो

आम पसंद ही नहीं करते थे आज क्यों उड़ारहे हो उन्होंने फर्माया-मुफ्त की शराब काजी को भी रवां है.

(६६५) मूछों पर ताव देना.

(अभि.) *बहुत प्रसन्न होना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य से एक मुक़द्दमा जीत गया तब उसने मूछों पर ताव दिया.

(६६६) मूल से व्याज प्यारा होता है.

(अभि.) *असिल से उसके द्वारा जो मिले वह अधिक प्यारा होता है.*

(प्रयोग) हमने एक मनुष्य से पूछा-तुमको तुम्हारा बेटा अधिक प्यारा है कि तुम्हारा पोता ?, उसने उत्तर दिया-मूल से व्याज प्यारा होता है अर्थात् पोता अधिक प्यारा है.

(६६७) मूर्ख की तमाम रात छैल की एक घड़ी.

(अभि.) *बुद्धिमान् का थोड़ी देर का कार्य्य मूर्ख के अधिक देर के कार्य्य से अच्छा होता है.*

(प्रयोग) एक मज़दूर ने कहा कि हम लोग तमाम दिन काम करते हैं तब ≈) आने के पैसे कमाते हैं और वकील लोग एक घंटे में ही बहुत से रुपये कमा लेते हैं तब दूसरे मनुष्य ने उससे कहा कि मूर्ख की तमाम रात छैल की एक घड़ी.

(६६८) मेरे घर से आग लाये नाम धरा वसुन्धर.

(अभि.) *हमही से सीखा हमही को कम समझते हो.*

(प्रयोग) एक लड़के ने अपने गुरु से मोज़े बुनने सीख लिये, उसने अपनी अकल से उसे उम्दा बनाना सीख लिया, तब वह

इतना घमंड करने लगा कि अपने आप को गुरू से भी अधिक जानने लगा, तब गुरूजी ने कहा—हमही से आग लाये नाम धरा बसुंधर.

(६६९) मेंडकी को भी ज़ुकाम हुआ.

(अभि.) *छोटे आदमी का देखादेखी नज़ाकत करना.*

(प्रयोग) एक किसान के लड़के ने अमीरों के लड़कों को छाता लगाये हुए देखकर अपने बाप से कहा कि मैं भी छाता लगा कर अपने खेत में काम किया करूंगा इसलिये मुझे छाता ख़रीद दो, पिता ने उससे कहा—मेंडकी को भी ज़ुकाम हुआ.

(६७०) मौत सिर पर खेलती है.

(अभि.) *जल्दी ही मरना है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को पापकर्म करते हुए देखकर दूसरे मनुष्य ने कहा कि मौत तो तुम्हारे सिरपर खेलती है पापकर्म करते हो.

(६७१) मोम नहीं कि पिघल जावे.

(अभि.) *बड़े मज़बूत दिल के हैं.*

(प्रयोग) एक डाकू को किसी सज्जन मनुष्य ने बहुत समझाया कि तुम डाके का काम छोड़ कर किसी और कामद्वारा अपनी गुज़र करो वह नहीं माना, तब दूसरे मनुष्य ने उस सज्जन से कहा कि यह मोम थोड़ा ही है, जो पिघल जावे.

(६७२) मोती कीसी आब है.

(अभि.) *बड़ी प्रतिष्ठा है.*

(प्रयोग) एक इज़्ज़तदार के लड़के ने अपने पिता से अर्ज़ की कि दिवाली के दिनों में सब जूआ खेलते हैं आप मुझे भी जूआ खेलने की आज्ञा प्रदान कीजिये, पिता ने कहा–नहीं बेटा तुम्हारी मोती कीसी आब है उसमें धब्बा लग जायगा.

(६७३) मोची के मोची ही रहे.

(अभि.) *मूर्ख के मूर्ख ही रहे.*

(प्रयोग) एक व्यभिचारी ने बहुत दिन सत्संग किया, मगर उसका बुरा स्वभाव न गया तब सज्जन मनुष्य ने उससे कहा–तुम मोची के मोची ही रहे.

(६७४) मौसी का घर नहीं है.

(अभि.) *आसान काम नहीं है.*

(प्रयोग) एक किसान अपने गांव के पंडित से कहने लगा कि दिन छिपे के क़रीब मुझे एक घंटा की फ़ुर्सत मिलती है उस वक़्त मुझे पढ़ा दिया करो तब पंडित ने कहा कि पढ़ना मौसी का घर नहीं है अर्थात् आसान काम नहीं है.

(६७५) यह भी किसी ने न पूछा कि तेरे मुंह में कै दांत हैं.

(अभि.) *कुछ भी पूछ पाछ न हुई.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने विना टिकट के रेल में सफर किया, स्टेशन पर किसी ने टिकट के लिये उससे नहीं पूछा, उसने यह हाल अपने मित्र से बयान करके कहा कि वहां तो किसी ने यह भी न पूछा कि तेरे मुंह में कै दांत हैं.

(६७६) यह मुंह और मसूर की दाल.

(अभि.) *तुम इस वस्तु के पाने योग्य नहीं हो.*

(प्रयोग) एक नाई ने किसी आदमी से एक बारात करने के लिये उसका रेशम का कोट मांगा, उत्तर पाया कि यह मुंह और मसूर की दाल, अर्थात् तुम ऐसे कोट पहिनने के योग्य नहीं हो.

(६७७) यथा राजा तथा प्रजा.

(अभि.) *जैसा स्वामी वैसा ही सेवक.*

(प्रयोग) हमने एक स्कूल के छोटे अध्यापक से पूछा कि क्या कारण है आप देरी करके स्कूल में जाते हैं?, उसने उत्तर दिया, यथा राजा तथा प्रजा अर्थात् हमारा हैड तो बहुत ही देर करके आता है.

(६७८) यार की यारी से काम है कि उसके फ़ेलों * से.

(अभि.) *अपने मतलब से मतलब है.*

(प्रयोग) हमने एक मनुष्य से कहा कि तुम्हारा मित्र जूआ खेलता है, तुम उसे क्यों नहीं मने करते हो?, उसने उत्तर दिया—उसको जूआ खेलने से मने करके मुझे मित्रता थोड़ी ही बिगाड़नी है मुझे उसकी यारी से काम है कि उसके फ़ेलों से.

(६७९) या हंसा मोती चुगें या लंघन मरि जायं.

(अभि.) *प्रतिष्ठित मनुष्य दुःख में भी नीच कार्य्य नहीं करते.*

(प्रयोग) एक अमीर बनिया दैव इच्छा से धनहीन होगया उसके एक मित्र ने कहा—तुम दाल सेव बेचकर ही दो चार पैसे कमा लिया करो, उसने उत्तर दिया—"करूंगा तो बजाज़े ही की दूकान करूंगा" नहीं तो कुछ न करूंगा, कहा भी है कि या हंसा मोती चुगें या लंघन मरि जायं.

---

* फ़ेल शब्द उर्दू भाषा का है इसका अर्थ काम है.

(६८०) रस में विष मिला दिया.

(अभि.) *आनन्द में विघ्न डाल दिया.*

(प्रयोग) दो चार लड़के मिलकर एक जगह ताश खेल रहे थे उनको किसी एक बड़े आदमी ने धमकाया कि ताश मत खेलो, तब वे लड़के यह कहते हुए कि "इस मनुष्य ने रस में विष मिला दिया" भाग गये.

(६८१) रस्सी का सर्प बन गया.

(अभि.) *भूल से छोटीसी बात बहुत बढ़ गई.*

(प्रयोग) हम एक दिन किसी दूसरी चिंता में मग्न थे कि हमारा मित्र आया, हम उससे बात तक न कर सके वह उठकर चला गया फिर उसने शत्रुता करनी शुरू की, एक दिन हम उसके मकान पर गये उसे समझाया कि हमने आपका अनादर नहीं किया हम दूसरी चिंता में मग्न थे, मगर वह विश्वास नहीं लाता था तब हमने कहा—यहां तो रस्सी का सर्प बन गया.

(६८२) रस्सी जल जाये बल न जाये.

(अभि.) *अधिक से अधिक दुःख में भी अकड़ न छोड़ना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी अपराध में जेलखाने में भेज दिया गया, मगर वहां भी उसकी ऐंठन न गई, सब लोगों से घमंड की बातें कहा करे तब किसी दूसरे कैदी ने उससे कहा कि सच है रस्सी जल जावे, मगर बल न जावे.

(६८३) रहे झोंपड़ों में स्वप्न देखे महलों के.

(अभि.) *दीन मनुष्य का अमीरों की सी बातें कहना.*

(प्रयोग) एक दीन मनुष्य ने अपने दोस्तों में कहा—आज तो हमारे यहां आलू का साग बहुत अच्छा बना तब उससे दूसरे मनुष्य ने कहा—तुझे खाने को रोटी तो पेट भर मिलती ही नहीं तू ।) सेर के आलू कैसे खा सक्ता है, तेरा तो वह हाल है कि रहे झोंपड़ों में स्वप्न देखे महलों के.

(६८४) रखपत रखापत.

(अभि.) यदि तुम दूसरों की इज्ज़त करोगे तो तुम्हारी भी इज्ज़त होगी.

(प्रयोग) एक मनुष्य का स्वभाव चिड़चिड़ा था वह अपने सेवकों को कभी २ मां बहिन तक की गाली भी देदिया करता था, उसके मित्र ने उसको समझाया कि रखपत रखापत अर्थात् दूसरों की इज़्ज़त करो ताकि सब तुम्हारी इज़्ज़त करें.

(६८५) रसोई का विप्र और कसाई का कुत्ता.

(अभि.) इन दोनों को खाने को बहुत मिलता है.

(प्रयोग) हमने एक दिन डिप्टी साहब के रसोइया को भोजन बनाने खाने का निमन्त्रण दिया उसने इन्कार किया, तब हमने कहा—रसोई का विप्र और कसाई का कुत्ता इन दोनों को खाने को बहुत मिलता है.

(६८६) रस से मरे तो विष क्यों दे ?.

(अभि.) आसानी से काम निकलजावे तो लड़ाई क्यों करे.

(प्रयोग) मुझ से मेरे मित्र ने फ़र्माया कि आप अपने सेवकों से कभी धमका कर काम नहीं लेते हैं, मैंने अर्ज़ की यदि रस से मरे तो विष क्यों दे अर्थात् विना धमकाये जब वे अच्छा काम करते हैं तब क्यों धमकाया जावे.

(६८७) राजा करै सो न्याव पांसा पड़ै सो दाव.

(अभि.) *हाकिम जो फैसला करदे वही ठीक है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य का मुक़द्दमा उसके प्रतिकूल तै हुआ वह कहीं खड़ा हुआ कुछ आदमियों में कह रहा था कि न्याव नहीं हुआ, तब उनमें से किसी ने उसे समझाया कि राजा करै सो न्याव पांसा पड़ै सो दाव.

(६८८) राजा जोगी अग्नि जल इनकी उलटी रीति,
डरता रहिये परशुराम ये थोड़ी पालें प्रीति.

(अभि.) *राजा, जोगी, अग्नि, जल इन चारों से अलहिदा ही रहना अच्छा है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बहुत बड़ा पैराक था इसी वजह से वह कहीं भी पानी में कूद पड़ता, एक दिन वह पुष्कर के तालाव में कूद पड़ा वहां उसने ऐसा गोता लगाया कि फिर नहीं निकला, जब लोगों में यह भेद खुला तब उन्होंने कहा—राजा जोगी अग्नि जल इनकी.........आद्योपांत.

(६८९) राजा किसके पाहुने जोगी किसके मीत.

(अभि.) *ये किसी के नहीं.*

(प्रयोग) एक दिन किसी राजसेवक की किसी से शहर में लड़ाई होगई, राजसेवक ने अपने आपको राजा का सेवक समझ-कर उसको डंडों से बहुत मारा जब यह मुक़द्दमा राजा के सामने आया और असली भेद मालूम हुआ तब राजा ने अपने सेवक को क़ैद करदी, तब लोगों ने राजसेवक से कहा कि राजा किस के पाहुने जोगी किस के मीत.

(६६०) राजा राज प्रजा सुखी.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) यह किसी कहानी या क़िस्से के बाद में कह देते हैं जैसे हमने बच्चों को कोई कहानी सुनाई जब वह पूरी होगई तब कह दिया कि राजा राज प्रजा सुखी.

(६६१) राजा रूठेगा अपनी नगरी लेगा.

(अभि.) *स्वामी नाराज होगा तो अपनी नौकरी लेगा.*

(प्रयोग) एक चौकीदार और एक पानी भरने वाला दोनों नौकर अपने स्वामी के मकान के पास आहिस्ता २ गा रहे थे उनमें से चौकीदार कुछ ज़ोर से गाने लगा तब दूसरे नौकर ने कहा—आहिस्ता २ गाओ, स्वामी सुन लेगा तो नाराज होगा तब चौकीदार ने कहा—राजा रूठेगा तो अपनी नगरी लेगा अर्थात् स्वामी नाराज होगा तो अपनी नौकरी लेगा, हम अपने गाने में क्यों विघ्न डालें.

(६६२) रानी रूठेगी अपना सुहाग लेगी.

(अभि.) *स्वामिन नाराज होगी तो अपनी नौकरी लेगी.*

(प्रयोग) प्रयोग नम्बर ६६१ में का देखो, यह स्त्रीलिंग के लिये वह पुल्लिङ्ग के लिये.

(६६३) रातभर पीसा चपनी में उठाया.

(अभि.) *बहुत देर के काम का थोड़ासा फल.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी ने तमाम दिन सबक़ याद किया, मगर गुरूजी को दोही दोहों का अर्थ बतलाया तब गुरूजी ने उससे कहा—तुम्हारा तो वही हाल हुआ कि रात भर पीसा चपनी में उठाया.

(६६४) राम २ जपना पराया माल अपना.

(अभि.) *छल मक्कारी करके दूसरों का माल उड़ाना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ज़ाहिर में तो राम २ भजता और माला फेरता रहता था, मगर जब उसका मौका लगता तब ही किसी की चीज़ उठालेता, यह भेद खुलने पर लोगों ने कहा–इसका तो वह हाल है कि राम २ जपना पराया माल अपना.

(६६५) रामभरोसे जो रहें परवत पर हरि याहिं.

(अभि.) *जिन मनुष्यों को ईश्वर का सहारा है वे कभी दुःख नहीं देखते.*

(प्रयोग) मैं और मेरा मित्र एकदिन पहाड़ों की सैर करने गये, एक पहाड़ की चोटी पर एक साधू महात्मा को देखा हमने उनसे पूछा–न यहां पानी है न यहां कुछ भोजन का सामान है आपको यहां बड़ी तकलीफ़ होती होगी, महात्माने उत्तर दिया–रामभरोसे जो रहें······आदि.

(६६६) राई से परवत करे परवत राई माहिं.

(अभि.) *परमेश्वर छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा कर सक्ता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य दैव इच्छा से धनहीन होगया, वह एक दिन उदास बैठा हुआ कह रहा था कि नहीं मालूम मेरे वैसे दिन कभी आवेंगे या नहीं, तब दूसरे मनुष्य ने उससे कहा–"राई से पर्वत आदि" अर्थात् परमात्मा को सब सामर्थ्य है.

(६६७) रीते भरै भरे ढुलकावे, मेहर करै तो फेरि भरावे.

(अभि.) *परमात्मा दीन को धनवान्, धनवान् को दीन, करने की सामर्थ्य रखता है.*

(प्रयोग) इसका प्रयोग नंबर ६९६ में देखो.

(६९८) रीछ का बाल ही बहुत है.

(अभि.) *सूम से जो मिलजावे वही बहुत है.*

(प्रयोग) एक सूम मनुष्य ने अपने घर पर किसी बड़ी भारी खुशी के होने में एक ब्राह्मण को भोजन कराया और एक छोटासा अंगोछा दक्षिणा में दिया, मैंने उससे पूछा–दक्षिणा में क्या मिला, उत्तर मिला–"अंगोछा" मैंने कहा–रीछ का बाल ही बहुत है.

(६९९) रुपया परखे बारंबार आदमी परखे एक बार.

(अभि.) *एक दफ़ा में ही मनुष्य की परीक्षा होजाती है.*

(प्रयोग) मैंने एक नौकर अपने घर के कार्य्य के लिये रक्खा उसने पहिले ही दिन मेरे कोट की जेब में से एक रुपया उड़ा लिया जब रुपये की तलाशी लीगई तो उसके पास निकला तब वह कहने लगा–मेरा यह पहिला ही अपराध है क्षमा करो, मैंने कहा–"रुपया परखे आदि" अब मैं तुम्हें नौकर नहीं रक्खूंगा.

(७००) रूखी सूखी खाय के, ठंडा पानी पी ।
देख पराई चूपरी मत ललचावे जी ॥

(अभि.) *परमात्मा ने जिस हालत में किया है उसी में प्रसन्न रहो.*

(प्रयोग) एक दिन हम पैदल मेला देखने गये वहां पर बहुतसे अमीर मनुष्य अपनी २ उम्दा गाड़ियों में सवार होकर मेला देखने आये, हमने अपने मित्र से कहा–यदि हमारे पास भी गाड़ी

होती तो हम भी गाड़ी में बैठकर आते, हमारे मित्र ने हमें समझाया "रूखी सूखी खाय के···आद्योपांत".

(७०१) रंग में भंग होना.

(अभि.) *आनन्द में विघ्न पड़ना.*

(प्रयोग) कुछ लड़के एकत्रित होकर ताश का खेल खेल रहे थे, एक बड़े मनुष्य ने उन्हें धमकाया कि यहां ताश मत खेलो तब वे लड़के यह कहते हुए कि "रंग में भंग पड़ गया।" भाग गये.

(७०२) रंडी पैसे की यार है.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपने मित्र से कहा–फलां रंडी मुझ से बड़ा प्रेम करती है, मित्र ने उत्तर दिया–तुमसे प्रेम नहीं करती है तुम्हारे पैसे से प्रेम करती है, रंडी तो पैसे की यार है.

(७०३) रांड का सांड.

(अभि.) *विधवा का लड़का बहुधा बिगड़ जाता है.*

(प्रयोग) एक लड़के ने अपने बाप के मरते ही स्कूल में पढ़ना छोड़ दिया, बदमाशों और लुच्चों की संगत में बैठने लगा अपनी विधवा मा का कुछ भी डर नहीं करता था, लोग उस लड़के को रांड का सांड कहने लगे.

(७०४) रांड, सांड, सीढ़ी, संन्यासी, इनसे बचै तो सेवे काशी.

(अभि.) *काशी (बनारस) में इन चारों की अधिकता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य काशी में इस अभिप्राय से गया कि काशी शम्भुपुरी है, वहां जाकर भजन करेंगे, वहां जाकर किसी विधवा स्त्री के फंदे में फँस गये, तब लोगों ने कहा—रांड सांड······ आद्योपांत.

(७०५) रोग का घर खांसी लड़ाई का घर हांसी.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य को खांसी होगई उसनें उस की कुछ परवाह न की, हमनें उसको बहुत समझाया कि "रोग का घर खांसी लड़ाई का घर हांसी" तुम इसका इलाज कराओ, मगर वह हमारे कहे को कान पर टाल जाता, परिणाम यह हुआ कि खांसी बढ़कर फेफड़ा बिगड़ गया और पांच सात दिन बाद राम २ सत्य की नौबत आगई.

(७०६) रोज़गार और दुश्मन बार २ नहीं मिलते.

(अभि.) *मौक़े पर इन्हें छोड़ना नहीं चाहिये.*

(प्रयोग) एक लड़के ने मुझ से सलाह ली कि सुपरिनटेंडेंट माल १००) रु० लेकर मुझे नायबरजिस्ट्रारी देता है कहिये मैं क्या करूं, मैंने कहा—रोज़गार और दुश्मन बार २ नहीं मिलते हैं अब तुम खुद समझ देखो.

(७०७) रोज़ कूआ खोदना रोज़ पानी पीना.

(अभि.) *रोज़ करना रोज़ खाना.*

(प्रयोग) एक मज़दूर एक दिन बीमारी के कारण मज़दूरी पर नहीं गया, उस दिन उसकी स्त्री हमारे यहां से एक सेर आटा

लेने आई हमने कहा—क्या तुम्हारे पास इतने भी पैसे नहीं कि बाज़ार से सेरभर आटा भी लेआओ, उसने उत्तर दिया—कि हमारा तो वह हाल है कि रोज़ कूआ खोदना रोज़ पानी पीना अर्थात् रोज़ कमाना रोज़ खाना.

(७०८) लकड़ी के बल बन्दर भी नाचता है.

(अभि.) *डर से काम ठीक होता है.*

(प्रयोग) मेरे मित्र का एक नौकर ठीक २ काम नहीं करता था, मैंने मित्र को समझाया कि इससे धमकी से काम लिया करो, कहा भी है कि लकड़ी के बल बन्दर भी नाचता है.

(७०९) लकीर के फ़कीर होना.

(अभि.) *विना समझे बूझे एक ही ढर्रे पर चलना.*

(प्रयोग) एक नार्मल स्कूल में छात्रगण पुराने शिक्षा कर्त्तव्य के नोटों की नक़ल कर के काम करते थे, मैंने एक लड़के से एक नये सबक़ का नोट बनाने को कहा वह न बना सका उसने कहा—हम लोग तो पुराने नोटों की नक़ल कर लेते हैं अर्थात् लकीर के फ़कीर बने हुए हैं नये सबक़ का नोट कैसे बतावें ?.

(७१०) लगा तो तीर नहीं तो तुक्का.

(अभि.) *अंदाज़ से कार्य करना.*

(प्रयोग) मेरे एक मित्र ने प्राइवेट तौर से घर पर कुछ तालीम पाई थी इम्तहान देने की ग़रज़ से मिडिल की फ़ीस दाख़िल कर दी, मैंने उससे कहा—तुम्हारी किताबें तो ख़तम भी नहीं हुईं व्यर्थ क्यों इम्तहान देते हो? उसने उत्तर दिया—लगा तो तीर नहीं तुक्का

अर्थात् पास होगये तो हो गये नहीं तो खैर उस में हर्ज़ ही क्या है.

(७११) लटा हाथी विटौड़ा सा.

(अभि.) *बड़ा मनुष्य बिगड़ने पर भी छोटों से बड़ा ही रहता है.*

(प्रयोग) एक लखपती मनुष्य को दैवयोग से व्यापार में ६० हज़ार रुपये की हानि होगई, तब लोगों ने कहा—अब तो बिगड़ गया, किसी दूसरे मनुष्य ने कहा—वह हम से तुम से अब भी अच्छा है कहा भी है कि लटा हाथी विटौड़ा सा.

(७१२) लट्टू होगया.

(अभि.) *बहुत प्रसन्न होगया.*

(प्रयोग) एक इन्स्पेक्टर मदारिसने अपनी कमिश्नरी के नार्मल स्कूल का मुआयना किया, वहां छात्रों के शिक्षाविधि के पाठ और भूगोल के मौडल देखकर इन्स्पेक्टर साहिब लट्टू होगये.

(७१३) लगे बगलें झांकने.

(अभि.) *परेशान होना.*

(प्रयोग) मैंने अपने घर से १० कागज़ात की फाइल अपने नौकर को देकर कचहरी लेजाने की आज्ञा दी वहां पहुंच कर मैंने देखा तो ६ ही फाइल निकलीं, मैंने पूछा एक फाइल कहां है, तब वह लगा बगलें झांकने.

(७१४) लड़तों के पीछे भागतों के आगे.

(अभि.) *बहुत डरपोक होना.*

(प्रयोग) किसी फौजका १ मनुष्य बड़ा डरपोक था जब कहीं लड़ाई होती तो वह सबसे पीछे खड़ा होता, अगर हारकर भागते तो सबसे आगे भाग आता, उसका ऐसा हाल देखकर अफसर ने कहा—तुम तो लड़तों के पीछे भागतों के आगे रहते हो.

(७१५) लड़का बग़ल में नगर में ढँढोरा.

(अभि.) *घर में रक्खी हुई चीज़ न मिलना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य से उसकी स्त्री ने कहा कि आज हमारी एक थाली नहीं मिलती वह मनुष्य उसको धमकाने लगा कि तुम ऐसे ही सब बरतन खो दोगी, थोड़ी देर बाद वह थाली उन के ही घर मिल गई, तब हमने उससे कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि लड़का बग़लमें नगर में ढँढोरा.

(७१६) लगी बुरी होती है.

(अभि.) *लगन लगने में फिर और कोई ख़याल नहीं होता.*

(प्रयोग) हमने एक दिन एक अमीर और प्रतिष्ठित आदमी के लड़के को एक वेश्या के मकान में से आता हुआ देखा, हमने उससे कहा कि तुम को अपनी इज़्ज़तका कुछ भी ख़याल नहीं है तब उसने कहा—लगी बुरी होती है.

(७१७) लातों की गधी बातों से नहीं मानती.

(अभि.) *दुष्ट मनुष्य पिटने से अच्छा काम किया करते हैं.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी बहुत ग़ैरहाज़िरी करता था, अध्यापक उसको समझाता कि ग़ैरहाज़िरी मत किया करो, मगर वह नहीं मानता, अध्यापक ने यह कहकर कि "लातों की गधी बातों से नहीं मानती" उसको ठोका, तब से बराबर हाज़िर रहने लगा.

(७१८) लालच बुरी बला.

(अभि.) *लालची मनुष्य कभी न कभी संकट में पड़जाता है.*

(प्रयोग) एक लालची मनुष्य)॥ सेर खरबूज़े ख़रीद कर बाज़ार में बेचने गया वहां उसे)॥। सेर के दाम मिल रहे थे, मगर उसने नहीं बेचे तब अधिक लोभ के कारण उन्हें दूसरे शहर में लेगया वहांतक लेजाने से वे सड़ गये)। सेर के हिसाब बिके तब उसने कहा कि लालच बुरी बला.

(७१९) लाखका घर खाक करदिया.

(अभि.) *सब सत्यानाश करदिया.*

(प्रयोग) एक मनुष्य बड़ा भारी अमीर था उसके मरने पर उसके पुत्र ने सब धन वेश्यागमन करके बर्बाद करदिया तब लोगों ने उसके लिये कहा कि इसने लाख का घर खाक कर दिया.

(७२०) लाल गूदड़े में भी नहीं छिपते.

(अभि.) *अच्छे मनुष्य बुरी दशा में भी नहीं छिपते.*

(प्रयोग) एक धनाढ्य मनुष्य अपने लड़के को बहुत ही साधारण और मैले कपड़े पहिना कर स्कूल में भेजा करता था, एक दिन डिप्टी इन्स्पेक्टर साहिब ने मुआयना करते वक्त अध्यापक से कहा कि इस लड़के की सूरत तो भाग्यवानों कीसी है, मगर यह कपड़े दरिद्रियों केसे पहने हुए है, तब अध्यापक ने उसका हाल बताया और कहा कि लाल गूदड़ों में भी नहीं छिपते.

(७२१) लाठी मारने से पानी अलग नहीं होता.

(अभि.) *किसी की धमकी से अपनापन नहीं छूटता.*

(प्रयोग) एक थानेदार की किसी ज़मीदार से शत्रुता होगई, थानेदार ने उस ज़मीदार के भाई से कहा कि मैं तुम्हारे भाई को

किसी मामले में फांसूंगा, अगर तुम अपना भला चाहते हो तो अपने भाई का साथ छोड़ दो तब भाई ने कहा कि थानेदार साहिब! लाठी के मारने से पानी अलग नहीं होता.

(७२२) लिखे ईसा पढ़े मूसा.

(अभि.) *कुछ का कुछ पढ़ा जाना.*

(प्रयोग) दो मनुष्यों की आपस में बहस होरही थी, पहिला कहता था—देवनागरी अच्छी है, दूसरा कहता था—उर्दू भाषा अच्छी, तब पहिले ने कहा—उर्दू में तो लिखें ईसा पढ़ें मूसा देवनागरी में तो जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है.

(७२३) लीक २ गाड़ी चले लीकहि चले कपूत ।
लीक छांडि तीनों चलें सायर सिंह सपूत ॥

(अभि.) *अकलमंद मनुष्य अच्छे २ तरीके पसंद करते हैं.*

(प्रयोग) किसी आर्य्य मनुष्य ने अपने मित्र के लड़के की शादी में "कुम्हार का चाक*" पूजने को मने किया, मित्रने कहा—हमारे यहां यह दस्तूर चला आता है इसे क्यों तोड़ें ?, तब आर्य्य ने यह दोहा पढ़ कर सुना दिया.

(७२४) लूट के मूसल भी भले.

(अभि.) *मुफ्त की सब चीज़ अच्छी.*

(प्रयोग) मेरे मित्र ने मुझसे बयान किया कि फलां मनुष्य ने आज हमारे यहां एक सेर मिठाई भेजी है, मगर वह अच्छी नहीं है, मैंने कहा—लूट के मूसल भी भले.

---

* यू॰ पी॰ के पश्चिमी ज़िलों में शादियों में कुम्हार का चाक पूजा जाता है।

(७२५) लेना एक न देने दो.

(अभि.) *सब झंझट से अलग होना.*

(प्रयोग) मेरे मित्र आपस में रुपये पैसे के लेन देन करने में कुछ हर्ज नहीं मानते थे, एक दफ़ा उनके दश रुपये किसी ने नहीं दिये जब मुझे यह हाल मालूम हुआ तब मैंने मित्र को समझाया कि हमें देखो लेना एक न देने दो तुम भी आयंदा इस झंझट से अलग रहा करो.

(७२६) लेने के देने पड़े.

(अभि.) *लाभ के बदले हानि होना.*

(प्रयोग) एक जगह किसी पटवारी ने किसी ज़मींदार से कुछ रुपया लेकर शजरे में उसकी थोड़ीसी ज़मीन बढ़ादी, कानूनगो साहिबको यह काम उसका मालूम होगया और पटवारी को बहुत धमकाया तब और ज़मींदारों ने पटवारी को कहा—अबतो तुम्हें लेने के देने पड़ रहे हैं.

(७२७) लोहा जाने लुहार जाने, धौंकने वाले की बलाय जाने.

(अभि.) *लड़ाई करा के अलग होजाना.*

(प्रयोग) एक दुष्ट मनुष्यने किसी दो भाइयों में इधर की उधर, उधर की इधर कराके लड़ाई करादी, बड़े भाई ने उस दुष्ट मनुष्य से कहा कि तुमने ही हमारे घरमें लड़ाई कराई है तब दुष्ट मनुष्य ने उससे कहा—लोहा जाने लुहार जाने, धौंकने वाले की बलाय जाने अर्थात् तुम जानो तुम्हारे भाई जानें मुझसे क्या मतलब, मैं तुम्हारे घर में लड़ाई क्यों कराता.

(७२८) लोहे के चनें चबाना है.

(अभि.) *बहुत ही कठिन काम है.*

(प्रयोग) एक कृषक ने किसी विद्यार्थी से कहा कि तुम लोग मदर्से में बैठे २ काम करते हो हम लोगों को देखो, तेज धूप बारिश जाड़े सभी मोसिमों में खेतों में काम किया करते हैं इसलिये पढ़ने में खेती करने की अपेक्षा सहूलियत है तब विद्यार्थी ने कृषक से कहा—पढ़नां भी आसान काम नहीं है लोहे के चने चबाना है.

(७२९) लंका में सब बावन गज़ के.

(अभि.) *किसी जगह एक ही आदत के मनुष्य होना.*

(प्रयोग) हमारे मित्र किसी दफ्तर में हेडक्लर्क नियत हुए वहां उनके पांच मातहत क्लर्क और थे, परन्तु वे अपना २ कार्य्य भली-भांति न करते थे, हेडक्लर्क साहिब सबको समझाते, मगर वे कुछ परवाह नहीं करते तब हेडक्लर्क ने कहा कि यहां तो वह कहावत है कि लंका में सब बावन गज़ के.

(७३०) वक्त पड़े पै जानिये को वैरी को मीत.

(अभि.) *शत्रु मित्र की पहिचान दुःख के समय होती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य के बहुतसे मित्र थे, दैवयोग से उस मनुष्य पर कोई मुक़द्दमा क़ायम होगया उसने अपने मित्रों से धन की मदद चाही, इस बात को सुनते ही बहुत से अलग हो गये उनमें से एक ने रुपयों की थैली लाकर उस के हाथ में देदी, तब उस मनुष्य ने इस सच्चे मित्र से कहा कि वक्त पड़े पै जानिये को वैरी को मीत.

(७३१) वही मियां दरबार को वही चूल्हा झोंकने को.

(अभि.) *एक मनुष्य से कई मनुष्यों का काम लेना.*

(प्रयोग) एक अफ्सर अपने नौकर से चपरासी का भी काम लेता था और रोटी पोने का भी, तब लोगों ने चपरासी की बाबत कहा कि यही चपरासी है यही रसोइया अर्थात् वही मियां दरबार को वही चूल्हा झोंकने को.

(७३२) वह गुड़ नहीं जो चींटी खाय.

(अभि.) *छोटे इसके आनन्द को नहीं पा सके.*

(प्रयोग) गुरूजी अपने बड़े २ शिष्यों को साइंस का बयान समझा रहे थे छोटे शिष्यों ने भी उसके सीखने की इच्छा प्रकट की, तब गुरूजी ने उनसे कहा कि यह वह गुड़ नहीं जो चींटी खाय.

(७३३) वह हवा को पींजरे में बन्द करना चाहता है.

(अभि.) *वह इस काम को नहीं कर सक्ता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य किसी ऐसे काम को करना चाहता था कि और लोगों की निगाह में जो उसके लिये करना असम्भव था, तब लोगों ने उसके लिये कहा कि वह तो हवा को पींजरे में बंद करना चाहता है.

(७३४) वही थाली खाने को वही छेद करने को.

(अभि.) *दुष्ट आदमी भलाई करने वाले की भी बुराई करते हैं.*

(प्रयोग) मैंने किसी आदमी के साथ एक बड़े भारी सलूक का काम किया था किसी समय वह मेरी किसी बात से क्रुद्ध होकर कहीं मेरी बुराई कर रहा था, तब और लोगों ने उससे कहा– उसी थाली में खाते हो उसी में छेद करते हो.

(७३५) वही ढाक के तीन पात.

(अभि.) *कुछ बढ़ोतरी न करना.*

(प्रयोग) एक साधारण हैसियत के मनुष्य ने बहुतसे कार किये, परंतु उसके धन में कुछ बढ़ोतरी न हुई, एक दिन मैंने पूछा-अब तो तुम्हारे धन में कुछ बढ़ोतरी होगई होगी, उसने उत्तर दिया-वही ढाक के तीन पात अर्थात् कुछ बढ़ोतरी न हुई.

(७३६) शहर में ऊंट बदनाम.

(अभि.) *चतुरों में सीधा आदमी ही मूर्ख कहलाता है.*

(प्रयोग) एक छात्रालय में किसी छात्र के २) रु० खोयेगये वह छात्र किसी दूसरे सीधे सादे छात्र के सिर होगया कि मेरे रुपये तुमने ही उठाये हैं, उसने उत्तर दिया कि शहर में ऊंट ही बद-नाम होता है.

(७३७) शहद लगाकर चाटो.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक डिप्टी इन्स्पेक्टर ने मुद्दत मुलाज़मत देखकर अपने अध्यापकों को तरक्की दी, उनमें से किसी दूसरे दर्जे वाले पासशुदा कोभी तरक्की मिलगई, मगर एक अव्वल दर्जे के पासशुदा का नम्बर नहीं आया, उसने डिप्टीसाहिब से शिकायत की कि मेरे पास अव्वल दर्ज़े की सनद है आपने मुझे तरक्की नहीं दी, डिप्टीसाहिब ने फ़र्माया-इसको शहद लगा कर चाटो.

(७३८) शकल चुड़ैलों की याद परियों की.

(अ.प्र.) *इसका अभिप्राय और प्रयोग वही है जो "रहे झोंपड़ों में स्वप्न देखें महलों के" का है.*

(७३९) शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं.

(अभि.) *बड़ा अच्छा बन्दोबस्त है बलवान् निर्बल को नहीं सता सक्ता.*

(प्रयोग) किसी ने अपने मित्र से पूछा कि तुम्हारे यहां के कलेक्टर साह्बि का इन्तज़ाम कैसा है, उसने उत्तर दिया कि उनके इंतज़ाम में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं.

(७४०) शेरों का मुंह किसने धोया है.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) मैं एक दिन अपने मित्र के घरपर पहुंचा वे भोजनालय में थे, देखते ही फर्माने लगे-आओ भोजन करो, मैंने कहा-लाओ, वे कहने लगे-हाथ मुंह तो धोलो, मैंने कहा-शेरों के मुह किसने धोये हैं.

(७४१) शौक़ीन बुढ़िया चटाई का लँहगा.

(अभि.) *नदीदे की बनावट.*

(प्रयोग) एक स्त्री को चांदी की झांझन तो नसीब हुई नहीं कांसी की ही बनवाकर और पहिनकर छम २ किया फिरती थी उसकी ऐसी हालत देखकर किसी ने उससे कहा-शौक़ीन बुढ़िया चटाई का लँहगा.

(७४२) सखी का सिर बुलन्द.

(अभि.) *दाता की अधिक प्रतिष्ठा होती है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने किसी समाज में सबसे अधिक चन्दा दिया, जगह बजगह उसकी बड़ाई होने लगी, तब किसी ने कहा-सखी का सिर बुलन्द.

(७४३) सदा किसी की नहीं रही.

(अभि.) *अच्छी या बुरी दशा हमेशा नहीं रहती.*

(प्रयोग) एक मनुष्य अधिक आवश्यक्ता से अपने किसी सम्बंधी के पास दश रुपये मांगने गया उसने मने किया, तब इसने कहा-सदा किसी की नहीं रही आप कृपा कीजिये.

(७४४) सदा नाव काग़ज़ की बहती नहीं.

(अभि.) *निर्बल वस्तु बहुत काम नहीं देसक्ती, जल्दी ही नाश हो जाती है.*

(प्रयोग) इसके लिये उर्दू में एक शेर है "ज़ुल्म की टहनी कभी फलती नहीं, नाव काग़ज़ की सदा बहती नहीं" एक मनुष्य बड़ा ज़ालिम था दया का उसके दिल में बिल्कुल अभाव था, दैवयोग से उसका सर्वनाश होगया तब उसके लिये यह कहावत कही गई.

(७४५) सबके दाता राम.

(अभि.) *परमात्मा प्रत्येक की सुध लेता है.*

(प्रयोग) एक विद्यार्थी से कहा-तुम्हारी अभी पढ़ाई तो पूरी हुई ही नहीं है परीक्षा कैसे दोगे, उसने उत्तर दिया-सबके दाता राम.

(७४६) सब दिन चंगा त्यौहार के दिन नंगा.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य हमेशा अच्छे २ कपड़े पहिनता था, परंतु एक दिन हमने उसको अफ्सर के सामने कुछ २ मैले कपड़े पहिने हुये देखा, तब हमने उससे कहा कि तुम्हारा तो वह हाल है कि सब दिन चंगा त्यौहार के दिन नंगा.

(७४७) सब मिश्री की डलियां हैं.

(अभि.) *सब अच्छी हैं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य हमारे बाग़ से अमरूद ख़रीद रहा था वह उसको खूब अच्छी तरह देख रहा था, हमने कहा–देखते क्या हो सब मिश्री की डलियां हैं.

(७४८) सबसे भली चुप.

(अभि.) *चुप रहने से लड़ाई नहीं होती.*

(प्रयोग) दो मनुष्य आपस में गालीगलोज़ कररहे थे एकको हमने समझाया कि तुम चुप होजाओ चुप सबसे भली है.

(७४९) सत हारा गया मारा.

(अभि.) *मनुष्य को धर्म कभी नहीं छोड़ना चाहिये.*

(प्रयोग) एक युवावस्था का मनुष्य अपने धर्मपर आरूढ़ नहीं था, किसी वृद्धावस्था के मनुष्यने उसे एक कहानी द्वारा शिक्षा दी और कहा कि सत हारा गया मारा.

(७५०) सबसे मिलिये सबसे हिलिये सबसे करिये भाव।
हांजी २ सबसे कहिये बसिये अपने गांव॥

(अभि.) *मनुष्य को चाहिये कि सबकी सुने, परंतु अपने मनकी करे.*

(प्रयोग) मेरा मित्र अपने एक मामले में सबसे सलाह पूछ फिरा अंत में वह मुझसे भी सलाह लेने आया, मैंने उसको सलाह देकर यह कहा कि तुम सबकी सलाह सुनकर उनपर ध्यान देना और फिर वही करना जो तुम्हारे दिल में निश्चय हो, कहा भी है कि सबसे मिलिये······आद्योपांत.

(७५१) सब बात खोटी सरै दाल रोटी.

(अभि.) *"दालरोटी" बस यही भोजन सबसे अच्छा है.*

(प्रयोग) मैंने और मेरे मित्र ने ४ दिनके सफ़र में बराबर पूड़ी खाई, दालरोटी को दिल चाहा तब आपस में कहागया कि सब बात खोटी सरै दाल रोटी.

(७५२) समय पड़े की बात.

(अभि.) *मनुष्य को अच्छे बुरे सब दिन भोगने पड़ते हैं.*

(प्रयोग) एक मनुष्य पुलिस में सब-इन्स्पेक्टर होगया वह बड़ा तेज़-मिज़ाज था, एक दफ़ा उससे कोई ऐसा अपराध होगया कि उसको सिपाही हथकड़ी डाले लेजारहे थे तब उस की हालत देखकर लोगोंने कहा कि समय पड़े की बात.

(७५३) सखी के माल पर पड़े सूम की जान पर.

(अभि.) *सूम माल के लिये प्राण तक देदेता है सखी माल की कुछ परवाह नहीं करता.*

(प्रयोग) एक दफ़ा किसी मनुष्य के घर चोरी होगई बहुतसा माल उसका जाता रहा, वह कुछ रंज करने लगा तब लोगोंने उसे समझाया कि सखी के माल पर ही बीतती है सूम की जान पर.

(७५४) सखी से सूम भला तुरत देय जवाब.

(अ.प्र.) *इस का अभिप्राय और प्रयोग पीछे वर्णन हो चुका है.*

(७५५) सब दिन जात न एक समान.

(अभि.) *सुख दुख हमेशा नहीं बना रहता है बदलता रहता है.*

(प्रयोग) एक अमीर आदमी ईश्वरेच्छा से कंगाल हो गया, वह अपने पुराने सुखों को याद किया करता था, तब लोगों ने उसे समझाया कि सब दिन जात न एक समान.

(७५६) सखी और सूम सालभर में बराबर हो रहते हैं.

(अभि.) स्पष्ट है.

(प्रयोग) एक सूम मनुष्य के पास बहुतसा रुपया था उसको किसी व्यापार में बड़ी भारी हानि होगई, तब लोगों ने उससे कहा कि सूम और सखी साल भर में बराबर होजाते हैं.

(७५७) सची बात सदुल्ला कहै सबके मनसे उतरा रहै.

(अभि.) सची बात कहना बुरा मालूम पड़ता है.

(प्रयोग) एक डिप्टी इन्स्पेक्टर किसी स्कूल में किसी बातकी तहकीक़ात करने गये वहां पर एक सहायक अध्यापक ने सब बात सच सच कह दी, जिससे डिप्टीसाहब मुख्य अध्यापक से नाराज़ होगये उनके जाने के पीछे मुख्य अध्यापक ने सहायक अध्यापक से कहा कि तुमने तो सब भेद खोल दिया तब सहायक ने कहा-सची बात सदुल्ला कहै सबके मन से उतरा रहै.

(७५८) सदा दिवाली साधुकी जो घर गेहूं होय.

(अभि.) घर धन है तो हमेशा आनन्द है.

(प्रयोग) किसी त्यौहार के दिन एक ग़रीब लड़के ने अपने पिताजी से कहा-हमारे यहां तो आजही पूड़ी बनी हैं और अमुक मनुष्य के यहां हमेशा बनती हैं, तब पिताजी ने उससे कहा-सदा दिवाली साधुकी जो घर गेहूं होय.

(७५९) सत्तू बांध के पीछे पड़ना.

(अभि.) *किसी तरह से दम न लेने देना.*

(प्रयोग) एक अफ्सर अपने मातहत से किसी बात में नाराज़ होगया वह उसको बात २ में तंग करता था, तब उस मातहत ने अपने मित्रों में कहा कि आजकल तो हमारा अफ्सर सत्तू बांधके हमारे पीछे पड़ा है.

(७६०) सब गुड़ लाट हो गया.

(अभि.) *सब काम बिगड़ गया.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपने मुक़द्दमे में सब गवाह आदि ठीक कर रक्खे थे, दूसरे पक्षके वकील ने सब गवाहों की गवाही काटदी, तब उस मनुष्य ने अपने मुक़द्दमे की बाबत कहा कि सब गुड़ लाट होगया.

(७६१) शहद की छुरी है.

(अभि.) *मीठी बातें बनाकर हानि करने वाला है.*

(प्रयोग) एक हमारा शत्रु हमसे मीठी २ बातें बनाकर हमारा भेद लेने लगा तब हमारे मित्र ने हमसे कहा कि यह शहद की छुरी है इसको कोई भेद मत देना.

(७६२) सत मत छोड़े सूरमा, सत छोड़े पति जाय.

(अभि.) *कर्तव्य करना चाहिये.*

(प्रयोग) दो लड़कों ने आपस में शर्त लगाकर दौड़ना शुरू किया जो लड़का आगे था वह बहुत थक गया वह अपनी दौड़ मध्यम करने लगा तब लोगों ने उसे बढ़ावा देने के लिये कहा कि सत मत छोड़े सूरमा सत छोड़े पति जाय.

(७६३) सब गहनों में चन्द्रहार.

(अभि.) *चन्द्रहार सब गहनों में अच्छा होता है.*

(प्रयोग) एक स्त्री के पास बहुतसा ज़ेवर था, परन्तु चन्द्रहार नहीं था तब उससे दूसरी स्त्रियों ने कहा कि चन्द्रहार और बन वालो क्योंकि वह सबसे अधिक अच्छा होता है.

(७६४) साईं अपने चित्त की भूल न कहिये कोय।
तब लग मन में राखिये जब लग कारज होय ॥

(अभि.) *मनुष्य को अपना भेद उस वक़्त तक न खोलना चाहिये जबतक काम सिद्ध न हो.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने पटवारगीरी पास करके अपनी सिफ़ारिश क़ानूनगो के पास कहीं पटवारी होने की पहुंचाई, उसने पक्का वायदा कर लिया, लेकिन् इस मनुष्य ने यह ग़लती की कि यह भेद कहीं ज़ाहिर कर दिया जिससे और लोगों ने कोशिश करके पटवारगीरी लेली और यह मनुष्य ताकता रहगया, तब लोगों ने इससे कहा कि साईं अपने चित्त की·········आद्योपान्त.

(७६५) स्याना कव्वा गू खाता है.

(अभि.) *अधिक स्यानपत करनेवाला मनुष्य हानि उठाता है.*

(प्रयोग) एक लड़का पढ़ने लिखने में कुछ परिश्रम नहीं करता था जब कभी परीक्षा होती वह कुछ न कुछ ऐसी चाल करता कि जिससे उसके अच्छे नम्बर आते जब उसकी यह स्यानपत मालूम होगई तब स्कूल से निकाल दिया गया और लड़कों ने उससे कहा कि स्याना कव्वा गू खाता है.

(७६६) साईं भये कोतवाल अब डर काहे का.

(अभि.) *यदि किसी का कोई सम्बन्धी उसका अफ्सर होजावे तो फिर उसे किसका डर है.*

(प्रयोग) एक स्कूल का हेडमास्टर अपने सहायक अध्यापकों को बहुत तंग किया करता था, वहां पर डिप्टी इन्स्पेक्टर का कोई रिश्तेदार सहायक अध्यापक बनकर गया वह उस हेडमास्टर से नहीं डरा, तब हेडमास्टर ने उस नये सहायक अध्यापक से कहा—तुम तो डिप्टीसाहिब के सम्बन्धी हो तुम क्यों डरोगे, कहा भी है कि साईं भये कोतवाल अब डर काहे का.

(७६७) सांच को आंच नहीं.

(अभि.) *सच्चा मनुष्य कभी दुःख नहीं उठाता.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने गवाही में हमारा नाम लिखवा दिया, जब हमारे नाम सम्मन आया तब हमने उससे कहा कि हम जो तुम्हारे मामले में जानते हैं सब सांच सांच कहेंगे, कहा भी है कि सांच को आंच नहीं.

(७६८) शाम के मरे को कबतक रोवें.

(अभि.) *बहुत दिनों के बिगाड़े काम को कहांतक ठीक करें.*

(प्रयोग) एक क्लर्क के काग़ज़ात में बहुतसी ग़लतियां थीं, मेरे अफ्सर ने मुझे वह काग़ज़ ठीक करने को कहा, मैं उन्हें ठीक करने लगा जब मुझे बहुतसी ग़लतियां पाईं तब मैंने कहा कि शाम के मरे को कहांतक रोवें.

(७६९) साझे की हांडी चौराहे में फूटती है.

(अभि.) *साझे के माल की परवाह नहीं होती.*

(प्रयोग) तीन मनुष्यों ने मिलकर कुछ लकड़ियां खरीदीं, सब अपने २ दिलों में सोचने लगे कि हमें क्या दुःख है वही इनका इन्तज़ाम करेंगे, थोड़े दिनों बाद दीमकोंने वे लकड़ियां सब मट्टी करदीं, तब लोगों ने कहा कि साझे की हांडी चौराहे में फूटती है.

(७७०) साझे की घोड़ी कौन जड़े नाल.

(अभि.) *शामिलात की चीज़ के ठीक करने की फिक्र न करना.*

(प्रयोग) नम्बर ७६९ में देखो.

(७७१) सारी रामायण पढ़ गये यह न जाना कि राक्षस राम था या रावण.

(अभि.) *सब बात जानली, परंतु मर्म की बात न समझे.*

(प्रयोग) अध्यापक ने अपने शिष्यों को मापविद्या की सम्पूर्ण रीतियां पढ़ादीं, एक दिन शिष्य ने गुरूजी से पूछा कि एक बीघा ज़मीन में कितनी वर्ग गज़ ज़मीन होती होगी, तब गुरूजी ने कहा–तुम सब मापविद्या पूर्ण करचुके तुम्हें अभी तक यह बात मालूम नहीं हुई, तुम्हारा तो वही काम हो गया कि सारी रामायण···आद्योपान्त.

(७७२) सारी खिचड़ी में एक ही चावल टटोलते हैं.

(अभि.) *थोड़ीसी वस्तु देखकर सम्पूर्ण का हाल मालूम हो जाता है.*

(प्रयोग) डिप्टी इन्स्पेक्टर साहिब ने दो लड़कों की जांच से तमाम क्लास का हाल मालूम कर लिया और अध्यापक से कहने

लगे कि क्लास बहुत कमज़ोर है, अध्यापक ने अर्ज़ की कि और लड़कों की भी परीक्षा कीजिये, तब डिप्टीसाहिब ने फ़र्माया कि खिचड़ी का एक ही चावल टटोलेते हैं.

(७७३) सावन सूखे न भादों हरे.

(अभि.) *हमेशा एकसी साधारण हालत रहना.*

(प्रयोग) मैंने अपने मित्रसे पूछा कि अब तो तुमको अच्छी आमदनी है अब तो कुछ आपने बचा लिया होगा, मित्रने कहा-जितनी आमदनी है उतना ही खर्च है वही साधारण हालत है सावन सूखे न भादों हरे.

(७७४) सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है.

(अभि.) *धनवान् सबके पास धन समझता है.*

(प्रयोग) एक धनवान् ने अपने मित्र से पूछा-तुम कल देहली ब्योपार के लिये रूई ख़रीदने जाते होंगे, उसने उत्तर दिया-सावन के अंधे को हरा ही हरा सूझता है मैं वहां सैर करने जाता हूं या रूई ख़रीदने.

(७७५) सांप को दूध पिलाओ तोभी उसका विष न जायगा.

(अभि.) *दुष्ट के साथ चाहे भलाई करो, मगर वह दुष्टता नहीं छोड़ता है.*

(प्रयोग) एक सज्जन और अमीर आदमी ने किसी ग़रीब की पांच रुपये देकर मदद की, वह यह सोचकर कि यह बहुत बड़ा अमीर है उसके घर में चोरी करने घुस गया जब भेद मालूम हुवा तब लोगों ने कहा कि सांप को दूध पिलाओ तो भी उसका विष न जायगा.

(७७६) सांप मरे न लाठी टूटे.

(अभि.) *काम सिद्ध हो जावे और किसी का नुक़सान भी न हो.*

(प्रयोग) दो मनुष्यों की अपनी खेती के बांटने में लड़ाई हो रही थी किसी तीसरे आदमी ने उनकी खेती इस प्रकार बांट दी कि दोनों खुश होगये, तब लोगों ने कहा—यह काम ऐसा हुआ कि सांप मरा न लाठी टूटी.

(७७७) सांप सब जगह टेढ़ा रहता है, परन्तु अपने बिल में तो सीधा रहता है.

(अभि.) *स्पष्ट है.*

(प्रयोग) एक चोर एक दिन अपने गांव में चोरी में पकड़ा गया तब लोगों ने उसे फिटकार दी कि तुझे गांव में चोरी नहीं करनी चाहिये देखो सांप भी अपनी बांबी में सीधा रहता है.

(७७८) सांप छछूंदर का सा डौल है.

(अभि.) *सब तरह मुशकिल है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने अपने सम्बंधी से एकसौ रुपये उधार मांगे, सम्बंधी ने अपने दिल में सोचा कि अगर देता हूं तो आशा नहीं कि वसूल हों और मने करता हूं तो सम्बंध का मामला है, तब यह हाल उसने मित्र से कहा और कहा कि हमारा तो सांप छछूंदर का सा डौल है.

(७७९) सांप निकल गया लकीर पीटने से क्या.

(अभि.) *अवसर चूकने पर पछताने से क्या लाभ.*

(प्रयोग) किसी स्कूलमास्टरने इन्स्पेक्टर साहिब के मुआयने के वक़्त तो अपना शिक्षाकर्त्तव्य दिखाया नहीं और पीछे पछताने

लगा, तब उसके मित्रों ने उसे समझाया कि सांप निकल गया लकीर पीटने से क्या लाभ.

(७८०) सारी रात रोये एक ही मरा.

(अभि.) *बहुत देर के काम में थोड़ा फल प्राप्त करना.*

(प्रयोग) किसी विद्यार्थी ने तमाम दिन रेखागणित याद की परन्तु एक ही साध्य याद कर पाया तब अध्यापक ने उससे कहा—तुम्हारा तो वह हाल है कि सारी रात रोये एकही मरा.

(७८१) सिर पर पड़ी बजाये सिद्धि.

(अभि.) *आपड़ने पर काम करना ही पड़ता है.*

(प्रयोग) एक अफसर ने अपने क्लर्क को अपना निजी काम लिखने को दिया किसी दूसरे क्लर्क ने उससे कहा—तुम इस बात के नौकर नहीं हो केवल सरकारी काम करो, तब पहिले क्लर्क ने कहा—सिरपर पड़ी बजाये सिद्धि अर्थात् आपड़ने पर काम करना ही पड़ता है.

(७८२) शिकार के समय कुतिया हगाई.

(अभि.) काम के वक्त बहाना करना.

(प्रयोग) हमने अपने मित्र से कहा—आज हमारे पास लिखने को बहुत काम है इसलिये आप थोड़ीसी मदद लिखने में कर दीजिये उसने बहाना बनाया कि आज मेरे सिर में दर्द है तब हमने कहा—तुम्हारा तो वह काम है कि शिकार के समय कुतिया हगाई.

(७८३) सींग कटा के बछड़ों में मिलना.

(अभि.) *अपनी अवस्था से छोटा रूप बनाना.*

(प्रयोग) एक जगह फुटबॉल के मैच में यह शर्त थी कि कोई लड़का २० वर्ष से अधिक आयु का न हो, उन में एक मनुष्य अपनी मूंछें छोटी २ कराके अपने आपको २० वर्ष का कहके खेल में शामिल होने लगा तब किसी ने उससे कहा-सींग कटाके बछड़ों में मिलना चाहते हो.

(७८४) सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता.

(अभि.) *सीधेपन से काम नहीं चलता.*

(प्रयोग) एक अफ्सर बड़ा सीधा था वह अपने नौकरों से बड़ा नर्मी का वर्त्ताव करता था, किसी नौकर ने उनके पांच रुपये चुरा लिये वह अपने नौकरों से प्यार में पूछ रहा था कि रुपये बतादो, मगर किसी ने भी न बताये, अफ्सर ने यह कह कर कि सीधी उँगली से घी भी नहीं निकलता नौकर को पीटना शुरू किया, फौरन रुपयों का पता चल गया.

(७८५) सुबह का भूला शाम को घर आजावे तो उसे भूला न समझना चाहिये.

(अभि.) *अपनी भूल को आप जल्दी ठीक करले तो अच्छा है.*

(प्रयोग) एक नौकर ने अपने स्वामी की किसी बात से नाराज़ होकर नौकरी छोड़ दी, उसी दिन यह सोचकर कि अब मैं कहां से खाऊँगा फिर स्वामी की खुशामद करके अपनी नौकरी लेली, तब लोगों ने उसके लिये कहा कि सुबह का भूला शाम को घर आवे तो उसे भूला न कहिये.

(७८६) सूत न कपास कोरी से लट्ठम लट्ठा.

(अभि.) *व्यर्थ किसी से लड़ाई झगड़ा करना.*

(प्रयोग) दो मनुष्यों में आपस में झगड़ा होरहा था, एक तीसरा आदमी जाकर उनसे लड़ने लगा तब किसी ने उसके लिये कहा कि सूत न कपास कोरी से लट्ठम लट्ठा.

(७८७) सूप तो बोले सो बोले चलनी भी बोले जिसमें ७२ छेद.

(अभि.) *दोषी मनुष्य का लड़ना.*

(प्रयोग) दो स्त्रियां आपस में लड़ रहीं थीं, एक ने दूसरी से कहा कि सूप तो बोले सो बोले चलनी भी बोले जिसमें ७२ छेद अर्थात् तुम तो दोष से भरी हो तुम मुझे दोषी कहती हो.

(७८८) सुन खगेश अस को जग माहीं।
प्रभुता पाय जाय मद नाहीं॥

(अभि.) *स्वामित्व मिलने पर प्रत्येक को घमंड होजाता है.*

(प्रयोग) हमारा मित्र जब पद में हमारी बराबर था तब तो खूब मिल-जुल कर रहता था और जब वह ऊंचे पदपर पहुंच गया तब उसको ऐसा घमंड होगया कि मिलने तक से नफ़रत करने लगा तब उसके लिये यह चौपाई पढ़ी गई.

(७८९) सूरज धूल डालने से नहीं छिपता.

(अभि.) *अच्छा आदमी बुरों के कहने से बुरा नहीं होसक्ता.*

(प्रयोग) एक अफ्सर बड़ा न्यायी था, कामचोर मनुष्य उसकी बुराई किया करते थे, तब एक मनुष्य ने कामचोरों से कहा–तुम्हारे कहने से वह बुरा नहीं हो सक्ता, जैसे सूरज पर धूल डालने से सूरज नहीं छिपता.

(७६०) सेख क्या जाने साबुन का भाव.

(अभि.) *मूर्ख गुण को नहीं पहिचानता.*

(प्रयोग) इसका प्रयोग वही है जो "बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद" का है.

(७६१) स्वेत २ सब एक से करर कपूर कपास.

(अभि.) *बुरे भले की पहिचान न होना, सबको एक लाठी हांकना.*

(प्रयोग) एक मनुष्य नार्मल पास करके नौकरी के लिये गया, डिप्टी-साहिब ने उसे ६) रु० की जगह दी, वहां बहुतसे अध्यापक विना पास भी ६) रुपये पारहे थे तब नार्मल पास अध्यापक ने कहा कि यहां तो स्वेत २ सब एकसे करर कपूर कपास का मामला है.

(७६२) सिंहों से गन्ने खाना.

(अभि.) *ज़बरदस्त से लड़ना.*

(प्रयोग) एक डिप्टीइन्स्पेक्टर साहिब ने अध्यापक को ठीक कार्य्य न करने पर धमकाया, अध्यापक कुछ २ गुस्ताखी की बात करने लगा तब डिप्टीसाहिब ने उससे कहा–क्यों सिंहों से गन्ने खाते हो.

(७६३) सोने की चिड़िया हाथ से उड़ना.

(अभि.) *लाभदायक वस्तु हाथ से निकल जाना.*

(प्रयोग) एक अध्यापक २०) रु० माहवार का ट्यूशन एक तहसीलदार साहिब के यहां करता था, तहसीलदार साहिब की बदली होगई, तब अध्यापक ने अपने मित्र से कहा कि सोने की चिड़िया हाथ से निकल गई.

(७९४) सौ सुनार की न एक लुहार की.

(अभि.) निर्बल मनुष्यों के बहुत देर के काम से बलवान् का थोड़ी देर का भी काम अधिक होता है.

(प्रयोग) एक अफ्सर के विरुद्ध छोटे २ मनुष्यों ने बहुतसे मुक़द्दमे उठाये, मगर कुछ न हुआ, अफ्सर ने बड़े अफ्सर से कह के सब मनुष्यों की हानि करदी, तब लोगों ने कहा कि सौ सुनार की न एक लुहार की.

(७९५) सौ गाड़ी न एक छकड़ा.

(अ.प्र.) इस का अभिप्राय और प्रयोग नं० ७९४ में देखो.

(७९६) सोना और सुगंध.

(अभि.) कोई वस्तु सर्वगुणसम्पन्न नहीं होती किसी न किसी बात की कमी होती है.

(प्रयोग) मेरा एक मित्र पुलिसका इन्स्पेक्टर हो गया वहां उस को बहुत बड़ी आमदनी थी, मैंने उनसे कहा–मित्र अब तो आप बहुत प्रसन्न हैं, उस ने उत्तर दिया–पुलिस में और प्रसन्नता; सोना और सुगंध, नहीं, यहां आराम की कमी है.

(७९७) सौ दिन चोर के एक दिन साधु का.

(अभि.) स्पष्ट है.

(प्रयोग) एक मनुष्य की आदत चोरी करने की पड़ गई वह हमेशा इसी तरह गुज़र करता था, एक दिन पकड़ा गया तब लोगों ने उससे कहा कि सौ दिन चोर के तो एक दिन साधु का.

(७६८) सो घर सत्यानाश जहां हैं अतिबल नारी.

(अभि.) *जिस घर में स्त्री की चलती है वह घर कभी तरक्की नहीं कर सक्ता.*

(प्रयोग) एक घर में स्त्रियां मर्दों से नहीं डरती थीं मनमाना काम करती थीं तब हम ने उस मर्द को समझाया कि स्त्रियों को इतनी स्वाधीनता मत दो, कहा है कि सो घर सत्यानाश जहां है अतिबल नारी.

(७६६) सोवे सो खोवे जागे सो पावे.

(अभि.) *सावधान लाभ में और असावधान हानि में रहता है.*

(प्रयोग) साहिब इन्स्पेक्टर ने एक स्कूल का मुआयना किया वहां के अध्यापक से जो प्रश्न साहिब ने किये ठीक २ उत्तर पाये, साहिब ने उसकी तरक्की करदी, किसी दूसरे स्कूल में अध्यापक ऐसा असावधान था कि जो बात साहिब ने पूछी सिवाय चुप रहने के और कुछ न बन पड़ा, साहिब ने उस का तनज्जुल कर दिया तब लोगों ने कहा कि सोवे सो खोवे, जागे सो पावे.

(८००) हर्रा लगे न फिटकरी रंग अच्छा आवे.

(अभि.) *विना ख़र्च काम बनवाने की इच्छा करना.*

(प्रयोग) किसी मनुष्य ने अपने मित्र को एक प्रबन्ध लिखने को दिया और कहा कि उम्दा काग़ज़ हो और अक्षर भी स्वच्छ आवें मित्र ने कहा–काग़ज़ कलम आदि तो भेज दो, उसने कहा–अपने पास से ही ले लो तब मित्र ने कहा–तुम्हारा तो वह काम है कि हर्रा लगे न फिटकरी रंग अच्छा आवे.

(८०१) हनोज़ दिल्ली दूर है.

(अभि.) *अभी काम होने में बहुत देर है.*

(प्रयोग) मेरे मित्रने मुझे एक काम करने को दिया, दो दिन बाद ही पूछने लगे कि काम कितना बाकी है, मैंने कहा हनोज़ दिल्ली दूर है अर्थात् अभी बहुत अर्सा काम पूरा होने में है.

(८०२) हमारे फ़रिश्तों को भी ख़बर नहीं.

(अभि.) *हम इस मामले में कुछ नहीं जानते.*

(प्रयोग) एक इजलास में अफ्सर ने हमसे पूछा कि तुम इस मुक़द्दमे में क्या जानते हो, हमने कहा—हमारे फ़रिश्तोंको भी इस मामले की ख़बर नहीं.

(८०३) हम तुम राजी तो क्या करेगा क़ाजी.

(अभि.) *यदि दो मनुष्यों में यथार्थ प्रेम हो तो कोई उनकी प्रीति को नहीं तोड़ सकता.*

(प्रयोग) एक विधवा स्त्री की किसी दूसरे मनुष्य से प्रीति होगई मनुष्य ने उससे शादी करने को कहा, स्त्री ने कहा—मेरा ससुर झगड़ा करेगा तब उस मनुष्य ने कहा—हमतुम राजी क्या करेगा क़ाजी.

(८०४) हाथ कंगन को क्या आरसी.

(अभि.) *प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यक्ता है.*

(प्रयोग) एक लड़के ने कहा—मैं १७ फीट लम्बा कूद सक्ता हूं हमने कहा—कभी नहीं तुम से यह आशा नहीं, उसने यह कहते हुए कि हाथ कंगन को आरसी क्या कूद कर दिखा दिया.

(८०५) हाथी के दांत खानेके और दिखाने के और.

(अभि.) *दिखावटी काम अच्छा करना.*

(प्रयोग) डिप्टीसाहिब के मुआइने के वक्त एक अध्यापक ने बड़ी तय्यारी से सबक पढ़ाया, अध्यापक के मित्रने अध्यापक से कहा—और दिन तो तुम ऐसी तय्यारी से सबक नहीं पढ़ाते हो तब अध्यापक ने कहा—हाथी के दांत दिखाने के और खाने के और होते हैं.

(८०६) हाथ सुमिरनी बगल कतरनी.

(अभि.) *बदमाश का साधुरूप बनाना.*

(प्रयोग) इसका प्रयोग वही है जो "राम २ जपना पराया माल अपना" का है.

(८०७) हाथी के पैर में सबका पैर.

(अभि.) *बड़ों के सहारे छोटों की भी गुजर होजाती है.*

(प्रयोग) हमने एक नौकर से पूछा कि तुम्हारे स्वामी को बहुत आमदनी है तो तुम को भी तो आमदनी होती होगी, उसने उत्तर दिया—हाथी के पैर में सब का पैर.

(८०८) हाड़ों थके व्यवहारों थके.

(अभि.) *बुढ़ापे में कुछ काम नहीं होता.*

(प्रयोग) किसी ने बूढ़े आदमी से कहा—अब भी जवानी की भाँति काम करते हो कि नहीं, उसने उत्तर दिया—हाड़ों थके व्यवहारों थके.

(८०९) हिसाब जौ जौ बख्शिस सौ सौ.

(अभि.) *लेन देन में थोड़े पैसों का भी हिसाब करना ठीक है.*

(प्रयोग) मैंने एक दिन अपने मित्र से बाज़ार में दो पैसे लिये घरपर मैं वे पैसे उसे देने लगा, उसने कहा—छोटीसी बात का क्या हिसाब. मैंने कहा—हिसाब जौ जौ बख्शिस सौ सौ.

(८१०) हिम्मतमर्दां मददखुदा.

(अभि.) *हिम्मत नहीं हारनी चाहिये चाहे कैसा ही कठिन काम हो.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने किसी भारी काम को देखकर इनकार किया तब उसके मित्रने उससे कहा–हिम्मत मत हारो, हिम्मतमर्दां मददखुदा.

(८११) हीरेकी परख जौहरी जाने.

(अभि.) *गुण की पहिचान गुणी ही कर सक्ता है.*

(प्रयोग) एक मनुष्य ने सोने के एक गहने की बाबत मुझसे पूछा कि देखना इसमें खोट तो नहीं है?, मैंने कहा–सर्राफ़ को दिखाओ, कहा भी है कि हीरे की परख जौहरी ही जानता है.

(८१२) हिमायत की गधी एराकी के लात मारती है.

(अभि.) *बड़े आदमी के सहारे से अपने से अधिक शक्तिवान् से लड़ना.*

(प्रयोग) एक स्कूल के हेडमास्टर का सहायक डिप्टीसाहिब का नातेदार था वह हेडमास्टर से छोटी २ बातों में उलझ पड़ता था तब हेडमास्टर ने कहा कि हिमायत की गधी एराकी के लात मार देती है.

(८१३) हूं तो गांव की बेटी, मगर बहुओं से अच्छी पड़ रहूं.

(अभि.) *किसी जगह पर नियमानुसार न रहकर उस जगह का आनंद उड़ाना.*

(प्रयोग) एक देशी पाठशाला के अध्यापक से किसी ने पूछा–तुम्हारे पास छात्र तो बहुत थोड़े हैं गुज़र कैसे होती है? उसनेउत्तर दिया–लड़के भी थोड़े हैं और मुझे सरकार से भी कुछ मदद नहीं मिलती है, परन्तु मैं सरकारी अध्यापकों से अच्छा

कमा लेता हूं तब उस मनुष्य ने कहा—तुम्हारी तो वह कहावत होगई कि हूं तो गांव की बेटी, मगर बहुओं से अच्छी पड़ रहती हूं.

(८१४) हुक्का ४ वक़्त अच्छा लगता है सोके, मुँहधोके, खाके, न्हाके. चार वक़्त बुरा लगता है आंधी में, अंधेरेमें, भूक में और प्यास में.

(अ.प्र.) *हुक्ची कभी २ आपस में यह कहावत कहते हैं.*

(८१५) होनहार विरवान के होत चीकने पात.

(अभि.) *होनहार जीव के शुभ लक्षण बचेपने ही में मालूम होजाते हैं.*

(प्रयोग) इसका प्रयोग इस कहावत में देखो पूत के पांव पालने ही में पहिचाने जाते हैं.



"जैनगजटका इस अंकका क्रोड़पत्र"

॥ श्रीः ॥

श्रीमती भारतवर्षीय-
दिगम्बर (जिनधर्म संरक्षिणी) जैन महा-
सभाके अधिवेशन श्रीसम्मेदाचलपर
श्रीमान् सेठ हुकमचन्दजीका
व्याख्यान ।

बंबई.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रित.

वीर सम्वत् २४३६.

प्रति १०००

॥ श्रीः ॥

श्रीमती भारतवर्षीय-

दिगम्बर (जिनधर्म संरक्षिणी) जैन महा-

सभाके अधिवेशन श्रीसम्मेदाचलपर

श्रीमान् सेठ हुक्मचन्दजीका-

व्याख्यान ।

बंबई

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रित.

वीर सम्वत् २४३६.

प्रति १०००

॥ श्रीः ॥

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

श्रीमती भारतवर्षीय दिगम्बर (जिनधर्म संरक्षिणी) जैन महासभाके अधिवेशन परसभापति

श्रीमान् सेठ हुक्मचंदजीका व्याख्यान।

श्रीसम्मेदाचल,

मिती माघ शुक्ल १ सं. वि. १९६६.

ता० १० फरवरी १९१०.

श्रीवीतरागाय नमः। .....

मंगलाचरण।

प्रिय सज्जन बन्धु वर्गो !

अत्यन्त हर्षका विषय है कि आज हम सब भाई उस पवित्र पुण्योत्पादक परमपूज्य निर्वाणभूमि श्रीसम्मेदाचलके शरणागत हुए हैं जहाँसे अपने कल्याणेच्छु वीतरागी-विज्ञानी धर्ममार्ग प्रवर्तक अनतानंत तीर्थंकर ऋषि मुनि अपने कर्म कलंकको धोकर पवित्र हुए हैं और आगामी होवेंगे, जिस पवित्र पर्वत शिरोमणिके ऊपर आनेवाले महा विघ्नको दूरकरके आप सर्वभाइयोंने येनकेन प्रकार तन मन धन व्यय कर महान पुण्यका बंध किया है तथा जिसकी रक्षाके हेतु आप सदाही उद्यमवंत रहेंगे, जिस पवित्र गिर-

राजके अवलोकन करनेको ६ वर्षके बालकसे ले वृद्धतक अभिलाषा किया करतेहैं,तथा जिस भूमिके दर्शन मात्रसे जन्म २ के महान निविड़ पाप क्षण भरमें विध्वंस हो जाते हैं, ऐसे पवित्र क्षेत्रमें धार्मिक और जातीय सुधारकी वांछा तथा चर्चा होना सर्व प्रकार श्रेय है, और इसी महत् अभिप्रायसे आप हम सब लोग एकत्रित हुए हैं सो आजका दिवस धन्य है सो ही किसी नीति कारने कहाहैः—

श्लोक ।

धन्येयं पृथिवी तथैव जनता धन्याश्च देशोऽप्ययं
धन्या वत्सरमासपक्षदिवसा धन्यः क्षणोऽयं च नः ।
यत्रास्माभिरसौ परस्परमभिप्रीत्या च सोदर्यवत्
संहत्या स्थितिमारचय्य परमो धर्मो निजः प्रस्तुतः ॥

(अर्थ—धन्य है यह पृथ्वी, धन्य है यह मंडल, धन्य है यह देश, धन्य है यह वर्ष, धन्य है यह मास, धन्य है यह पक्ष, धन्य है यह दिन, धन्य है यह क्षण, जिसमें अपने सब भाई एकत्रित होकर परस्पर प्रेमपूर्वक धार्मिक प्रस्ताव करते हैं ।)

मैं आप सज्जनों का अति आभारी होता हुवा नम्रता पूर्वक निवेदन करता हूं कि जो आप महाशयोंने मुझ जैसे अल्पज्ञ पुरुष को ऐसे महान कार्य का भार सौंपा है, जिसको ज्ञाति के अति श्रेष्ठ पुरुष आज तक सम्पाद-

न करते आये हैं। इसलिये, मैं इस कार्य के योग्य न होते हुए भी आप लोगों की आज्ञा उलंघन करना धर्म-नीति के विरुद्ध जान विवश होकर शिरोधार्य करता हूँ। यह भी प्रगट रहे कि मेरी पर्याय में यह पहिला ही अवसर है कि जिस समय मुझे ऐसे जातीय और धार्मिक गूढ़ विचारों के प्रगट करने के लिये आपके सन्मुख उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आशा है कि आप मुझे असमर्थ जान कर सर्व प्रकार सहायता करके इस महान कार्य को निर्विघ्न पूर्ण करेंगे।

सुयोग्य सभासद महाशयो ! आज हम इस दिगम्बर जैन महासभा के अधिवेशन में देशदेशान्तरसे आई हुई अपनी प्रिय जातीय बहु मंडली को देख कर अति प्रसन्न हो रहे हैं, और उस प्रसन्नता को शब्दों द्वारा प्रगट नहीं कर सकते। विशेष बात इस समय यह देखने में आती है कि हमारे सभीभाई पहिले की अपेक्षा वर्त-मान में जाति और धर्म की उन्नति के अधिक अभिलाषी हो रहे हैं, और यह बात ठीक ही है कि संसार में मनुष्य जीवन के लिये सच्चा आधार केवल धर्म ही है। उसके बिना सब उन्नातियां निर्मूल हैं। जो जाति किंवा व्यक्ति अपने सद्धर्म पर आरूढ़ है वही उन्नति दशा में रहती है; और जिसने निज धर्म को त्याग दिया वही अधोगति को प्राप्त होती है।

विचार का स्थल है कि पूर्वकाल में जिस धर्म की उन्नति के लिये हमारे प्राचीन पुरुषों और पूज्य आचार्यों ने अपना सर्वस्व तन, मन, धन अर्पण करके सारे संसारमें धर्मका डंका बजा दिया था, आज उसी पवित्र धर्मधारकोंके संतानकी अति संकुचित अवस्था देख कर कौन सहृदय पुरुष खेदित न होगा ! जिस धर्म की प्राचीनता के स्मारकचिन्ह इस समय भी ऐसे २ मौजूद हैं जिनके अवलोकनमात्र से जैनमत की प्राचीनता एवं गौरवता प्रगट होती है, और जिस धर्म के अन्तिम नेता श्री महावीर स्वामी तथा उनके अनुयायी श्री स्वामी समन्तभद्राचार्य्य, पूज्यपाद देवनन्द्याचार्य्य, कुन्दकुन्दाचार्य, भट्टाकलंक, विद्यानन्दि, माणिक्यनन्दि, प्रभाचन्द्र, जिनसेनाचार्य्य, गुणभद्राचार्य्य, नेमचन्द्र, अमृतचन्द्र, आदि धर्म वीरों नें समस्त देश में इस धर्म की ध्वजा फहराई थी और जिसके धारक महाराजा चन्द्रगुप्त, अशोक तथा राजा चामुंडराय सरीखे अनेक होते चले आये हैं; देखिये, इस समय उसी जाति में न तो पूर्व पुरुषों के समान धर्म धोरी ऋषि-मुनि रहे, न साहसी वीर क्षत्रिय रहे, न लक्ष्मी चंचला के स्वामी धनिक गण रहे और न राज्यमान्य धार्मिक विद्वान पंडित रहे—जो कुछ हैं भी वे केवल उंगली पर गिनने योग्य सामान्य पुरुष ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

आज हमको इसी अवनति का कारण जान कर दूर करने के अर्थ योग्य उपायों को विचारना है । अतएव अपने संक्षिप्त विचार इस विषय में आप महाशयोंके सन्मुख सादर प्रगट करता हूं ।

यह कहदेना कुछ अनुचित न होगा कि सभाओंकी पद्धति अनादिकालसे प्रचलित है। तीर्थंकर, इन्द्र,अहमिंद्र नारायण,चक्रवर्त्यादि अनेक राजा महाराजाओंके सभा होने का सद्भाव पाया जाता है यहांतक कि, हमारे शासन कर्ता ब्रिटिश गवर्नमेन्टने भी जो कुछ उन्नति की है, वह सभाओं–कमैटियों–एवं पंचायतियोंहीके द्वारा की है, जिस की प्रणाली ग्राम २ में पंचायत, कमैटी, कौन्सिल आदि के स्वरूप में दृष्टिगोचर हो रही है। उसी पूर्व परिपाटी का अनुकरण यह अपनी भारतवर्षीय जिनधर्मसंरक्षिणी दिगम्बर जैन महासभा है जो आज अनुमान चौदह पंद्रह वर्षसे इस सोती हुई जैन जातिको धार्मिक और जातीय उन्नति के लिये चैतन्य कर रही है। खेदका विषय है कि हमारे प्रमाद और अपुरुषार्थ के कारण जातीय अगुओंके पूर्ण परिश्रम करनेपर भी आशानुरूप उन्नति नहीं हुई तो भी इसके द्वारा जगह २ ग्रामीय तथा प्रान्तिक सभाओं तथा पाठशालाओंका नियत होना, उपदेशकोंका धर्मोपदेश देना, जाति धर्म सम्बन्धी उन्नातिकी चर्चा होना–ये कुछ

कम संतोषकी बात नहीं है। हां, इतना अवश्य है कि आपसी अनैक्यता और खींचतान होने तथा धीमानों और श्रीमानोंकी परस्पर पूर्ण सहानुभूति न होनेके कारण यह अपने कार्योंमें परिश्रमके अनुसार सफलता न प्राप्त कर सकी। हमको यह बात बहुत दुःखके साथ कहनी पडतीहै कि श्रीमान् राजा सेठ लक्ष्मणदासजी, लाला उग्रसेनजी, बाबू देवकुंवारजी आदि इस सभाके महान् आश्रयदाता अपने परिश्रमके फलको पूर्णरूपसे न देखसके। यदि ऐसा कुअवसर न आता तो आज हम लोगोंका बहुतसा उन्नति का कार्य सफल होजाता, परन्तु " गतं न शोचामि " पर ध्यान देकर हमें अपने कर्तव्य में कटिबद्ध होनेसेही सन्तोष मानना चाहिये क्योंकि प्रयत्न करनेसे ही हमारी वर्तमान दशा सुधर सकती है।

प्रगट रहे कि वर्तमान अवनतिके मुख्य कारण हमारा निरुत्साहीपना, व्यापार हीनता, व्यर्थ व्यय, कुरीति प्रचार, कुसंस्कारोंका फैलाव और सुसंस्कारोंकी न्यूनता, उच्च दरजेकी धार्मिक तथा लौकिक विद्याकी हीनता तथा आपसी ईर्षा–द्वेषमें जातिके धनका दुरुपयोग होना आदि हैं, जिन को स्पष्ट रूपसे इस प्रकार भी कह सकते हैंः–

(१) निरुत्साहीपना।

हमारे जातीय भाई बहुधा यही सोचते हैं कि हम वणिक हैं–हमें अधिक पढ़ने लिखने, विदेशीय व्यापारों

तथा राज्यमानता आदि ऐश्वर्योंसे क्या मतलब है? भाग्य में बदा होगा, स्वयं ही आन मिलेगा। ऐसा सोचकर वे अपनी संतान को मारवाड़ी किंवा टूटी फूटी नागरी या मुड़िया पढाकर तथा साधारण दुकानदारी सिखाकर सन्तोष कर बैठते हैं। देश और राज्य की बातें किस्साकहानियाँ समझते हैं। परन्तु वे लोग यह नहीं सोचते कि पूर्व कालमें सेठ धनपाल,श्री पाल,धवलसेठ आदिने दूर २देशांतरमें जाकर तथा जहाजों द्वारा समुद्र पार द्वीपान्तरकी यात्रा धर्म रक्षण पूर्वक करके कोट्यावधि द्रव्योपार्जन किया था। धनंजय सरीखे सेठोंने विद्वत्ता प्राप्त करके धनंजय कोष तथा द्विसंधान काव्यसरीखे महान२ग्रंथ रचे,जिनकोअच्छे२विद्वान् कवि पढ़कर चाकत होते हैं। पुनः अभय–कुंवार,सुखानन्द-कुंवार आदि कैसे चतुर और न्याय परायण हुए जिन्होंने बडे २ कठिन मामले बातकी बातमें तै कर दिये । ये सब उनकी उत्साह पूर्णताका फल था, वे हम सरीखे आलसी निरुद्यमी नहीं थे। आज हम अपने इसी कर्तव्यका फल भोगते हुए अपना सारा ऐश्वर्य नष्ट कर रहे हैं। यदि यथार्थ कहा जाय तो यह भी हो सकता है कि इसी निरुत्साहीपनेके कारण हमारी महासभा सरीखी उपयोगी संस्थाके लिये योग्य धर्मोत्साही कार्यकर्ता नहीं मिलते,न कोई महासभाको जलसेके लिये निमंत्रण देता और न हरएक कार्यके

लिये आवश्यकतानुसार सहायता मिलती है इत्यादि कहां तक कहें ! इसी दोषने जैनियोंको खासकर व्यापार परायण चतुर सयानी जातिको अपने कर्तव्योंमें निर्जीव कर रक्खा है। हम लोगोंको उचित है कि निद्रा त्याग अपने लौकिक और पारमार्थिक कार्यों को उत्साह पूर्वक करें।

(२) व्यापार हीनता।

जो जाति एक समय देशके वाणिज्यकी अधिकारिणी थी यहांतक कि थोड़े दिन पहले दो तिहाई व्यापार इसी जातिके हाथमें था, आज उसीका संपूर्ण व्यापार एक प्रकारसे पराधीन हो गया है। यहां तक कि हम लोग ऐसी पूर्ण पराधीनता की चंगुल में फंसे हुए हैं कि हमारे घरका पानी और चिराग स्वतंत्र नहीं रहा। सो प्रत्यक्ष ही देखो कि जिस भारत में लाखों मन शक्कर पैदा होकर देश देशान्तरों में खपती थी और जिससे देश के कोट्यावधि मनुष्यों की जीविका चल कर देशका धन देश ही में रहता था, उसी भारत में परदेशी, चुकन्दर एवं गाजर के रस से बनी हुई अपवित्र पदार्थों द्वारा शुद्ध की हुई लाखों मन शक्कर खाई जाती है जिससे धन और धर्म दोनों नष्ट हो रहे हैं। इसी तरह रुई जो देशमें पैदा होती है उस से हमारे भोले भाई एक रुपये की दो सेरके भाव से विदेशियों के हाथ बेचकर बहुत आनन्द मनाते हैं। परन्तु उन्हें यह खबर नहीं है कि हम को इसी दो सेर रुई की कीमत विदेश से

बारीक मलमल बनकर आने पर बारह रुपये देने पड़ते हैं; और तिसपर भी खरीदते हुए अति हर्ष मानते हैं। इसी तरह गल्ला, तेलहन, गोंद, सन, नील आदि कहां तक कहें कच्चे लोहे के पत्थर तक परदेश जाकर और फिर भारत में आकर यहांके धन को और यहां की बणिक जाति को नष्टभ्रष्ट कर रहे हैं। यदि यही कच्चा माल देशमें नए २ कारखाने खोलकर काम में लाया जाय तो देश के निरुद्यमी मजदूरों और व्यापारियों को कैसा खासा धंधा हाथ लग सकता है! नए २ काम धंधे खोलने, शिल्पकी उन्नती करने और समयानुसार व्यापारकी पद्धति पलटने की ओर ध्यान देना अति आवश्यक है और इसी को सच्चा स्वदेशी प्रचार प्रयत्न कहते हैं जिसके लिये देश के सभी शुभचिंतकही नहीं किन्तु स्वयं हमारी भारत सरकार भी सब तरह से सहानुभूति के साथ प्रदर्शनियें तथा शिल्प विद्यालयादि खोलकर प्रयत्न कर रही है। इसलिये व्यापार वाणिज्य के अधिकारी जैन लोगों को इस विषय में प्रयत्नशील होना अति आवश्यक है।

---

(३) व्यर्थव्यय।

फिजूल खर्चीका रिवाज हम लोगोंमें इतना बढ़गया है कि झूठी नामवरीके लिये हैसियत से ज्यादा द्रव्य नुकते, क्रियावर, विवाह, सगाई आदिमें खर्च कर दो दिनकी

झूठी वाहवाहीसे खुश होकर अपनी संतान की पर्याय कर्जे के भारसे बर्बाद कर देते हैं और उनको अन्याय पूर्वक द्रव्योपार्जन करनेका मार्ग बतादेते हैं, और हमारे भाई धनहीन और दुखी हो जाते हैं। इन सब बातोंको प्रत्यक्ष देखते हुए भी हमारे भाई इस ओर किंचित भी लक्ष्य नहीं देते! हमेशा सभाओंमें भी व्यर्थ व्ययके लिये आन्दोलन होता रहता है और सारा समाज इसे बुरा बतलाता है तो भी वे लोग जातीय और लौकिक झूठी बदनामीके डरसे ज्योंका त्यों खर्च करते चले जातेहैं जिससे उनका और उनकी सन्तानका जीवन संकट मय होजाताहै और इस कारण बहुधा धर्मसे च्युत होजाते हैं। इन रिवाजोंका बन्द होना उस समय तक कठिन है जबतक कि, ग्राम २ जाति २ के मुखिया लोग इनके मिटानेके लिये कटिबद्ध न होजावें। और वेही मुखिया लोग हरएक कार्यमें अपने घरसे ही कम खर्च करनेका सिलसिला जारी न करें, क्योंकि बहुधा देखा जाता है कि जब कोई बड़ा आदमी व्यर्थ व्यय करता है तो निर्धन मूर्ख पुरुष भी उसकी देखादेखी बरबाद होतेहैं इसलिये परिश्रम की गाढ़ी कमाईके द्रव्यको व्यर्थ जानेसे रोकना और आकुलताके मार्गको बन्द करना ऐसे महत समूहमें अति आवश्यक और परम कर्तव्य है!

(४) कुरीतिप्रचार।

अपनी जातिमें बाल विवाह, वृद्ध विवाह, कन्या विक्रय आदि रीतियोंने ऐसी जड़ पकड़ी है कि सदैव इनके मिटानेके लिये सभाओंद्वारा प्रस्ताव तथा उपदेशकों द्वारा आन्दोलन होते हुए भी नगारे में तूतीकी आवाज की नाई कोई सुनताही नहीं जिसका निकृष्ट फल सन्तानकी हीनता, निर्बलपना, विधवाओंकी वृद्धि—यहांतक कि जैन जातिकी प्रतिदिन संख्याका घटना है। जहांतक विचार किया जाताहै इनके प्रचार का कारण अज्ञानता है, सिवाय इसके दूसरा कारण स्त्रियोंका हठ भी है जो अनपढ़ी और बुद्धिहीन होनेके कारण अपने पतियोंपर अनुचित दबाव डालकर कुरीतियोंमें वृत्ति कराती हैं। यदि स्त्री शिक्षा का योग्य प्रबंध कियाजाय तो इन का मिटना सहज है। बिना ऐसे प्रबंध के जैन जाति का ह्रास होना कभी बन्द नहीं हो सकता।

---

(५) कुसंस्कार।

बहुधा जैन जाति में सुसंस्कारोंका एक प्रकारसे अभाव ही होगया है। शादी विवाह आदि मंगल उत्सवों पर कुदेवादिकों का पूजन जहाँ तहाँ देखनेमें आता है। गर्भाधानादि षोडश संस्कारों और शुद्ध क्रियाओंका तो मानो अभावही हो गया है जिससे ही हम लोगोंका सदाचरण

दिनप्रति नष्ट होता जाता तथा हम प्रमादी और धर्म विद्या-
से रहित होते जाते हैं इसी कारण हम रसोई, जल, चौका,
चूल्हा आदि क्रियाओंको छोड़ बैठे हैं. तथा मिथ्यात्व,
अन्याय, अभक्ष्यकी ओर झुक पडे हैं। इन सब दोषोंके
निराकरणार्थ सुसंस्कारोंका प्रचार अति आवश्यक है, तभी
भावी संतानके हृदयमें धर्म वासना प्रवेश कर सकती है।
देखिये, कुसंस्कार जनित अविद्याके प्रभावसे ही हम पुजा-
री रखकर पूजा सरीखे महान कार्य मजदूरोंकी नाईं करा-
कर उसमें पुण्य समझने लगे हैं। हमको सत्पात्रदानके
योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव स्मरण नहीं रहा है यहाँतक
कि हमारे भाई तीर्थ क्षेत्रोंके द्रव्य को भी हजम
करने लग गये हैं। जिनके पुरुषाओंने धर्म बुद्धि द्वारा तीर्थ
क्षेत्रोंकी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया था उन्हींके सुपूत
कुसंस्कारोंके फलसे अपने पुरुषाओंकी कीर्ति मलीन कर-
नेको तत्पर हुए हैं और अति आवश्यकीय कार्य जैसे
जैन शालाओंका खोलना, अनाथालयों की सहायता
करना, सहधर्मी भाइयों की दशा सुधारना आदि उपयोगी
सत्कार्योंसे विमुख हो रहे हैं तथा सांसारिक झूठी नामवरी
के लिये थैलियां खोलकर अपने दिलका उत्साह प्रगट कर
रहे हैं। इसलिये हमको ऐसी कुबुद्धिके उत्पन्न करनेवाले
संस्कारोंको छोड़कर आर्यप्रणीत सुसंस्कारोंके प्रचार की
परिपाटी को पुनः प्रचलित करना चाहिये।

(६) विद्याकी हीनता।

हम लोगोंमें धार्मिक तथा लौकिक विद्याकी बहुत कमी है इसी से हम दोनों प्रकार के कार्य अच्छी तरह सम्पादन नहीं कर सकते और इसी कारण यह जाति निर्द्धन, घृणापात्र, साहसहीन, धर्महीन और कुधर्म में रत हो रही है। सच कहा जाय तो सब बुराइयों की जड़ एक सद्विद्या का अभाव ही है। यह समय और सब धर्म कार्यों में गौण रूप से द्रव्य व्यय करके विद्या प्रचार के लिये विशेष खर्च करने का है। इस की ओर हमारे भाइयों का चित्त आकर्षित करने के लिये महासभा के गत अधिवेशन पर ऐसे सत्कार्यों में योग देनेवाले भाइयों को पदवियां देनेका प्रस्ताव पास हुआ था, उसकी नियम पूर्वक अमली काररवाई होना आवश्यक है; तथा शिक्षाके लिये दो प्रकार के विभाग होना चाहिये—पहिला वह जिस में धर्म विद्या की मुख्यता और लौकिक विद्या की गौणता रहे और इस के द्वारा ज्ञाति को सुमार्ग प्रदर्शक विद्वान् तैयार हों,—दूसरा वह जिस में लौकिक विद्या की मुख्यता और पारमार्थिक विद्या की गौणता रहे जिस के द्वारा जाति में कला कौशल व्यापारिक विद्या के ज्ञाता तैयार हों जो धर्म की रक्षा करते हुए जातिको द्रव्यशाली, बलशाली और ऐश्वर्यशाली बनावें।

(७) आपसी ईर्षा-द्वेष।

इस ईर्षा द्वेष ने तो जैन जाति को ऐसा घेरा है कि भाई २ में, पुत्र २ में, आम्नाय २ में, सम्प्रदाय २ में, मत २ में झगड़ों का प्रवेश हो गया है और पूजा, पाठ, प्रतिष्ठा, पाठशाला, अनाथालयों को भी इसने अछूता नहीं छोड़ा, इस के कारण हम स्थिरता पूर्वक न सांसारिक काम कर सकते हैं और न पारमार्थिक काम कर सकते हैं-यहां तक कि इसी फूट और आपस की ईर्षाने इस महासभा के कार्योंमें भी समय २ पर बाधा डालकर इसकी गति को रोका है नहीं तो आज तक इसके उत्साही पुरुषार्थी कार्यकर्ता कितने ही उपयोगी सत्कार्य कर दिखाते। इसी की करतूत का नमूना दिगम्बरियों और श्वेताम्बरियों का तीर्थ क्षेत्र, मंदिर, मूर्ति, सम्बंधी आपसी लड़ाई झगड़े का होना है। शोक के साथ कहना पड़ता है कि जिसके लिये अदालतों में लाखों रुपये पानी के तरह बहाये जारहे हैं। यदि ये दोनों संप्रदाय अपने २ मंदिर, अपनी २ मूर्ति की रक्षा, पूजा आदि में यह द्रव्य व्यय करें और परस्पर सहानुभूति से चलें तो बहुत कुछ उन्नति कर सकते हैं। इस ईर्षा-द्वेष का कारण जहांतक सोचा जाता है यही ज्ञात होता है कि हमारे भाई अपने इष्ट साध्य (मोक्ष) के मार्ग से अज्ञात हैं इसलिये विपरीत

साधनोंमें भटकते फिरते और आपसी लड़ाई ही में अपना कल्याण समझते हैं। दूसरा कारण कलह करानेवाले किसी २ उपदेशकों का आपस में भिड़ाना भी है जो दोनों सम्प्रदायों को आपस में लड़ाकर माल झाड़ते हैं। इसलिये मेरी समझ में इस जाति ईर्षा–द्वेष को नाश करने के लिये तीनों फिरकों के मुखियों को उचित है कि जिन कारणों से लड़ाई झगड़े होते हैं उनको मिटावें और धर्म प्रचारकी ओर विशेष ध्यान देवें जिससे उत्तम क्षमादि गुण उत्पन्न होकर हरएक मनुष्य अपने औगुणों को त्याग दूसरेसे स्वयं ही वात्सल्य करेंगे और परस्पर वात्सल्य बढ़कर तथा व्यर्थ व्यय और कलह घटकर शान्तिता प्राप्त होगी।

प्रिय सज्जन सुहृद्वरो! ऊपर मैंने संक्षेपरूप से वे २ दोष बताये हैं जिनके कारण यह पवित्र उत्कृष्ट जैन जाति लौकिक और धार्मिक कार्योंसे विमुख हो रही है, और इन्हीं दोषोंके अन्तर्गत बहुतसे और भी छोटे मोटे कारण हैं जिनका विशेष वर्णन समय की कमीके कारण कर नहीं सकता। जाति और धर्मके नेताओंको इन सब दोषोंके मार्जन करनेके लिये यह उचित अवसर प्राप्त हुआ है सो

जितना कुछ हो सके प्रयत्न करना चाहिये, क्योंकि इनके निकले बिना हम न तो सुखपूर्वक रह सकते हैं और न अपने श्रावक धर्म तथा मुनिधर्म का पालन कर सकते हैं। जो २ प्रयत्न इस समय सोचकर प्रचलित किये जावेंगे उनके द्वारा लौकिक उन्नति पूर्वक भलीभांति पारमार्थिक उन्नति सधेगी क्योंकि कारणके बिना कार्यकी सिद्धि असंभव है । जिस प्रकारश्रावकधर्मके आश्रय मुनिधर्म है उसी प्रकार लौकिक उन्नति पारमार्थिक उन्नतिको निमित्त कारण है । परन्तु यह बात स्मरण रखनेयोग्य है कि यदि कोई पुरुष केवललौकिक उन्नति पर ही लक्ष्य देकर पारमार्थिक उन्नतिसे वंचित रहे तो उस पुरुषकी वह उन्नति कुछ भी लाभकारी नहीं, और इन दोनोंके लिये अमली कार्रवाई तभी हो सकती है जब जातिके मुखिये (मेनेजिंग कमेटीके मेम्बर) पास किये हुए प्रस्तावोंको पालन करनेका नियम लेवें ।

यहां पर इतना दिखला देनेमें कुछ हर्ज न होगा कि धर्म और जातिके सुधारके लिये जो प्रस्ताव पास कियेजाते हैं उनका पालन किसप्रकारसे हो । वास्तवमें प्रस्तावोंको पासकरलेना तो कुछ घंटोंका कामहै परन्तु उनको अमलमें लाना एक टेढ़ी खीरहै । इसके लिये अपने विषय कषायोंके ऊपर स्वामित्व होनेकी आवश्यताहै, इसके लिये

सहन शीलताकी जरूरतहै, इसके लिये दूसरोंके कटुक बचन सुनने और अपने स्वार्थके संहारकरनेकी आवश्यताहै। जिन २ जाति सुधारकोंने अपनी जातिमेंसे कुरीतियोंको विदा कियाहै और सुरीतियोंको फैलायाहै उन २ जाति सुधारकोंने महान कष्ट सह बदलेमें जातिके साधारण लोगोंसे तिरस्कारही प्राप्तकियाहै। जो तिरस्कारका भय न कर, जो कष्ट सहनेसे शंकितचित्त न हो अपने निर्धारित सत्यपथपर बिलकुल अस्वार्थता और परमार्थ दृष्टिसे चलतेहैं वेही इस जगतमें धर्म, जाति और देशका उद्धार करसक्तेहैं।

सत्यताके विस्तार करनेमें पदपद पर विघ्नोंका सामना करना पड़ताहै यद्यपि इसका विस्तार अन्तमें महा मिष्ठ फलके स्वादको चखाने वालाहै।

हमारे भाइयोंको यह सिद्धान्त मनमें दृढ़तासे धारण कर उपर्युक्त वर्णन की हुई बुराइयोंको उखाड़कर फेंक देना चाहिये और जिन २ प्रस्तावोंसे अपनी जैन समाज पूर्व वत् विद्या सम्पन्न, व्यापारशिरोमणि, प्रचुर लक्ष्मीवान्, राजमान्य और स्वानुभव मार्ग गामिनी हो उन २ प्रस्तावोंके साधनोंके समारम्भ करनेमें अपने क्षणभंगुर शरीर के साथ प्राप्तहुई शक्तियोंके सम्पूर्ण बलका प्रयोग करदेना चाहिये।

मैंने ऊपर जिन २ दोषोंका सद्भाव जैनजातिमें वर्णन कियाहै उन दोषोंको जड़ मूलसे उखाड़नेवाले प्रस्तावोंको करनेकी आवश्यकताहै ।

निरुत्साहिताका घात उसी समय होगा जब जैन-समाजके भीतर जागृति उत्पन्न की जायगी । जब जैन समाजको उसकी पूर्व और वर्तमान स्थितिका भेद बता-कर सुमार्ग पर चलने और अपने पास अंध बटेरवत् प्राप्त हुए मनुष्य भवको चारों पुरुषार्थोंके साधनमें उपयुक्त रखकर सार्थक करनेका मार्ग बताया जायगा इसके लिये धर्मोत्साही, अनुभवी, और स्वार्थत्यागी उपदेशकोंके भ्रमणकी आवश्यकताहै । जब नींदमें लोग सो जातेहैं तब पहरेवालेही उनको सचेत कर होसियार रखतेहैं ।

उपदेशकोंके बलसेही राजा अशोकने बौद्धधर्मका पक्ष ग्रहणकर उस धर्मका प्रचार दूर २ देशान्तरोंमें इतनी दृढ़तासे करदियाथा कि इस समय सर्वसे अधिक जन समूह बौद्धोंकाहै अर्थात् ईसाइयोंसे दुगुने ६६ करोड़ हैं । उपदेशके अभावसे लाखों करोड़ों जैनी अन्यमतके धारी होगए । जिस मदरास और बंगाल में जैन धर्मकी प्राचीनताको प्रदर्शक सैकड़ों प्राचीन जिन मन्दिर और प्रतिमाएं मिलतीहैं वहीं अब जैनियोंका अभाव होना

क्या इस बातको सूचित नहीं करताहै कि उपदेशके विना वहांके लाखों जैनी अजैनी होगए ? बंगालमें पुरु-लिया रांचीकी तरफ हजारों आदमी अबभी ऐसेहैं जो जैनी पनेके अंशको पालतेहैं यद्यपि वे बाह्यमें अजैनी होगएहैं । वर्तमानकी जैनियोंकी संख्या जो १० वर्षमें १४ लाखसे १३॥ लाख होगई है उसी वक्त रक्षितहो सक्ती है जब सच्चे उपदेशकोंका भ्रमणहो । हमारे जैन समाजको योग्यहै कि इस प्रस्तावकी असली कार्रवाई शीघ्रकरे ।

जब जैन जातिमें उत्साह पैदाहोगा, जब जैन जातिमें रुचि उत्पन्न होगी, जब जैन जातिके लोगोंके हृदय कम-लकी पांखड़ियोंको उनके त्रिलोकज्ञ और सर्वशक्ति शाली होनेकी सुगन्धित पवन हिलाएगी उसी समय हेयका त्याग और उपादेयका ग्रहण होनेलगेगा । विना उत्साहका एंजिन दौड़ाए जैनजाति रूपी ट्रेन उन्नतिकी सीधी सड़कपर चल कर अभीष्ट साध्यको नहीं प्राप्तकर सक्ती । महासभाका कर्तव्यहै कि इस उत्साहकी व्यापकताका यत्न करे ।

व्यापार हीनता, व्यर्थ व्यय, कुरीति प्रचार, कुसंस्का-रोंका फैलाव आदि दोष उसी समय समाजसे दूर होसक्तेहैं जब महासभा जैन जातिमें शिक्षाके प्रचारका पूरा पूरा यत्न करे । जबतक हमारे समाजमें पुरुष और स्त्रियां विद्य

रत्नसे विभूषित नहीं तबतक फिजूल खर्चीका सत्यानाश, कुरीतियोंकी बन्दी, सुरीतियोंका प्रचार तथा व्यापार की वृद्धि अत्यंत कठिन है । शिक्षाके प्रचारके लिये यहभी आवश्यक है कि प्रत्येक नगर व ग्राम में एक २ जैन पाठशाला और जैन कन्याशाला हो जिनमें उस नगर तथा ग्रामके सम्पूर्ण जैन बालक और बालिकाएं शुरूसेही साधारण लौकिक और धार्मिक शिक्षाको ग्रहण करें। पश्चात् उच्चशिक्षाके लेनेके लिये समुचित संस्थाओंमें अपनी २ रुचि और शक्तिके अनुसार पढ़कर विद्वान् बनें। विना स्थानिक पाठशालाओंके जैन जन समूह धार्मिक ज्ञानसे सदाके लिये वंचित रहजांयगे जिससे उनकी सम्पूर्ण पर्य्याय पशुवत्ही व्यतीत होगी । इन पाठशालाओंकी देखरेख रखने और रक्षित करनेके लिये महासभा को योग्य है कि परीक्षालय को दृढ़ करै । परीक्षालयकाही यह कर्तव्य है कि वह पाठशालाओं में पढ़ाने योग्य पुस्तकों को निर्मापित करै व नियत करै, निरीक्षक भेजकर सर्व पाठशाओंको एक पठन क्रमसे चलाए तथा जो पाठशालाएं थोड़ी सी आर्थिक मददके विना नहीं चल सक्ती हों उनको महासभा कुछ न कुछ मासिक मदत देवै । जैसे कि आजकल श्वेताम्बर जैन कानफरन्स ने अपना नियम कर रक्खा है। इस कार्य्य के लिये श्रीमानों को अपनी

चंचला लक्ष्मीका सदुपयोग महासभा द्वारा करना चाहिये ।

पाठशालाओं के लिये योग्य अध्यापन, सरस्वती भंडारोंकी सह्माल, प्राचीन तत्वोंकी खोज आदि कार्य्योंके चलानेवालों की उत्पत्ति के लिये हमारे सभासदोंका कर्तव्य है कि पारमार्थिक विद्याकी मुख्यता और लौकिक विद्याकी गौणता को रखनेवाला ऐसा एक बृहत् विद्यालय ध्रौव्य अवस्थामें खड़ा कर देवैं जिससे प्रति वर्ष १० व १५ विद्वान् तय्यार होकर अपनी संगतिसे अन्योंको धर्म का मार्ग दिखलावें । जैसा कि मैं पहले कहभी चुका हूं।

समाजकी आर्थिक और व्यावहारिक दशा उसी समय सुधरेगी जब कि हमारे भाई अपने बालकोंको स्वाधीनता से नानाप्रकारके व्यवहारयोग्य पदार्थोंको इसी देशमें तय्यार करानेकी कला सिखलावेंगे और वे व्यापारके ढंग बताएंगे जिन व्यापारी ढंगोंसे जापानदेशने ५० वर्षके भीतर अपना अतरंग शक्तिको व्यक्त करदियाहै। और हजारों जातिकी वस्तुओंको बनाकर विदेशोंमें भेज द्रव्य कमानेका रास्ता निकाल लियाहै ।

संक्षेप यह है कि आज हमारे पवित्र जैनधर्मके अनुयायी भारतके सर्वप्रान्तोंसे आकर इस सज्जन सम्मेलनमें

सुशोभित होरहेहैं, उनका यह एक पवित्र धर्महै कि वे जैन जातिको अवनतिमें लेजानेवाले दोषोंको दूर करें और उन सम्यक् उपायोंका प्रयोग करें जिससे समाजकी पूर्ववत् उच्चावस्थाहो तथा अपने तन, मन, धनको अन्यमार्गसे हटा उन सम्यक् उपायोंके साधनोंमें उत्साह पूर्वक और नियम पूर्वक लगावें।

आशा है कि हमारे भाई इस निवेदन पर ध्यान देकर कल्याणमें प्रवर्तेंगे।

हे मित्रो ! आपका अमूल्य समय मैंने अपने तुच्छ भाषणके सुनानेमें व्यय किया इसके लिये क्षमाका प्रार्थीहूं और जो आपलोगोंने मेरा निवेदन चित्तसे सुना इसके लिये अत्त्याभारीहूं।

ज्ञातिसेवक–

हुक्मचन्द काशलीवाल.

इन्दौर.

"जैनगजट" के इसी ऋङ्क का क्रोड़पत्र ॥

* वन्देजिनवरम् *

श्रीमान् कुंवर दिग्विजयसिंहजी, धीधूपुरा—इटावा का

संक्षिप्त जीवन चरित्र और व्याख्यान ।

जो उन्होंने प्रथम जैनसम्मेलन इटावामें फाल्गुण
शुक्ला तृतीया सम्वत् १९६६ विक्रमीय
(तदनुसार) १४ मार्च सन् १९१०
चन्द्रवारके दिवस सायंकाल
को दिया ।

जिसको

श्री जैन तत्व प्रकाशिनी सभा इटावा की
आज्ञानुसार मन्त्री चन्द्रसेन
जैन वैद्यने मुद्रित कराकर
प्रकाशित किया ।

वीर निर्वाण सम्वत् २४३६

Printed by B. D. S. at the Brahm
Press—Etawah

श्रीजैनतत्त्व प्रकाशिनी सभा-इटावा के

मुख्योद्देश्य ॥

प्रियवर सुहृदगण ! काल दोष तथा अन्य भी कई कारणोंसे वर्त्तमान समयमें जैनधर्म के विषय में सर्वसाधारणका प्रायः मिथ्या ज्ञान होरहा है। अतः उसको और जैन जाति पर लगे हुए मिथ्या दोष वा किम्बदन्तियां दूरकर लेख और व्याख्यानादि द्वारा जैनधर्म की सच्ची प्रभावना करना "अहिंसा परमो धर्म" का प्रकाश, विद्या का प्रचार और कुरीतियां दूर करना इस सभाके मुख्योद्देश्य हैं॥

बिकाऊ ट्रैक्ट ॥

आर्यों का तत्त्वज्ञान। ट्रैक्ट नं० १-२

कीमत)॥ दो पैसा सैकड़ा २) रु०

कर्त्ता खण्डन फोटो। ट्रैक्ट नं० ३

कीमत एक पाई सैकड़ा ।≡) आ०

कुरीतिनिवारण। ट्रैक्ट नं० ४

कीमत)। एक पैसा सैकड़ा १) रु०

जैन भजन मण्डली। ट्रैक्ट नं० ५

कीमत)॥ दो पैसा सैकड़ा २) रु०

जैनियोंके नास्तिकत्व पर विचार। ट्रैक्टनं० ६

कीमत)। एक पैसा सैकड़ा १) रु०

पता—मन्त्री चन्द्रसेन जैनवैद्य-इटावा ॥

* वन्दे जिनवरम् *

श्रीमान् कुंवर दिग्विजयसिंह जी, बीधूपुरा इटावह का संक्षिप्त जीवन चरित्र।

श्रीमान् कुंवर दिग्विजयसिंह जी, का जन्म क्षत्रियों के सुप्रसिद्ध प्राचीन अग्निकुल के भदौरिया वंशके कुल्हैया शाखा में श्रावण कृष्णा अष्टमी (८) सम्वत् १९४२ विक्रमी तदनुसार ५ अगष्ट सन् १८८५ ईस्वी मङ्गलवारको हुआ था। आप अपने सुयोग्य पिता ठाकुर भारतसिंह जी रईस व ज़मीदार बीधूपुराकी ज्येष्ठ सन्तान हैं। आपके पितृव्य श्रीमान् ठाकुरसाहब रघुवर सिंह जी (जिनकी पुत्री महाराज साहब करौली के लघु भ्राताके साथ बिवाहित है) अनेक देशी राजस्थानों के उच्च पदों पर प्रतिष्ठित रहकर वर्तमानमें महाराज साहब बीकानेर (राजपूताना) के प्रधान मन्त्री हैं। संक्षेपमें आपका कुटुम्ब वर्तमान समयमें धन, जन, विद्या और राज सन्मानादि सांसारिक विभूतियोंसे विभूषित है॥

हमारे कुंवर साहब को पांच वर्षकी अवस्थासे ही विद्यारम्भ कराया गया और आपने ग्राम्य पाठशालाकी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर अपने विद्या प्रेमी सुयोग्य नाना साहब कहिन्दा ज़िला कानपुर निवासी बाबू ब्रह्मासिंह जी पड़िहारके यहां (जिनके एक मात्र सन्तान कुंवर साहबकी विदुषी माता ही थी) छोटी जुहीमें रहकर कानपुरके परेड वाले डिस्ट्रिक्ट स्कूलमें अङ्गरेज़ीका अध्ययन प्रारम्भ किया और वहां व अपने मान्यवर पितृव्यके पास (कानपुरमें प्लेग प्रारम्भ हो जानेके कारण) बीकानेर के दरबार हाई स्कूलमें अध्ययन किया। यद्यपि आप कई विशेष कारणोंसे अङ्गरेज़ी इन्ट्रेन्ससे आगे पठन न कर सके तथापि आपने अङ्गरेजी

नागरी व सरल संस्कृत भाषामें अच्छी योग्यता प्राप्त करली। आप नागरी भाषाके अत्यन्त हितैषी और योग्य लेखक हैं और भविष्यमें-यह अतीव सम्भव है कि-आपकी गणना नागरी के सुप्रसिद्ध प्रेमी, सहायक और सुलेखकों में की जाय। आपका विशेष समय धार्मिक, राजनैतिक और समाजिकादि उपयोगी उच्च ग्रन्थोंके परिशीलन में ही मुख्यता से बीतता है और आपने उनमें बहुत कुछ योग्यता भी प्राप्त करली है। आप एक स्वदेश प्रेमी, दृढ़ प्रतिज्ञ, सदाचारी, उत्साही और कार्य्यदक्ष सज्जन हैं॥

आपका विवाह काकादेव ज़िला कानपुरके चन्देल ठाकुर प्राण सिंह जी की सौभाग्यवती पुत्रीसे हुआ है जिनसे कि आपके वर्त्तमानमें तीन चिरंजीव पुत्र हैं जिनकी शिक्षा दीक्षाका समुचित प्रवन्ध हो रहा है।

कुंवर साहबको धार्मिक शिक्षा प्राप्त करनेका सौभाग्य बाल्य अवस्थासे ही है। आपके सुयोग्य नाना साहब एक अच्छे अद्वैत वादी वेदान्ती विद्वान् थे और उनके यहां सदा कथा पुराणादि वेदान्ती चर्चा हुआ करती थी जिससे कि कुंवर साहब प्रथमसे ही धार्मिक मनुष्य बने और अवस्था प्राप्त होने पर श्री मद्भागवत, वाल्मीकीय रामायण, महाभारतादि कई पुराण उपपुराण तथा वेदान्तके ग्रन्थ देखे। स्कूल तथा ग्राममें आपको कई आर्य्यसमाजी सज्जनोंका संग प्राप्त हुआ जिससे कि आपका धार्मिक श्रद्धान आर्य्यसमाजकी ओर ढुल गया और आपने उसके अनेक उच्च उच्च सिद्धान्ती ग्रन्थ देखे जिसके प्रभावसे आप एक अच्छे आर्य्य सिद्धान्तज्ञ होकर अनेक वर्षों तक उनका प्रचार बड़े उत्साह व परिश्रमसे करते रहे तथा आर्य्यसमाजी नित्य नैमित्तिक संध्या वंदनादि क्रिया काण्डोंमें सचेष्ट रहे।

"जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ" सुभाषित व पूर्व जन्मके तीव्र पुण्योदयसे आपको यथार्थ वस्तु स्वरूप प्ररूपक, सर्वोत्कृष्ट, सच्चे मोक्ष मार्गी जैन धर्मका निमित्त प्राप्त हो गया। आपके जैनी होने का संक्षिप्त वृतान्त इस प्रकार है कि गत वर्षकी फरवरी मासमें जब कि आप अपने यहां एक ज़मीदारी हक्कियत का वयनामा कराने इटावह आये हुये थे आपने एक जैनी भाई रत्नचन्द जी से (जिन से आपकी कुछ पूर्वकी जान पहचान थी) जैन धर्मके तत्व, कदाचित खण्डन करनेके अर्थ, किसी विद्वान जैन पंडितसे मिलकर जाननेकी इच्छा प्रगटकी। उस भाई ने यहांके सुप्रसिद्ध जैन पंडित पुत्तूलाल जीसे आपकी इच्छा कही, जिन्हों ने आपको सादर बुलाकर जैन धर्म पर आपकी जो जो शङ्कायें थीं उन्हें शान्ति पूर्वक समाधान की और आर्य्यसमाजकी त्रुटियां दिखलाते हुये जैन धर्मके यथार्थ तत्व समझने के अर्थ श्री मोक्ष मार्ग प्रकाशादि ग्रन्थ देखनेका अनुरोध किया। सौभाग्यसे कुंवर साहव ने नियम पूर्वक कुछ जैन ग्रन्थों को पढ़ा और जब कभी आप स्वकार्य्य वशात् इटावह पधारे पंडित जी से शङ्का समाधान करते रहे तथा यदा कदाचित् मंदिर जीमें जाकर शास्त्र जी भी सुने। पंडित पुत्तूलाल जी ने आपसे भाद्र मासके दश लाक्षणी पर्वमें इटावह रहकर श्री सूत्र जी सुननेका अनुरोध किया, जिसे कि आप ने सहर्ष स्वीकार कर तदनुकूल ही आचरण किया। इन दश बारह दिनोंमें ही पंडित जी ने बड़े परिश्रमसे आपके हृदय में जैन धर्मके तत्व कूट कूटकर भरे, जिससे कि आप पर जैन धर्मका सिक्का कुछ कुछ जम गया और पूरा तो उस समय ही जमा जब आपको दीपमालिका महोत्सवपर होने वाले आर्य्यसमाजके वार्षिकोत्सवमें शंका समाधानके दिन आपके ईश्वर सृष्टि कर्तृत्ववाद खण्डक प्रश्नोंका यथार्थ उत्तर प्राप्त न हो सका॥

गत कार्तिक कृष्णा चतुर्दशीसे कार्तिक शुक्ला द्वितीया तक आर्यसमाज इटावाका वार्षिकोत्सव बड़े समारोहके साथ हुआ जिसमें देश देशान्तरोंसे अनेक सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान पधारे थे। कुंवर साहब भी इस महोत्सवके अर्थ निमंत्रित किये गये थे और आपसे अनुरोध था कि इस शुभ अवसर पर अपनी शंकाओंका समाधान अवश्य करलें। तीन दिन तक तो कुंवर साहब ने मध्यान्ह व रात्रिके समय स्वामी सत्यप्रिय जी आर्य्यसन्यासी व अन्य आर्य्य विद्वानोंसे प्राईवेट (एकान्त) में शंका समाधान किया, परन्तु जब आपके प्रश्नोंका यथार्थ उत्तर न मिला, तो आपने सर्व साधारण (पबलिक) में अपनी शंका प्रकाशित की।

अन्तिम द्वितीयाका दिवस सर्व साधारणके अर्थ शंका समाधानार्थ स्थिर किया गया था, जिसे करनेके अर्थ आर्य्यमित्र आगराके सुयोग्य सम्पादक पंडित रुद्रदत्त जी शर्मा सम्पादकाचार्य , स्वामिसत्यप्रिय जी सन्यासी तथा अन्य आर्य्य विद्वानोंसे घिरे प्लेट फार्मपर बैठे थे।

सनातनी और ईसाई भाइयोंके शंका कर चुकनेके पश्चात् कुंवर साहबने सभाके मध्य खड़े होकर यह प्रश्न किया कि, "परमात्मा स्वभावसे सृष्टिकर्ता व प्रलयकर्ता है या विभावसे? यदि स्वभावसे है, तो वेदान्तके (नैकस्मिन्न सम्भवात्) सूत्रानुसार शीतोष्णवत् दोनों सृष्टिकर्तृत्व व प्रलयकर्तृत्वके विरोधी गुण उसमें ठहर नहीं सकते। यदि उसमें सृष्टिकर्तृत्व गुण स्वाभाविक और प्रलयकर्तृत्व गुण विभाविक माना जावे, तो परमात्मा परिणामी और विकारवाला सिद्ध होयगा। यदि दोनोंको ही नैमित्तक मानिये, तो परमात्मामें परतन्त्रतादि अनेक दूषण प्राप्त होनेसे वह परमात्मा ही न रह सकेगा।"

इस प्रश्नका उत्तर देनेको पहिले सन्यासी जी उठे, परन्तु जब आपसे बन न सका, तो सम्पादकाचार्य्यजीने सन्यासीजी को बैठाल दिया और आप स्वयं उत्तर देने लगे।

आपने कहा कि "परमात्मामें दोनों सृष्टि कर्तृत्व व प्रलयकर्तृत्व गुण स्वभावसे ही हैं और विरोधी गुणका दूषण इस प्रकार नहीं है जिस प्रकार मनुष्य बोलता भी है और चुप भी हो जाता है।"

कुंवर साहबने कहा कि "आपका दृष्टान्त बाधित है क्योंकि मनुष्य किसी कारण से बोलता है और किसी कारण से चुप हो जाता है। यदि बोलना ही जीवका स्वभाव मान लिया जाय तो सर्व जीव मात्र सदाकाल मोक्षमें भी बोला ही करैं। अस्तु ऐसा दृष्टान्त दीजिये कि जो स्वाभाविक हो।"

फिर पंडितजीने कहा कि, जिस प्रकार पुद्गलमें मिलन बिछुरन दोनोंही शक्तियां है उसी प्रकार परमात्मामें भी दोनों ही गुण हैं।

कुंवर साहब ने कहा कि, पुद्गल परिणामी द्रव्य है और उसमें मिलन बिछुरन शक्ति अपेक्षा रहता है, परन्तु उनकी व्यक्तता तो बाह्य निमित्तके मिलनेसे ही होती है। यदि परमात्माको भी ऐसा ही मानिये कि उसमें शक्ति अपेक्षा दोनों विरोधी गुण रहते हैं, तो जैसे जलका स्वभाव शीतत्व है और उसमें उष्णत्व विभावरूप होता है, परन्तु इस विभावका कारण अग्नि या सूर्य्यादिककी उष्णता ही है, उसी प्रकार परमात्मामें एक गुण स्वाभाविक होनेसे द्वितीय गुण, जो प्रथमका प्रतिपक्षी है, विभावरूप अवश्य ही ठहरेगा और इस विभाव का कोई कारण माननेसे परमात्मा परिणामी दोषसे कदापि मुक्त नहीं हो सकता। इत्यादि।

ये उत्तर प्रत्युत्तर लगभग सवा घंटेके हुए, जिसमें कुंवर साहब व सम्पादकाचार्य्यजी क्रमशः पांच पांच मिनट बोल-

ते थे। प्रधान जीने बीचमें एक मर्तबः इस प्रश्नोत्तरको बन्द करना चाहा था, परन्तु पब्लिकसे अपील करने पर समय और बढ़ाया गया। जब सवा घण्टेमें भी यह झगड़ा तय न हुआ और समाजका पक्ष गिरने लगा तो प्रधान जी ने यह आज्ञा सुनाई कि, अब आपको ज्यादा टाइम नहीं दिया जा सकता। यदि आप श्रद्धालु हैं, तो एकान्तमें इस प्रश्नका समाधान कर लीजिये। कुंवर साहबने पबलिकमें यह प्रगटकर दिया कि हमारा यह प्रश्न समाधान नहीं हुआ। इस कारण प्रार्थना है कि समाज कृपा कर हमारे इस प्रश्नको एकान्तमें अवश्य ही समाधान करा दे।

संध्याको पंडित ब्रह्मानन्दजी आरा पधारे और आपका कर्तृत्व विषयपर एक व्याख्यान भी हुआ। रात्रिको कुंवर साहबसे आर्य सभासदीका फार्म भरने के अर्थ आग्रह किया गया, परन्तु कुंवर साहबने उत्तर दिया कि हम प्रस्तुत हैं, यदि हमारी शंकाओंका जिनमें कि प्रातःकालकी एक थी समाधान हो जाय। तदनुसार पंडित ब्रह्मानन्द जी व सम्पादकाचार्य्य जी प्राइवेटमें शंका समाधान करने को उपस्थित हुए और वहां भी वही पिष्टपेषण हुआ क्योंकि जिस समय ब्रह्मके सृष्टिकर्तृत्व व प्रलयकर्तृत्व दोनों विरोधी गुणोंमें से एकके प्रादुर्भूत व दूसरे के तिरोभूत होनेका कारण पूछा जाता था, उस समय आप सृष्टिके नियम पूर्वक कार्यत्व हेतु से पूर्ण ज्ञानी कर्ता ईश्वरकी सिद्धि करते हुए पृथ्वी भ्रमण की अपूर्व फिलासफीपर देर तक व्याख्यान देते थे और जब आपसे कहा जाता था कि महाराज संक्षेपसे कहिये तो आप कह देते थे कि, कहने दीजिये, इससे उपस्थित मण्डलीको लाभ पहुंचेगा। जिस समय सृष्टिमें अनेक अनियम पूर्वक कार्य दिखलाये जाकर भागासिद्ध दूषण दिया जाता

था, तब आप प्रादुर्भाव और तिरोभाव गुणोंपर लेक्चर झाड़ते थे। निदान इसी प्रकार कभी पृथ्वी भ्रमण कभी वैदिक फिलासफी, कभी कार्यत्व हेतु, कभी प्रमाण, कभी प्रत्यक्ष और कभी अनुमानपर लेक्चर देते हुए रातके साढ़े बारह बज गये, परन्तु ईश्वरमें सृष्टिकर्तृत्व व प्रलयकर्तृत्व इन दोनों गुणोंमें से एकके प्रादुर्भूत और दूसरेके तिरोभूत होनेका कारण समाधान न हो सका। बीच बीचमें सम्पादकाचार्यजी भी बोलने लगते थे, जो कि कठिनता पूर्वक शान्त होते थे। अन्तमें सन्यासी सत्यप्रियजी के पंडितजीको सोनेके अर्थ समय देने की प्रार्थना करने पर कथनोपकथन समाप्त हुआ और उस समय बिना बुलाये ही उपस्थित आर्य, जैनी, और सनातनी भाइयोंकी छोटी, परन्तु चतुर, मण्डलीने यह भली भांति जान लिया कि कुंवर साहबके प्रश्नका कहां तक समाधान हो सका॥

दूसरे दिन प्रातःकाल कुंवर साहब पंडित युग्मसे पुनः मिले और एक घण्टे भर तक बातचीत होती रही तथा सन्यासी सत्यप्रियजीसे, जो दो तीन दिन और रहे थे, प्रातः मध्यान्ह और सायंकाल नियम पूर्वक बातचीत होती रही, परन्तु ईश्वर जगत कर्तादि है यह सिद्ध न हो सका और तभीसे कुंवर साहबको जैन धर्मपर पूर्ण विश्वास हो गया।

कुंवर साहबको धार्मिक विषयोंपर वादानुवाद करने का बड़ा उत्साह है और जहां कहीं आप रहते हैं उचित समय और योग्य पात्र मिलनेपर इसी प्रकारके प्रश्नोत्तर हुआ करते हैं। परन्तु आपकी शंकाएं समाधान होनेके स्थान में प्रतिदिन प्रबल ही होती गयी और जिसने आपसे वादानुवाद किया वह भी अपने धर्मपर शंकाओंको घुसेड़ जैनधर्मके विषयमें जानकारी प्राप्त करनेको उद्यमी हुआ।

सौभाग्यसे कुंवर साहबको जैन तत्व सर्व साधारणमें प्रकाशित करनेका अतीव उत्साह है और यह आपके ही उत्साह व परिश्रमका (जिस के अर्थ जैन समाज इटावा आप

का कृतज्ञ है) फल है कि इटावामें प्रथम जैन सम्मेलन इस सफलता से हो सका ॥

अन्तमें हम कुंवर साहबको उनकी निष्पक्षता, दृढ़ता और उत्साहके अर्थ धन्यवाद व अनेक माङ्गलिक आशीर्षे देकर अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार प्रथम जैन सम्मेलन इटावह में फाल्गुण शुक्ला तृतीया (३) सम्बत् १९६६ विक्रमीय तदनुसार १४ मार्च सन् १९१० ईस्वी चन्द्रवारको सायंकाल का उनका दिया हुआ वह उत्तम व्याख्यान प्रकाशित करते हैं कि जिसमें आपने यह दिखलाया था कि सच्चा सुख जीवका मोक्ष ही है और उसकी प्राप्ति जैन धर्मके ही प्ररूपे सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र इन तीनों की एकत्रिता से ही हो सकती है।

कुंवर साहब का यह व्याख्यान जैन धर्मका संक्षिप्त सारांश है। आपने युक्ति पूर्वक प्रमाण और नय द्वारा संक्षेपमें सर्व गुण सम्पन्न ऐसा कथन किया कि उस समय उपस्थित सर्व जैन पंडित मण्डली भी अत्यन्त प्रशंसा करती थी। यद्यपि हमारे प्रकाशित इस संक्षिप्त कुंवर साहबके व्याख्यानमें जिस को कि हम सर्वके अनुरोधसे कुंवर साहबने पुस्तकाकार लिख डाला है वह आनंद नहीं आ सकता जो कि उस समय आया था और जिसे कि उपस्थित सज्जन ही जानते हैं तथापि यथा सम्भव कोई भी आवश्यकीय विषय व कथन नहीं रहने पाया जिससे कि आशा की जाती है कि सज्जनों को मनोरंजक होगा और वह पक्षपात रहित इस पर समुचित विचारके उपरान्त अपना यथार्थ कल्याण करने का प्रारम्भ करेंगे।

अलमिति विस्तरेण बुद्धिमद्वरेषु

चन्द्रसेन जैन वैद्य,

मन्त्री जैन तत्त्वप्रकाशिनी सभा—इटावह

* वन्देजिनवरम् *

श्रीमान् कुंवर दिग्विजयसिंह जी, बीधूपुरा इटावा का व्याख्यान जो उन्होंने प्रथम जैन सम्मेलन इटावा में फाल्गुण शुक्ला तृतीया सम्वत् १९६६ विक्रमीय (तदनुसार) १४ मार्च सन् १९१० ईस्वी चन्द्रवार के दिवस सायंकाल को दिया ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारकं ।
प्रधानंसर्वधर्माणां, जैनंजयतुशासनम् ॥

प्रियवर मित्रो !

इस संसार में प्राणीमात्र सुख की इच्छा करते हैं और उनका सारा प्रयत्न उसकी प्राप्ति करनेके अर्थ ही होता है। यह विषय पृथक् है कि किसीने सुख किसीमें माना हो और किसीने किसीमें और उसकी प्राप्तिके अर्थ कोई कुछ उपाय करता हो और कोई कुछ; परन्तु सर्वका लक्ष्य एक मात्र सुखही है और उसकी ही प्राप्तिके अर्थ उनके सर्व उपाय। आज हमको यह देखना है कि हमने जिनमें सुख मान रक्खा है उनमें यथार्थमें सुख है या नहीं और उसकी प्राप्तिके अर्थ जो हम उपाय करते हैं वह यथार्थमें यथेष्ट हैं या नहीं; यदि हैं तो हमको उन्हींको ग्रहण किये रहना चाहिये और यदि नहीं तो सच्चे सुख और उसकी प्राप्ति के यथेष्ट उपायको ढूंढना चाहिये जिससे कि हमको हमारा अभीष्ट सुख प्राप्त हो ॥

हम लोगोंने विशेषतः सुख, सांसारिक स्त्री, पुत्र, धन राज्य, ऐश्वर्यादि विभूतियोंमें ही मान रक्खा है और उन्हीं की प्राप्तिके अर्थ हमारे उचित, अनुचित सर्व प्रयत्न हुआ करते हैं। जब हम निष्पक्ष और सूक्ष्म विचार दृष्टिसे इनको देखते हैं तब यह हमको यथार्थ में सुखद नहीं प्रतीत होते क्योंकि प्रथम तो इनका प्राप्त करना ही हमारे हाथमें नहीं

वरन् प्रारब्धानुसार है और द्वितीय यदि ये किसी प्रकार हम को प्राप्त भी हो जावें तो भी सदाकाल रहते नहीं तृतीय जितने काल वे रहते भी हैं तितने काल सदा हमारी इच्छानुसार नहीं परिणमते व एक रस नहीं रहते और चतुर्थ इनको प्राप्तकर हमको सन्तुष्टता भी नहीं होती वरन क्षण प्रति क्षण उससे बढ़कर या भिन्न किसी अन्य वस्तुकी इच्छा लग जाती है किसी कविने सत्य कहा है कि=

आशागर्त्तःप्रतिप्राणियस्मिन्विश्वमणूपमं ।
कस्मिन्किंकियदायातिवृथावोविषयैषिता ॥

(अर्थात्) इस संसार में अनन्तानन्त जीव हैं? उन प्रति जीवोंके एक आशा रूपी ऐसा बड़ा गड्ढा है कि उसमें सर्व संसारकी सम्पदा एक अणुसमान है । अब कहिये इस संसार की सम्पदाओंका विभाग होने पर तुमको कितना मिलेगा और उससे तुम्हारी कितनी तृप्ति हो सकेगी ? इस कारण जो तुम्हारी विषयों के प्रति वाञ्छा है सो सर्वथा वृथा ही है ॥

मित्रो ? समझो । यदि आप इन्हीं सांसारिक विभूतियों में सुख मानते हों तो इन में से सबसे सुखी को (अपनी भावनाके अनुसार) ले लीजिये और सूक्ष्म दृष्टिसे देखिये कि क्या वह सुखी है मुझे आशा है कि आप उत्तर देंगे नहीं क्योंकि उसको किसी न किसी अन्य वस्तुकी चाह लगी होगी जो कि सर्व कदापि पूर्ण नहीं हो सकती और यह इच्छा ही तो दुःखका मूल कारण है । मैं समझता हूं कि आप किसी भी ऐसे भाग्यवान को न पावेंगे जो कि इन सांसारिक विभूतियों से यथार्थ में सुखी हो । जिस प्रकार किसी महाक्षुधावान् रङ्कको अतीव कठिनता से एक कण प्राप्त हो और जिस समय तक वह अन्य कणकी प्राप्ति करे उस समय तक उसका प्राप्त किया हुआ वह प्रथम कण खो जाय और इसी प्रकार

वह इस निष्फल प्रयत्नमें भटका २ फिर कर अपनी क्षुधा शान्ति न कर सके ठीक इसी प्रकार यह जीव इन अत्यन्त कठिनाईसे प्राप्त होने वाले सांसारिक विभूतियोंमें व्यर्थ ही सुख मानकर मृगतृष्णामें भटका २ फिरता है और कदापि स्वप्नमें भी सुखको नहीं प्राप्त हो सकता। अतः निश्चित है कि सांसारिक विभूतियोंमें कदापि सुख नहीं और जब सुखही ही नहीं तो उनसे उसकी प्राप्तिके अर्थ हमारे सारे प्रयत्न नितान्त ही व्यर्थ हैं। जब सांसारिक विभूतियां पराधीन, क्षण भङ्गुर, सुखाभास और आकुलता पूर्ण सिद्ध हुईं तब देखना है कि क्या हम किसी अन्य उपायसे सुख प्राप्त कर सक्ते हैं अत्यन्त गम्भीर दृष्टिसे विचार करने पर आपको ज्ञात होगा कि सुख प्राप्त करने का उपादान कारण आत्मा ही है क्योंकि यह प्रत्यक्ष देखने में आता है कि किसीको कोई वस्तु सुख-दायक और किसीको वही वस्तु दुखदायक हुआ करती है इससे स्पष्ट है कि बाह्य वस्तुयें (जिनसे कि हमारा रंचमात्र भी यथार्थ सम्बन्ध नहीं है) न तो सुख दायक ही हैं और न दुख दायक ही, इनमें सुख दुख केवल आत्माकी माननही है। जिस प्रकार श्वान किसी बाह्य अस्थिको चूसता हुआ उससे तथा हड्डीके कोने केचुभजानेसे अपने मुख द्वारा बहे हुये रुधिरको उस अस्थि जन्य मानकर उस विषें विशेष प्रीतिवान् होता है उसी प्रकार यह जीव इन सांसारिक विषयोंमें भ्रमसे सुख मानता है परन्तु यथार्थमें सुख आत्मामें ही है और उसकी प्राप्ति आत्म-स्थ होने पर ही हो सक्ती है। यदि ऐसा न होता तो बड़े बड़े प्रतापी, समृद्धिशाली, ऐश्वर्यमान् चक्रवर्त्यादि अपनी विभू-तियों को लात मारकर क्यों आत्मस्थ होने के अर्थ संसार से वैराग्य को प्राप्त होते। सुख जब आत्माका स्वभाव सिद्ध हुआ और सदाकाल शक्ति रूपसे वह उसमें रहता है तो उसके

प्रकट न हो सकने का कारण क्या है ? विचार करने पर ज्ञात होगा कि वह प्रबल कारण कर्म मल ही है क्योंकि यदि हम इस आत्मासे भिन्न किसी अन्य विशिष्ट आत्माको कारण सुख देने व न देने का कारण मानें तो वह विशिष्ट आत्मा न्यायवान् और दयालु मानी जानेसे किसीको बिना कारण के सुख दुख न दे सकेगी और अकारण विशिष्टों कीसी अना वश्यक इच्छा तथा सकारण भी उसमें राग द्वेषकी प्रवृत्तिसे उस को कलंकित करने का महाअपराध अपने ऊपर लेनहीं सक्ते।

अब यह विवाद हमारे सामने उपस्थित है कि यह आत्मा का शुभ गुण प्रगट न होने देने वाला कारण कर्म मल आत्मामें कबसे है कोई इसको सादि और कोई अनादि मानते हैं। हमको यह निश्चय कर लेना योग्य है कि कर्म मल आत्मा में सादि कालसे या है अनादि कालसे।

सादि मानने वाले हमारे भाई कहते हैं कि यह जीवात्मा एक शुद्ध परमात्माका अंश ही है जो कि उसमें कुछ अशुद्धता होने के कारण उससे पृथक् भासित होता है; या यह जीव प्रथम शुद्ध था पश्चात् अशुद्ध हुआ। अब उन से प्रश्न यह है कि जब वह परमात्मा प्रथम शुद्ध था तब पश्चात् उस के अशुद्ध होने का कारण क्या है या यह प्रथमका शुद्ध आत्मा क्यों अशुद्ध हुआ। इस कारण कि इसका कोई समुचित समाधान कारक उत्तर नहीं अतः कर्म मल इस जीवात्माके साथ सादि कालसे नहीं हैं। कर्मका सम्बन्ध जीवके साथ अनादि से ही सिद्ध होने पर यह देखना है कि यह अनादि कर्म मल क्या पदार्थ है और यह इस जीवसे दूर हो सकता है या नहीं और यदि हो सक्ता है तो किस प्रकार। इस संसार में यद्यपि अनेक स्वतः सिद्ध पदार्थ हैं तथापि दो प्रकार के पदार्थ विशेषतः दृष्टिगोचर होते हैं एक चैतन्य और दूसरे जड़। चै-

तन्य गुण सम्पन्न जीव है और जड़ पुद्गल या प्रकृति। जीवका स्वभाव भिन्न है और पुद्गलका भिन्न। ऐसा होने पर भी यह जीव अपने अनादि मिथ्यात्व व मोहके कारण (जोकि परवस्तु पुद्गलके संयोगसे ही उसमें है) उत्पन्न होने वाले राग द्वेषादिक के निमित्तसे जो आत्मामें सकम्पता होती है उससे जलको गरम लोहेके गोले की तरह जो सूक्ष्म पुद्गल स्कन्ध विशेष (कार्माण वर्गणा) का ग्रहण करने के अनन्तर आत्मा तथा पुद्गलके प्रदेशोंका जो बन्ध होता है उस बंध अवस्थाको प्राप्त पुद्गलको कर्म कहते हैं कर्म दो प्रकारका है एक भाव कर्म और दूसरा द्रव्य कर्म। पुद्गल के अनादि संयोग से मोहके कारण जीवकी अपने से सर्वथा भिन्न पर वस्तुओंमें वैभाविक इच्छा द्वेषादि परिणतिका नाम भाव कर्म, और उससे ग्रहण किये हुये पुद्गलोंका नाम द्रव्य कर्म है। अनादिकाल से मोह की प्रबलता के कारण भाव कर्मसे द्रव्य कर्म और द्रव्यकर्मसे भावकर्मकी परिपाटी अक्षुणधारा प्रवाह प्रचलित है। इसमें अन्योऽन्याश्रय दोष इस कारण नहीं कि जो भावकर्म या द्रव्यकर्म किसी दूसरे द्रव्यकर्म या भावकर्मका कारण है वह अपने अभी हालके उत्पन्न कियेहुए कर्मसे उत्पन्न नहीं हुआ वरन् अपनेसे प्रथम किसी दूसरे भिन्न कर्मसे। अनादिकालसे आत्माके साथ कर्म लगा रहनेपर भी वह उचित उपायों द्वारा उससे पृथक् किया जा सकता है क्योंकि वह उसका स्वभाव नहीं वरन विभाव है और विभाव चाहे वह कभीसे क्यों नहो पृथक् हो सकता है यथा जलका उष्णत्व।

हमारे बहुतसे भोले भाई कर्मका सम्बन्ध जीवसे अनादि मानते हुए भी उस को जीवका स्वभाव ही मानते हैं और इसी कारणसे उन्हें बहुत कुछ उलट पुलटकर (यथा मोक्षसे पुनरावृत्ति आदि) मुख्यतः संसार पोषणका ही उपदेश देना

पड़ा है। यह उनका बड़ा भ्रम है कि कर्म जीवका निज स्वभाव है क्योंकि कर्म जड़ है और जीव चैतन्य, इस कारण कर्म जीवका स्वभाव कदापि नहीं हो सकता। यदि हठसे इसको स्वभाव ही मानिये तो स्वभाव का अभाव कदापि न होनेसे मोक्षमें भी कर्मोंका सद्भाव मानना पड़ेगा और यदि वैसा ही करिये तो कर्मकी पूर्णता तक व्याकुलता रहनेके कारण मोक्षमें भी पूर्ण आनन्द न रहा। वैसा और विनश्वर मोक्ष मानने से जीवोंकी प्रवृत्ति अचिरस्थायी मोक्षमें न होनेके कारण उनका मोक्षमार्गका उपदेश ही निष्फल हुआ क्योंकि—

चलना है रहना नहीं, चलना विश्वा बीस।
ऐसे क्षणिक सुहाग पर, कौन गुंधावे सीस॥

के लोकोक्ति अनुसार ऐसे क्षणिक मोक्षके अर्थ कष्ट सह कर कौन प्रयत्न करे? मोक्षमार्ग अत्यन्त ही विवादास्पद है क्योंकि जिस तिस प्रकार मोक्षको तो सर्व ही मानते हैं पर मार्गमें ही भिन्नता होनेके कारण सर्वमतोंकी स्थिति है और प्रत्येक ही अपनेको मोक्षमार्गी कहता है। हमारा कर्तव्य है कि हम यह निर्णय करलें कि यथार्थ में मोक्ष किस मार्ग पर आरूढ़ होनेसे प्राप्त हो सकती है। कारण के अभाव होने से कार्यका अभाव हो जाया करता है। यह जीव अपनी विभाव परिणतिसे अपनेसे सर्वथा भिन्न परवस्तुओंमें रागद्वेष कर अपने ज्ञान दर्शन स्वरूपमें विचरण नहीं करता और इसी कारणसे दुःखी हो रहा है। यदि यह जीव समस्त परद्रव्योंको त्यागकर आत्मस्थ हो कर्म करना बन्द करदे और पूर्व समय के संचित कर्मको तपसे नाश करदे तो यह कर्मोंके सर्वथा अभाव हो जानेके कारण निज स्वरूप मोक्षको प्राप्त हो जाता है।

हमारे बहुतसे भाई कोई ज्ञान, कोई दर्शन, कोई चारित्र और कोई ज्ञान, और दर्शन, कोई दर्शन और चारित्र और

कोई ज्ञान और चारित्र तथा कोई इन तीनों के अभाव से मोक्ष मानते हैं। इस प्रकार ये सात पक्ष और आठवां ज्ञान दर्शन और चारित्र वाला है। नवमा और कोई हो ही नहीं सकता। अब हमको इनमेंसे यथार्थ मोक्षमार्ग ढूंढना है॥

संसारके प्रत्येक कार्य उस का उपाय जानने, उपाय पर विश्वास रखने और उपायको कार्यमें लानेपर ही सिद्ध होते हैं। यदि हम केवल उपाय जान ही लें, या उसपर केवल विश्वास ही करलें या केवल आचरण ही करें या केवल जानें और विश्वास करें, या केवल विश्वास करें और आचरण करें या केवल जानें ही और आचरण करें, या इनमेंसे कुछ भी न करें तो कदापि सिद्ध नहीं होता। कार्य उसी समय सिद्ध होता है कि जब हम उसके उपायको जानलें, उसपर हमारा विश्वास भी हो और जानने और विश्वास रखनेके तदनुकूल ही हमारा आचरण भी हो॥

मोक्षका यथार्थमार्ग सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, और सम्यक् चारित्र अर्थात् भले प्रकार अपनी आत्माको समस्त पर द्रव्योंसे भिन्न जानना, भले प्रकार वैसा ही पूर्ण विश्वास करना और तदनुकूल अपनी परणतिको अन्य सर्व परवस्तुओं से वीतरागी हो आत्मस्थ करदेना है। जिस समय तक ऐसी गति अर्थात् इन तीनोंका एकीकरण नहीं होता यह आत्मा अपने अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन अनन्त वीर्य और अनन्तशक्ति को सदाकाल शक्तिरूप से अपने में रखता हुआ भी कदापि प्राप्त नहीं हो सकता। अतः एक एक, दो दो और एक भी नहीं मानने वाले सातों पक्ष मिथ्या दृष्टी हैं और उनके निरूपे उपायों से मोक्ष की प्राप्ति कदापि, कदापि, कदापि नहीं हो सक्ती।

रत्नत्रय, अर्थात सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र इन तीनों की एकत्रितासे मोक्ष मानने वाले जैनी ही

हैं और सर्व शेष धर्म उपरोक्त सात पक्षोंमें ही गर्भित हैं। अतः यह स्वतः स्पष्ट हो गया कि मोक्ष का यथार्थ स्वरूप और उसकी प्राप्तिका मार्ग जैन धर्म में ही है और यही आप सर्व सज्जनोंके सन्मुख निवेदन कर देना मेरा आज का कर्तव्य था।

मुझे भय है कि मैंने आपका बहुत सा अमूल्य समय ले लिया इस कारण अब मैं यह नहीं दिखला सकता कि जैन ग्रन्थोंमें निश्चय और व्यवहार इन दो प्रकारसे मोक्ष मार्ग क्यों माना है और व्यवहार पक्ष विरुद्धसा दीखता हुआ भी निश्चयका किस प्रकार कारण है। आपमेंसे बहुतसे सज्जन उन्हें भी भलीभांति जानते हैं और जो नहीं जानते वे जैन शास्त्रोंके स्वाध्याय और जैन विद्वानोंके सत्संगसे इसको अवश्य ही जानें।

हम अपने अनादि मिथ्यात्वके कारण इस पंच परिवर्तन स्वरूप संसारमें अनादि कालसे निज कर्मानुसार जन्म मरण करते हुये दुःखी हो रहे हैं और अब मोक्ष का साधन भूत हमने यह मनुष्य पर्याय बड़े पुण्योदय से काकतालीय न्यायवत् पाया है और अब यह आशा भी नहीं कि यह हमको पुनः शीघ्र प्राप्त ही होय अतः हमारा यह सर्वोपरि कर्तव्य है कि हम अपने इस जन्म में अपना यथार्थ सुख और उसके प्राप्तिके मार्गका निश्चय अवश्य ही करलें क्योंकि यद्यपि हम अपने इस पर्यायमें साक्षात् मोक्षको नहीं प्राप्त हो सकते तथापि किसी अन्य पर्यायसे उसको प्राप्त करने का निमित्त तो अवश्य ही बनालें और केवल "बाबा वाक्यं प्रमाणं" के भरोसे न रहकर पक्षपात तज सत्य मार्गको ग्रहणकर और तदनुकूल अपना आचरणकर कल्याणको प्राप्त होवें।

आपको ज्ञात होगा कि मुझको जन्मसे ही जैनी होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है वरन् छः सात महीनेके अल्पकाल

से ही मुझको जैन ग्रन्थोंके स्वाध्याय करने व जैन विद्वानोंके सत्सङ्गका निमित्त प्राप्त हुआ है और इस समय में जो कुछ मुझको ज्ञात हो सका वह मैं ने आपसे यह निवेदन किया। सम्भव है कि मुझसे त्रुटि हुयी हो और मैं उस महात्माका यावज्जीवन परमकृतज्ञ रहूंगा जो कि मुझको मेरी त्रुटि बतलाकर (यदि यथार्थमें ही मैं बुरे मार्ग पर आरूढ़ हो गया होऊं) मुझको उसमें से हस्तावलम्बन पूर्वक निकाल कर इससे अच्छा मोक्ष मार्ग दिखला देवे। मेरे जैनधर्म ग्रहण करनेका एक मात्र कारण उसकी सत्यता ही है और वह भी केवल सत्यता ही होगी जो कि मुझको आकृष्ट कर सकेगी।

क्षमा करिये। जैनग्रन्थोंका स्वाध्याय मैंने शुद्ध ज्ञानकी प्राप्तिके अर्थ नहीं प्रारम्भ किया था वरन उसमें त्रुटियां ढूंढ़कर उनका खण्डन करनेको, परन्तु उनकी सत्यतासे मैं ऐसा मुग्ध हुआ कि उनके खण्डन करनेके स्थानमें आज मैं बड़े गर्व से उनका मण्डन कर रहा हूं। हमारे जो मित्र यथार्थमें जैन धर्मका खण्डन करना चाहते हैं उनको मैं निष्कपट सम्मति दूंगा कि वे पक्षपात रहित जैनग्रन्थोंका स्वाध्याय करें और उनका शेष कार्य स्वयं हो जायगा इसमें सन्देह नहीं॥

मैं जानता हूं कि सर्वथा पक्षपात रहित ऐसा करने से भी मुझको अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा परन्तु मुझको उनका कोई भय नहीं है क्योंकि मेरे जीवनका एकमात्र लक्ष्य श्रीमान् भर्तृहरि जीकाः—

निन्दन्तुनीतिनिपुणा यदिवास्तुवन्तु।
लक्ष्मीःसमाविशतु गच्छतुवायथेष्टम्॥
अद्यैववामरणमस्तु युगान्तरेवा।
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

वाला सुभाषित ही है॥

अन्तमें मैं आप सर्वको मेरा तुच्छ कथन सावधानी व शान्तितासे सुन लेनेके अर्थ हार्दिक धन्यवाद देता हूं और विनय करता हूं कि आप सर्व मुझको ऐसी शक्ति प्राप्त होनेका आशीर्वाद दीजिये जिससे कि मैं अपने आत्माको सर्वकर्म मलसे पृथक् कर शुद्ध स्वरूप हो अपने निराकुल, निरन्तर, स्वाधीन और अविनाशी आनन्दको प्राप्त होऊं। इति शुभम्।

कुंवर दिग्विजयसिंह, बीधूपुरा–इटावह।

(नोट) कुंवर साहबका व्याख्यान सुनकर सभा जय-जयकार ध्वनिसे गूंजउठी और सर्व सभासद् आवेशमें गद्गद् होकर पुष्पवृष्टि करने लगे हमारे न्याय दिवाकर पंडित पन्नालाल जीने आशीर्वादात्मक श्लोक पढ़कर कुंवर साहबके गलेमें हार पहिनाया। तत्पश्चात् कुंवर साहबने सर्व सभासे उत्साह पूर्वक निवेदन किया कि जिस प्रकारसे पण्डित जी साहबने मुझे आशीर्वाद दिया है उसी प्रकार मेरी इच्छा है कि सर्व सभासद्गण भी मुझे आशीर्वाद दें। इन वचनोंको सुनते ही सर्व सभासदोंने "तथास्तु, तथास्तु, तथास्तु" कह कर सभामें अपूर्व आनन्दकी छटा बर्षायी। उस समयके अनिर्वचनीय हर्षका अनुभव उन्हीं महाशयोंने किया जो कि वहां उपस्थित थे। हमारी लेखनीमें यह शक्ति नहीं कि हम उस आनन्दको लिखकर प्रगट करसकें। इसके पश्चात् श्रीयुत पण्डित गोपालदास जीने कुंवर साहबका परिचय व धन्यवाद देकर जयध्वनिके साथ सभाका विसर्जन किया॥ इत्यलम्।

धन्यवाद।

यह पुस्तक लाला फुलजारीलालजी जैनी रईस व जमीदार करहल जिला मैनपुरीकी द्रव्य की सहायतासे प्रकाशित हुई है अतः यह सभा आपकी अत्यन्त आभारी है॥

मन्त्री चन्द्रसेन जैनवैद्य—इटावा॥

इसी अंकका क्रोड पत्र.

॥ श्रीः ॥

व्याख्यान.

जिसको

दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणकचन्द

हीराचन्दजी जे. पी. मुम्बईने

श्रीगोमट्टस्वामी जैनबद्री

श्रवणबेळगोला (मैसूर प्रान्त) में भारतवर्षीय दिगम्बरजैन महासभाके नैमित्तिक अधिवेशनके समय प्रदान किया।

वही

बंबई

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रित.

मिती फाल्गुन वदि १

वीर सम्वत् २४३६,

प्रति ५०००.

॥ श्रीः ॥

व्याख्यान.

जिसको

दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणकचन्द

हीराचन्दजी जे. पी. मुम्बईने

श्रीगोमट्टस्वामी जैनबद्री

श्रवणबेळगोला (मैसूर प्रान्त) में भारतवर्षीय दिगम्बरजैन महासभाके नैमित्तिक अधिवेशनके समय प्रदान किया ।

वही

बंबई

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रित.

मिती फाल्गुन वदि १

वीर सम्वत् २४३६,

प्रति ५०००.

व्याख्यान.

दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणकचंद
हीराचंद जे. पी. मुम्बई.
सभापति ।

नैमित्तिक अधिवेशन ।

भारतवर्षीय दिगम्बरजैन महासभा स्थान
श्रीगोमट्टस्वामी जैनवद्रीश्रवणवेल-
गोला (प्रान्त मैसूर)
मिती फाल्गुन बद १ वीर सं. २४३६,
ता. २६ मार्च सन् १९१०.

मंगलाचरण ।

सकलनृपसमाजे दृष्टिमल्लाम्बुयुद्धै-
र्विजतभरतकीर्तिर्यः प्रवव्राज मुक्त्यै ॥
तृणमिव विगणय्य प्राज्यसाम्राज्यभारं ।
चरमतनुधराणामग्रणीः सोऽवताद्वः ॥

अर्थ—जिस (श्रीऋषभदेवप्रथमतीर्थंकरके पुत्र) श्री बाहुबलिजीने सम्पूर्णराजाओंके सन्मुख दृष्टियुद्ध, मल्लयुद्ध

और जलयुद्धके द्वारा (अपने बड़े भाई) श्रीभरतचक्रवर्तीके यशको विजय किया और फिर सम्पूर्णराज्यभारको जीर्ण तृणके समान समझकर मुक्ति होनेके लिये श्री (जैनादिगम्बरी) भगवती दीक्षाको धारण किया तथा (इस अवसर्पणीकालमें) सर्व केवली महामुनियोंमें प्रथम होकर मोक्षके आनन्दको प्राप्त किया ऐसे श्रीगोमट्टस्वामी अर्थात् श्रीबाहुबलिजी महाराज सर्व प्राणियोंकी रक्षा करें ।

आज हम सर्वभाइयोंका अहोभाग्य है जो इस पवित्र ऋषिभूमिपर धर्मकी प्राप्तिके लिये एकत्र हुए हैं ।

ऋषिभूमिकी महिमा —

यह पवित्रभूमि इस समय मुख्यतया श्रीबाहुबलिस्वामीकी विशाल स्थापनासे सुशोभित होकर जगतमें प्रसिद्ध होरही है । जिस बाहुबलिस्वामीने अनादिकालसे जीवोंको कृतकृत्य करनेवाले आत्मस्वरूप जैनधर्मको धारणकर और परमवीतरागविज्ञानताका सेवनकर निजस्वरूपको व्यक्तकिया ऐसे श्रीबाहुबलिस्वामीकी ध्यानरूप वैराग्य छटाको प्रदर्शित करनेवाली प्रतिमा बडे २ कठिन मोहियोंके भी मनको एकवार संसारसे विरक्तकर शान्तसागरमें निमग्न कर देती है, जिसकी प्रसंशामें मि. बी. लेविस राइस सी. आई. ई. (B. Lewis Rice C. I. E.) ऐसे यूरूपीय विद्वा-

नोंने अनेक पुस्तकें बनाकर अपनी आश्चर्य्यता और भारतके अद्‌भुत शिल्पकी महिमाको प्रगट किया है। आज उसी विशालमूर्त्ति (५६ फुट ऊँची) के मस्तकाभिषेक सम्बन्धी पूजाके निमित्त हम सर्व भाई इस स्थानपर भारतके सम्पूर्ण प्रान्तोंसे आकर अपने पवित्र जैनधर्मकी उन्नतिके विचारमें दत्तचित्त हैं।

प्रिय भ्रातृगण ! यह धाम बहुत कालसे महामुनियोंके ध्यान और संन्यासका स्थान होचुका है, श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवली ने इसी जगह समाधि मरणकर सन् ईसवीके ३०५ वर्ष पूर्व परलोक प्राप्त किया। पाटलीपुत्र पटना) के राजा चन्द्रगुप्तने भी इसीसमय अपने गुरु श्रीभद्रबाहु श्रुतकेवलीसे मुनिदीक्षा ले अपने गुरुकी समाधिमरणके समय वैय्यावृत्यकर इसी स्थानसे सल्लेषना व्रतधार स्वर्ग प्राप्तकिया। न कि दो चार किन्तु हजारों ऋषीश्वरों और अर्य्यकाओंने इस स्थानपर तपकर अपनी मनुष्य पर्य्यायको सफल किया।

महाशयो ! उनमें जो प्रसिद्ध हुए ऐसे मुनियों और अर्य्यकाओंके नामादिको प्रकट करनेवाले १४४ शिला लेखोंमेंसे बहुतसे शिलालेख इन पर्वतोंकी गुफाओं और वस्तियोंमें कनड़ीलिपि और संस्कृतभाषामें अङ्कित हो रहे हैं।

महामुनि श्रीउग्रसेन, गुणसेन, नागसेन, सिंहनंदि, नंदिसेन, देवसेन, महामण्डलाचार्य्य देवकीर्ति, पद्मनंदि और माधवचन्द्रके गुरु श्रीशुभचन्द्रदेव (जो पहले बोगडके राजा थे) नयकीर्ति, श्रीमेघ-चन्द्रत्रैवैद्यदेव, प्रभाचन्द्र, सिद्धान्तदेव, श्रीमल्लिशेन मुनि, श्रीश्रुतमुनि, श्रीपद्मनन्दिदेव, आदि मुनियोंने इसी पवित्र स्थलसे स्वर्गधाम उपलब्ध किया। श्रीमती नागमति, एछी, अनंतमती, सुशिरमती, पोचिकब्बी, लक्ष्मली, देमयिक्का, शांतल देवी, आदि पवित्र अर्य्य-काओंने इसी स्थलसे संन्यास धार अपने अशुभकर्मका नाशकर स्वर्गपुरीमें गमन किया। ×

यह स्थान अबतक श्रीनिर्ग्रन्थ मुनियोंसे पवित्रित रहता आया है। वि० सम्वत् १८८४ में यहां श्री वृषभ सेन मुनि विराजित थे जिनकी ५० वर्षकी अवस्था, विद्वत्ता और शास्त्रोक्त आचरणको लाला मानकचन्द, अग्रवालरोहतक निवासीने स्वयं अवलोकनकर पुण्य-बंध किया था।

गंग और राष्ट्रकूट वंशके श्रीवल्लभ, नारसिंह, इन्द्र-राजा, रायचूड़ामणि, गरुडकेशरीराजा, बूचीराजा, गंग-

---

×देखो Inscriptions at sravan belgola जो गवर्नमेण्ट प्रेस बंगलोरसे मिलती है।

राजा, राजाविष्णुवर्द्धन, एचीराजा, हुल्लाराजा, होशाल राजा नर्सिंह, वीरवल्लभ, मैसूरके चामराजा वोडेयर, और दोड्डा कृष्णराजा आदि राजा महाराजाओंने बहुत प्राचीनकालसे इसीस्थलपर महामुनियोंकी सेवा की, जिनालय बनवाए तथा वस्तियोंकी रक्षाकेलिये अनेक भेटें कीं ।

प्राचीन स्थिति.

महा शयो ! यह वही स्थान है जहां श्री चामुंडराजा और उनके गुरु श्रीनेमिचंद्रसिद्धान्तचक्रवर्ती हुए हैं । यह दक्षिणप्रान्त प्राचीनकालमें जैनधर्मानुयायियोंसे भरपूर था । जैनी राजा राज्य करतेथे जिनके छत्रके नीचे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सर्वही जैन धर्मको सेवन कर परमआनन्द प्राप्त करतेथे यहां जैनविद्वानों और त्यागी निस्पृही वक्ताओंका दौरदौरा था। इस समय इस प्रान्तमें उजड़ीहुई अवस्थामें दीखने वाले हजारों बडे वड़े अमूल्य जिनमंदिर इसबातका प्रमाण देतेहैं कि यहांके जैनियोंमें धन और धर्मकी प्रचुरता थी, ऋषियोंकी उपस्थितिका चिन्ह विद्याकी गौरवताको प्रकट करताहै। वर्तमानमें जैन ब्राह्मण और जैन वस्तियोंमें पूजा पाठकरनेवाले उपाध्यायोंका अस्तित्व यह प्रगट करताहै कि, यहां जैनगृहस्थाचार्य्योंके द्वारा धार्मिक रीतिरिवाजोंका चलन बराबर रहा करता था ।

आदिनाथ पुत्र श्रीभरत महाराज उपदेशित चारोंजातियां इस ओर सुखसे अपनेव्यवहार कार्य्यको करती हुई कालक्षेप करतीथीं। जहां वीरता, राज्यमान्यता, धनाढ्यता, विद्वत्ता, तपस्या, शुद्धाचरण और शांतता का स्थान था, वहां इस समय कायरता, निर्धनता, मूर्खता, और संसारलीनताका राज्य होरहाहै। कालचक्र के परिवर्त्तनशील नियमके अनुसार यहां भी फेरफार होगया। महात्मा ऋषियोंकी कमीसे सम्यक

आधुनिक स्थिति

उपदेश का अभाव हुआ। अन्यमती राजा और अन्यमती विद्वानों के दबावने लाखों जैनियोंको लिंगायत तथा स्वधर्मच्युत करदिया। जैनियोंने पारमार्थिक और लौकिक विद्या पढ़ना बन्दकर जिस तिस प्रकार उदरही भरने काही ख्याल किया। इस आलस्य और उत्साह की हीनताने जैनियोंका सम्पूर्ण प्रभाव धूलमें मिलादिया। जैनियोंने यहांतक गफलत खाई कि, अपने यहां अत्यन्त व्यय और कठिनतासे संग्रह कियेहुए सरस्वतीभंडारोंकी सम्हाल भी बन्द कर दी। हजारों अमूल्यग्रन्थ सर्दीसे सड़े अथवा कीड़ोंसे खाएगए। जिन वाक्यरत्नोंका समागम एकदफे चलेजानेसे फिर मिलना दुर्लभ होताहै उन्हीं वाक्यरत्नोंको खोकर हमने अपना अत्यन्त अलाभ किया।

अब इस प्रान्तके जैनी, धर्मसे अज्ञात हैं। अब यहांके उपाध्यायवर्ग विद्यासे हीन हैं, अब यहां के वैश्यजन व्यापारसे शून्य हैं।

इस प्रान्तसे दृष्टि फेर जब हम सम्पूर्ण भारत के प्रान्तों के जैनियों की स्थिति की ओर दृष्टि डालते हैं तो वहां भी उत्साहहीनता, आलस्य, मूर्खता, निर्धनता और कुमार्ग सेवा का अड्डा हो रहा है ऐसा ही पाते हैं।

पवित्र जैन धर्म

जिस पवित्र जैन धर्मकी प्रीतिने तीर्थंकर चक्रवर्ती, राजा, महाराजा, सेठ, साहूकारोंको अपना राज्य और गृहकार्य्य न्यायपूर्वक कराते रहकर पश्चात् आत्माको कर्मोंसे छुड़ाकर उसे परमात्म-स्वरूप बनानेके लिये उद्यमवंत किया था उसी पवित्र जैन धर्मसे अत्यन्त अज्ञानता इस समय अपने जैन धर्म धारियोंमें दिखलाई देरही है। यह कितने बड़े शोक की बात है।

जो जैन धर्म वेदमतवालों द्वारा यज्ञों में वध होने-वाले लाखों पशुओं का रक्षक हुआ, जिसने अपना निर्मल अहिंसा तत्त्व का प्रभाव डाल कर वेद मत वालों को अहिंसामार्गानुयायी वेदान्त मतका प्रचारक बनाया; तथा जिस जैनधर्मकी प्रशंसा अन्यमती विद्वानोंने

करके अपनी निष्पक्षताको प्रगट किया वही जैनधर्म आज हमारे भारतकी जैन समाजसे विस्मृत होरहा है।

महाशयो ! अन्यधर्मी भागवतग्रन्थके स्कंध ५ अध्याय ५ में[1] एक सवाल है कि श्रीशुकदेवजीने श्रीऋषभदेव (जिसने जैन मत प्रगट किया) को क्यों नमस्कार किया ? तो उसके उत्तरमें लिखा है " भगवान् ने अनेक अवतार धारण किये परन्तु, जैसा संसारके मनुष्य कर्म करते हैं वैसाही भगवान्ने किया और ऋषभदेवजीने जगत्को मोक्षमार्ग दिखाया और अपने आप भी मोक्ष होनेके कर्म किये इस लिये शुकदेवजीने नमस्कार किया" इसी भागवतमें[2] श्रीऋषभदेवके उपदेश की प्रशंसा करते हुए कहा है " जब पुरुष की कर्मसे बँधीहुई दृढ़ मन रूपी गांठ मिथुनीभावसे निवृत्त होजाती है तब वह संसारका हेतुभूत जो अहंकार है उसको छोड़कर मुक्त और परमपदवीको पहुँचता है। जो पुरुषको संसार से नहीं छुड़ाता वह उसका गुरु नहीं, सगा नहीं, पिता नहीं, माता नहीं वरन् शत्रु कहना चाहिये " जैन धर्म अनादि है और अहिंसाका स्थापक है यह कथन प्रसिद्ध भारतके विद्वान् बाल गङ्गाधर तिलकने[3] किया। जैन धर्म बौद्ध धर्मसे भिन्न, अत्यन्त

---

१ मुद्रित टीका लाला शालिग्रामकृत सफा ३७२, २ सफा ३६६—६७ स्कंध ५ में; ३ केशरी १३-१२-१९०४;

प्राचीन और आवश्यक मन्तव्योंका धारक है यह बात कैप्टेन लुआर्ड[१], हण्टर[२], मि० कन्नूलाल[३], राईडेविड[४], ए डुबाई[५] आदि विद्वानोंने बहुत परीक्षा करनेके बाद लिखी है।

विल्सन कालेज बम्बईके संस्कृतके प्रोफेसर एच. एम भड़कमकर बी. ए, ने ता० २ फर्वरी १९१० के दिन एक व्याख्यान में जैनधर्मको परम पवित्र आत्मकल्याण-कारी और अहिंसा धर्मका प्रचारक कहा है + ।

आपने कहा है:—

---

1 Census Report C. P. 1901

2 'Indian Empire' Page 206.

3 'Theosophist' Dec 04 and January 05.

4 Encyclopedia Bri. Vol. 29.

5 Book on Indian customs. 1817.

+"Jainism teaches that the *highest moral life* is the only sure means of the elevation of soul and its eventual emancipation and with it the central truth of morality lies in complete abstenance from injury to any one else.

It is a painful confession that the sacred animal sacrifice though it has to be allowed as being enjoinedby the *Sruti*-the basis of all the superstructure of the Vedic faith, does in fact startle the heart of even the most faithful follower of the Vedas. This effect, I beleive could not have been brought about by the purely militant materialistic doctrine, but must have been the slow and silent effect of the steady self relying teachers who brought the wealth of their metaphysical thought to bear on all questions of humane life and constructed a doctrine which would satisfy all the yearnings of the humane soul"

वास्तव में यह जैनधर्म रागी द्वेषी आत्माका राग द्वेष छुडाकर उसे वीतरागी निश्चय स्वभावरूप और परमानन्दित बनानेवाला है। यह जैनधर्म क्षणिक सुखको छुड़ाकर अविनाशी अनुपम आत्मस्वभावी. अतीन्द्रिय सुखको देनेवाला है, यह जैनधर्म आत्मामें राग द्वेष होनेको ही हिंसा कहताहै। और जहाँ रागादिक औपाधिक भाव नहीं होते वहीं सम्पूर्ण अहिंसा है, 'अप्रादुर्भावः खलु रागादीनां भवत्यहिंसेति'। इसी निर्विकल्प वीतराग आनन्दकी इच्छा रखतेहुए श्री ऋषभनाथ स्वामीके समयमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, चारों ही जातियां अपने निर्दिष्ट कर्मोंको व्यवहार धर्मका साधन जान करती रहकर सदा निश्चयपर दृष्टि रखती थीं और इसी कारण अन्यायका उस समय नाम भी न था। राजा प्रजा दोनों सुख और शांतिसे कालक्षेप करते थे। यदि कोई अवसर परचक्रसे युद्धका भी आजाता था तो भरत और बाहुबलिजीके अप्राणघातक युद्धके समान युद्धकर लोहू बहानेसे बचते रहते थे॥

चार जातियों की स्थापना.

इस अवसर्पणी कल्पकी कर्मभूमिके प्रारम्भ में कल्पवृक्षों के अभाव होनेपर सर्व मनुष्य आजीविका बिना क्लेशित हुए और श्री आदिनाथसे आजीविका के लिये प्रार्थना की उस समय श्री आदिब्रह्मा

ऋषभदेवजीने नीचे लिखे श्लोकोंकी भाँति ३ वर्ण और षट्कर्म स्थापन किये:—

(श्री आदि पुराण पर्व १६)

श्रुत्वेति तद्वचो दीनं करुणाप्रेरिताशयः ॥
मनः प्रणिदधावेवं भगवानादिपूरुषः ॥ ४२ ॥
पूर्वापरविदेहेषु या स्थितिः समवस्थिता ॥
साद्य प्रवर्तनीयाऽत्र ततो जीवन्त्यमूः प्रजाः॥४३॥
षट्कर्माणि यथा तत्र यथा वर्णाश्रमस्थितिः॥
यथा ग्रामगृहादीनां संस्था याश्च पृथग्विधाः ॥४४॥
असिर्मषिःकृषिर्विद्या वाणिज्यं शिल्पमेवच ॥
कर्माणीमानि षोढा स्युः प्रजाजीवनहेतवे ॥ ७९॥
उत्पादितास्त्रयो वर्णास्तदा तेनादिवेधसा ॥
क्षत्रियाःवणिजः शूद्राः क्षतत्राणादिभिर्गुणैः॥८३॥
क्षत्रियाः शस्त्रजीवित्वमनुभूयतदाभवन् ॥
वैश्याश्च कृषिवाणिज्यपाशुपाल्योपजीविनः ॥८४॥
तेषां शुश्रूषणाच्छूद्रास्ते द्विधाकार्वकारव
कारवो रजकाद्याः स्युस्ततोऽन्ये स्युरकारवः॥८५॥
कारवोऽपि मता द्वेधा स्पृश्यास्पृश्यविकल्पतः ॥
तत्रास्पृश्याः प्रजाबाह्याः स्पृश्याः स्युः कर्त्तकादयः ८६
आषाढ़मासबहुलप्रतिपाद्दिवसे कृती ॥
कृत्वा कृतयुगारम्भं प्राजापत्यमुपेयिवान् ॥ ९०॥

शूद्रा शूद्रेण वोढव्यनान्यास्वांतां च नैगमः ॥
वहेत्स्वान्ते च राजन्यः स्वां द्विजन्मा क्वचिच्च ताः२४७
स्वामिमां वृत्तिमुत्क्रम्य यस्त्वन्यां वृत्तिमाचरेत् ॥
स पार्थिवैर्नियन्तव्यो वर्णसङ्कीर्णिरन्यथा ॥ २४८ ॥
सृष्टेति ताः प्रजाः सृष्ट्वा तद्योगक्षेम साधनम् ॥
प्रायुक्त युक्तितो दंडं हा माधिक्कारलक्षणम्॥२५०॥

भावार्थ यह है कि लोगोंकी पुकार सुनकर श्रीआदिनाथने वही रीति यहां चलानी चाही जैसे कि, अनादि कालसे विदेह क्षेत्रोंमें चली आतीहै । उसीके अनुसार प्रजाकी व्यवस्था तथा ग्राम नगरादिके विभाग किये । आजीविकाके ६ कर्मोंमेंसे शस्त्रकर्म क्षत्रिय वर्णको, मसि, कृषि, वाणिज्य पशुपालन वैश्य वर्णको,तथा क्षत्रिय और वैश्यकी शूश्रूषाका काम शूद्रवर्णको दिया (श्लोकमें न होनेपरभी ऐसा विदित होताहै कि विद्या और शिल्पकर्म शूद्रोंके लिये रक्खा) शूद्रों के दो भाग किये एक कारु दूसरा अकारु कारुओंके भी दो भेद किये एक स्पृश्य दूसरे अस्पृश्य। स्पृश्योंमें "शालिको मालिकश्चैव कुंभकारस्तिलं तुदः नापितश्चेति पंचामी भवंति स्पृश्यकारुकाः" शाली, माली, कुम्हार, तेली, और नाई रक्खे, तथा अस्पृश्यों में "रजकस्तक्षकश्चैवायस्करो लोहकारकः। स्वर्णकारश्च पंचैते भवंत्यस्पृश्य-

कारुकाः" धाबी, सुतार, तांबट, लुहार, और सुनार रक्खे॥इनके सिवाय सर्व शूद्रोंको अकारु ठहराया॥आषाढ बदी १ प्रतिपदा के दिन कृतयुग कायम करके प्रजाके आप राजा नियत हुए। अपने २ वर्ण में विवाह करना नियत किया परन्तु वैश्यों को शूद्रकी कन्या लेना, तथा क्षत्रियों को वैश्य और शूद्र दोनोंकी कन्या लेना ठहराया। और यह कानून बनाया कि जो कोई अपने वर्णकी आ-जीविका छोड़ दूसरे वर्णकी आजीविका धारण करेगा वह दण्डनीय होयगा॥दण्ड न लेनेपर वर्णच्युत किया जायगा। प्रजाको क्षेम कुशल से चलाने के लिये केवल हा ! मा ! ! और धिक्कार ऐसे तीन दंड स्थापित किये। श्री आदि ब्रह्माके पुत्र भरत चक्रवर्तीने द्रव्यादि दान करने के लि-ये जो श्रावक अणुव्रतोंके पालने में दृढ़थे उनको ब्राह्मण पद से विभूषित करके दान लेने और अन्य तीन जाति से सम्मान पाने के अधिकारी ठहराये।

महाशयो ! यह जाति विभाग प्रजा को सुख सम्पादन के लिये अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक वर्णकी संतान अपने अपने नियत कर्म में अपने माता पिता के संस्कारों के द्वारा गर्भ और जन्मसेही निपुणता प्राप्त कर सक्तेहैं। पिता अपना हुनर जितनी प्रीतिसे अपने पुत्रको सिखावेगा वैसा दूसरेको

नहीं सिखा सक्ता। जो लोग सर्व जातिबन्धन तोड़ना चाहते हैं मैं उनसे सर्वथा विरुद्धहूं। यह अवश्य है कि इन चारों वर्णोंमें जो अनावश्यक सूक्ष्म भेद हैं वे निकल जाने चाहिये। जैनधर्मानुयायियोंने धर्म और कर्म

अज्ञानताका कटुकफल. दोनोंसे अजान रहकर अपनेको आलस्य और विषयलोलुपतामें पटक दियाहै। इसीसे आज हम जैनियोंमें न राज्यमान्यता है, न करोड़ों रुपयेके कोई धनी हैं, न रालीब्रादर ऐसे बड़े व्यापारी हैं, न विज्ञानवेत्ता विद्वान हैं, न शास्त्रज्ञाता पंडित हैं, न तन मन धन अर्पण करनेवाले दश बीस परोपकारी हैं, न शास्त्रानुयायी त्यागी ब्रह्मचारी हैं और न साधु हैं। असल देखिये तो सारी धार्मिक और लौकिक प्रभावनाको खोकर अब हम पशुवत् पेट भरते, बालविवाह, वृद्ध-विवाह और कन्याविक्रय कर अपना सर्वनाश करते, विवाह आदि कार्य्योंमें शक्तिसे अधिक व्यर्थ व्यय कर कर्जदार बनते, स्त्रियोंको मूर्खा रख अभक्ष्य भोजन खाते और घरमें फूटके मजे लूटते, तथा अपनी जाति-वालोंसे भी ईर्षा रख मान पर्वतपर सवारहो एका एक पतन होके इस लोकमें निन्दा और परलोकमें अधो-गति प्राप्त करतेहैं अज्ञानता क्या क्या नहीं कर सक्तीहै।

भा. दि०जैन महासभाकी स्थापना और जागृति.

धार्मिक और सामाजिक व्यवहारमें प्रजाको स्वतंत्रता देनेवाले बृटिशराज्यका अवसर पा सर्व जातियां अपनी२ उन्नतिमें लगगईं। परन्तु जैन जातिकी आँख बहुत पीछेसे खुली। यद्यपि दक्षिणमें हमारे मित्र सेठ हीराचंद नेमचंद सोलापुर और उत्तर हिन्दुस्तानमें पंडित चुन्नीलाल, मुंन्शी मुकुन्दराम आदिने अपने अपने पत्र और व्याख्यानों द्वारा समाजकी नींद तुड़ाने का यत्न किया था परन्तु कोई नियमित संस्था स्थापित नहीं हुई थी। महासभाके स्थापित होनेकी चर्चा वि० सम्वत् १९४९ से प्रारम्भ हुई परन्तु सम्वत् १९५२ में इसका कायदेके साथ प्रारम्भ अधिवेशन श्रीजम्बूस्वामी जी महाराज अंतिम केवली की निर्वाण भूमि मथुरा में हुआ। जबसे आजतक १४ वर्ष इस महासभा को परिश्रम करते बीते हैं। इतने समयमें इसने जैनियोंको जगा दियाहै। प्रत्येक प्रान्तमें उन्नतिकी वासना फैल गई है। जब यह स्थापित हुईथी तब लोग अपनेको जैनी कहतेहुए भय खातेथे परन्तु अब सब साहसके साथ अपनेको जैनी मानते और जैनाभिमान रखतेहैं। यह इसी महासभाकाही प्रताप है। महासभाके प्रतापसेंही स्थान २ में जैन पाठशालाएँ, औषधालय और छात्रालयोंकी स्थापना हुई है। इसी महासभासे

मैंनेभी जागृति पाई और अपने धनको सुकृतमें लगाना

बोर्डिङ्गोंकी आवश्यकता

योग्य समझ सन् १९०० में अपने पिताके नामसे एक छात्राश्रम मुम्बईमें कायम किया। इस बोर्डिङ्गसे तय्यार होकर जबसे मि०चौगले वेलगांव और मि०लट्ठे कोह्लापुरने अपने धर्ममें प्रीति रख दक्षिण महाराष्ट्र देशकी जैनसमाजको जागृति करनेके लिये द० म०जैन सभा स्थापित की तबसे मुझको यह विश्वास हो-गया कि जैनविद्यार्थियोंको अपने धर्म और समाजके बंधनों में बँधाहुआ रखनेके लिये धर्मशिक्षा दाता और सुआचार मार्गमें निता ऐसे छात्राश्रमोंकी प्रत्येक प्रान्तमें आव-श्यक्ता है। इतने वर्षके उद्योगसे ऐसे छात्राश्रम मैसूर, सोलापुर, कोलापुर, अहमदाबाद, इन्दौर, जबलपुर, हुबली, मंगलोर, लाहौर तथा काशीमें स्थापित हुए हैं। आगरेमें प्रयत्न चल रहा है। मेरी रायमें इस ऋषिभूमिमें भी एक छात्राश्रमके होनेकी आवश्यक्ताहै। इतना सूचित करना अनुचित न होगा कि सभी बोर्डिंगोमें द्रव्यकी कमीसे यथोचित उन्नति नहीं होसक्ती॥

धर्मज्ञाताओं-की आवश्य-क्ता है।

हमारी जैन जातिका अंतिम अभीष्ट आत्मकल्याण है। इस निशानेपर नज़र रख जब सारी उन्नति करना अभीष्ट है तब

यही प्रश्न उठता है कि हमारे प्राकृत और संस्कृत ग्रन्थोंके मर्मी तथा लौकिक व्यवहारके ज्ञाता शीघ्र तय्यार होने चाहिये जो त्याग धर्मकी प्रवृत्तिद्वारा उपदेश देवें, इंग्रेजी पढ़ने वालोंको धर्मलीन बनावें, जैनबालकोंको शिक्षा देवें, पूजा प्रतिष्ठादि शास्त्रोक्तकरें, गृहस्थियोंके यहां विवाह आदि संस्कार स्वयं करावें, सरस्वती भण्डारोंकी सम्हाल करें, अपूर्व ग्रन्थोंकी टीका करें तथा जैन धर्मके प्रकाश करनेका प्रयत्न करें। ऐसे सैकडों विद्वानोंकी जरूरत है। परन्तु ऐसी पाठशालाएँ अभी बहुत ही कम हैं जो काशी, आदि स्थानोंमें हैं भी तौ उनमें द्रव्यकी कमी है जिससे अधिक छात्र विद्याभ्यास नहीं कर सक्ते। बिना लाखोंसे मोह छोड़े समाजमें विद्या प्रचार नहीं होसक्ता। इस ऋषिभूमिमें ऐसे विद्वानोंके बनानेका पूर्ण उद्योग होना चाहिये।

उपाध्याया-का उपयोग.

इस ओर जो जैन ब्राह्मण उपाध्याय हैं उनके बालकोंको भले प्रकार विद्याभ्यास कर इतना प्रवीण होजाना चाहिये कि, वे गृहस्थके संस्कार तथा पूजा प्रतिष्ठा शास्त्रोक्त रीतिसे करा सकें। एस उपाध्यायोंको प्रवीण कर अन्यप्रान्तोंमें भेजना

चाहिये, ताकि वे मिथ्या अर्चासे होनेवाले लग्नादि संस्कारोंको मिटाकर जैन संस्कारोंका प्रयोग करें।

ब्रह्मचर्य्याश्रम की जरूरत.

श्रीमहापुराणके उपदेशानुसार हमको एकान्त और शान्त स्थानमें ऐसे ब्रह्मचर्य्याश्रमोंकी आवश्यक्ता है कि, जिनमें जैन बालक ८ वर्षकी अवस्थासे उपनीति संस्कार कर अपने माता पिताका घर छोड़ १० व १५ वर्ष सर्व चिन्तासे रहित हो ब्रह्मचारी अवस्थामें रह विद्याभ्यास करें। इस आश्रमद्वारा दो प्रकारके विद्वान् तय्यार होने चाहिये एक तो लौकिक विद्या (राज्य तथा आजीविका योग्य विद्या) को गौण और संस्कृत धार्मिक विद्याको मुख्यता से जानते हों दूसरे धार्मिकविद्या को गौणतासे जानते हुए लौकिक विद्या में ऐसे प्रवीण हों जिससे वे जापानादि देशों के समान व्यापारी और राज्यपद प्राप्त करनेवाले हों। इस ब्रह्मचर्य्याश्रम के मुख्य संचालक गृहत्यागी निस्पृही सप्तम प्रतिमाधारी ब्रह्मचारी होने चाहिये । जो रात्रि, दिन शुभोपयोग के द्वारा छात्रोंको शुभोपयोगी बनावें।

गृहत्यागी ब्रह्मचारियों के मार्गमें निरोध.

दि० जैनसमाज में बहुत से शास्त्र के ज्ञाता वैराग्य हृदय में प्राप्त कर भी त्यागव्रत नहीं धारण करते इसका मुख्य कारण यह है कि

लोंगोंमें अभक्ष्य भोजन का प्रचार और दान करने की अरुचि फैल गई है। एक तो समाजमें त्यागी हैं ही नहीं और जो दो चार हैं भी तो उन का वैय्यावृत्य और विनय न होनेसे इस त्यागमार्ग की ओर अन्यों का उत्साह नहीं बढ़ता। यदि धर्म की वास्तविक उन्नति करनीहै तो अभक्ष्य भोजन को त्याग ऐसा भोजन अपने घर में बनाकर नित्य खाना चाहिये जिसमें से जब चाहे तब सुगमता से दान दिया जासके। श्वेताम्बर जैन समाज में इस दान के प्रभाव से हजारों गृहत्यागी पुरुष और स्त्री दिखलाई पड़ते हैं। क्यों नहीं हमारी दि० जैन समाज को जागना चाहिये और पात्रदान करने का अत्यन्त भाव रख त्यागमार्ग को उत्साहित करना चाहिये। धर्मोपदेश का प्रभाव त्यागी और निस्पृही व्यक्तियों के द्वारा ही कार्य्यकारी हो सक्ता है।

पात्रदान का प्रचार.

जैनधर्म की स्थिरता उसके प्राचीनग्रन्थों के संग्रह और पठन पाठन से है। खेद है कि इस भारतवर्ष में किसी भी स्थानपर ऐसा एक भी सरस्वती भवन नहीं है जहां सर्वविषयों के

सरस्वतीभवनोंकी स्थापना.

सर्व ही जैनशास्त्र मिल सकें। इसके अभाव से हम पदार्थ के निर्णयसे वंचित रह जाते हैं। जैसे हम को यदि यह आवश्यकता पडी कि प्रतिमाओंके निर्मापणके विषयमें जैनशास्त्रोंमें क्या २ लेखहैं। यदि इस सम्बंधके सर्वशास्त्र एक स्थानम पाये जावें तो खोजकर्ता एक घंटे में ही सर्व नोट कर लेवे। आज सरस्वती भवनोंके अभाव से एक छोटीसी बात जानने के लिये हर स्थान के पंडितों को पत्र लिखने पड़ते तौ भी ग्रन्थोंके एक स्थलपर नहोनेसे यथोचित निर्णय बहुत कालमें भी नहीं होता। हमारी जैन समाजको तन मन धन व्ययकर महासभा के भूतपूर्व सभापति बाबू देवकुमार आरा निवासीकी अँतिम इच्छाको पारिपूर्ण करना चाहिये ॥

स्वरस्वती भण्डारोंकी सम्हाल.

हमारे मूर्ख जैनपंच अज्ञानवश जैनग्रन्थोंके संग्रह को भी रुपया मोहर समझ तिजोरी में बंद रखते, न कभी देखते और न दिखाते हैं हाय ! इस मूखर्ता ने हजारों ग्रन्थों को रद्दी बना दिया। मैं सर्व पंचायातियों को चिताता हूं कि इस भूलको छोडो अपने २ पास के भंडारों को खोलकर शास्त्रों की सूची बनाओ तथा उनको उत्तम वेष्टनों में लपेट कर सुन्दर अलमारियों में इस तरह विराजमान करो जिससे उनमें

शर्दी आदिकी बाधा न हो और जो कोई चाहे उसे पढ़नेको दो ग्रन्थ ज्ञान प्रचार के वास्ते हैं न कि बन्द रखकर केवल हाथजोडने के लिये।

जयधवल महाधवल. श्रीमूडबद्री में संगृहीत सिद्धान्तशास्त्रश्री जय धवल महाधवल हमारी अज्ञानतासे अत्यन्त जीर्ण होगये थे। यदि हमारे मित्र सेठ हीराचंद नेमचंद सर्व भाइयोंको प्रेरणाकर और द्रव्य एकत्र कर इनकी नकल करानेका प्रबन्ध नहीं करते तो आजतक यह और भी जीर्ण होकर अक्षर उलखने योग्य भी नहीं रहते। यह महान ग्रन्थ कनड़ी और हिन्दी बालबोध लिपि में लिखकर प्रायः समाप्त होनेपर है। मैं सर्व जैन विद्वानों को सूचित करता हूं कि वे इस स्थलसे वहां पधारें और आठ, दस दिन ठहर कर उन ग्रन्थों को बांचकर सर्व श्रावकमंडली को सुना कर उनके चर्म-कर्ण और द्रव्य मन को सफल करैं॥

प्राथमिक शिक्षा. प्रत्येक जैनी को योग्य है कि वह अपने पुत्र और पुत्रियों को जब वे ५ वर्ष के हों तब हीं से अक्षर ज्ञान करा सामान्य धर्म और व्यवहारिक शिक्षा देवें और इस अभिप्राय से जैन पाठशाला और कन्याशाला स्थापित करें। इन शाला-

ओं में योग्य पुस्तकोंका प्रचार, योग्य अध्यापकोंका सम्ब-

जैन यूनिवर्सिटि अथवा परीक्षालय

न्ध; उचित देखरेख तथा कहीं कहीं द्रव्य से सहायता करने के लिये परीक्षालय के दृढ़ होने की आवश्यकता है। बिना योग्य विद्या प्रचारिणी कमिटी (सिनेट) के निरीक्षणके जैनबालक और बालिकाओं का कल्याण नहीं हो सक्ता।

तीर्थस्थानों की रक्षा.

वर्तमान में धनके उपार्जन और विषय भोग की तृष्णाने संसारी जनों को ऐसा लोभी बना दिया है जिससे वे जैनतीर्थस्थानों पर भी आक्रमण करने में कुछ अन्याय नहीं समझते। ऐसे समय में जैनियों को चाहिये कि अपने सर्व तीर्थों की पक्की मजबूती कर लेवें जिससे कोई भी हानि न कर सके। तथा प्रत्येक तीर्थ के भंडार का हिसाब किताब दर्पण समान रखकर प्रत्येक वर्ष प्रगट करें। और द्रव्य को तीर्थ की उन्नति में खरचा करें। भा० दि० जैनतीर्थक्षेत्र कमेटी को तीर्थरक्षक समझ उसकी सम्मति से सर्व प्रबन्ध करें। जैनियों को यह भी योग्य है कि

कुरीति निवारण का प्रयत्न.

जो २ कुरीतियां इस समय उनको हानिकारक समझ में आती हैं उनको अपनी जाति से अलग करें। इस दक्षिण के मूडबद्री सम्बन्धी कनैडा प्रान्तमें एक कुरीति ऐसी

प्रचलित है कि जिसके कारण बहुत से जैन कुटुम्ब शीघ्र निर्धन होजाते अथवा उनकी जायदाद सर्कार में जब्त होजाती है। वह कुरीति यह है कि पिता की जायदाद का स्वामी उसका पुत्र न होकर उसकी बहन और बहन का पुत्र होता है। यदि बहन न हुई तो सर्व द्रव्य सर्कार में जाता है और सगे पुत्र निर्धन हो जाते हैं। करीब ८० कोसमें यह रीति प्रचलित है जिससे ब्राह्मण जाति मुक्त हैं। यह रीति जैन और अजैन सर्वके धर्म शास्त्रोंके विरुद्ध है। जैनियोंको चाहिये कि एकता करके गव को प्रार्थना कर इस नियमको बदला कर शास्त्रोक्त नियम करावें।

जैनसमाज की उन्नति में एकता की जरूर.

हमारी दि०जैन समाजमें एकता होना चाहिये। समाज में नये ढंग के इंग्रेजी पढे विद्वान और पुराने ढंगके भाइयों को एकसाथ मिलकर काम करना चाहिये। भा० दि० जैन ग्रेजुएट एसो० में सर्व इंग्रेजीपढे भाइयोंको मेम्बर होकर महासभा को सहायता दे महासभा को बलवान बनाना चाहिये।

जैन तत्व जगत विस्तृत कैसे हो.

बौद्ध धर्मकी अपेक्षा जैन धर्म अपने निर्मल अहिंसा तत्व के कारण जगत में शीघ्र फैल सक्ता है। इस का उपाय यह है कि जैनसमाज

को कमसे कम ऐसे दो विद्वान तय्यार करना चाहिये जो अपना जीवन जैनधर्म के प्रचारमें बितावें । किसी तीव्र-बुद्धि बालक को साधारण धर्मविद्याके साथ २ एम.ए.तक इंग्रेजी में पढा फिर उसको संस्कृत और प्राकृत जैन सिद्धांतों में प्रवीण करा देना चाहिये जिससे वे अष्टसहश्री गोमट्टसार, श्लोकवार्तिक, आदिको भली प्रकार समझ लेवें । ऐसे विद्यार्थी की संतुष्टता के लिये उसको, १००) व २००), व इससे अधिक मासिक की सहायता दी जावे । तथा पढानेके पश्चात् उससे जैन धर्मके प्रचारका काम लिया जावे तब भी उसकी इच्छा-नुसार उसे धनसे सहायता की जावे दूसरा एक विद्वान् ऐसा तय्यार किया जावे कि वह बाल्यावस्थासे संस्कृत प्रारम्भ कर शास्त्री परीक्षा तक कुछ लौकिक विद्याके साथ जैन धर्मशास्त्रोंमें प्रवीण हो फिर इंग्रेजीमें एम. ए. पास करे । इसको भी जीवन पर्यंत उसकी इच्छानुसार द्रव्य की सहायता की जावें । यदि जैन समाज ऐसे दो विद्वान तय्यार कर दे तो इस जगतका बड़ाभारी उप-कार हो लाखों मनुष्य सम्यक् उपदेशको प्राप्त कर अपना कल्याण करें ।

स्वार्थत्याग
Sacrifice

समय अधिक हो चुका है अब मैं अधिक कुछ न कहकर अन्तमें इतना अवश्य प्रकाशित करूंगा कि विना स्वार्थका त्याग किये कभी जैन समाज की उन्नति नहीं होसकती। धनाढ्यों को लाखों रुपया दान करना चाहिये। विद्वानों को अपना जीवन विद्याप्रचार में देना चाहिये, परोपकारियोंको कष्ट सहकर भी समाजका उपकार करना चाहिये। जो जो भाई अपना जो २ बल जैन समाज के उपकारके लिये बलिदान करसक्ता है उसको उस उस बलका दान कर अपना क्षणस्थायी जीवन सफल करना चाहिये।

व्यापारियों और पेंशन लेनेवालों-का कर्तव्य.

स्वार्थ त्याग का एक बहुत सुगम उपाय यह है कि जो व्यापारी बहुत समय तक व्यापार करके धन कमा चुके और अपने पुत्रोंको सामर्थ्यवान बना चुके हैं तथा जो सर्कारी नौकरी करके पेंशन पाते हैं उनको चाहिये कि अपना शेष जीवन जैनधर्म और जाति की उन्नति तथा आत्मकल्याणमें बितावे।

महाशयों! मैं इतनाही कहकर बैठता हूं, और आप सर्व सभासदों और प्रतिनिधियोंसे प्रार्थना करता हूं कि

आप लोग जैनधर्म और जैनजातिकी उन्नतिके उपा-
योंपर सम्यक् तया विचार कर एक मतसे प्रस्ताव
निर्णय करैं और फिर उनको अमल में लानेका मन
वचन और कायसे प्रयत्न करैं ।

इति शम्.





॥ श्रीः ॥

श्रीमती भारतवर्षीय—

दिगम्बर (जिनधर्म संरक्षिणी)

जैन महासभाके अधिवेशन

मुजफ्फर नगरपर।

श्रीमान् रायसाहिब द्वारकाप्रसादजीका

व्याख्यान।

"जीवन प्रेस" में मुद्रित

नं॰ १४ कालाकार ष्ट्रीट, कलकत्ता।

सम्वत् १९६७।

प्रति २०००।

॥ श्रीः ॥

श्रीमती भारतीय दिगम्बर जैन महासभा के अधिवेशन पर सभापति

श्रीमान् रायसाहिब द्वारकाप्रसादजीका व्याख्यान ।

मिती चैत्र शुक्ला २ सं० १९६८
ता० १ अप्रैल सन् १९११ ई०

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

बन्धुवर्गो !

मैं आप सज्जनों के समीप अपनी कृतज्ञता प्रकाश करने को और धन्यवाद देनेको असमर्थ हूं जो आप महाशयोंने अनुग्रहपूर्व्वक मुझजैसे अल्पज्ञ को ऐसे महान कार्यका भार सौंपा। मैं सभापति के योग्य कदापि नथा किन्तु आप लोगोंकी आज्ञापालन करना और जाति सेवा करनी अपना धर्म समझ कर यह माननीय आसन ग्रहण करताहूं। मैं प्रार्थना करताहूं कि आप सब महाशय मेरी सहायता करेगें और इस महान जाति कार्यको निर्विघ्न सम्पादन करेंगे। मैं श्रीजिनेन्द्रदेव से प्रार्थना करता हूं कि हमारी इस जैन जाति हितैषिणी महासभा की दिन २ उन्नति हो और मैं जाति सेवामें सदा तत्पर रहूं।

महाशयगण ! प्रथम मैं यह उचित समझता हूं कि हम सब हमारे स्वर्गीय सम्राट श्रीमान्

सप्तम एडवर्ड की मृत्यु के लिये शोक प्रकाश करें और उनकी आत्माकी शांतिके लिये श्री जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना करें और श्रीअरिहन्त देव से प्रार्थना करें कि हमारे वर्त्तमान सम्राट श्रीमान् पञ्चम जार्ज दीर्घायु होवें और अपने पिता की तरह न्यायशील, धर्मज्ञ और प्रजा वत्सल्य होवें। यह कहना वाहुल्य होगा कि हम इस राज्यमें सर्व प्रकारके सुख और नाना प्रकार की स्वाधीनता भोग कर रहे हैं। आप लोगोंको प्रगट होगा कि और राज्योंमें मनमानी धर्म चर्चा करनी, जाति उन्नति करनी, कानफ्रेन्स और महासभा करनी इतनी सुलभ न थी।

सज्जन भाईयो! इस जैन जातिकी वर्त्तमान् अवनति के पांच मुख्य कारण हैं, और वे यह हैं (१) आपसी ईर्षा-द्वेष, (२) विद्या व स्त्री शिक्षाका अभाव, (३) व्यर्थ व्यय (४) कुरीति प्रचार, (५) कुसंस्कार।

(१) आपसी ईर्षा-द्वेष।

आज कल भारतवर्षमें ईर्षा व द्वेष इस तरह की उन्नति को पा रहा है और तो क्या एक भाई दूसरे भाईका धन, पिता पुत्र की उन्न

अवस्था को नहीं देख सकता। वे रात दिन यह ही चाहते हैं कि दूसरे की उन्नति न हो। यदि कालक्रम से दूसरे की अवनति ही हुई और उस में अपनी भी कुछ हानि हुई तो वह अपनी हानि को भूल कर दूसरे की अवनति को देख कर हर्षित होते हैं। भाईयोंमें इस तरह का द्वेष फैला हुआ है कि यदि किसी अन्य मनुष्य से अपने भाई का झगड़ा चल रहा है और अपना भाई सहायता प्रार्थी है तो अपने भाई की सहायता नहीं करते बल्कि दूसरे की सहयता के लिये जारहे हैं तो बताईये कि इस तरह की ईर्षा, द्वेष में किस तरह से जाति उन्नति या धर्मोन्नति हो। सो भाईयों! ऐसी ईर्षा, द्वेष को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

(२) विद्या व स्त्री शिक्षा का अभाव।

प्यारे भाईयो! हमारे जैनी भाई यही सोचते हैं, कि हम तो वनिये हैं, हम को विद्या से क्या काम, जिससे हमारी दूकानदारी चली जाय, बस हमको उतना ही बहुत है। इस कारण वे अपनी संतान को टूटी फूटी नागरी, महाजनी या मारवाड़ी सिखा कर चुप रह जाते हैं, वे यह नहीं

समझते कि विद्या से उनको क्या क्या लाभ हैं। वह यह नहीं समझते कि जाति उन्नति, देश उन्नति और धर्मोन्नति के लिये सब से पहिला रास्ता विद्या ही है। बिना विद्या के आपको क्या मालूम होगा कि संसार में क्या हो रहा है आपसे पहिले बड़े २ महात्मा, धर्मात्मा, ऋषि मुनि इत्यादि पूर्व पुरुष क्या २ कर गये हैं, किस तरहसे जाति धर्म व देशकी उन्नति होती थी और हो सकती है, अन्य धर्मावलम्बियों की पुस्तकें पढ़ कर ही हम जान सकते हैं जैनमत सबसे श्रेष्ठ है इसकी उन्नति में हमको क्या २ लाभ हैं दूसरे मतावलम्बी किस तरह से अपने धर्म की उन्नति कर रहे हैं, पुरा कालमे ऐसी धर्म की उन्नति थी और धर्मपर ऐसा सच्चा विश्वास था कि छोटे २ बच्चे भी सुशिक्षित थे और अपने धर्म में ऐसे दृढ़ थे कि धर्मके कारण अपने प्राण देदेते थे इसके उदाहरण इतिहास में बहुत मिलेंगे, यह सब बात बिना जाने आप किस तरहसे धर्मोन्नति कर सकते हैं? यह सब बात जानने के लिये विद्या की बहुत ही जरूरत हैं। स्त्री शिक्षा की जरूरत कम न समझिये,

देखिये, स्त्री शिक्षा के बिना घर घरमें सास बहू की, स्वामी स्त्री की लड़ाई सर्वदा होती रहती है और इनही के झगड़ों से पिता पुत्र में द्वेष पैदा होजाता है। इस वास्ते स्त्री शिक्षा की बहुत ही जरूरत है, प्रायः सर्व जातिकी कन्यायें और स्त्रीयें शिक्षिता हैं और अपने धर्म विषे दृढ़ हैं, किन्तु जैनजाति में ऐसी वहुत ही कम हैं। कमसे कम नागरी तो अच्छी तरहसे और कुछ संस्कृत भी कन्याओंको पढ़ानी उचित है जिससे वह अच्छी तरह स्वाध्याय कर सकें और जैन धर्मकी रीतिनीति को अच्छी तरह से जानलें और धर्म की उन्नति हो यह प्रत्यक्ष है कि स्त्री को पुरुषसे ज्याद: विश्वास होता है और धर्म में रुचि होती है। धर्म की उन्नति स्त्रियोंही के हाथ में है, कारण माता जैसा निज जानती है, वैसा ही पुत्र को बाल्यकाल में उपदेश दिया करती हैं और तभी से मनुष्य शिक्षा पाता रहता है, सो इस कारण स्त्री शिक्षा मुख्य है और इसकी सबसे पहिले जरूरत है। बच्चोंको पहिले मातृभाषा अच्छी तरह सिखा कर फिर दूसरी भाषा सिखानी चाहिये। मेरी सर्व्व भाईयों से प्रार्थना है, कि वे पहिले स्त्री शिक्षा की तरफ ध्यान देवें।

(३) व्यर्थ व्यय ।

प्यारे भाईयों ! व्यर्थ व्ययका रिवाज हमारी जैनजातिमें ऐसा बढ़ रहा है, कि जैनी भाई जरा सी देरके यशके वास्ते हजारों रुपयों का पानी कर देते हैं। अपनी सन्तान के विवाह आदि शुभ कार्यों में, रंड़ी भडुओं में, बागबाड़ी में रुपया फूक देते हैं। जिस लक्ष्मी को सिर का पसीना पाँव पर डाल कर उपार्ज्जन करते हैं, उसीको अपने हाथों से फंकते हैं। हमारे भाईयों को यह भी मालूम होगा कि रंडियां जो रुपया पाती हैं। उसमें से ५) रुपये सैकड़ा कुरबानी के वास्ते अलहदा निकाल कर रख लेतो हैं और फिर उसी रुपये से गाय या बकरे की कुरबानी कराती हैं तथापि हमारे भाई ऐसे ही कामों में रुपया डबोते हैं। इसमें जीव हिंसा की जीव हिंसा और व्यर्थ व्यय का व्यर्थ व्यय और जो बिचारे अंधे, भूखे, लंगड़े, लूल्हे हैं, वे खाने के अभाव से मुसलमान, ईसाईबन जा तेहैं। तो बताईये, कि किस प्रकार जाति उन्नति हो।

आप जो धन रंड़ी भडुओं में उड़ा देते हैं, यदि वह धन किसी धर्म कार्य में (जैसे किसी अनाथालय) में लगावें तो कितना लाभ होवे। छूरी मार लोग आप को डर दिखा कर पैसे

लेजाते हैं किन्तु जो अंधे या भूखे हैं उनको आप दूर्वचन कहकर निकाल देते हैं। शोक ! शोक !

(४) कुरीति प्रचार।

हमारी इस पवित्र जैनजाति में वृद्ध विवाह, बाल विवाह, कन्या विक्रय आदि कुरीतियों का बड़ा प्रचार होरहा है। इस कारण जैन विधवाओं की वृद्धि, पुरुषों मे निर्बलता व साहस हीनता होती जाती है और जैनियोंकी संख्या घटती जाती है। हमारे बुद्धिमान भाई स्त्रियों की हबसे, धनके लोभ से अपनी संतान को ऐसी घोर संकट में डाल देते हैं कि सारी उमर उनके मुखसे दुरशीश सुना करते हैं। इन कुरीतियों के निवारन के वास्ते स्त्री शिक्षा की विशेष कर आवश्यकता हैं कारण,यदि स्त्रियां इन बातोंको समझ लेंगी तो कुरीति प्रचार बन्द हो सकता है।

(५) कुसंस्कार।

जैन जाति में कुसंस्कारोंकी वृद्धि और सुसंस्कारों का अभाव होता जारहा है। जैनी भाई अपनी संतान के विवाह आदि शुभकार्य जैसे ब्राह्मण लोग कर देते हैं उसी तरह से मान लेते हैं। जरा भी उनकी बात पर ध्यान नहीं देते, और न यह विचारते हैं किस प्रकार होना चाहिये, इससे जैन जातिको बड़ी हानि पहुचती है,

क्योंकि, जब धर्म की वृद्धि न हुई तो जातिकी उन्नति कैसे हो ? और २ भी कुसंस्कार बहुत हैं जबतक ये दूर नहीं होंगे तबतक धर्म की उन्नति नहीं हो सकती। जैनी भाईयोंको उचित है कि वे अपनी संतान के बिबाह आदि शुभ कार्य जैन पद्धति अनुसार कार्य करनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा करलें!

बस, मैं इतना कह कर अपना वक्तव्य समाप्त करना चाहता हूं कि भाईयोंको चाहिये वे उक्त कथित बातों पर अच्छी तरह ध्यान देकर, जैन जातिकी अवनति दशाको देखकर घोरभ्रम निद्रा से जागें और जाति उन्नति करें। आप जागें, दूसरोंको जगावें, जैन ग्रन्थों व जैन प्रत्रिकाओं का प्रचार करें और अपने वच्चोंको शुरू ही से उत्साही बनाना आरम्भ करदें। जरा २ बातों पर भाई भाई से लड़कर अदालत न जाया करें, आपस में फैसला कर लिया करें या पंचायत से फैसला करा लिया करें।

हे मित्रो ! आपने इतनी देर तक मेरे तुच्छ भाषाण को सुना उसके वास्ते मैं आप महाशयोंका बड़ा अभारी हूं और यदि इसमें कोई अनुचित बचन का प्रयोग हुआहो तो उसके वास्ते क्षमा प्रार्थी हूं बोलो भाई ! श्रीजिनेन्द्र भगवान की जय। समाप्तम्

जातिसेवक—द्वारकाप्रसाद अग्रवाल जैन नटौहर जिला बिजनौर।

श्रीमति दिगंबरजैन मालवा प्रांतिक
सभाके इंदोरके नैमित्तिक
अधिवेशनमे सभापति

श्रीयुत हिराचंद नेमचंद सोलापूरवाले

आनररी माजिस्त्रेटका

व्याख्यान.

श्रीयुत हिराचंद नेमचंदने सोलापूरमे गोविंद बळवंत
बाकळेके श्रीलक्ष्मीविजय स्टीम प्रेसमे
प्रकाशित किया.

ता. ४ अप्रेल सन १९१४.

मोक्षमार्गस्यनेत्तारं भेत्तारं कर्मभूभृतां ॥
ज्ञातारं विश्वतत्वानां वंदेतद्गुणलब्धये ॥ १ ॥

मोक्ष मार्गको प्रवर्तावनेवाले, कर्मबंधरूपी पर्वतोंकू छेदनेवाले, संपूर्ण तत्वोकों जाननेवाले ऐसे सर्वज्ञ भगवानको इन गुणोंकी प्राप्तीके लिये मै नमस्कार करताहों.

प्रिय सज्जन प्रतिनिधिगण, धर्मबंधू और धर्मभगिनीओ, आज अत्यंत हर्षका समय है जो इस मालवा प्रांतके सभाके नैमित्तिक अधिवेशनमे आप अपनी उन्नति करनेकी उत्कट इच्छासे इस स्थानपर एकत्रित हुएहै. ऐसे महान सभाका सभापतित्व आपने मुझको प्रदान किया जिससे मैं आपका बडा आभारी हों; और मैं अपने अंतःकरणसे कहेता हों कि ऐसे भारी काम शिरपर लेनेकी मेरी ताखत नहीं हैं, सबबकि, न तो मैं विद्वान हों और न धनवान हों. मैंतो केवल अपने धर्मबंधूओंका सेवाधारक हों. इस हिसाबसेही जो कुछ आप महाशयोंकी आज्ञा हुई उसका उल्लंघन न करके शिरसा मान्य करना यही मैं आपना कर्तव्य समझताहों.

भ्रातृगण, इस भारत वर्षमे जैनीयोंकी संख्या औरोंके मुकाबलेमे बहोतही थोडी है, लेकिन तमाम भारतवर्षके सभी प्रांतोमे वह फैल रहीहै. उत्तरमे जैपूर, आग्रा, दिल्ली, काश्मीर रावळपिंडी देरागाजीखानतक; दक्षणमे म्हैसूर, कांची, तंजावर मद्रासतक; पूर्वमे बनारस,

आरा, कलकत्ता रंगून मांडलेतक; और पश्चिममे बंबै, सूरत, आमदाबाद, काठिवाड कच्छतक. ऐसे इस भारतवर्षके चौंतरफ फैली हुई जैनियोंकी वस्ती देखनेमे आतीहै. जैसे जंबूद्वीपके मध्यभागमे विदेह क्षेत्र शोभताहै वेसा यह मालवाप्रांत सबके मध्यभागमे सुशोभित है. मालवाप्रांत धनधान्यादि ऐश्वर्योंसे जैसा संपन्न है वैसाही धर्म कार्योंमे दत्त चित्त ऐसे उदार पुरुषोंसेभी भरा हुवाहै. तीस बर्ष पहेले मैं इंदोर आयाथा उस समय भाई साहेब बेनीचंदजी साहेब, श्रीमान फत्तेचंद कुसलावाले नाथुरामजी, चुनीलालजी, हिरालालजी, चंपालालजी इत्यादि धर्मात्मा महाशयोंसें यह नगरी हि क्या परंतु संपूर्ण मालवाप्रांत प्रकाशमान हो रहाथा. जैसे लक्ष्मीवान और उदार चित्तवाले धर्मात्माओंसें यह प्रांत चमक रहाथा, वैसेही जैन सिद्धांतके ज्ञाता विद्वान शिरोमणि पंडित भागचंदजी, पंडित जरगदलालजी और न्याय दिवाकर पंडित पन्नालालजी इत्यादि बडे बडे दिग्गज शास्त्रविशारद पुरुषभी इस मालवाप्रांतमे दौरा करते मिथ्यात्व अंधकारको दूर करनेमे मानू सूर्य समान प्रकाशित थे. जबसे आजतक यह मालवाप्रांत धनाढ्य, उदार और विद्वान पुरुषौंसें दिनदिन उन्नत्तिपर बढता देखनेमे आताहै. इसी कारणसे मैं इसको जंबूद्वीपमेके विदेह क्षेत्रकी उपमा दिईहै.

सज्जन महाशय, यदि विदेहक्षेत्र भरत ऐरावत क्षेत्रोंके अपेक्षासे बहोत कल्याणकारी है, तोभी वह क्षेत्र इन क्षेत्रोंके समान कर्मभूमिही है. वहांपर भी शुभाशुभ आस्रव बंध होते रहते है; उनको संवर निर्जराके उपायोंसें दूर करके मोक्ष प्राप्त करलेना पडताहै. वैसाही यह मालवाप्रांत धनाढ्य, उदार और विद्वान धर्मात्माओंसें अन्य प्रांतोंकी अपेक्षासे बहात बढकर है, तोभी इसमेभी उन्नत्तीकी पूर्णता होचुकी ऐसा नहि समझना चाहिये. यहांपरभी और प्रांतोके समान केई त्रुटियां विद्यमान है, जिसको किन किन उपायोंसे दूर करें इस अभिप्रायसेही इस मालवाप्रांतिक सभाकी स्थापना हुई है, और हरसाल अधिवेशन होताहै. देखिये, इस त्रुटि-

योंके विषयमे श्रीमान दानवीर शेट हुकुमचंदजी साहेबने बंबै प्रांतिक सभाके श्री तीर्थ क्षेत्र पालिताणाके गत माघ मासके अधिवेशनमे सभा पतीके व्याख्यानमे क्या कहा हैं. "पूर्व समयमें जिस धर्म्मकी उन्नतिके लिये हमारे पूर्वजोंने अपना सर्वस्व अर्पण कर सारे संसारमें धर्मका डंका बजाया था, खेद! और महाखेद !! है कि आज उसी धर्म्म और उन्हीं ऋषियोंकी अनुयायी संतानके अन्दर धार्मिक विद्याका अभाव, सदाचारका अभाव, अनैक्यता, बाल्यविवाहादि धर्मके अधः पतन होनेके कारणोंकी वृद्धि हो रही है। प्राचीन और आधुनिक समयमें जमीन और आसमानका भेद हो गया है । जहां जैन धर्म्मके श्रद्धानी मनुष्य मात्र थे, वहां आज जैन कुलोत्पन्न भी जैन धर्म्ममें सशंकित हो रहे हैं । जहा श्रावकाचारयुक्त धर्मज्ञ श्रावक, श्राविकाओंके झुंड दृष्टि पडते थे, वहां आज श्रावकाचारके नाम तकको न जाननेवाले जीव दृष्टिगोचर हो रहे हैं। जहां पात्रदान, करुणादानकी प्रचूरता थी वहां आज बहु संख्यक भाइयोंमें उसका नाम तक नही सुना जाता । जहां धनंजय सेठ सरीखे जिनेन्द्रभक्त पुण्यात्मा सुशोभित थे वहांपर आज धर्ममर्मसे अज्ञ समाजका बहु भाग दिखाई देता है। पूर्वकालमें जहां तत्त्वचर्चा करनेवाली आत्मीक शांति प्राप्त करनेवाली भव्य मंडलियोंकी गिनती नहीं की जाती थी, जहां धार्मिक उपदेश, आध्यात्मिक ग्रन्थोंके पाठी दृष्टिगत होते थे, वहां आज विकथाओंके पाठी दीख रहे हैं। जहां धार्मिकगण आपसमें एक दुसरे धर्मात्माओंके साथ कंठसे कंठ लगाकर मिलते थे ओर आत्मिक उन्नति, धर्म्मोन्नतिकी वार्तायें कर आनन्दको प्राप्त होते थे, वहां आज कलह-पिशाचिनी और आपसी ईर्षा द्वेष-बुद्धिने अपना डेरा जमा रखा है। जहां जैनालयोंके संस्थापक जिनेन्द्र देवकी पूजा करनेवाले, परमभक्त अनेक बडे २ धनाढ्य और राज्यकर्ता पुरुष-रत्न थे; जो जिनेन्द्रदेवकी पूजा कर अपना सौभाग्योदय समझते थे । वहां आज अनेक धर्मायतनों (जैन मंदिरों) की ऐसी शोचनीय दशा हो रही है कि उनके

लिये वेतन देकर पूजा करनेवाले पूजारी रक्खे जाते हैं। जहां आचार विचार ऐसे शुद्ध होते थे कि साधारण श्रावकोंके घरोंमें मुनियोंको शुद्ध आहार प्राप्त होता था, वहां आज हमारे घरोंकी यह दशा हो रही है कि उनमें भक्ष्य अभक्ष्य, शुद्ध अशुद्धका प्रायः बिलकुल विवेक उठ गया; अतएव यदि एक मामूली त्यागी भी कोई आ जाता है तो उसका सुभीता कठिन दिखता है। हम लोगोंको बाजारकी बनी हुई अभक्ष्य चीजोंके लेने खानेमें भी कुच्छ संकोच नही रहा, जूता पहिने चलते २ खाना बडा स्वाद देनेवाला समझा जाता है, यह समयकी खूबी है।

अब आप अपने उन भ्राताओंकी तरफ भी दृष्टि डालिये, जो छोटे २ गांवोमें निवास कर रहे हैं। उनपर दयाबुद्धि धारण कीजिये कि वे आपके भोले भ्राता बिना सच्चे धर्मोपदेशके, बिना सद् विद्याके, अज्ञानतावश अपने कर्तव्यसे च्युत होते हुए मिथ्यात् कूपमें पडकर आत्महितका घात कर रहे हैं। यहां तक कि मिथ्योपदेशियोंके कुसंगसे निज धर्म्म छोडकर अन्य धर्म्मकी शरण ले लेते हैं.

यही कारण है कि प्रतिवर्ष आपकी यह जाति घटती जा रही है। भाइयो। अब अपनी गफलतकी नींदको छोड अपनी सच्ची वात्सल्यताका इस प्रकार पूरा परिचय दीजिये कि उपर्युक्त अवनतिके कारणोंके दूर करनेके लिये और इन अपने सहोदर भोले भ्राताओंके उद्धारके लिये हार्दिक प्रीतिके साथ प्रयत्नशील हो कर उपयोंको अमलमें लाइये, तभी धर्मोत्साह भी प्रगट होगा।"

सज्जन वृंद, इसमुजब अपने मालवा प्रांतके अग्रणी शेट हुकुमचंदजी साहेब पुकार रहेहै. यह पुकार समस्त भारत वर्षके जैनियोंके लिएहै क्योंकि भारत वर्षीय दिगंबर जैन महासभा, बंबैप्रांतीक सभा, दक्षिण महाराष्ट्र जैन समाज, पंजाब प्रांतिक सभा, बंगाल प्रांतिक सभा,

मध्यप्रांत और वऱ्हाड प्रांतिक सभा, मद्रास प्रांतिक सभा, म्हैसूर प्रांतिक सभा, खंडेलवाल दिगंबर जैनसभा,. इत्यादि सभाएं केई बरसोंसें इसही तृटियोंको पुकारती हुई इलाज करनेमे कटिबद्ध हुई है. वैसे मालवा प्रांतमेभी और प्रांतोके समान अपने जैनी भाईयोंमे बहोत कुछ कुरीतियां देखनेमे आती है; जिसके मेटनेके इलाजमे प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है. यह प्रयत्न बडा कठिण है ऐसा कोई समझते होंगे. लेकिन अपने पूर्वाचार्योंके पारमार्थिक उपदेशसें जैनी भाई-योंका अंतःकरणरूपी भूमिशोधन इतना शुद्ध बन गया है कि, इसको यथार्थ उपदेशरूपी जलसिंचन मिलता रहे तो इसमे सम्यक्त रूपी वृक्ष अच्छी तरहसे वृध्धी पाकर ज्ञान चारित्र रूपी फल पुष्पोंसें थोडे ही दिनोंमे प्रफुल्लित होगा. यदि जैनी भाईयोंमें उच्चप्रतीकी पाश्चिमात्य भाषाका साहित्य ज्ञान, कला कौशल्य इत्यादि विद्याओंका सद्भाव बहोत न्यून देखनेमे आता है; और संस्कृत भाषाका साहित्य, न्याय, सिद्धांत और अध्यात्म ग्रंथोंके जानकार बहोत विरले देखनेमे आते हैं, तोभी इनके अंतःकरणमे अहिंसा धर्मका बीज इतना मजबूत ठसाया गया हैं कि किसी जैनी भाईको कहाकि एक लाख रुपिया तुझे देते हैं एक चीडीको तू अपने हातसे मारदे तो वह कभी नहिं मारेगा!! तो फिर शिकार करनेका महा पापकार्य जैनीयोंसे कोसो ही दूर समझना चाहिये. मांसभक्षण और मद्य-पानका व्यसनी ऐसा जैनी कोई नहि मिलेगा. वेश्यागमन, परस्त्री सेवन, चोरी और जुवा इन दुर्व्यसनोमेभी अन्य धर्मीओंके मुका-बलेमे जैनी बहोत कम मिलेंगे. ऐसा कहनेसे अकेला मैही अपने जैनी भाईयोंकी तारीफ करताहौं ऐसा नहि समझना चाहिए. इस बाबदके समालोचक विद्वान जो दुनियाभरके मनुष्योंके आचरणका निरीं-क्षण और समालोचन करनेवाले निप्पक्षपात बुद्धीसे कह रहेहैं. देखिये, इस विषयमे महामहोपाध्याय डाक्टर सतीश्चंद्र विद्याभूषण क्या कहते है:—

" But the Jain conception of the life of a householder even is so very unexceptionable that India may well be proud of it. The householder should make "Ahinsa" the motto of his life. He should not only abstain from killing the animals for their flesh, but should not do the least harm to any the smallest of them, and must do without animal food of all kinds. It is not my intention, gentlemen, to enter into the details of the numerous but excellent regulations about their food and ways of life; suffice it to say that they are remarkably temperate in eating and that their food is scrupulously clean and uncommonly simple. In many respsets these meek and harmless Jains, though numerically not exceeding fifteen lacs, would be an ornament to any society, however civilised."

अर्थातः—"किंतु एक गृहस्थी जैनीकीभी कल्पना ऐसी ऊंचे दरजेकी देखनेमे आती है कि, जिससे यह भारतवर्ष शोभायमान दिखता है. जैनी गृहस्थ अपने जनमको अहिंसासेही सफल मानता है. जानवरोंका मांस खानेके लिए उसका प्राण लेना येतो दूरही रहो, लेकिन छोटेसे छोटे प्राणियोंका भी कोई सबबसे घात करना अथवा उनकूं दुःख देना उनको पसंद नहीं. कोई तरेका मांसाहार न होना पावे ऐसी खबरदारी रखते है. गृहस्थो, उनके खानपानकी अनेक तऱ्हेकी उत्कृष्ट क्रियांयोकी और दिनचर्याकी तारीफ करनेकी मेरी इच्छा नही है. लेकिन मेरा इतना कहेना बस होगा कि, जैनी लोकोंके खानपानके नियम बहोतही तारीफ करने लायख है. उनका आहार अत्यंत शुद्ध और बहोतही सादा रहेता है. इनकी संख्या यदि पंधरा लाखसे ज्यादा नहीं है, तोभी इनमे जो सौम्यवृत्ति और निरुपद्रवता देखनेमे आती है, सो एक कैसीभी सुधरी हुई कोम क्यौं न हो उसको एक अलंकार रूप शोभा दे रही है."

इसपरसे ज्ञात होता है कि, जैनीयोंका अंतःकरणरूपी भूमिशोधन बहोत अच्छा हुवा है. और यह भूमिशोधन करनेमे हमारे परमपूज्य आचार्य परमेष्टीने हमारे ऊपर बडा उपकार किया है. हरयेक प्राणी अपने अपने किये कर्मोंके अनुसार सुख दुःख भुगतेंगे. भगवान सर्वज्ञ प्रभू तो पाप पुण्यका फल बतलानेवाले और संसार दुःखोंसे छूटनेका जो मोक्ष मार्ग उसको दिखानेवाले है. जिससे अपना भला बुरा होनहार अपनेही हातमे है. और साधन तो निमित्तमात्र हैं, ऐसा परम कल्याणकारी उपदेश हमारे गुरुओंने हजारां बर्षोसें हमकू दिया चल रहा है. इस अबाध सिद्धांत की झलक भगवद्गीतामेभी जगेजगे देखनेमे आतीहै–देखिये.

“ न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजाति प्रभुः ॥
न कर्मफल संयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥
नादत्ते कस्यचित्पापं न कस्य सुकृतं विभुः ॥
अज्ञाने ना वृतं ज्ञानं तेन मुह्यंति जंतवः ॥
उद्धरेदात्मनात्मान मात्मानमवसादयेत् ॥
आत्मैव आत्मनो बंधु रात्मैव रिपुरात्मनः ॥ ”

अर्थातः—“ परमेश्वर दुनियांके कर्म और कर्तृत्व बनाता नही और कर्मोंके फलोका संयोगभी मिळाता नहीं. अपने अपने स्वभावसे सब परणमते है. परमेश्वर किसीका पाप ग्रहण करता नहीं, और किसीका पुण्य भी गृहण करता नहीं. अज्ञानसे ज्ञान ढक रहा है, जिससे प्राणीमात्र मोहमे पडे है. आत्मासे आत्माका उद्धार होगा और आत्मासे आत्मा नीच स्थितीको पहोंचेगा. आत्माही आत्माका बंधू है ओर आत्माही आत्माका शत्रू है. ”

ओंरभी देखिये कि, जैसे हिंदु ओंर मुसलमानोंमें हजारां आदमी रस्तेपर भीख मांगते देखनेमे आते है वैसे जैनी कोई

रस्तेपर दुकान दुकान भीख मांगता देखनेमे आता नहीं. जेल खानेमेकी संख्यापर अवलोकन करनेसेभी मालुम होता है कि, लोक संख्याके हिसाबसे मुसलमान ओर खिस्ती छसोंमे एक, बौध साडेसातसोमे एक, हिंदू तेरासोमें एक, पारसी अढाई हजारमे एक, और जैनी सात हजार मेसे एक जैल खानेमें पडा ऐसा देखनेमे आता है! इससे सिद्ध होता है कि जैनी पाप कर्मोसे डरते रहता है. जैनी कोईना कोई रुजगार, नौकरी, दलाली, इत्यादि करके आजीवका करता है. इस विषयमे रावबहादूर जाधव कोल्हापूर राजके सेन्सस रिपोर्टर अपने रिपोर्टमें लिखते है.

"Their (Jains) habits of industry temperance economy and frugality have preserved their material prosperity and they are generally better off than either the Hindus or the Musalmans."

अर्थातः--" जैनीयोंकी उद्योग करनेकी, मिताहारकी और मितव्ययकी आदतोंसे उनकी आर्थिक उन्नति बनी रही है.और जैनी लोक बहोत कुछ बातोंमें हिंदू और मुसलमानोंसे बहोत अछी स्थितीमे है."

इस मुजब स्वावलंबनका परम कल्याणकारी मार्ग हमारे निस्पृह आचार्योंने अपने ग्रंथद्वारा दिखलानेसे हमारा इतना भूमिशोधन हुवा हैं इसमे संदेह नही. देखिये श्रावक धर्ममे पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत, और चार शिक्षाव्रत पालन करना, सात व्यसनोंका छोडना, मद्य, मांस मधु इनको त्याग करना इत्यादि वर्णन हरएक ग्रंथोंमे देखनेमे आता है. सबसे प्राचीन आचार्य श्रीमत कुंदकुंदाचार्य अपने चारित्र पाहुडमे श्रावक धर्मेका वर्णन करते क्या कहते हैं-

पंचेवणुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तहतिण्णि ॥
सिरक्कावय चत्तारि संजम सरणंच सायारं ॥ २३ ॥

अर्थातः-पांच अणुव्रत, तनि गुणव्रत, और चार शिक्षाव्रत ऐसे सागार माने श्रावकका चारित्र होती हैं.

श्री कुंदकुंदस्वामीके शिष्य श्रीउमास्वामी अपने तत्वार्थसूत्रके सातवे अध्यायमे श्रावकधर्मका वर्णन करते एक सूत्र देते हैं.

अणुव्रतोगारी.

अर्थातः-पांच अणुव्रतोंको धारण करनेवाला सो आगारी नाम श्रावक कहेना चाहिये.

इनके पीछे इनके शिष्य श्री समंतभद्राचार्य अपने रत्नकरंडकोपासकाध्ययनमें श्रावकका चारित्र वर्णन करते लिखते हैं—

गृहिणा त्रेधा तिष्ठत्यणुगुण शिक्षाव्रतात्मकंचरणं ॥
पंच त्रिचतुर्भेदं त्रयं यथासंख्यमाख्यातं ॥

अर्थातः—गृहस्थीके पांच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत ऐसा चारित्र होता है. और श्रावकके मूलगूण जिनके बिना श्रावक कहा नही जाता सो इस मुजब कहे हैं—

मद्यमांसमधुत्यागैः सहाणुव्रतपंचकं ॥
अष्टौमूलगुणानाहुर्गृहीणांश्रमणोत्तमाः

अर्थातः—मद्य, मांस और सहत इनका त्याग, और पांच अणुव्रतोंका पालन करना, ये गृहस्थी श्रावकके आठ मूलगूण आचार्योंनें कहे हैं. ऐसेही आगे आचार्य परंपरासे उपदेश दिया गया है. जिससे हि यह भूमिशोधन हुवा है.

भ्रातृगण, हमारे आचार्योंने हमारे वास्तेहि केवल श्रावकधर्मका उपदेश देकर चूप रहे ऐसा नही. लेकिन अध्यात्मज्ञानमें और न्यायशास्त्रमें बडो भारी प्रविणता संपादन किई है ऐसा आपन जैनी तो उनकी प्रशंसा करेंगे इसमे कोई आश्चर्य नही, किंतु अन्यमती विद्वान

शिरोमणिभी प्रशंसा करते हैं. देखिये, महामहोपाध्याय डाक्टर सतिश्चंद्र विद्याभूषण क्या कहते हैं.

"The Jaina literature was in the begining purely religeous in charector but did in course of time undergo wonderful developements not only in religeous but in other departments as well. In the departments of Logic and Metophysics it attained the very highest developement and methods. There are not many Metaphysicians in India like Umaswami who flourished in the first century A. D. or many logicians like Siddhasena Devaker of the 6 th and Akalanka Deva of the 8 th century A. D. The Nyayavatara of Siddhasena Divaker condenses the whole of the Nyaya Philosophy within the space of 32 slokas. The Nyaya Philosophy as founded by the Brahmanic sage Gautama, was a medley of Logic, Metaphysics and Religion. Logic as a pure science would have been an impossibility but for the Jainas and the Buddhists who took up the study of Nyaya in right earnest from about 400 A. D. While editing and translating several works on Jaina Nyaya such as the "Nyayavatar" "Pariksha mukha sutra" "Nyaya dipika & &. I was struck with the accuracy, precision and brevity of their system of thinking and noticed with admiration how the old system of Nyayaphilosophy was gradually developed into its present form by the Jaina Logicians. The large number of these Jaina Logicians copmiled works on Nyaya, and constituted the most valuable works on the Nyaya system in the middle ages. What is Known as the medieval school of logic is purely the work of Jaina and Buddhist Logiscians. And the modern system of Brahmanic Logic called the "Navya Nyaya" founded

by Ganesh upadyaya in the 14 th century A. D. has sprung from the remains of this Medieaval logic of the Jainas and the Buddhists. In the department of grammer and Lexiography the works of Saktayan, Padmanandi, Hemachandra and others stand unrivalled in their usefulness and scintfic brevity. In prosody also they attained a very high level of development. The prakrit language is shown in all its mellifluous beauty in the works of the Jainas; and it is a fact that the use of the Prakrit language in the Brahmanic dramas owes its inception to the Jainas who first used it in their literary works. But perhaps in the domain of history, the Jain literature has been of the utmost service to the world, supplying as it has supplied, and does supply still, vast fields of research to the historians and antiquarians."

अर्थातः—" जैनशास्त्र प्रारंभमे केवल धार्मिक विषयमेही थे. लेकिन् आगें आगें उन धार्मिक ग्रंथोमें ही क्या किंतु और शास्त्रोमेभी उनोनें आश्चर्यकारक विकास किया है. न्यायशास्त्र और अध्यात्म विद्यामेंतो बहोतही ऊंचे दर्जेकी नियमबद्धता और विकास कियाहै. इस भारतवर्षमे उमास्वामी जो इसवी शकके पहले शताद्वीमें प्रख्यात हुये उनके समान अध्यात्मशास्त्रके पारगामी बहोत नहीं मिलेंगे. और सिद्दसेनदिवाकर जो छठी शताद्वीमें हुए, और अकलंकदेव आठवी शताब्दीमें प्रख्यात हुए उनके समान न्यायशास्त्रविशारद ऐसे कोई बिरले हुये होंगे. सिद्दसेनदिवाकरका बनाया न्यायावतार नामक ग्रंथ केवल ३२ श्लोकोंकाही है, लेकिन् उसमे तमाम न्यायशास्त्रोंके तत्व भरे हुएहै. ब्राह्मण गौतमऋषीनें जो न्यायशास्त्र रचाहै सो न्याय, अध्यात्म और धर्मशास्त्रका भेलसेल खिचडी हुवा है. यदि जैन और बौध पंडितोंनें चौथी शताब्दीसे न्यायका यथार्थ अंतःकरणपूर्वक अभ्यास न

किया होता, तो शुद्ध न्याय शास्त्र देखनेमे आना बिलकुल अशक्य था. जैन न्यायके कोई कोई ग्रंथ जैसे न्यायावतार, परीक्षामुख सूत्र, न्याय-दीपिका इत्यादि ग्रंथोका अनुवाद और शोधन मैं करताथा उस समय उन ग्रंथोमेंके बिचार करनेकी पद्धतीमे जो सत्यप्रमाणता, यथार्थता और अल्पविस्तारता देखनेमे आई जिससे मैं चकित हो गया! और न्यायशास्त्रोंका प्राचीन पद्धतीसे इस नवीन पद्धतीतक जो धीरे धीरे बिकास जैनी न्यायाचार्योंने कियासो देखके मेरेको बडा आश्चर्य हुवा. बहोतरे जैनी न्यायशास्त्रीयोंने न्यायके ग्रंथ रचेहै. और उनके रचे हुए ग्रंथोंसें न्यायके पद्धतीमे बडे अमोल ग्रंथ बीचके शताब्दीमें भरती हुएहै. न्यायशास्त्रोंका मध्ययुगीन शिक्षाप्रचार केवल जैनी और बौद्ध नैया-यिकोंके ग्रंथोंसेंहि जाननेमे आता है. और अर्वाचीन ब्राह्मण नैयायिकोंकी न्याय पद्धति, जिसको " नव्य न्याय " ऐसा कहतेंहै, और जिसकी रचना चौदहवी शताब्दीमे गणेश उपाध्यायने किई है, सो जैनी और बौध नैयायिकोके मध्ययुगीन परचोंसें उत्पन्न हुई है. व्याकरणशास्त्र और शब्दकोशादि भाषासाहित्यमेंभी शाकटायन, पद्मनंदि, हेमचंद्र आदिके ग्रंथ उपयुक्ततामें और सशास्त्र अल्पविस्तारतामे सबसे ऊंचे दर्जेमें गिने जाते है. छंदशास्त्रमेभी उनोंनें बडा भारी विकास कियाहै. प्राकृत भाषाभी जैनियोकें ग्रंथोमे पूर्णतया सौंदर्य और माधुर्य दिखा रहीहै. और ब्राह्मणोंके नाटक ग्रंथोंमे जो प्राकृत भाषा उपयोगमे लाई गई है, उसका मूल जैनियोंसेंही है. सबब कि जैनियोनेंही अपने ग्रं-थोमें पहले उसको उपयोगमे लियाथा ऐसा निश्चित हुवाहै. इतिहासके शोधनमे जैन साहित्यका तमाम भूमंडलमें बडा भारी साह्य हुवाहै. सबब कि, जैन साहित्यने इतिहासके संशोधनमे और प्राचीन कालके पदार्थ शोधनमे आजतक बडी भारी सहायता दिई है और, अभीतक जैन-साहित्य सहायता देरहा है."

सज्जन वृंद, बिचार कीजिए यह जैनाचार्योकी तारीफ वर्णन

करनेवाला कोन है? यह कोई साधारण मनुष्य नहीं है. किंतु जिसको अपने ब्रिटिश गव्हर्नमेंटने दुनियाभरके महजब और शास्त्रोंको खोजकर उनमेंसे रहस्य क्याहै सो प्रकाशित करनेके लिये बंगाल प्रांतमे नियत किए ऐसे महामहोपाध्याय डाक्टर सतीश्चंद्र विद्याभूषण है ! !

भ्रातृगण, इस मुजब हमारे अंतःकरणरूपी भूमीका शोधन, और हमारे परम हितोपदेशी आचार्योंके अमृतरूपी जलाशय, हमको उपलब्ध हैं तो फिर हमारी उन्नति होनेमें क्या कठिनता है? फकत इन जलाशयोंमेका जल खैंचकर हमारे अंतःकरणरूपी भूमीपर सिंचन करनेवालेका सहारा हमको मिलगया तो बस्स; हम अपना कार्य सहज रीतसे कर सकते है. जल खैंचकर सिंचन होनेकी सामग्रीभी अनुकुल दीखने लगी है. देखिए, सौ दोसौ वर्ष पहिले हमको ज्ञान संपादन करनेमे बडी दिक्कत पडती थी. लेकिन अब हमारे दयालु ब्रिटिश गव्हरनमेंटकी कृपासे हम चाहे जितना ज्ञान संपादन कर सकते हैं. सभी भारतवर्षमे छोटे छोटे गांव खेडोंमेभी बालकोंके लिये प्राथमिक शिक्षाकी शालाएं स्थापित हुई है, और हो रही है. राजा महाराजाओंनेभी अपने अपने प्रांतमे प्राथमिक, माध्यमिक ओर उच्चश्रेणीके शिक्षाका प्रबंध कर दिया है. सौ दोसौ वर्ष पहलेके राजा महाराजा जैनीयोंको विद्या पढानेमे मदत नहीं देतेथे. लेकिन आजकल म्हैसूरके महाराजा, बडोदा नरेश, कोल्हापूरके महाराजा, इस इंद्रपुरीके सरकार होळकर महाराजा इत्यादि तरफसे जैनीयोंको ज्ञान संपादनमे बहोतही मदत मिली है. यह बडी अनुकुल सामग्री समझना चाहिए. हमारे जैनी भाईयोंका उदार चित्त अबतक मंदिर बनवाना, प्रतिष्ठा कराना, मेला, रथजात्रा इत्यादि कार्योंमेही अपना धन वितरण करनेमें लगताथा; जिसके ऐवजमे जैनबोर्डिंग स्थापन करना, जैन पाठशालाएं स्थापन करना, जैन महाविद्यालय चलाना, जैन हायस्कूल खोलना, जैन धर्मके उपदेशक तैयार करके गांवगांव धर्मोपदेशके लिए भेजना,

ब्रह्मचर्याश्रम खोलना, श्राविका शालाएं और श्राविकाश्रमोंकूं चलाना इत्यादि कार्योंमे अपना धन वितरण करनेकी इच्छा हुई है और धन लगानेभी लगेहै. कुछ वर्ष पहले तो गांवगांवके जैनी भाई आपसमे चंदा करके ऐसे कार्य चलातेथे; लेकिन अब ऐसे कार्य करनेमे एकेक धनाढ्य जैनी पुरूष दोदो लाख चारचार लाख रुपयोंकी रकम एक मुष्ठीसे प्रदान करनेको तैयार होगये हैं यह बात क्या सामान्य है? यह क्या थोडी अनुकूल सामग्री आप समझते हैं? मैं तो जैनीयोकी उन्नति होनेकी काललब्धि बडी नजीक आई ऐसा समझता हौं. बंबै प्रांतमे पंधरा बरस हुये श्रीमान दानवीर शेठ माणिकचंद पानाचंदने जैनबोर्डिंग और हिराबाग धर्मशाला बनानेमे चार लाख रुपये प्रदान कियै. आकलूजवाले गांधी नाथा रंगजीने सोलापूरमे जैनबोर्डिंग और जैनोन्नति फंड खोलनेमे एक लाख रुपये प्रदान किये. कोल्हापूरमे जवेरी धर्मराव सुभेदारने जैन बोर्डिंग खोलनेमे बीस हजार रुपये प्रदान किये. अलाहाबादमे जैन बोर्डिंग खोलनेमे पचीस हजार रुपये एक जैन अबलानें प्रदान किये. खुद इस इंदोर शहरमे श्रीमान रायबहादूर शेठ कल्याणमलजीने हायस्कूल चलानेमे दो लाख रुपिया प्रदान किये, जिसका शुभ मुहूर्त कलदिनही हिज हायनेस महाराजा तुक्कोजीराव होळकर इस इंद्रपुरीके नरेशके हस्त कमलोंसें बडे समारंभसे हुवा सो आपने देखाहीहै!! और फिर आपके बडे भ्राता श्रीमान दानवीर शेठ हुकुमचंद्रजीने अपने जैन जातिके उन्नतीके लिये चार लाख रुपये प्रदान करनेका संकल्प किया है सोभी आपको विदित है!!! बडे हर्षकी बात है कि ऐसे ऐसे धनाढ्य और अग्रणी पुरुषोंके अंतःकरण अपने जैनी भाईयोंकी उन्नति करने तरफ लगा है!! धन्य है ऐसे पुरुष रत्नोंको कि जिनोने इस संसारमे चंचल लक्ष्मीको पाकर उसको परोपकारमे, जात्युन्नतीमे, और धर्मोन्नतीमे लगाकर उस लक्ष्मीको सफल किया, और अपने आत्माका उद्धार किया!! ऐसे ऐसे श्रेष्ठ और अग्रणी पुरुष जिस कामके तरफ अपना लक्ष लगावेंगे उसही मार्गमे

अन्य लोक चलते हैं ऐसा नियम है. कहा है कि "यद्यदाचरति श्रेष्ठ स्तत्तेदेवेतरोजनः ।।सो अब देखिए जगेजगेपर इन श्रेष्ट लोकोंका अनुकरण बडे जोरसे चलता देखनेमे आवेगा ऐसी मुझे उमेद है.

सज्जन महाशय, जो कुछ उन्नति दुनियाभरमे देखनेमे आती है सो सभी एक ज्ञानके ही आश्रयसे है यह आप जानते हैं. इंग्लड, जर्मनी, अमेरिका, फ्रान्स, जापान इत्यादि देशमे जो कुछ ऐहिक विभूतिकी उन्नति हुईहै सो सभी विद्यावृद्धीसेही हुई है. इस भारत वर्षमे जो कुछ आगेपर उन्नति थी सोभी ज्ञानके बढवारीसेही थी. और अभी जो कुछ हीनदशा आप देखते हैं सोभी ज्ञानके न्यूनतासे ही है. सो अब इस हीन दशामेसे अपनेको निकालना चाहते हों तो अपनेको ज्ञानवृद्धीमेही तन मन धनसे दत्तचित्त रहना पडेगा. माने आप पढना, औरोंको पढाना, पढनेवालेकू मदत देनां, पाठशाला स्थापन करनां, बोर्डिंग स्थापन करनां, पढनेवालोंकू पुस्तक देनां, खानेकू देना, रहनेको मकान देनां, वजीफा देनां, पारितोषक देनां. हरएक रीतसे ज्ञानदानमेंही अपने धनको लगानां. रात्रंदिन ज्ञानकाही मंत्र जपते रहनां जिसको आचार्योंने अभीक्ष्णज्ञानोपयोग कहा है. आहार, औषध, अभय और ज्ञान ऐसे चार प्रकारके दान आचार्योंने जगे जगे बतलाये है. जिसमेसे इस समय ज्ञानदान सबसे श्रेष्ठ है ऐसा आप समझना और औरोंकू समझाना. जैसा त्याग धर्मके वर्णनमे श्रीमद्भट्टाकलंकदेवने राजवार्तिकमे लिखा है.—

"आहारो दत्तः पात्राय तस्मिन्नहनि तत्प्रीतिहेतु र्भवति। अभयदानमुपपादितमेकभव व्यसन नोदन करं। सम्यग्ज्ञानदानं पुनरनेकभवशतसहस्र दुःखोत्तरण कारणमत एत त्रिविध यथाविधि प्रतिपद्यमानं त्याग व्यपदेश भाग्भवति ।

अर्थात्ः—आहार दान देनेसे वह उस दिनतकका उपकार-

कारक होता है. औषध दान और अभयदान देनेसे वह उस एक जनमतकके उपकारी होते है. और सम्यग्ज्ञानका दान देनेसे लक्षावधि जनमका दुःख निवारण होनेमे कारण होता है. सो यह तीन प्रकार यथाविधि उपकारमे समर्थ है ऐसा समझनां. ''

भ्रातृगण, देखिए हमारे पूर्वाचार्योंका लक्ष ज्ञानदानके तरफ कितना झुकाथा? ज्ञानसेही सब कल्याण है ऐसा जगेजगे आचार्योंने उपदेश दिया है देखिये पद्मनंदि स्वामी कहते है—

अज्ञो यद्भवकोटिभिः क्षपयति स्वंकर्म तस्माद्बहु
स्वीकुर्वन् कृत संबरः स्थिरमना ज्ञानीतु तत्क्षणात् ॥

अर्थातः—अज्ञानी पुरूष कोट्यावधी जनममे जो कर्मोका क्षय कर सकताहै उससे बहोत ही साथ साथ ग्रहण करते चलताहै. और ज्ञानी पुरूष, जिसने नवीन कर्म ग्रहण करनेको रोंक दिया है सो स्थिरमन करके प्राचीन कर्मोकों क्षणमात्रमे नाश कर देता है. औरभी बट्टकेर स्वामीका वाक्य लीजिए.

जं अण्णाणी कम्मं खवेदि भव सय सहस्स कोडीहिं ॥
तं णाणी तिहिगुत्तो खवेदिअंतो मुहुत्तेण ॥ ॥

अर्थात—जो कर्म अग्यानीको खपावनेमे लक्षावधि कोट्यावधि जन्म लेने पडते हैं वह कर्म ज्ञानी पुरूष तीन गुप्तीसे अंत मुहुर्तमे क्षय करता है. सज्जन वृंद, जैन धर्मका अंतिम ध्येय तो ज्ञानही है. संसारी जीव जब संसार दुःखोंसे छूटकर मोक्ष सुखके तरफ प्रयत्न करता है तब बारवें क्षीणमोह गुणस्थानमे चार घातिया कर्मोका नाश कर तेरहवा सयोगकेवली गुणस्थानको पहोंचता है. उस बखत उसको केवलज्ञान हुवा ऐसा कहते है. केवल माने सिर्फ ज्ञान ही ज्ञान, अनंत ज्ञान; जो संपूर्ण त्रैलोक्य मेंके चराचर पदार्थोको यथार्थ पने

युगपत जानता है, और जिससे अनंत सुखका अनुभव करता है.

भ्रातृगण, मैने यहांतक तो अपने उन्नतीकी जो अनुकूल सामग्री इस समय उपलब्ध है और उसका मूलभूत उपाय जो ज्ञानवृध्धी उसकी आवश्यकता बतला दीई है. अब इस ज्ञानके आश्रयसेही कुरीतियोंका मेटना, व्यापार वृद्धी होना और परस्परमे ऐक्य वृद्धी होना बन सकेगा या नही इस विषयपर कुछ कहोंगा.

कुरीतियोंमे मिथ्यात्व, अन्याय और अभक्ष्य ए तीन सदर खाते हो सकते है. इन तीन खातेमे बालविवाह, वृद्धविवाह कन्या विक्रय, फिजूल खर्ची, वैश्यानृत्य, इत्यादि केई कुरीतियां गर्भित हो सकती है. एक अज्ञान नष्ट होनेसे सदसद्विचारशक्ति खुलती है. विचारशक्ती प्रगट होनेसे अछे बुरेका विचार करने लगता है. उस समय उसको अछे उपदेशकका निमित्त मिल जानेसे पाप प्रवृत्तीको छोड देता है. कदाचित उस बखत अप्रत्याख्यानावरणीके उदयसे उससे पापाचरण नही छुटा तोभी उसका अनंतानुबंधीका और दर्शनमोहनीयका उपशम, क्षय, अथवा क्षयोपशम होनेसे उसका श्रद्धान तो पापकर्मसे दूर रहना चाहिए ऐसा होता है. और आगें आगें धर्मोपदेशकानिमित्त बना रहा तो धीरे धीरे कषायोंकी मंदता होजानेसे अन्याय और अभक्ष्य को छोड देना है. जहांपर अन्याय और अभक्ष्यको डरने लगा तो फिर कुरीतियां छूटने लगी ऐसा समझ लेना. उपदेशक्रम सप्त व्यसनोंका त्याग, पांच अणुव्रतोंका ग्रहण, मद्य, मांस, मधु इनका त्याग, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतोंका पालन इस पद्धतीसे उपदेशक्रम सासता चलता रहे तो सभी कुरीतियां मिट जायगी ऐसा मैं समझता हौं. बालक, तरुण, वृद्ध ऐसे पुरुषोंमे और स्त्रियोमें श्रावक धर्म, उपासकाध्ययनका पाठ, और श्रावकप्रतिक्रमणका पाठ हररोज जारी रखना चाहिये. जो कुछ कुरीतिया जैनियोंमे प्रचलित है उसको जैनशास्त्रोंमे कहीपरभी सहायता नही दी गई है; किंतु जगे जगे उनका निषेधही किया गया है. बाल विवाहके

वास्ते ' अष्टवर्षात्भवेत कन्या ' इत्यादि अन्य मतीके हुकूम जैनशास्त्रोंमें नही है. वैसे ही ' अपुत्रस्यगतिर्नास्ति ' ऐसे वाक्य वृद्धविवाहके अनुकूल जैनशास्त्रोंमें नहीं है. लेकिन् जैनशास्त्रोंका प्रचार अज्ञानताके वश कम हो जानेसे और अन्यमतियोंके धर्मशास्त्र और जोतिष फल शास्त्रोंका प्रचार उनके अधिक सहवाससे जैनीयोंमें फैल जानेसे कुरीतियां प्रचलित होगई है होलीके दिनोंमें जो कुछ बीभत्स प्रकार अन्यमतियोंमे प्रचलित है उसको उनके धर्म शास्त्रका थोडा बहोतभी आधार मिलता है. लेकिन जैनशास्त्रोंमे होलीके बीभत्स आचरणका बिलकुल निषेध होनेपरभी केई जैनीभाई इस घृणायुक्त होलिकामहोत्सवमे सामिल हुये देखनेमे आते है वैसेही बालाविवाह वृद्धाविवाह, कन्याविक्रय, वेश्यानृत्य, फिजूल खर्ची इत्यादि कुरीतियां जैनियोंमे घस गई है. सज्जनवृंद, आप जानते है कि चौदा पंधरा लाख जैनियोके सभोंवार तेतीस कोटि अन्यमतियोंका घेरा पड जानेसे "बंधेधिकौ पारणामिकौच " इस सिद्धांतके अनुसार जैसे न्यून संख्याके परमाणू अधिक संख्याके परमाणु रूप परणमे जाते है; वैसे हमारे जैनीभाईभी औरोंके सहवाससें अपनी शक्तीको भूलकर मिथ्या कुरीतियोंको पकड बैठे है. दौलत रामजीने कहा है कि "ज्यों शुकनभचाल विसर नलिनी लटकायो अपनी सुधभूलि आप आप दुख उपायो " माने जैसा तोता नलिनीचक्रपर बैठतेही चक्र फिर जानेसे नीचे आ जाता है. और उडजानेकी अपनी शक्ती भूल जाता है. उस मुजब केई जैनीभाई अपने धर्मको अपने शास्त्रको भूल गये है. उनको धर्मोपदेश देकर सचेत करना चाहिये. फिजूल खर्ची माने अपने ताकदके बाहार जो खर्च होता है सो परिग्रह प्रमाण अणुव्रतका और अनर्थ दंड गुणव्रतका पालन होनेसे मिट जायगा. वेश्यानृत्य बहोत करके श्रीमंतोंके घरमे विवाह शादियोंके अवसरमे देखनेमे आता है. उनकोभी परस्त्रीत्याग अणुव्रतके अतिचार जो इत्वरिका गमनागमन नामक अतिचारका पाप उपदेशकों तरफसें ठसाया जाय तो यह कुरीतिभी मिट

जायगी. आतषबाजी फिजूल खर्चीमे गर्भित है सो अनर्थ दंड गुणव्रत और परिग्रह प्रमाण अणुव्रतका पालन होनेसे बंद होजायगी.

ऐसे कुरीतियां सब मिट जानेसे वाणिज्य वृद्धीमे बहोत सफलता देखनेमे आवेगी. अभीका समय वाणिज्यवृद्धीको बडा अनुकूल है. वाणिज्य वृद्धीको विघ्नकारक ऐसे चोरी, डाका, लूटफाट इत्यादि उपद्रव अपनी न्यायशील गवर्नमेंटके उत्तम बंदोबस्तसे बहोतसे निर्मूल होगये है. रेलमे और आगबोटमे लाखां रुपियोंका माल एक मुलखसे दुसरे मुलखमे बिना नुकसान पोहोंचाया जाता है. दररोज हजारां चांदी सोनेकी पार्सलां, भेजनेवालेका जोखम होनेपरभी जैसीकी तैसी आबाद हालतमे मालिकको मिल जाती है. टपालमार्फत लाखां रुपियेकी हुंडिया, चेक, नोट भेजे जाते है, और वे बराबर मालिकके हातमे पोहोंच जाते है. तारसेभी हजारां रुपियां एक जगेसे दूसरे जगे हजारां मैल दूर प्रदेश होनेपरभी उसी दिन मिल जाते है. इत्यादि वाणिज्य वृद्धीको बडी अनुकूल सहायता होनेसे आगले जमानेसे हालके जमानेमे वाणिज्य कार्यमे बहोत लोग लगे हैं. आगले जमानेमे वाणिज्य करनेवाले थोडे थे जिससे किफायतका प्रमाण अधिक रहताथा. लेकिन मालका लेनदेन अभीके प्रमाणमे बहोतही कम होताथा. इस समय वाणिज्य करनेवालोंकी संख्या बहोत बढगई है, और मालका लेनदेनभी बहोत बढगया है; जिससे कमती किफायतसे बेपार करते हुएभी फायदा रहता है; लेकिन पहिलेके माफक सुस्ती चलती नही. रातदिन तेजीमंदीकी रूखपर नजर रखनेमे बडी चंचलता रखनी पडती है. मालका क्रयविक्रय बढजानेसे थोडी पुंजीसे बेपार चलानेवालेका काम बराबर चलता नही. और बेपारका चलन आगले माफक सिर्फ भारतवर्षमेही न होकर तमाम दुनियाभरमे फैलता होजानेसे दुनयाभरके मालकी निपज और दुनयाभरके मालकी खपती इत्यादि बातोंसे सहजमे तेजीमंदी होजाती है; जिससे बडा भारी नफा नुकसान होनेका

संभव रहता है. बडा नफा हुवा तो ठीकही है. लेकिन भारी नुकसान पहोंच गयातो थोडी पुंजीवाला थक जाता है. जिससे इस समय बडी पुंजीबिगर काम नहीं चलेगा. एक आदमीकेपास बडी पुंजी बहोत करके होती नहीं. और कदाच हुई तोभी अपनी सभी पुंजी ऐसे साहसके काममे डालना वह चाहता नही. और डालना ठीकभी नही. थोडी थोडी रकम बहोत आदमीयोंसे जमाकर एकत्रित व्यापारकी पद्धतीसे, जिसको जाइंट स्टॉक कंपनी कहतेहै उस मुजब काम चलाना चाहिये. लेकिन् इसमेभी विश्वास पात्रताकी बडी आवश्यकता है, यह याद रखना चाहिए. अनेक आदमीयोंकी जो मंडली बनती है उसमे परस्पर विश्वास होनेकेलिए हरएकका वर्तन बडा प्रमाणीक होना चाहिए. नही तो फीर बर्मा ब्यांक, पीपल्स ब्यांक, क्रेडिट ब्यांक, स्पेसी ब्यांक, बंबै ब्यांकिंग कार्पोरेशन इत्यादि बेंके लिक्विडेशनमे गई और लाखां रुपये शेरवालोंके और जमा रखनेवालेके डुब गये, और इस आपत्तीसे इस भारत वर्षमे परस्परमेका विश्वास नष्ट होगया, जिससे बहोत भारी नुकसान हुवाहै, ए सब आप जानतेही है. वाणिज्यमेभी सत्यअनुव्रत और अचौर्य अनुव्रत अतिचार रहित पालन करनेकी अत्यंत आवश्यकता है. यदि उपर्युक्त बेंकवालोंके मेनेजरोने और डाइरेक्टरोने पांच अणुव्रत प्रतिज्ञापूर्वक ग्रहण किये होते और उनके स्थैर्यार्थ दररोज श्रावक प्रतिक्रमणका पाठ धर्मबुद्धीसे अंतःकरणपूर्वक करते रहतेथे तो ऐसी दुष्ट बुद्धी उनके अंतःकरणमे कभी घसती नहींथी. सज्जन महाशय प्रतिज्ञा करनेका फल बडा भारी होता है यह आप सभी जानतेहै. देखिए, लंकाधीश रावणने अनंतवीर्य केवलीके समोशरणमे प्रतिज्ञा लिईथी के, मै कोई परस्त्रीको उसके इच्छाबिगर बलात्कारसे नही भोगूंगा. इतनीहि प्रतिज्ञा होनेसे उसने सीताजीका शील भंग नही किया. सीताको हरणकर अपने वहां लेगया और अपनेपर फिदा होनेकेवास्ते उसको बहोत कुछ समझानेका प्रयत्न किया. एक दिनतो इतना निराश होकर अपनी पट्टस्त्री मंदोदरीसे

कहने लगाकि मेरा प्राण बचाना चाहती है तो सीताको मेरेसाथ रममाण होनेकेवास्ते समझावो. मंदोदरीने उत्तर दिया कि आप ऐसे बलाढ्य शक्तिवान विद्याधर होकर एक क्षुल्लक मानव स्त्रीको समझानेकी इतनी कोशीस क्यौं कर रहेहो ? उसकी बिशाद क्या है ? उसको पकड-कर यहां बुलाय लेना और हात पकडकर नीचे गिरा देना. बस्स होगया. इसमे उसकी इतनी खुशामत क्यौं ? इसपर रावणने जबाब दिया कि, तूं कहती है सो सत्य है. सीताको पकडकर लाना और अपने हातसे यहां गिरा देना इसमे मुझै कोई कठिण बात नहींहै. लेकिन् मैने पहले श्री अनंतवीर्य केवलीकेपास प्रतिज्ञा लिई है कि मै कोईभी पराई स्त्रीपर उसके सम्मतीबिगर जबरदस्ती नहीं करूंगा. उस प्रतिज्ञाका भंग मेरा प्राण जायतोभी मैं नहि करूंगा. प्रतिज्ञाभंग हो गया तो फिर इस दुनि-यांमे क्या रहा ? जिससे मैं सीताके ऊपर बलात्कार करना नहिं चाहता हौं. उसके राजीखुषीसे मुझको सीता वश हुई तो ठीकहै नही तो मै ऐसाही प्राण त्याग करूंगा. लेकिन प्रतिज्ञाभंग नहिं करूंगा.

देखिए प्रिय सज्जनवृंद, रावणने एक छोटीसी प्रतिज्ञा ग्रहण करनेसे सीता सतीका शील रक्षण हुवा सो कितना भारी काम हुवा ?

यमपाल मातंगकी कथा आपको याद होगी. उसका काम यह था कि राजा जिसका शिर उडानेका हुकूम दे उसका शिर उडादेना. एक समय एक मुनीके पास उसने प्रतिज्ञा लिईथी कि, मैं फगत सुदि १५ के दिन कोईका शिर उडाऊंगा नही. फिर कोई समय ऐसा आगया कि सुदि १५ केही दिन राजाके पुत्रका शिर उडानेका हुकुम राजाने दिया था. और शिर उडायेबाद उस राजपुत्रके कपडे जवाहर सब इसको मिलने वाले थे. राजाके नौकरोंने यह सब फाय-देकी लालच उसको समझाकर राजपुत्रका शिर उडानेवास्ते चलनेको बहोत प्रयत्न किया. लेकिन उसने जबाब दिया कि, मेरा प्राण गया तो बेहेतर लेकिन मैं आज तो किसीकाभी शिर नही उडाऊंगा. मैं गुरुजी

पास प्रतिज्ञा लिई है सो मैं प्राण जाते भी प्रतिज्ञा भंग नही करूंगा. खैर; राजानें उसको और राजपुत्रको बडी नदीके डोहमे फेंक देनेका हुकूम दिया. फेंकतेहि उसके प्रतिज्ञाके फलसे देवोंने सिंहासन नीचे रखकर अधर झील लिया!! राजाने और तमाम लोकोंने प्रतिज्ञा पालन करनेका ऐसा भारी फल होता है ऐसा देखकर बडा आश्चर्य किया.

वैसेहि श्रेणिक राजाका जीव जो खदिरसार भील उसने फगत कौवेका मांस नही खानेकी मुनीके पास प्रतिज्ञा लिईथी, उसको प्राणांतिक बिमारी होनेसे प्रतिज्ञा भंग करनेके लिये बहोत कुछ किया गया; लेकिन उसने तो प्राण जाय तो बेहेतर लेकिन प्रतिज्ञा भंग नहि करूंगा ऐसा दृढ निश्चय रखनेसे मरण पाकर स्वर्गमे गया. और वहासे चवकर श्रेणिक राजा हुवा. श्रेणिक राजाको महावीर स्वामीके और गौतम स्वामीके उपदेशसें क्षायिक सम्यक्त हुवा. और आगले पाप बंधसे वह नर्कमे है तोभी अनागत चोविसीमे वह तीर्थंकर होनेवाला है.

भातृगण, देखिए प्रतिज्ञा ग्रहण करनेसे और उसका पालन करनेसे कैसे कैसे फल प्राप्त होते है? प्रतिज्ञा है सो अपने परिणाम स्थिर रखनेको बडा भारी बंधन है. वाणिज्य वृद्धीको भी प्रतिज्ञाका बंधन बडा आवश्यक है. झूट और चोरीका त्याग, चोरीका माल लेनेका त्याग, खोटा हिसाब रखनेका त्याग, लेनेदेनेके तोल माप खोटे रखनेका त्याग, सरकारी जकात, फी, छांप बचानेका त्याग, एक चीजमे दुसरी चीज मिलाकर ठिगाकर बेचनेका त्याग, इत्यादि त्याग प्रतिज्ञा पूर्वक होने चाहिए. और इन प्रतिज्ञाओंका पालन अंतःकरण पूर्वक होना चाहिए. हररोज अपने दोषोंका उच्चारण अपने मुखसे होना चाहिए. प्रतिक्रमणके पाठमे---

हा दुट्ठकयं हा दुट्ठचितियं भासियंच हा दुट्ठं
अंतोअंतो डज्झमिपच्छुतावेण वेयंतो ॥

अर्थात:—हाय, मैने कैसा दुष्ट काम किया! हाय, मैने कैसा दुष्ट चिंतवन किया! हाय मैने कैसा दुष्ट भाषण किया! जिसके पश्चाचापसे मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है, जल रहा है. औरभी

पडिक्कमामिभंते वदपडिमाए विदिए थूलयडे असच्चविरदिवदेमिच्छोवदेसेणवा रहोअज्झखाणेणवा कूटलेख करणेण वा णासापहारेण वा सायार मंत भेएण वा जो मए देवसिउ अइचारो अणाचारो मणसा वचसा कायेण कदोवा कारीदोवा कीरंतोवा समणुमणदो तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥

अर्थात:–हे भगवान मैं प्रतिक्रमण करताहौं. व्रत प्रतिमामें दुसरे स्थूल असत्य त्याग व्रतमे मिथ्या उपदेश देनेसे, कोईकी गुह्य बात प्रगट करनेसे, खोटे लेख लिखनेसे, कोईकी जमा अपहार करनेसे अंग विक्षेपसे बतलानेसे, मैने दिवसभर अतिचार वा अनाचार मन, वचन, कायसे किया हो, कराया हो अथवा करतेको भला मानाहो उसका पाप मिथ्या होहू. वैसेही

पडिक्कमामिभंते वदपडिमाए तिदिएथूलयडे थेण विरादिवदे थेणपओगेण वा थेण हरियादाणेणवा विरुद्ध रज्जाइक्कमणेण वा हीणाहियमाणेणवा पडिरूवयववहारेण वा जो मए देवसिउ अइचारो अणाचारो मणसा वचसा कायेण कदोवा कारिदोवा कीरंतोवा समणुमणदो तस्स मिछामिदुक्कडं ॥

अर्थात:—हे भगवान मै प्रतिक्रमण करता हौं. व्रत प्रतिमामै तीसरे अणुव्रत अचौर्यव्रतमे मैने चोरीका प्रयोग किया हो, चोरीका माल लिया हो, राजाज्ञाकेविरुद्ध कोई अतिक्रमण किया हो, हीनाधिक तोल मापसे देन लेन कियाहो, मालका स्वरूप बदलकर व्यवहार किया हो, जिससे मेरेको दिनभरमे जो कुछ अतिचार अथवा अनाचार

मन, वचन, कायसे किया हो करवायाहो अथवा करनेवालेको अनुमोदन दियाहो तो वह पाप मिथ्या होहू. इस मुजब पांचो अणुव्रत तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतोंके अतिचारोंका उच्चारण हररोज प्रातःकालमे और शामके वखत होता रहे तो अपना अंतःकरण पाप कर्मोसे डरता रहेगा. यह प्रतिक्रमणका पाट केवल वाणिज्य करनेवालेहीको ही क्या परंतु असि, मसि, कृषी, वाणिज्य, शिल्प और पशुपालन ऐसे छह प्रकारके आजीविका करनेवाले सभीकी उन्नति करनेमे साह्य देताहे,और परभवमे दुःखमेसे छुडाकर सुखदायक होताहै. इसके पाटका प्रचार खूब बढना चाहिये. और संस्कार विधीमे कहे मुजब बचपनसेही पांच अणुव्रत और तीन मकारका त्याग ऐसे आठ मूळ गुणोंका प्रतिज्ञापूर्वक ग्रहण उपनीतीक्रिया बालकोंकू आठवे वर्ष करनेका हुकूम है, उसकोभी प्रचारमे लाना चाहिये.

भ्रातृगण, इस मुजब अनाचार, कुरीतियां मिटगई और परस्परमे विश्वास बढगयातो ऐक्यताभी बढ जाती है. हरयेक आदमीको लगता है कि मेरे अभिप्रायको सभीने पसंद करना चाहिये, और मेरे अभिप्रायको मिलना चाहिये. यदि न मिलैं तो ऐक्यता टूट गई ऐसा मानते है.सो ऐसी सर्वथा ऐक्यता तो कहींभी नहीं मिलेगी भाई भाईमे नहीं मिलेगी, पितापुत्रमे नहीं मिलेगी, पतीपत्नीमे नहीं मिलेगी. इतनाही नहीं लेकिन संपूर्ण कर्मोसे मुक्त ऐसे सिद्ध भगवान अनंत गुणोंसे मोक्षस्थानमे विराजमान है और उनको व्यवहार नयसे ज्योतीमे ज्योत मिलगई ऐसा कहतेभी है, तोभी वहांपर हरएक मुक्त जीव अपने पूर्व भवके शरीरकी अवगाहनासमान अलग अलग तिष्टे है. लेकिन अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन सभीका समान है. ऐक्यता मै सर्व प्राणीयोंसे मैत्री, गुणाधिक हो उसमे प्रमोद, क्लिश्यमानमे करुणाभाव और विरोधियोंसे माध्यस्थ भाव ऐसे परिणाम रखनेसे अछी होसकती है. जहां तक अपने अभिप्रायको मिलताहो उतना मिलाकर ऐक्यता करलेनी

और जहां विरोध दीखता हो उसको छोड देना. इन भावनाओंके प्रचारसे ऐक्यता जैनीओंमेही क्या किंतु सभी भारतवर्ष और पृथ्वी मंडलके मनुष्योंमे होजायगी.

सज्जन महाशय, सभाओंका स्थापन करना और उनका बारबार एकत्रित होना ए सभी ऐक्यता बढानेकेही कारण हैं. सभाहीसेही बडे बडे कार्य हुए हैं; सभामें बडी शक्ती रहेती है. एकके अंकके पास दुसरा एकका अंक रखनेसे ग्यारा समझे जातेहैं; और तीसरा एकका अंक फिर रखनेसे एकसे ग्यारा कहे जाते हैं. इनका पृथक्करण करनेसे एक एक तीन जगे अलग होजाते हैं. सो अनेकोंका एकत्रित होनेसे संघशक्ती बडी भारी होजाती है.

प्रिय सज्जनो, मैंने आपका बहोत बखत लिया सो आप मुझे क्षमा करेंगे. लेकिन सभामे बहोतसे प्रस्ताव पास होते हैं उसकी अमलवारी होती नहीं जिससे बहोतसे प्रस्ताव पास करनेमे कुछ फायदा नहीं ऐसा एक आक्षेप बांचनेमे आया सो कथंचित् सत्य है. प्रस्ताव पास होजानेपर उसकी अमलवारी होजानेसे उसका फल जल्दी दृष्टीगोचर होगा इसमे संदेह नहीं. परंतु प्रस्ताव पास कियेबाद अमलवारी करनेको अपनेपास सामग्री न होतो प्रस्ताव पास करना निरर्थक नही है ऐसा मैं समझता हों. सबबकि, हरसाल सभाके वार्षिक अधिवेशनमे अथवा नैमित्तिक अधिवेशनमे जो प्रस्ताव आते हैं वह प्रस्ताव रखनेवाले, समर्थन करनेवाले अलग अलग पुरुष आते हैं. उन अलग अलग पुरुषोंके मुखसे उस प्रस्तावके समर्थनकी दलीलें निकलती हैं इससे श्रोताओंको उस प्रस्तावऊपर अधिक विचार करनेका मौका मिलता है. स्यात उस वखत उसके अंतःकरणमे वह प्रस्ताव ठसभी जाता है, और वह अपने घर गयेबाद यथाशक्ति कुछना कुछ अमलवारीभी करता है. सो सभामे जोकुछ कहा जाता है और सुना जाता है सो बिलकुल कार्यकारी नहीं है ऐसा नहीं है.

उसका जोकुछ कार्य परोक्ष रीतसे होते रहता हैं वह दृष्टीगोचर कालांतरसे होता है. वक्ताके मुखमेसे जो वचनरूप पुद्गल परमाणू बाहार पडे सो अपना काम करते रहते हैं. वे खाली बैठेंगे नहीं. सभाओंके प्रस्तावोंसे बालविवाह कमती होने लगे हैं. वृद्धविवाहोंकी संख्या कम होगई है. कन्याविक्रयभी कम हुवा है. वेश्यानृत्य और आतषबाजी हमारे दक्षिण प्रांतमे एकदो सेठलोकोंशिवाय कहींपरभी नजर आती नहीं. जगेजगे बोर्डिंगोका खुलना, पाठशाला महाविद्यालयोंका चलना, कन्याशाला, श्राविकाशाला, श्राविकाश्रमोंका प्रारंभ होनां; मासिक, पाक्षिक सप्ताहिक पत्रोंका प्रचार बढनां, स्वाध्यायोंका प्रचार बढनां, दोदो लाख चारचार लाख रुपये विद्याज्ञान और धर्मोन्नतिमे लगानेवाले पुरुषोंके दिल इसतरफ झुकनां, यह सब फल काहेका है? सभामे प्रस्ताव पास होनेकाही है. कोई फल तात्काल होताहै कोई कालांतरसे होता है. लेकिन प्रयत्नका फल होते रहता है. निराश न होना चाहिये. दृढ निश्चयसे सत्कर्म करतेहि रहना. जैनियोंके सिद्धांत माफक कर्मोंका फल इस जन्ममे नहि मिला तो आगले जन्ममे मिलेगा; वहां नही मिला तो उसके आगले भवमे मिलेगा. भवांतरमे कर्मोंका फल तीव्र मंद जैसा बंध होगा और जैसा उदयकानिमित्त मिलेगा उस मुजब होता रहेगा.

प्रिय सज्जनगण, अब मैं अपने भाषणको संकोचताहौं. मेरे तुच्छ बुद्धीके अनुसार मैने जो कुछ कहा उसमे यदि कोई कटुक वाक्य हो तो उसकी आप क्षमा करेंगे. हिंदी भाषा मेरी मातृभाषा नहीं है जिससे भाषा दोष बहोतसे होनेका संभव है, जिसको आप दरगुजर करेंगे ऐसी मुझे आशा है. अब सभाका काम आगे चलानेके लिये मैं आपसे प्रार्थना करताहौं.

चैत्र शुक्ला ८
वीर संवत २४४१ } हिराचंद नेमचंद.

श्री

दक्षिण महाराष्ट्र जैन महिला परिषदेचे २५ वे अधिवेशन सांगली.

अध्यक्ष

श्रीमती राजुबाई गुंजेटीकर

यांचे

भाषण

सन १९२२

सोलापूर येथें
" सच्चिदानंद " छापखान्यांत छापिलें.

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

तीन लोक नायक प्रभू मंगलमय तुमरूप ।
परम सिद्ध तुमको नमू मंगल दो शिवभूप ॥

प्रिय भगिनींनो, आज आपल्या सारखे धर्मज्ञ स्व-परहित तत्पर व उत्साही भगिनीवृंदांचा समूह पाहून मला इतका आनंद वाटत आहे कीं तो सांगतां येत नाहीं. धर्मोन्नति व जात्युन्नतीचा विचार करण्याकरितां दरवर्षीं भरणाऱ्या या दक्षिण महाराष्ट्र जैनमहिला परिषदेचें अध्यक्ष स्थान मजसारख्या अल्पज्ञाला देऊन माझा जो गौरव व बहुमान केला त्याबद्दल मी आपली अत्यंत ऋणी आहे. व विशेषतः आपण ज्या शहरीं जमलों आहोत व ज्या शहरच्या संस्थानाधिपतींचा पूर्वापार अखंडीत पणें चालत आलेला पराक्रम, न्यायीपणा व प्रजावात्सल्य, प्रजेची सर्व बाजूनीं उन्नतीकरितां झटणारे आपले श्रीमंत सरकार व विशेषतः त्यांची सुशिक्षित प्रेमल व स्त्रियांच्या उद्धारार्थ अहर्निश श्रम करणाऱ्या राणीसरकार यांच्या या सांगली राजधानींत भरलेल्या सभेंत दिलेल्या उच्चासनानें "निधि प्राप्तिपेक्षां निधि रक्षण करणें कठीण" ह्या ह्मणण्याप्रमाणें माझी स्थिती झाली आहे. अध्यक्षपदकर्तव्य योग्य रीतीनें पालन मजकडून होईल कीं नाहीं ही जरी मला शंका असली तरी आपण केलेल्या आज्ञेप्रमाणें वागणें हें मी कर्तव्य समजतें. मजसारख्या अननुभविक सेविकेला हें स्थान देऊन जो आपण मनाचा मोठेपणा दाखविला आहे त्याला अनुसरून ही जबाबदारी तडीस नेण्यास देखील आपण मला पूर्ण सहाय्य कराल अशी उमेद बाळगून या परिषदेचें काम निर्विघ्नपणें पार पडो अशी वीतराग प्रभूची प्रार्थना करून मी आपल्या भाषणास सुरवात करितें.

सभेचा हेतुः——सज्जन मातानो, आपण एकत्र कां जमतों व सभा भरविण्याचा हेतु तरी काय? माझ्या मतें आपल्या पूर्वजांनीं ह्मणजे ऐहिक व पारमार्थिक मार्ग दाखविणारे ऋषभ तीर्थंकर, कुंदकुंदाचार्या सारखे तत्वज्ञ व अमितिगती व अमृतचंद्र यांच्यासारखे अध्यात्म रसिक यांनीं घालून दिलेली व अनादिकाळापासून चालत आलेली आपली जैन संस्कृति सतत कायम कशी ठेवावी, धार्मिक बौद्धिक वगैरे बाबतींत आपण पुढें चाललों आहोत कां मागें पडत आहोत ह्याचा विचार करण्याकरितां, समाजांत चालत आलेल्या बालविवाह वृद्धविवाह वगैरे चाली रीति कशा थांबतील व सद्यस्थितींत ऐहिक व पारलौकिक कल्याण कसें करून घ्यावे वगैरे समाज हित गोष्टींची चर्चा करण्याकरितां आपण जमत असतो.

कांहीं जण ह्मणतील पुरुष मंडळी खटपट करीत असतांना आपण यासभेचा उपद्याप कां करावा? पण उन्नति प्रिय भगिनींनो आजपर्यंत आपल्या बंधुवर्गांनीं आपल्या जागृतीकारितां अत्यंत मेहनत घेतली आहे व पुढें घेतीलही ह्मणून आपण मात्र स्वस्थ बसावें हा न्याय कोठला? त्यांनीं केलेल्या श्रमाचें फल ह्मणून आपण जर आपल्या उद्धाराचा प्रश्न सोडविला तर मला वाटतें त्यांना आनंद वाटेल व ते उलट दुप्पट जोरानें पुढें मदत करतील. 'उद्धरेदात्मनात्मानम्' ह्या दृष्टीनें आपण परावलंबीपणा सोडून स्वावलंबनाचा मार्ग स्विकारावयास पाहिजे. व जीं कार्यें आपण करूं शकूं निदान तेवढ्या कार्याकरितां तरी त्यांना त्रास देऊं नये व त्यांना इतर सार्वजनीक जबाबदारी घेण्यास वाव द्यावी. तेव्हां अशा ज्या सभा आपण भरवितो त्या कांहीं तरी उपद्याप करावा किंवा करमणूक व्हावी ह्मणून नव्हे, तर याठिकाणीं ज्यागोष्टीचा विचार करणार आहोत व जो उन्नतीचा मार्ग ह्मणून आखीत आहोत त्याकारितां मनोभावानें काम करण्याची जबाब-

दारी उचलली तरच कांहींतरी पुढें पाऊल पडण्याची आशा. कागदी ठरावानें आतां थोडेंच काम भागणार आहे.

आपली सद्यः स्थिती

धर्म भक्त भगिनींनो, संसार परिवर्तनशील आहे ह्मणतात तें खोटें नाहीं. आपल्या जैनसमाजाचा असा एक उन्नत काळ होता कीं, ज्यामध्यें संसारीक आदर्शमय जिवन व्यतीत करून मोक्षधामास गेलेले वीर, अकलंक निकलंक सारखे धर्माकरितां प्राणोत्सर्ग करणारे धर्मभक्त, रामचंद्रासारखे नीतिज्ञ व लोकमत दर्शीराजे व अर्जुनासारखे शूर असे कितीतरी नररत्न उत्पन्न होऊन गेले आहेत. आपण समजूं नका वीर रत्नांनींच हा समाज फक्त भूषित झाला आहे पण ह्या वीरांना जन्म देणाऱ्या माता पण तितक्याच उच्च श्रेणीच्या होत्या. खाण तशी माती किंवा चांगल्या वृक्षास चांगलींच फळें यावयाचीं या प्रकृतीच्या नियमानें पूर्व कालीन आपला महिला समाज फार उच्च दर्जाचा होता. महा सती सितेचें पवित्र नांव कोणाला माहीत नाहीं ! आजन्म ब्रह्मचारिणी राहून विद्याव्यासंगांत काल घालविणाऱ्या ऋषभ तीर्थंकराच्या कन्या ब्राह्मीव सुंदरी ह्यांनीं आपल्या सदुपदेशानें घोर तपश्चरण करणाऱ्या आपल्या बाहुबली भावाला किंचित् मान कषायामुळें केवळ ज्ञान प्राप्त होत नाहीं हें पाहून त्यापासून सोडवून आत्मभान करुन दिले ही गोष्ट आह्मी कशी विसरूं ? सासू सासऱ्यांनीं दोषरोप करून घालवून दिले असतां व पतीकडूनही तिरस्कृत झाली असतां पति भक्तीला अखंड स्थान देऊन जिनें शांत रीतीनें आत्मक्लेश सहन केलें त्या अंजनेचें नांव आमच्या आठवणींतून कसें जाईल ! कुष्ट रोगानें पीडीत झालेल्या पतीला आपल्या प्रेमानें व धर्म भक्तीनें त्यारोगापासून सोडविणारी मैनासुंदरी, शीलभंग करण्याचा अटोकाट प्रयत्न होत असतां त्यांतून निष्कलंक निभावून निघणारी चंदना वगैरे सुशि-

क्षित, धर्मप्रेमी, सदाचारी व ऐहिक व पारमार्थीक कल्याण करून घे-णाऱ्या व प्रातःस्मरणीय या महासाध्वी महिलांचीं नांवें किती तरी सागूं. या पौराणीक गोष्टीवरून एक गोष्ट उघड दिसते कीं त्यावेळचा पुरुष समाजही ह्यांना आदरानें पहात असे. नारी नरक की खान ही दृष्टि न ठेवितां स्त्री ही जीवनामध्यें समाधन देणारी व संसाराच्या भेसूर-पणावर प्रीतिचें अमृत सिंचन करणारी देवता आहे. दुःखित अन्तः करणाचे शांतवन करणारी व भविष्य काळाचा वर्तमान काळाशीं संबंध जोडणारी व कुटुंब राष्ट्र व आत्मकल्याण यांस लागणाऱ्या भावनेचें बीजारोपण करणारी अशी स्त्री ही मानली जात असें स्वयंवर सारख्या चालीवरून त्यांच्या बालपणीं लग्न करून व त्यांच्या विकसीत होणाऱ्या शक्तीच्या वाढीला आळा घालण्याचें पातक ते कधींही करीत नसत. किंवा इहलोकची यात्रा संपत आलेल्या एकाद्या वृद्धाला पोटचा गोळा पैशाच्या लोभानें विकीतही नसत. ह्या पौराणीक स्त्रियांच्या चारित्रा-पासून कितीतरी शिकण्या सारखें आहे. एडमंड बर्कनें एका ठिकाणीं ह्मटले आहे " Those who do not look with pride to the past can have no regard for the future & so can not perform great deeds " ह्मणजे जे गौरवानें व आदरानें पूर्वजाच्या कृतीकडे पहात नाहींत त्यांनीं भावीकाळाच्या उन्नतीची आशा करणें व्यर्थ. आपल्या सुदैवानें आपला पूर्व इतिहास मोठा आदरणीय व श्रेष्ट दर्जाचा आहे. तो सतत डोळ्यापुढें ठेवून चालूं तर खात्रीनें आपला भाग्योदय होईल पण भगिनींनो मध्यंतरी आपली बरीच अवनत दशा झाली लोकसं-ख्या कमी होत चालली; शारीरिक शक्ति घटत चालली. धार्मिक आचारांत शैथिल्य वाढत चाललें व अज्ञानानें कायमचें ठाणें घेतलें व परिस्थितीमुळें नानाप्रकारच्या मिथ्या चालीचे दास बनलों. अशा तऱ्हेनें आपल्या महिला समाजाच्या प्रगतीला इतका खो बसला कीं, त्याचें वर्णन करणें कठीण.

पण " नीचैर्गच्छत्युपरिचदशाचक्रनेमीक्रमेण " या न्यायानें पुनरपि ज्ञान सूर्याचा उदय होत आहे. धर्मप्रेमाचा व स्वार्थत्यागाचा मंद वारा वाहूं लागला आहे. अज्ञान आपली रजा घेऊं पहात आहे. देशामध्यें सार्वत्रिक झालेल्या जागृतीच्या धक्यानें आपला समाजही जागा झाला व आज भारतवर्षीय दिगंबर जैन सभा, बंगाल प्रांत जैनसभा, मालवा प्रांत जैनसभा, मुंबई प्रांतिक सभा, दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा अशा प्रांतवारी सभा होऊन २०।२५ वर्षांपासून धर्मोक्त सुधारणेचें सुकाणू वल्हवीत आहे. जैन मित्र, जैनबोधक, दिगंबर जैन, जैनहितेषी जैनसिद्धांत, प्रगति आणि जिनविजय वगैरे वर्तमानपत्रें व मासिकें हीं अज्ञान दूर करित आहेत. ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम, महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, पाठशाला बोर्डिंग वगैरे लौकिक व धार्मिक शिक्षणाचा प्रसार करीत आहे. ह्या पुरुष वर्गाच्या कृतीकडे पाहून आह्मा महिला-मध्येंही जैन महिला भूषण श्रीमति मगनबाई, श्रीमती ललिताबाई व श्रीमती कंकूबाई यांच्या अव्याहत परिश्रमानें व स्वार्थत्यागानें बरीच जागृति झालेली आहे. स्त्रियांना शिकवून फायदा काय ? बालविवाहा-पासून तोटे कसे होतात ? वगैरे प्रश्न आतां ऐकूं न येतां चोहोंकडे स्त्री शिक्षणाची उत्सूकता वाढत आहे थोड्या फार प्रमाणांत मिथ्या चाली रिती थांबत चालल्या आहेत. ठिकठिकाणीं आश्रम, कन्याशाळा उघडत आहे. हा सर्व परिणाम वर निर्दिष्ट केलेल्या भगिनीत्रयाच्या परि-श्रमाचें फळ आहे हें आपण ही कबूल कराल. ह्या त्यांच्या कामगिरी-बद्दल आपला महिला वर्ग कायमचा ऋणी राहील ह्याबद्दल मला खात्री आहे व त्यांच्याच प्रेरणेनें ठिकठिकाणीं उत्साही व निस्वार्थी कार्यकर्त्री गण दिसत आहेत हें भावी उन्नतीचें चिन्ह नव्हे कां ! मोठ्या अभि-मानानें उल्लेखण्यासारखी गोष्ट ह्मटली ह्मणजे यावर्षी निघालेलें स्त्रियो पयोगी " जैन महिलादर्शन " हें मासीकपत्र होय. याबद्दल संपादिका पंडिता चंदाबाईचा मजप्रमाणें आपणही आभार खात्रीनें मानाल, सामा-

न्यपणें आपल्या समाजांत जैनस्त्रियां व मुलीकरितां आश्रम व कन्या शाळेची संख्या पन्नासापर्यंत पोहचली आहे.

मुंबई इलाखा १५, राजपुताना १०, वऱ्हाड व मध्यप्रांत ३ पंजाब ६, संयुक्तप्रांत १२, बंगाल १ ह्याशिवाय आणखी कांहीं असतील. पण सर्व देशभर पसरलेल्या चार पांच लाख जैन महिला करितां ५० संस्था ह्मणजे " दर्यामें खसखस " नव्हें कां ? आपल्या दाक्षिण महाराष्ट्र प्रांतांत शेकडा २।३ च शिक्षित स्त्रिया सांपडतात. ह्यावरून अद्याप किती तरी कामगिरी करावयाची बाकी राहिली आहे.

विद्याप्रेमी भगिनींनो, शिक्षण हें आत्म्याचें अन्न आहे. खडकावर पडलेलें बी जसें जोपासनेशिवाय व पोषणाशिवाय उगवत नाहीं तसें शिक्षण मिळाल्याशिवाय बौद्धिक नैतीक व आत्मीक शक्तीचा विकास पण होत नाहीं. कर्तव्या कर्तव्याची ओळख व सदसद् विवेक बुद्धीची जगृति होण्यास व ऐहिक आणि पारमार्थीक कल्याण करून घेण्यास ही शिक्षण पाहिजे. आह्मा स्त्री समाजामध्यें धर्मश्रद्धा ज्यास्त आहे हें खरें; पण ह्यास धर्म-ज्ञानाची जोड मिळाली तर आपल्या आचारांविचारांत किती तरी फरक पडेल ? व्यक्ती आणि समाज यांचें जसें नातें तसें कुटुंब व राष्ट्र यांचें नातें निगडित झालेलें असतें. कुटुंब ही संस्था किती महात्वाची आहे हें मी सांगावयाला नको. स्त्री-पुरुषांनीं बनलेला गृहस्थाश्रम खरा सुखी होण्याला स्त्रिया सदाचारी धर्मप्रेमी, शिक्षित व व्यवहारज्ञ पाहिजेत ह्याचा अनुभव प्रत्येकास आहे. अज्ञानामुळें कौटिंबिक जीवन दुःखी करून घेतलेल्या भगिनी कितीतरी आढळून येतात. पुढच्या उन्नतीला कारणीभूत अशा ह्या गृहस्थाश्रमाचीं कर्तव्यें बजावण्यास आह्मी अज्ञानी राहून कसें भागेल बरें अज्ञानाचा परिणाम आह्मांसच भोगावा लागत नाहीं तर ज्या संततींना जन्म देतों व ज्यांचें संगोपन व वर्धन आह्मांवर आवलंबून

असतें त्यांचें नुकसान करीत नाहीं कां ? व पर्यायानें राष्ट्राचे योग्य राष्ट्रसेवक न बनविल्याबद्दल अपरिमित अकल्याण केल्याचें पातक माथीं घेत नाहीं कां ? मुलामुलींमध्यें सद्वर्तनाची आवड, धर्मश्रद्धा, स्वदेशभक्ति व तत्प्रीत्यर्थ कष्ट सोसण्याची बुद्धि, सारांश कुटुंब राष्ट्र व धर्म या नात्यानें पडणाऱ्या सर्व जाबबदाऱ्या पारपाडण्यास योग्य असें बनविण्याचें कार्य हें आपलें आहे. शंभर शिक्षक जें कार्य करूं शकत नाहींत तें एक माता करूं शकते पण ही माता कशी असावयाला पाहिजे हें आपण सहज ओळखूं शकाल; व सध्यां पुरुषवर्ग शिक्षणांत झपाट्यानें पाऊल पुढें टाकीत असतां आपण मागें रेंगाळत राहिलों तर पुढें मागें कौटंबिक जीवन समानदर्जाच्या स्त्रीपुरुषाच्या अभावीं सुखी होण्याचा असंभव अशी स्त्रीशिक्षणाध्वर्यू प्रो. कर्वे यांना भीति वाटते त्याच्यांत बरेंच तथ्य आहे हें लक्षांत ठेवा. तेव्हां आपण निश्चय करूं या कीं आपल्या समाजांत एक ही स्त्री अज्ञानी राहता कामा नये. व या कार्याप्रीत्यर्थ जो कांहीं मार्ग आखूं तो कार्य क्षेत्रांत उतरविण्याचा आपण प्रयत्न करूं या.

बाल विवाह.

पण मातांनो या शिक्षणाला आड येणारी एक अत्यंत घातुक चाल आपल्यांत पडली आहे. व ती बाल विवाह ही होय. लहानपणी मुलामुलींचा लग्न सोहळा पाहण्याच्या इच्छेनें किंवा मुसलमानच्या अमदानीपासून पडलेल्या ह्या चालीचें उच्चाटन करण्याचें धैर्य होत नसल्यामुळें ह्मणा बालविवाहाची चाल अद्याप मोडत नाहीं ही दुःखाची गोष्ट होय. ह्यामुळें शारिरीक ऱ्हास होतो. शिक्षणास अडथळा येतो व विवाह ह्मणजे काय व त्याची जबाबदारी कोणती ह्याची जाणीव नसतांना त्याना चतुर्भुज करून टाकावयाचें व ह्यापासून होणारें सर्व नुकसान उघड्या डोळ्यांनीं बघत असतां अद्याप आपण ह्या

चालीला बळी पडावें हें आश्चर्य नव्हे कां? बालविवाहानें अकाळीं प्राप्त होणाऱ्या मातृपदानें होत असलेल्या नुकसानाचें वर्णन मी करण्यास असमर्थ आहे. स्वतःची हानी करून घेतोच व त्याबरोबर दुर्बळ व निकामी प्रजा उत्पन्न करण्याचें पातकही घेतों. जगांतल्या इतर राष्ट्रापेक्षां आपल्या देशांत मुलांची मृत्यु संख्या ज्यास्त व सामान्य स्त्रीपुरुषांची आयुर्मर्यादा कमी. ह्या सर्वांचे इतर कारणाबरोबर बालविवाह व अकाळीं मातृपद हे होत असें मला वाटतें. ह्या गोष्टी नाहींशा करण्याचें यश आपण घेऊन आपल्या स्त्रीसमाजाला ह्या घोर पातकापासून वाचविण्याचें पुण्य पदरीं बांधून घेऊं या.

ह्याचाच जोडीची किंवा कंकणभर ज्यास्त निंद्य चाल ह्मणजे पोटचा गोळा पैशाच्या लोभानें किंवा अन्य कारणानें एकाद्या वृद्धाला विकणें हें होय. नातीसारखी शोभणाऱ्या मुलीशीं लग्न करून वृद्धघोड नवऱ्याला काय संसारीक सुख मिळत असेल तें परमेश्वर जाणे! परंतु आपल्या विषयवासनेची लालसा पुरविण्याकरितां ह्मणून पाषाण हृदयी बापापासून गुराढोराप्रमाणें मुलगी विकत घेऊन लग्न करणें हे पुरुषाच्या पौरुषत्वाला तरी कितपत शोभते! समाजात हजारांत २३७ स्त्रिया विधवा आढळतात. व हजारांत ५ वर्षाच्या आंतील विधवा ३ व ५ ते १० वर्षाच्या आंतील ९ व १० तें १५ वर्षाच्या आंतील २५ हे आंकडे व इतर समाजाचे आंकडे पहाल तर आपल्या जैन समाजांत ह्या चाली बऱ्याच जोरांत आहे असें आपणांस आढळून येईल. तेव्हां अजाण बालिकेच्या जीवनाचा सर्वस्वी घात करणाऱ्या ह्या अमानुष चालीरिती अपवादात्मक देखील घडूं नये व तत्प्रीत्यर्थ आपला बंधुवर्गही आपणास सहाय्य करील अशी मला खात्री आहे.

ह्याशिवाय हुंड्याची वाढत चाललेली चाल व त्यामुळें मुली ह्मणजे पोटीं काळ जन्मल्या असें वाटूं लागलें आहे. ह्याला ही आळा घसावयास पाहिजे.

स्वदेशी चळवळ.

दुसरी एक महत्वाची गोष्ट सांगावयाची ह्मणजे सध्यां देशांत चाललेल्या राजकीय चळवळीकडे कानाडोळा करून भागावयाचें नाहीं. चळवळींत पूर्ण भाग घेऊं शकलों नाहीं तरी निदान स्वदेशीच कपडे वापरणें व शक्य तर खादी नेसण्याचें व्रत आपण घ्यावयास पाहिजे. स्वदेशी वस्त्र नेसण्यानें कोट्यावधि उपासमार लोकांना घासभर जर अन्न मिळूं शकते तर एवढें ही सहजासहजीं घडणारें पुण्यदायक कार्य करूं नये काय ? आपण घोर तपश्चरण व परीषह सहन करणाऱ्या पूर्वजाचे वंशज आहोत. हें लक्षांत ठेवून थोडासा ओबडधोबड किंवा जाडाभरडा कपडा नेसण्यास कचरणें शोभेल काय ?

साधेपणा व पुनः आर्थीक फायदा होतो ही गोष्ट वेगळीच. व अहिंसेच्या दृष्टीनें देखील ह्या स्वदेशी चळवळींत कृतीनें भाग घेणें जरूर आहे. असें मला वाटतें.

आत्मयज्ञ.

भगिनींनो आतांपर्यंत थोडक्यांत ज्या गोष्टींचा उल्लेख केला त्या-घडवून येण्यास एकाचीच अत्यंत उणीव भासते.

कोणत्याही समाजाची उन्नति त्याच्या त्याग बुद्धीवर आवलंबून असते. विशेषतः ही त्याग भावना आमच्या जैनधर्माचें एक प्रमुख अंग आहे. आजपर्यंत आपले पुढारी महान् त्यागी होत आले आहेत. जेव्हांपासून ह्यांत कमतरता दिसून आली तेव्हांच आपल्या अवनतीला सुरुवात झाली. त्याग ह्मणजे अज्ञानपणानें सोडलेल्या वस्तु नव्हेत तर शास्त्रोक्तरीत्या प्रातिमासेवन करणें हाच खरा त्याग होय. अहंकार व ममत्व बुद्धिचा पूर्ण नाश करून परोपकारमय जीवन बनविणाराच खरा त्यागी होय. अशा प्रकारच्या सुशिक्षित त्यागी व त्यागिणीची

संख्या जितकी ज्यास्त वाढेल तितकी आपल्या समाजाची उन्नति शीघ्र होईल. ही संख्या वाढविण्याकरितां ठिकठिकाणीं विधवाश्रम काढून विधवांना व गृहस्थाश्रमापासून उदास झालेल्या स्त्रियांना त्याठिकाणीं धार्मिक व व्यवहारीक शिक्षण देऊन त्याजेव्हां आर्यिकेच्या संघाप्रमाणें देशांत विहार करतील तेव्हांच पूर्वकाळाप्रमाणें समाजाचें जीवन साधे पण उच्च आचारविचाराचे दिसून येईल. पाश्चात्य संस्कृतीच्या सहवासानें पूर्व संस्कृती जी पुसत चाललेली आहे ती सद्यस्थित्यनुरूप पुनश्च उज्वल दिसूं लागेल.

या व्यतिरिक्त आपल्या प्रांतांत उच्च लौकिक व धार्मिक स्त्रियोपयोगी संस्था गुरुकुलच्या पद्धतीवर स्थापन व्हावयास पाहिजेत. सोप्या भाषेंत स्त्रियोपयोगी धार्मिक ग्रंथमाला सुरु व्हावयास पाहिजे. जैन महिलादर्शनाप्रमाणें मराठी भाषेंत स्त्रियाकरितां म्हणून मासिक निघावयास पाहिजे. सध्यां अस्तित्वांत असलेल्या स्त्रियांच्या संस्थेची व कार्य करणाऱ्या महिलाची एक संघटना व्हावयास पाहिजे. वेळोवेळीं त्यांनीं एकत्र जमून आपल्या कार्याचें जाळें सर्व देशभर पसरावयास पाहिजे या व अशा प्रकारच्या साधनांनीं आपली उन्नति होईल. असें मला वाटतें.

प्रेमळ सहनशील मातांनों आतांपर्यंत आपण माझें भाषण शांतपणें ऐकून घेतलें ह्याबद्दल मी आपली फार आभारी आहे. मला हें स्थान दिल्याबद्दल मी आपले पुनः एकदां आभार मानतें व आतां शेवटची इच्छा प्रदर्शित करून मी आपलें भाषण संपवितें. गुरुकृपेने धर्मोन्नति व समाजोन्नतिकरितां गांवोगांव जैनसेविका निर्माण होवोत. माझी तीव्रइच्छा आहे कीं, ठिकठिकाणच्या कन्या शाळा व आश्रम अज्ञानअंधःकार दूर करीत असलेले पहावें. माझी उत्कट महत्वकांक्षा आहे कीं, प्रत्येक जैनाच्या घरीं विद्या, धन, धान्यादिची

समृद्धि होऊन आबालवृद्ध जैनांनीं सामायिक स्वाध्याय वगैरे करावें व त्यांच्या घरीं पूर्वींप्रमाणें अध्यात्मिकचर्चा चालावी. जैनधर्म आचरणांत येऊन जैनी कुटुंब आदर्शभूत व्हावें. पुनश्च आपल्या भारत वर्षांत स्वपर उद्धारार्थ मुनींचा व आर्यिकेंचा विहरणारा संघ पहावयास मिळावा व त्यांच्या दर्शनानें पवित्र होऊन त्यांतच लीन होण्याचें सौभाग्य मला प्राप्त होवो. व अंतिम प्रार्थना एवढीच आहे कीं.

" क्षेम सर्व प्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः
काले कालेच सम्यग्विकसतु मघवा व्याधयो यान्तुनाशम्
दुर्भिक्षं चौर मारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जी व लोके
जैनेंद्र धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व सौख्यप्रदायी ॥

॥ ॐ शांति. ॥





श्री आत्मानन्द जैन गुरुकुल

[गुजरानवाला-पंजाब]

के

षष्ठ वर्षिकोत्सव के सभापति

बाबु श्री बहादुरसिंहजी सिंघी

का

व्याख्यान

मार्च, सन १९३२.

;हादुरसिंहजी सिंघी
लोअरसरक्युलर रोड,
—कलकत्ता.

मुद्रक :
चीमनलाल ईश्वरलाल महेता.
" व सं त मु द्र णा ल य "

नमोऽस्तु भगवते श्रीमन्महावीराय ।

धर्मप्रिय सभ्यजन, अध्यापकवर्ग और विद्यार्थिगण !

सबसे प्रथम तो मैं आजके इस आनन्ददायक प्रसंग पर, आप सब बन्ध दर्शन करनेका और परिचय प्राप्त करनेका जो मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है उसके मैं आपका हृदयसे अभिनन्दन करता हूं । इस गुरुकुलके अधिष्ठाता और प्राण भाईसाहब श्री कीर्तिप्रसादजीका कोई तीन चार वर्षसे आग्रह था कि मैं गुरुकुल वार्षिक संमेलनपर उपस्थित हो कर कुछ अपनी सेवा समर्पित करूं । लेकिन तक मुझे, अपनेमें इस विषयकी कोई विशेष योग्यता न पाकर, इस पदके स करनेमें पूरा संकोच रहा: और उस लिये मैं टालमटोल करता रहा । लेकिन इस यका अधिष्ठाताजीका आग्रह बहुत उग्र स्वरूपका था और उसका अस्वीकार मुझे अशक्य सा प्रतीत हुआ, एतदर्थ, मूकभावसे, इस बार मैंने इस आज्ञाके होना अपना कर्तव्य समझा; और बिना हि हां–ना कुछ कहकर मैं आज सेवामें उपस्थित हुआ हूं ।

मेरे लिये तो यह एक सौभाग्य और हर्षका प्रसंग है कि–गुरुकुल जैसी और सत्क्रियाकी शिक्षा दे कर मुक्तिका मार्ग बतलानेवाली संस्थाकी, इस प्रकार चित् सेवा करनेका धन्य प्रसंग मुझे प्राप्त हुआ। लेकिन इसके साथ ही मैं, अपने स जो एक अनुचित परंपरा रूढ हो गई है उसकी और आपका ध्यान खींचना चाहत वह परंपरा है किसी भी जलसे पर धनाढ्य या लक्ष्मीप्रिय व्यक्तिको प्रमुख बनाने व समाजका झुकाव । प्राय: अपने समाजमें, जितना ही बडा द्रव्यसंपन्न व्यक्ति स पदके लिये मिले उतनी ही जलसे की महत्ता और सफलता समझी जाती है बात चाहे किसी हद तक ठीक हो पर इस एकतरफी झुकावमें दूसरी महत्वकी सची बाजु दबही नहीं बल्कि लुप्त सी हो गई है। कोन्फरन्स जैसी सामाजिक ओंकी बात अभी छोड दें, तो भी गुरुकुल जैसी विद्या और शिक्षाप्रधान संस्थ लिये यह कभी शोभारूप नहीं समझा जा सकता, कि जब दो मेंसे एककी पसं सवाल आवे तब ये विद्वान् को छोड धनवान्को सभापति चुनें । इसमें सीर्फ ही नहीं बल्कि वैसी विद्याजीवी संस्थाओंके ध्येय की बडी भारी हानि भी है

₹ महासभाके सभापति धनवान ही बनाये जाते तो आप समझ सकते है कि उसकी देशकी स्थिति आज वैसी ही होती जैसी हमारी संस्था और समाजकी हैं । यह निवानों का ही फर्ज है की वे अपनी योग्यता का कार्यक्षेत्र निश्चित करें । यह बात है की कोई धनवान् होनेके साथ साथ विद्वान् भी हो, तो उसको ऐसे पदके खुशीसे पसंद कीया जाय; परंतु सामान्य नियम एक ही होना चाहीए और वह दृष्टिसे यही कि जहां जहां विद्या और विचारका संबंध हो वहां सर्वत्र अधिकसे क विद्यासंपन्न और विचारसंपन्न व्यक्तिको ही प्रमुख बनाकर उसके ज्ञान और एका लाभ उठाना चाहिए ।

गुरुकुल—

गुरुकुल क्या है और उसका ध्येय और कार्य क्या है इस विषयमें बहुत कुछ सुना गया है और आप सब लोग उससे अब परिचित भी हो गये हैं, इस लिये । विषयमें कुछ विशेष न कहकर और प्राचीन इतिहासके गहरे तलमें न जाकर, वर्तमान बातोंका ही कुछ ऊहापोह मैं आपके सामने करना चाहता हूं । यह बात । विदित ही है कि प्राचीन कालमें हमारे देशमें शिक्षा और विद्याका जितना था वैसा जगत्के और किसी देशमें न था । भारतवर्ष ही उस समय संसारका दायक गुरु था । भारतवर्षहीसे विद्या और शिक्षा प्राप्त कर दूसरे देश सभ्य और त बने थे । उस प्राचीन कालमें भारतवर्षने जो ज्ञानविषयक उन्नति प्राप्त की सका इतिहास पढ कर आज युरपका बडेसे बडा विद्वान् भी आश्चर्यचकित होता उस समय भारतवर्षमें जैसे महान् गुरुकुल और विश्वविद्यालय थे उनकी तुलना के वैसे विद्यालय आज बीसवीं शताब्दीका युरप भी नहीं स्थापित कर सका । कालके नियमानुसार भारतवर्षका वह ज्ञानसूर्य विपत्तियोंके बादलोंसे आच्छादित शताब्दियों तक हमारे लिये अंतरित सा हो गया, और उसके सबबसे देशमें सर्वत्र न्धकार फैल गया । मुसलमान प्रजाके, शताब्दियों तक होते रहनेवाले क्रूर और क आक्रमणोंके कारण भारतवर्षकी सारी ही प्राचीन व्यवस्था और संस्कृति छिन्न हो गई । तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिलाके जगद्विख्यात महाविद्यालय जमीन-हुए और पंजाब, सिंध, गूजरात, राजपूताना, मालवा और मध्यदेशके वैसे ही विद्यामन्दिर, पाठशालाएं और सरस्वती भंडार भस्मिभूत हुए । राजा और ो अपने प्राणोंकी रक्षा करना भी जहां कठिन हो गया था वहां विद्या और संस्कृ-शिक्षास्थानोंकी रक्षा करना कहां संभव था । बस पीछले सातसौ वर्ष तकका

भारतका इतिहास इसी प्रकारकी अव्यवस्था और अन्धाधुन्धीसे भरा हुआ है; और भारतके उस प्राचीन ज्ञानसूर्यको आवृत्त करनेवाले विपत्ति-स्वरूप बादल थे। अन्धकारयुगमें हमारी ज्ञानज्योति बहुत कुछ नष्ट होगई—हमारे वे सब पुराने गुर विद्यालय, पाठशालायें और सरस्वीत-भंडार, जो प्रजाकीय जागृति और ज्ञानप्रा मुख्य स्रोत समान थे वे लुप्त हो गये और सर्वसाधारण जनता एक प्रकारसे ज्ञान विहीन जैसी हो गई।

जब से इस देशमें अंगरेजोंका शासन शुरू हुआ और देशकी वह अन्धा कुछ शांत हुई तब से फिर विद्याका वह टिमगिमाता हुआ दीपक कुछ तेज लगा। अंगरेजों के साथ इस देशमें अनेक चीज़ें आई उनमें एक विद्याकी भावन थी। एक तरफ से राज्यकर्ताओंने अपने सुभीते के लिये अपने ढंगसे शिक्षा चाहा और अपनी संस्कृतिके अनुरूप शिक्षालय (स्कुल्स, कोलेजिस्) स्थापित वि दूसरी तरफसे राष्ट्रहितैषी और अपनी संस्कृतिकी रक्षा चाहने वाले महानुभावोंने जा तथा धार्मिक भावना पर विद्यालय स्थापन करने शुरू किये। उन महानुभावोंमें तेजस्वी आत्मा स्वामी दयानंदकी भी थी, जिन्होंने गुरुकुलका लुप्तप्राय: नाम ि मूर्तिमंत करनेका उपदेश दिया। शुरूमें कांगडीका गुरुकुल अस्तित्वमें आया। उ असर सनातन धर्मावलंबी भाई, जो उन दिनोंमें आर्यसमाज के कट्टर विरोधी थे ऊपर भी पडा और उन्होंने भी जहां तहां ऋषिकुल आदि संस्थाएं स्थापन कीं तरह आर्य समाज और सनातनी लोगोंका संघर्ष चलही रहाथा उसी बीचमें समाजके लोग भी जागे। शुरूमें जहां तहां पाठशालाएं—खासकर गूजरातमें खु फिर बोर्डिंगयुग (छात्रालय युग) आया। एक तरफसे धार्मिक शिक्षाके लिये शालाएं और दूसरी तरफसे स्कुल और कोलेजमें पढने वाले विद्यार्थीओंके सुभी लिये छात्रालय; इस तरह दो प्रवृत्तियां अलग २ चल रही थीं पर दोनोंमें त्रुटि जो धीरे २ माळूम होने लगी। ऐसा माळूम हुआ कि शिक्षाका सारा प्रबंध स्वा रूपसे करना और विद्यार्थीओंको संस्थामें ही रखकर अपनी इच्छाके अनुसार ि देना। इस भावनाने अपने समाजमें भी गुरुकुल स्थापित करवाए। इनमें पालीता गुरुकुल पहिला है। स्वर्गीय आचार्य श्रीआत्मारामजी महाराज इस नवयुग के प्रसिद्ध साधु और विद्याप्रिय व्यक्ति थे। उनकी भावना चारों ओर विद्याप्रचारकी थी पर उसे अपने जीवनमें सफल नहीं कर पाये। उनके अंतेवासी विद्यमान प्रसिद्ध आ विजयवल्लभसूरीने अपने गुरुकी भावना को मूर्तिमंत करनेका व्रत लिया, और जहां

नता हूं, उन्होंने पिछले पच्चीस तीस वर्ष सीर्फ इसी व्रतके पालन और पूर्णता
ा बिताये हैं। पंजाबका यह गुरुकुल उन्हींका मूर्त प्रयत्न है। इसकी उम्र तो
छोटी है पर इसके कइ वर्ष पहिले ही उन आचार्यने गूजरातमें अनेक विद्या
ऐं खुलवाई हैं जिनमें बंबइका महावीर विद्यालय सबसे अधिक प्रसिद्ध है। अब तो
ाद्याकी भावना यहां तक फैल गई है, कि मारवाड जो सबमें पिछडा हुआ देश
समें भी पाठशालाएं, विद्यालय और गुरुकुल स्थापित हो रहे हैं। यहां तक कि
वासी भाई जो विद्याके क्षेत्रमें सबके पीछे गिने जाते थे उनके भी दो गुरुकुल
ड–मेवाडमें और एक पंजाबमें चल रहे हैं।

शिक्षणक्रम–

यह तो संक्षेपमें विद्यासंस्थाओंका बाहिरी इतिहास हुआ। अब शिक्षण–
ो ओर नजर करनी चाहिए। पुराने जमानेके विद्यालयोमें और गुरुकुलोमें
समयकी सब विद्याएं सिखाई जातीं थीं, पर उसका आदर्श त्याग और
था। इस जमानेके विद्यालयों और गुरुकुलोंमें शिक्षाके विषय तो बढ
ाये हैं पर आदर्श भी थोडा बदला गया है। यह समय त्याग तो
ी रहा है पर यह त्याग के द्वारा शरीरमोक्षके बदले राष्ट्रीय मोक्ष और
ा-मुक्तिको पहिले सिद्ध करनेको कहता है। आज हम ऐसी कोइ संस्था
हीं सकते और चला भी नहीं सकते कि जहां अंगरेजी भाषा सीखाई न जाती
उसमें अंगरेजी भाषाका बहिष्कार करके विद्यार्थी रखनेका नियम कर दिया
हम अपनी २ धर्मभाषा प्राकृत, संस्कृत, पाली आदि तथा मातृभाषा हिन्दी और
भाषा सीखाएंगे सही फिर भी अंगरेजीको अवश्य रखेंगे। सीर्फ भाषामें ही
र विषय और प्रणालीमें भी बडा फर्क पड गया है। पुराने पंडितोंकी प्रतिष्ठा
ोफेसरों को प्राप्त हुई है। सरकारी शिक्षामें जो अर्थ प्राप्ति की दृष्टि और
ी डिगरीयोंकी महत्ताकी दृष्टि मुख्य रही है वह इतनी गहरी है, कि उसे अभी
ुरुकुल या विद्यालय दबा नहीं सका है। राष्ट्रीय और जातीय भावना पर
हुए गुरुकुलों और विद्यालयोंमें पढनेवाले विद्यार्थीओंके, और काम करने वाले
के, दिलमें अर्थ-प्राप्तिकी दृष्टि मुख्य है। इससे हमें शिक्षाके विषय और
 ढंग भी वैसे ही रखने पडते हैं कि जिससे मुकाबिले में हम अपने बालकोंसे
ा कर अधिक पैसा प्राप्त करवा सकें। विद्यार्थीओंके मावाप, हम और उनके
लोग, अभी त्याग और धर्मके आदर्शकी बातें तो करते हैं, और उस आदर्शके

नाम पर गुरुकुलोंमें लडकोंको भेजते और पढाते भी हैं; पर हमारे हृदयमें और ह
काम कर रही है । और वह दृष्टि दूसरी कोई नहीं, वह है सीर्फ अर्थदृष्टि ।
परीक्षा करनी हो तो दो ऐसे गुरुकुलोंकी कल्पना करिए जिनमें एक तो ऐसा हो,
पढने वाले सब विद्यार्थी आगे जा कर खूब मालदार हो सकते हैं और दूसर
हो, कि जहां पढनेवाले विद्यार्थी सीर्फ संतोषपूर्वक पेट भरने लायक कमानेकी
प्राप्त कर सकते हैं । दोनों गुरुकुलोंमें लडकेको दाखिल करनेकी कठिनाई ए
हो, तो आप देखेंगे कि कितने माबाप पिछले गुरुकुलमें अपने बालकोंको भे
अगर वह खाली न रहा तो सद्भाग्य समझिए । मैं तो यहां तक कल्पना कर
हूं कि पहिले गुरुकुलमें काफी तनख्वाह का पूरा इंतजाम हो तो दूसरे गुर
शिक्षकोंका मिलना भी करीब २ असंभव हो जायगा । यह एक गढंत बात इस
आपके सामने रखता हूं कि जिससे हमें अपनी दिलकी सच्ची भावनाका पत्ता चल

इसमें तो कोई संदेह नहीं है कि हमे जीवनके लिये अर्थ की जरूरत
रहेगी और समाज का जीवन और उसका बल भी अर्थ पर ही निर्भर है; प
अपनी अर्थदृष्टि बदलनी होगी और सो भी समज और बुद्धिपूर्वक । लाचारीसे
निभाना एक बात है और समझपूर्वक संतोष धारण करना दूसरी बात है ।

मा बापोंके दिलोंमें और खास कर संस्थाओंके कार्यकर्ताओंके दिलोंमें
जीवनमें जो भावना होगी वही विद्यार्थीओंमें आवेगी, दूसरी नहीं । अगर हमें ऐसे
और धार्मिक भावना पर खडे किये गये गुरुकुलों और विद्यालयोंके द्वारा प
संस्कृतिका सामना करना है और अपनी संस्कृतिकी रक्षाके साथ साथ स्वाव
होना है तो मेरी समझमें नीचे लिखे सिद्धांतोंका पालन हमारी संस्थाओंके
अनिवार्य होगा ।

(क) बुद्धिप्रधान शिक्षाके साथही साथ अर्थकरी शिक्षा भी आवश्यक है

(ख) सादगी और स्वावलंबी जीवनका अभ्यास धर्म के तौर पर बु
होना चाओीए ।

(ग) विद्या, संतोष और कार्यशक्तिकी प्रतिष्ठा धन, पद और दूसरे बाह्य
अधिक समझी जाय ।

(घ) त्यागकी परीक्षा जीवन और चित्तवृत्तिसे की जाय, नहीं की सीर्फ
लक्षणोंसे । और उसमें सर्वोपरी स्थान सच्ची सेवाका हो ।

यहां मैं यह कह देना चाहता हूं कि न तो गरीबी ही पाप है और न पैसा ही शाप है। अगर बुद्धि तथा पुरुषार्थ दोनोंका विकास हो तो चाहे गरीबी हो या वैभव हो; हर अवस्थामें उन्नति है। बुद्धि और पुरुषार्थ न होगा तो पैसा या मिलने पर भी पतन होगा; क्यों कि उससे अभिमान, विलास और परावलंबी- पुष्टी हो कर आखीरमें बरबादी होगी। अगर बुद्धि और पुरुषार्थ न हुआ तो भी पतनका कारण होगी; क्यों कि उससे आदमी अपनेको पैसेवालेके सामने दीन और मझेगा। जैसे अभिमानीमें, वैसे ही दीनमें भी धर्म और तेज नहीं हो सकता। ये हर हालतमें बुद्धि तथा पुरुषार्थका विकास करना यही शिक्षाका आदर्श होना ; और इसी आदर्श पर शिक्षकोंका तथा संस्थाओंका जीवन प्रतिष्ठित हो और क अनुसार शिक्षण-प्रणाली भी हो। विद्यार्थीओंके मातापिता भी इस भावनाको तािक संस्था और घर की विरोधी दो भावनाओंके बीच विद्यार्थीओंका जीवन कराया न फिरे। गरीब और साधारण लोग अपनेको हलका और दीन न मानें सेवाले अपने को बडा और सबकुछ न समझें। सब अपनी अपनी स्थितिका । सार्वजनिक भलाईमें करें। यही सच्चा धर्म और सच्चा साम्यवाद है।

स्त्रियोंकी शिक्षाका प्रश्न-

ध्येयकी इतनी लंबी चर्चा मैंने इसलिये की है कि अभी हमारे जातीय विद्यालय अस्थिरता के कारण डगमगा रहे हैं। अब मैं स्त्री जाति के विषयमें भी कुछ करना चाहता हूं-

ा समाजमें स्त्री जातिको विशिष्ट स्वातंत्र्य दिया हुआ कहा जाता है। भगवान महावीरने ंघ की स्थापना कर स्त्रीजाति की पूर्ण प्रतिष्ठा बढाई है; पर हमारे व्यावाहारिक जीवन वैसे ही हैं, जैसे स्त्रीजाति की प्रतिष्ठा न करने वाले और२ समाज। आप गृहस्थ स्त्रिओंकी ाने दीजिए पर साध्वीओंके जीवन का अभ्यास करेंगे और इतिहास देखेंगे तो पता चलेगा कि अपने समाजने स्त्रीजातिमें विद्यावृद्धि करनेका कोई विशेष नहीं किया है। भूतकाल की यह त्रुटि अब निभाही नहीं जा सकती। पडौसी में स्त्रियां बीलकुल समान भावसे पुरुषोंकी तरह शिक्षा पा रही है और पुरुषोंकी ी विद्या जैसे गहरे क्षेत्रमें काम कर रही है; फिर हम, स्त्रियोंकी तरफ उदासीन जीवित रह नहीं सकते। पंजाबमें ही नहीं पर करीब २ सब प्रांतोंमें स्त्रीशिक्षाके ोई न कोई संस्था मौजूद है। जब हमारे समाजमें ऐसी कोई संस्था नहीं है।

पाठशालाएं, स्कुल, बोर्डिंग, गुरुकुल, विद्यालय और जो कुछ है वह लडकोंके लि
पर लडकियोंके लिये तीनमेंसे कीसी फिरकेमें ऐसी संस्था नहीं है जहां लडकियां
विश्वासपूर्वक रक्खी जायं और बडी उम्रतक पढाई जायं। आर्यसमाज के कई
गुरुकुल, महाशय कर्वेका महिला-विद्यालय और शांतिनिकेतनका नारीविभाग इ
इतनी सफलता पूर्वक चल रहे हैं तब यह माननेका कोई कारण नहीं है कि
समाजमें कन्याओंको और स्त्रिओंको संस्थामें रखकर पढानेमें कोई खतरा हो
कन्याओंको शिक्षण दे सकें और संभाल सके ऐसी स्त्रियां, अगर शुरु २ में
समाजमेंसे न मिले तो जहांसे मिल सके वहांसे उन्हें लाकर भी, हमें स्त्रीजातिके
प्रयत्न करना होगा। आज हमारे सामने विधवाओंका विकट प्रश्न है। देहात
कस्बे, जहां कि कन्याशिक्षाके लिये कोई भी प्रबध नहीं है, वहां की कन्या
शिक्षाका भी सवाल है; और साथही साथ विवाहित सधवा स्त्रियां, जिनके पति
मा बाप उन्हें कुछ शिक्षा देना चाहते हैं, उनकी शिक्षाका भी सवाल है। ये सब
तब तक हल नहीं हो सकते जब तक सीर्फ कन्याओंके और स्त्रिओंके ऐसे वि
खास २ जगह न स्थापित हो जहां प्रधानरूपसे स्त्रियां ही काम करती हों और
लेकर आखिरी शिक्षातकका पूरा प्रबंध हो।

साधु संघका सवाल–

अब मैं साधु संघ के बारेमें भी अपना विनम्र मत प्रकट करता हूं। इसमें
साध्वी दो अंग हैं। पुराने जमानेको गाकर मैं समय लेना नहीं चाहता। भूत काल
या बुरा जो कुछ रहा हो उससे फूल जाने या दुःखित होनेमें अभी कोई लाभ नहीं
हम साधुओंको अपढ, अविद्वान और अधूरा कह कर चोट पहूंचाना नहीं चाहते
ऐसा करना या चाहना हमारे लिये योग्य भी नहीं है। फिर भी हम उन पूज्य व्य
योंका ध्यान जमानेकी ओर न खीचेंगे तो हम ही उनके शत्रु बनेंगे। जब साधु
मुख्यतया जंगलमें रहता था और सामाजिक तथा व्यवहारिक प्रवृत्तिसे उनका
नहींसा था तब तो वे जो कुछ थे ठीक थे; लेकिन आज वे हमलोगोंके बीचमें
रहे हैं और हमारी सामाजिक तथा राजकीय प्रत्येक स्थितिका अच्छा बुरा प्रभाव
ऊपर भी पडता है। वे लोग भी हमारी स्थितिको उन्नत देखना चाहते हैं; और
ही साथ वे अपनेको भी जगद्गुरु मनवाना पसंद करते हैं। इस दशामें उनका
योग्यता बढाने के बारे में कई गुना बढ जाता है। अगर महात्मा गांधीजी योग्य न

के पाससे अहिंसाका संदेश कौन सुनता; अमेरिका और युरोप उनके पीछे क्यों लगता। हमारे साधुभी शास्त्रोंकी शिक्षाके साथ २ सामयिक उपयोगी विद्याओंको व्यव-रूपसे सीखते और चारित्रको सेवामें परिणत करते तो उनकी प्रतिष्ठा तो बढती ही थ ही साथ हमारी शिक्षाविषयक संस्थाएं भी बहुत कम खर्चमें चलतीं। इस लिये साधुओंसे यह नम्र निवेदन करुंगा की वे अपने बेफिकरी जीवन का उपयोग वेद्याके प्रचारमें करें और वे अपना गुरुकुल आपही चलावें; जैसे बौद्ध भिक्षु सी-र्मा आदिमें चलाते हैं।

आज कल जो बन रहा है और जा सुनने मैं तथा अखबारोंसे पढनेमें आता से तो दुःखके साथ यही कहना पडता है कि जहां जहां साधु नहीं पहुंचे कम जाते हैं वे स्थान एक तरहसे बडे नसीबदार हैं; क्यों कि वहां धर्मके नामपर दंगा और न कोई फिसाद होता है। जिन २ अड्डोंमें साधु हंमेशा रहते हैं या जाते हैं उन अड्डोंमें सीर्फ मामुली खटपट ही नहीं बलकि तरह तरहकी मुकर्दमे-ां भी चल रहीं हैं। यह तो सब कोई कहता है कि साधुओंको तकरार से क्या; समझने की कोई परवा ही नहीं करता कि, तब फिर साधुओंके नामपर मुकर्दम्माबाजी और साधु अदालतोंमें क्यों जाते हैं? पाटण, अहमदाबाद, बंबई जैसे जैन वस्ती स्थानोंमें जहां हमेशां सेंकडों साधु रहते हैं वहां एक भी साधुओंका विद्यालय चलता और मुकर्दमाबाजी तो दिन ब दिन बढती ही जाती है। क्या हमारा इस इशारे पर विचार करेगा कि विद्या और देशकार्यमें जिस द्रव्यकी अत्यंत कता है, उस लाखों रुपयोंकी रकमको मुकर्दमों और दूसरी खटपटोंमें ही खर्च गरीब श्रावकोंको और भी गरीब बनाकर नष्ट करना ठीक है। धर्मके नव तत्त्वोंमे तत्त्व है। उसका उपयोग इस समय व्यावहारिक जीवनमें बहूत जरूरी है। लोग अपनेको सीखाते हैं कि नव तत्त्वोंपर श्रद्धा करनेसे सम्यक्त्व प्राप्त होता है। स्वयं संवर तत्त्वके महत्त्वको क्यों नहीं समझते? वे अपनी सारी शक्तिके अपव्ययको के लिये संवरका उपयोग क्यों नहीं करते? हम श्रावकोंको समझ लेना चाहिए धुओंकी भक्तिका उपयोग हम अपनी आपसी तकरार बढानेमें न करें। और जरूर हो वहां विवेकपूर्वक उनका निर्भय शासन भी करें।

साधुओंसे संबंध रखनेवाली एक और खास बात का निर्देश मैं करना चाहता समें तो शक ही नहीं कि शिक्षासे संबंध रखनेवाली अनेक संस्थाएं किसी न किसी

साधुके थोडे बहुत प्रयत्नका ही परिणाम है और इसलिये हमें साधुओंका कृतज्ञ चाहिए। पर साथ ही साथ इस संबंधमें उनकी जो त्रुटि हो, तो उससे भी उन्हें कर देना और बचा लेना चाहिए। मैं ऐसी एक त्रुटिको कह देना चाहता हूं। संस्थाओंके साथ साधु अपना नाम लगवाना पसंद करते हैं या अपने गुरुओंक जोडना चाहते हैं। उसमें कोई खास बुराई नहीं है; पर जहां कहीं साधु, स्थापित करके उसमें बैठ जाते हैं और विद्यार्थीओंका तथा गृहस्थोंका अनिष्ट बढा देते हैं, वहां चाहे कुछ समय तक भले ही दोष छिपे रहते हों, पर आ उस संस्थाका और खुद साधुओंका भी पतन ही होने लगता है। अगर कोई संस्थाकी सेवा करना चाहता है तो वह अलिप्त रह कर भी शक्तिभर उसे कर है। जहां संस्थामें एक अमुक साधु बैठ गया वहां दूसरे साधु फिर मदद नहीं और जो वहां बैठ जाता है वह भी धीरे धीरे अधिक अधिक लिप्त होकर अंतमें की शक्ति गवाँ बैठता है। इस लिये प्रतिष्ठित जीवनको चाहनेवाले साधुओंके भगवान का कहा हुआ अलिप्त मार्ग ही अवलंबन करने योग्य है। किसी खास व कोइ साधु संस्थामें रहकर उसकी सेवा करना चाहे तो भी उसके लिये कुछ नियम होने चाहिए। ऐसे कुछ नियमोंको मैं यहां सूचित करना चाहता हूं।

(क) जो सीर्फ आर्थिक मदद करवानेवाले हों उन साधुओंको संस्थामें की जरुरत ही नहीं।

(ख) जो पढना और पढाना चाहते हैं वे मनमेंसे साधुपदके अहं निकालकर संस्थामें रहें। गृहस्थ विद्यार्थीओंसे और गृहस्थ शिक्षकोंसे, सीर्फ साध कारण ही, वे अपने को बडा न समझें। ता कि वे स्वयं पढ भी सकें और दूसरोंव भी सकें।

(ग) उनका वस्तिस्थान संस्थासे अलग हो, जहां विद्यार्थीगण समूह नियत समयपर अपने शिक्षक या गृहपतिके साथ जा सकते हैं।

(घ) संस्थामें पढनेवाले साधुओंको भी, गृहस्थ विद्यार्थीके समान ही रूपसे साधन दिये जायं। उनके लिये संस्थाकी ओरसे अलग शिक्षणप्रबंध न चाहिए; अगर ऐसा होना जरुरी समझा जाय तो फिर ऐसे साधुओंका संस्थासे छुडवा देना चाहिए।

विद्यातीर्थकी आत्मा क्या है ?

अब मैं एक मूलभूत और महत्त्वकी बातपर आता हूं जो विद्या-संस्थाओंकी है । विद्याकी संस्थाएँ मानों विद्याका तीर्थ है । उसकी सची आत्मा न तो मकान खजाना है और न दूसरी कोई चीज है; उसकी सच्ची आत्मा उसमें रहने और वाले विद्वान् ही हैं । विद्वान् जितना बडा उतना ही संस्थाका तेज, प्रभाव और धिक । और सब कुछ होते हुए भी अगर विद्वान् बराबर न हो तो उस संस्थाका किसीपर न पडेगा । दूसरे साधन न होनेपर अथवा कम होनेपर भी अगर संस्थामें वेद्वान् हुए तो उस संस्थाकी ख्याति चारों ओर फैलेगी । संस्थामें एक भी प्रचंड ापक विद्वान् रहता है तब उसके इर्दगिर्द विद्याका वातावरण जमता है । इसलिये ाझमें सबसे पहले जातीय संस्थाओंमें सच्चे प्राणके लानेकी चेष्टा करनी चाहि- ने समाजके श्वेताम्बर दिगम्बर फिरकेमें अनेक विद्यासंस्थाएं तो कायम हो गईं उनमें ऐसे विद्वानोंकी कीर्ति मेरे जाननेमें नहीं आई, जो दूसरे समाजके असा- वेद्वान् और दूसरे देशके प्रखर पंडितोंके साथ गौरवपूर्वक बिठाये जा सकें । जातीय संस्थाओंमें पढनेवाले विद्यार्थी भी, या तो सरकारी विद्यापीठोंमें या दूसरी ंमें परीक्षा इसलिये देने वास्ते जाते हैं कि वहांका प्रमाणपत्र उनको प्रतिष्ठा माळूम होता है । यह मनोदशा तभी दूर हो सकती है जब कि अपनी संस्था- ाम करनेवाले विद्वानोंकी विद्याविषयक प्रख्याति सर्वोपरि हो । विद्यार्थीओंको ळूम पडे कि हम कहीं भी जायेंगे, तो भी हमारी संस्थाके अमुक विद्वान्से में अन्यत्र दूसरा विद्वान् मिल नहीं सकता । अगर अपने भिन्न भिन्न गुरुकुल ालय अच्छेसे अच्छे विद्वानोंको रखने लगे, और उन्हें विद्यावृद्धिका, उनकी अनुसार मौका देवें तो शक नहीं कि थोड़े दिनोंमें एक एक विषयके गहरे अलग अलग स्थलोमें पैदा हो जायेंगे । और अपनी समाजके योग्य विद्वान् ादर और योग्य स्थान न होनेके कारण जो भिन्न भिन्न दिशाओंमें बंट जाते स्थिति जल्दी दूर हो जायगी । कोई पढनेको काशी जाते हैं तो कोई शान्ति- ; और कोई विदेशके जर्मनी आदि देशोमें जाते हैं । इसका मतलब यह नहीं किसी एक स्थानमें अनेक विद्वान् भरे पडे हैं । बात यह है कि जहां एक या दो ण विद्वान् होते हैं वहां दूसरे कई साधारण विद्वान् आ जाते हैं और वि- खाड़ा सा जम जाता है; और उसीके कारण वहां विद्यार्थी आकर्षित होते हैं दूरसे बहुत कुछ खर्च करके भी पढ़नेको आते हैं । हमारे गुरुकुल और

विद्यालय तभी सुप्रतिष्ठित समझे जा सकते हैं जब कि इस देश और दूसरे जैनेतर विद्यार्थी जैन संस्कृतिका अध्ययन करनेके लिये उन संस्थाओंमें आवें वहांसे प्रमाणपत्र लेकर अपना गौरव समझें। संस्थाएं तो अब कुछ स्थापित हो हैं, अब उनमें विशेषरूपसे प्राण पूरनेकी जरूरत है।

धार्मिकशिक्षा–

अब मैं धार्मिक शिक्षाकी ओर आता हूं। अपनी जातीय संस्थाएं भावना पर खडी हुई हैं। संस्थाको स्थापित करने करानेवाले, दान देनेवाले और जानेवाले सब कोई यही मानते हैं कि अमुक संस्थामें धार्मिक शिक्षा मिलती वह होनी चाहिए। अब प्रश्न यह है कि वह धार्मिक शिक्षा क्या है? पुस् नामसे, पाठ्यक्रमकी यादिसे और धार्मिक शिक्षककी नियुक्तिसे तो इस प्रश्न पर प्रकाश नहीं पड सकता। हमें आजतकके तजरूबेसे, अभी तक दी गई अ जानेवाली धार्मिक शिक्षाके स्वरूपका पता लगाना चाहिए। हमारी संस्थाएं होनेके पहिले कमसे कम अपने समाजके तीनों फिरकोंमें जो मनमुटाव, जो क्लेश जो घृणाके भाव थे वे इन संस्थाओंके धार्मिक शिक्षण के बाद कम हुए हैं या व दिगम्बर धार्मिक विद्यार्थी और दिगम्बर पंडित, श्वेताम्बर लोगोंको पहिलेसे अधिक हैं या कम? इसीतरह श्वेताम्बर विद्यार्थी और श्वेताम्बर पंडित, दिगम्बर भाइयोंको प अधिक चाहते हैं या कम? स्थानकवासी और मूर्तिपूजक फिरके के बारेमें भी वही प्र जा सक्ता है। इसीतरह यह भी प्रश्न पूछा जा सक्ता है कि सिर्फ दिगम्बर या श्वे किसी एक फिरके के धार्मिक शिक्षा प्राप्त विद्वान् आपसआपसमें किस प्रकारका बर्ता हैं? क्या उनमें पहिलेकी अपेक्षा क्लेश बढा है या कम हुआ है? इन सब प्र उत्तर मैं दे दूं इसकी अपेक्षा आप लोगही सोच लेंगे तो ठीक होगा। पिछले वर्षोंकी, धर्मके निमित्त होनेवाले झगडे और मुकर्दमोंकी यादी आप देखिए, अखब फाइलें पढिए, और धार्मिक पंडितों और विद्वानोंका आपसी व्यवहार देखिए। आपको सन्तोष हो तब तो दूसरी बात है और ऐसा मालूम हो कि धर्मशिक्षाके साथ ही साथ समाजमें फूट और क्लेशके भाव भी बढे हैं तो फिर आपको वि होगा कि धार्मिक शिक्षाका स्वरूप जो कुछ आजकल समझा जाता है उसमें फे या सुधार करना जरूरी है। सुधार क्या और कैसे करना? यह सोचना आप लो काम है। मैं इतनाही कह सकता हूं कि धर्मका उद्देश सिर्फ ज्ञानकी वृद्धि कर नहीं है; पर साथ ही साथ शान्ति और साम्यभावकी वृद्धि करना यह भी है।

यहां पर एक बात यह भी ध्यानमें रखनी चाहिए कि हमारी ज्ञानदृष्टि टूंकी संकीर्ण न हो। हमारी संस्थाओंमेंसे निकले हुए विद्यार्थीओंको अपने भावी में कहीं भी जाकर ऐसा कहनेका और विचारनेका मौका न आवें कि हमारो ऐं जिनमें हम पढे हैं, वे तंगदिल और संकुचितखयालकी थीं। हमारी संस्थामें काम ले विद्वानोंको ऐसा कभी खयाल न आना चाहिए कि जहाँ वे काम करते हैं वे ऐं विचार स्वतन्त्रताकी बाधक हैं। शिक्षा कम हो या ज्यादा पर दिल और दृष्टि दार ही होने चाहिए। शिक्षा चाहे सम्प्रदायकी हो चाहे पुराने साहित्यकी—पर दृष्टि बिलकुल ही निर्बंधन होनी चाहिए। इस गुलामदेशमें दूसरी दूसरी ओं के साथ एक बडी भारी गुलामी यह भी है कि हमारे सब सम्प्रदाय अपनी श्रेष्ठता स्थापित करनेके उत्साहमें दूसरे सम्प्रदायका सच्चा गौरव ही भूल जाते सम्प्रदाय वही श्रेष्ठ हो सकता है जिसका दिल उदार हो और जो चाहे जिसको ने की शक्ति रखता हो। ऐसा होगा तभी एक जैन गुरुकुलमें मुसलमान, क्रिश्चि- बौद्ध या ब्राह्मण अभ्यासके लिये आ सकेगा और तभी वह सच्चा गुरुकुल सकेगा।

कार्यकर्ताओंका सवाल.

सिर्फ अमुक संस्थाकी ही नहीं बल्कि सब धार्मिक और जातीय संस्थाओंकी यह त्रुटि है कि उसमें काम करनेवाले कार्यकर्ता स्थायि नहीं देखे जाते। जहाँ कोई री संस्था मिली कि जातीय संस्थाके कार्यकर्ता उधर भागने लगते हैं। उसमें संस्थाका ही दोष है यह नहीं कहा जा सकता; कुछ अंशोंमें कार्यकर्ता विद्वानोंकी शाका भी दोष है। पर अभी अपनेको यह विचार कर लेना चाहिए कि संस्थामें व्यक्तिओंकी कार्यकर्ताके रूपमें पसंदगी की जाय, जहाँ तक हो सके उनको कायम ा ही ध्यान संस्था रखें। और उन कार्यकर्ताओंको भी दूसरे प्रलोभनोंमें न पड़कर सारी शक्ति एक बार स्वीकार की हुई संस्थाके पीछे ही लगानी चाहिए। संस्था कार्यकर्ताओंका संबंध खानदानपूर्ण दाम्पत्य संबंध जैसा होना चाहिए। इसलिये ठ जैसी संस्थाओंमें आजीवन सभ्य बननेवाले विद्वानोंको रखने की प्रथाका ण करना मेरी दृष्टिमें योग्य है।

अपने समाजके तीनों फिरकोंके विद्यार्थीओंको तो मौके मौके पर आपस आपसमें ा ही चाहिए, और कुछ रोज साथ रहनेका मौका भी ढूंढ लेना चाहिए। पर सच्ची बात

तो यह है कि सनातन, आर्यसमाज और बौद्ध आदि समाजकी संस्थाओंका भी
र्थीओंको उदारभावसे परिचय कराना चाहिए। यह डर रखना कि दूसरोंसे मि
हमारे विद्यार्थी धर्मच्युत हो जायेंगे या शिथिल हो जायेंगे, निरा भ्रम है और का
ओंकी निर्बलताका सूचक है। ऐसे आपसी परिचयसे न सिर्फ भ्रातृभाव ही ब
बल्कि अनेक विशिष्ट बातें जाननेमें आती हैं जो सिर्फ पुस्तकोंमेंसे प्राप्त नहीं हो स
हमारी इस उदारताका प्रभाव दूसरें पर भी पडेगा। हमारे विद्वान् शिक्षकोंका
बातें नई मालूम होंगी जो शिक्षकके लिये जाननी अनिवार्य है।

उपसंहार–

सज्जनो, ये कुछ थोडे से प्रसंगोचित विचार मैंने आपके सन्मुख रखे हैं जो मुझे विच
मालूम दिये हैं। अन्तमें मैं अपना यह वक्तव्य समाप्त करूं उसके पहले मैं फि
सब भाईयोंका हार्दिक आभार मानता हूं और उपस्थित सब सज्जन इस सम्
कार्यमें पूर्ण सहायता दे कर मेरे कार्यभारको सफलता पूर्वक पार पहुंचानेका अनुग्र
मुझे अनुगृहीत करेंगे।

इसी अंक का क्रोड पत्र

❀ जयवीर ❀

श्री सनातन जैन समाज के

पंचम वार्षिकोत्सव

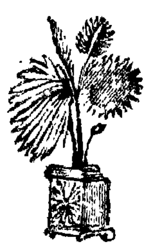
की

स्वागतकारिणी सभा भिण्ड के स्वागताध्यक्ष

बाबू छत्रपाल जी जैन

का

भाषण



प्रकाशक—

स्वागतकारिणी समिति—भिण्ड।

ता० १७ जून सन १९३३

पं० वेदनिधि मिश्र के प्रबन्ध से बी. एन प्रेस इटावा में छपा।

—* जयवीर *—

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गोतमोगणी।
मंगलं कुंद कुंदाद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्॥

श्रीमान् पूज्य त्यागीगण, श्रद्धेय बंधुओ! माताओ और बहिनो!!

महान हर्ष का अवसर है कि आज सनातन जैन समाज का वार्षिकोत्सव यहां आपके नगर में हो रहा है। अपने उन सभी बन्धुओं का, जिन्होंने इस गर्मी के मौसम में, अत्यन्त कष्ट उठाकर सबसे ज्यादा गर्मी पड़ने वाले इस प्रान्त में पधारकर सत्साहस का परिचय दिया है। अतः मैं हृदयसे स्वागत करता हूं। भिण्ड जैसे नगर में, आगत बन्धुओं का जैसा स्वागत होना चाहिये था वैसा नहीं हो सका, इसका मुझे संकोच है। परन्तु यह सोचकर कि सनातन जैन प्रेमी महाशयों को सिर्फ स्वागत ही निर्दिष्ट नहीं होता—उन्हें तो काम करना अभीष्ट है अतः कुछ सरो समान-स्वागत, न कर सकने पर भी संतुष्ट हूं।

आफिसरान, बुकलाय साहबान, मन्डी के व्यापारी वर्ग का, मैं आभारी हूं कि जिन्होंने जल्से में पधारकर शोभा बढ़ाई, तथा हृदय को उत्साहित किया है।

साहित्यज्ञान से शून्य, मरुभूमि जैसी सदैव निस्तब्धता बनाये रखने वाले इस प्रांत में इन दिनों यह चहल पहल दिखलाई देना, सचमुच उसमें जल बरसने के समान है!

सज्जनो! आप जैन धर्मानुसार समाज सुधार की हित कामनायें लेकर पधारे हैं, उन्हें प्रकाश कर काम में लाने का आपका परम कर्त्तव्य है। क्योंकि वर्त्तमान युग उन्नति का युग है। और आप भी अपनी उन्नति करने के हेतु उपाय सोचने को इकट्ठे हुए हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? नई सूझ ने दुनियां के वातावरण में एक नई चहल पहल पैदा की है। वे कितने ही प्रदेश जो किसी समय अवनत दशा में थे, नई सूझों के ऊपर कामयाब होते हुए आज उन्नत हो गये। और जो लकीर

के फकीर बने रहे, अथवा जिन्होंने नई सूझ के ऊपर चलने को कदम नहीं बढ़ाया, वह अवनत होगये।

बन्धुओं! हमारे जैन समाज का स्थान भी इसी अवनत श्रेणी में ही आता है। इसका परिणाम यही है कि हम समयानुसार नहीं चले। हमने यह नहीं सोचा कि वह जो नियम या व्यवस्था किसी वक्तके लिये उचित थी। हमेशा ही उपयुक्त बनी रहेगी यह असम्भव है। ठीक उसी तरह, जैसे गर्मी में हमें ठंडे जल की, शीतल छाया की जरूरत होती है, परन्तु ठंडे मौसम में वही दुःखदायिनी हो जाती है। तब हमें गर्म कपड़े पहिनने और गर्म हवा में रहने को बाध्य होना ही पड़ता है—यदि हम समय के विपरीति चलें, तो हम जीवित नहीं रह सकते, इस में संदेह नहीं।

परंतु अफसोस है कि हमारी जैन समाज समयानुकूल नहीं चली उसने गर्मी का खाना सर्दी में खाया और सन्निपात जैसे भयङ्कर रोग मे ग्रसित होगई। फल यह हुआ कि प्रतिदिन सुवह से शाम तक हमारे २२ मनुष्य मृत्यु की भेंट होते हैं जिससे समाज की आबादी में भयङ्कर ह्रास हुआ हैं। आज हम सिर्फ ११ लाख ही हैं जिसमें श्वेताम्बर, स्थानक वासी, तारनपंथी आदि सभी शामिल है–जब कि आज से ३०० वर्ष पूर्व अकवर बादशाह के मुसलमानी जमाने में हमारी संख्या ३ करोड़ थी। ख्याल करिये! कहां ३ करोड़ कहां छः लाख! गजब का ह्रास है! भयङ्कर अवनति है!! मोटा रोग है!!!

जब हम इस अवनति के कारणों पर गौर करते हैं तो हमें बड़ा दुःख होता है।

हम महसूस करते हैं कि हमने अपना मुख्य सिद्धान्त छोड़ दिया; पतितों को अपनाना, अजैनों को जैन बनाना, सारे संसार को जैन धर्म की गंगामें बहाने का प्रयत्न करना ही हमारा और हमारे पूर्वाचार्यों का एक मात्र उद्देश्य रहा है। माघनन्दादि मुनि इनके ज्वलन्त उदाहरण हैं। परन्तु अफसोस हमने संसारके साथ बहकर इस सदुद्देश्य को भुला दिया

बहाने का प्रयत्न करना चाहिये था कि खुद ही बहने लगे। बड़प्पन की साध में अपने भाइयों बहिनों तक को धक्का देकर निकालने लगे। तंग आकर हमारा एक बड़ा भाग विधर्मी हो गया। गोया धर्म शत्रु हो गया।

इस तरह हमने अपनी संगठित शक्ति का अपने हाथों सत्यानाश किया, अपने हाथों अपने पैर काट डाले तब हमारा समाज वृक्ष गिर पड़ा, और सूखने लगा और तब तक सूखता हुआ मृत्यु की ओर अग्रसर होता रहेगा जबतक फिर से उसकी जड़ को संगठन जल से सींचकर हराभरा न बनाया जाय।

समाज वृक्ष के न पनपने का एक कारण यह भी है कि जैन समाज बीसों टुकड़ों में बंटी हुई है। कोई परवार है तो कोई गोलालारे-कोई गोल सिंहारे, लमेचु, परवार, पोरवाल, बुढ़ेले, अग्रवाल, खंडेलवाल, आदि २। जिनके विवाहादि व्यवहार अपनी अपनी ढ़पली अपना २ राग की कहावत को चरितार्थ करते हुए से हैं। यदि इन सब में आपस में विवाह प्रथा जारी हो जाय तो बहुत कुछ समस्याहल हो सकती है। सब जगत का कायदा है कि रोटी बेटी व्यवहार बराबरी की रीति में होता है। इस प्रथा के चालू नहीं होने के कारण, एक टुकड़ी में कन्याओं की कमी के कारण, बहुतसे युवक आजन्म कुंवारे रह जाते हैं। दूसरी में युवकों के कमी के कारण, कन्याओं के माता, पिताओं को बड़ी परेशानी होती है और हारकर अनमेल विवाह करनेको लाचार होना पड़ता है। जिससे योग्य संतानें पैदा न होकर ह्रास का मुख्य कारण बनता है। सैकड़ों बालाएं विधवा हो जाती हैं सैकड़ों युवक विधुर हो जाते हैं। और नीरस जिन्दगी व्यतीत करने को बाध्य होते हैं। इस बात के सैकड़ों उदाहरण मिलेंगे कि जहाँ पहिले ५० घर थे वहां या तो एक भी न होगा और होगा भी तो बत्तीस दांत के अन्दर जीभ के बराबर, जैसी हालत में। यदि अनुलोभ और प्रतिलोम विवाहों की रीति जो कि शास्त्र प्रणीत है अब भी चालू कर दी जावे,

तो इसमें शक नहीं कि जैन समाज का खाली मनुष्य भंडार फिर से भरा जा सकता है। जिससे धर्म की भी उन्नति होगी, और समाज की भी।

क्योंकि लोग कहते हैं कि धर्म अपंगु होता है वह चलाने से ही चलता है-तब उन लोगों को यह भी मान लेना चाहिये कि जिस धर्म के सबसे ज्यादा मानने वाले होंगे---वही धर्म श्रेय है अथवा ज्यादा देर तक वही दीपक प्रकाश करेगा, जिसमें ज्यादा प्रकाश सामिग्री हो।

फिजूल खर्ची।

जैन जाति व्यापार प्रधान जाति है—कहा जासकता है कि संसार की धन राशि का आठवां भाग जैनों के पास है। परंतु धन राशि जब तक समुचित कार्यों में खर्च न हो और फिजूल खर्चों में ही उसका व्यय हो तो कहा जा सकता है कि उससे कोई लाभ नहीं!

जैन समाज आज पूजा प्रतिष्ठा, मेलों ज्योनारों द्वारा जो फजूल खर्च करती है वह वर्णनातीत है। मैंने एक नगर का प्रतिष्ठा पत्र देखा था उसमें २४ प्रतिष्ठाएं हो चुकी हैं और जिन में करोड़ों रुपया खर्च हुआ है--किन्तु उस खर्च से मूर्तियों की संख्या बढ़ने से ज्यादा अन्य कोई मतलब हल नहीं हो सका।

जैन समाज में आज ७० लाख प्रतिमाएं हैं। गोया जितने पूजक नहीं उतने पूज्य हैं और अफसोस तो यह है कि फिर भी जैनियों को संतोष नहीं–रोज रोज धर्म का बहाना बनाकर–पूजा प्रतिष्ठामें आज भी अपना धन फजूल खर्च किया करते हैं। और वास्तविकता की ओर ध्यान नहीं देते।

अच्छा होता, यदि पूजा प्रतिष्ठाओं में पैसा बर्बाद न करके हमएक जैन यूनीवर्सिटी कायम करते---जो समयानुकूल आवश्यक थी। जिसमें जैन विद्यार्थी शिक्षा पाते। पूजा प्रतिष्ठा करने वाले महाशयों का ध्यान खासकर मैं इस ओर आकर्षित करता हूं।

असंगठित दशा।

कहावतें मशहूर हैं कि जिसका बल उसका राज अथवा 'जमात की करामात' परंतु हमें अफसोस होता है कि जैनी आज एक धर्म के पालने वाले होकर भी असंगठित हैं। रात दिन धार्मिक और घरेलू झगड़ों में ही हमारा जीवन व्यतीत होता है जिसका असर हमारी सन्तानों पर बुरा पड़ता है। रात दिन अपमानित होना, अपना दुःख भी न कह सकना एक मुंह से न बोलने के परिणाम हैं। आये दिन डाकूओं द्वारा पकड़े जाना, लुटना यह सब हमारी असंगठित दशा को ही प्रकट करते हैं।

रोज रोज मन्दिरों में से धन एवं प्रतिमाओं की चोरी होना, और उनके पुनः प्राप्त करने में धन खर्च करना यह दब्बूपन-असंगठित दशा से ही सम्बन्ध रखता है।

इस प्रान्तमें ज्यादा तादाद में होकर भी हमें कोई ख्याति प्राप्ति नहीं है—राज सन्मान में हमारी बूझ नहीं—हमेशा अपने कार्यों के लिये दूसरों के मुखों पर कृतज्ञता की निगाहें बिछा देना—आपसी विरोध का सायनबोर्ड है। असंगठन से यदि हानि है और संगठन से लाभ-तो लाभ इच्छुक व्यापार प्रधान जाति होकर क्यों नहीं हमें संगठन सूत्र में बंधना चाहिये।

स्त्री जाति की दशा।

बन्धुओ! यह मानना पड़ेगा कि मनुष्य और स्त्री यह दो, प्रकृति की अनुपम वस्तुएं हैं। मनुष्य को यदि स्त्री की जरूरत होती है तो स्त्री को मनुष्य की, एक तरह से जीवन-गाड़ी खींचने में एक पहिया यदि मनुष्य है तो दूसरा स्त्री। जैसे दो पहियों बगैरः गाड़ी नहीं चल सकती, वैसे ही गृहस्थ गाड़ी भी दोनों की समानता बगैर नहीं चल सकती।

ऊपर हम कह आये हैं कि अनुलोम विवाहों का रिवाज न होने से बहुत से अनमेल, बाल और वृद्ध विवाह हो जाते हैं।

रात दिन गृहस्थ जीवन में कलह होने का खास परिणाम यही है कि गाड़ी का एक पहिया या तो छोटा है या पुराना जर्जरित। जिसके टूटने का हमेशा डर लगा रहता है। और जब वह टूट जाता है। तो एक पहिया क्या कभी गाड़ी को चला सकता है ? उसको अवश्य ही उसी के अनुरूप दूसरे पहिये की जरूरत होती है।

परन्तु आज हम देखते हैं कि हमने स्त्रियों पर बहुत अधिक अत्याचार कर रखे हैं। तुलसीदास की "ढोल गँवार शूद्र पशु नारी—यह सब ताड़न के अधिकारी" आदेश पर और किसी ने अमल किया हो या नहीं—पर हमतो उसे धार्मिक कानून बना बैठे हैं, उन्हें अशिक्षित रखना, लड़का लड़की में भेद रखना, विधवा और विधुर के ब्याहों में भेद होना यह सब इन्हीं अत्याचारों की शाखा प्रशाखाएँ आदि हैं।

इन अत्याचारों से प्रपीड़ित हो कर हमारी माताएं, बहिनें या तो व्यभिचार करके भ्रूण हत्याएं करती हैं—या विधर्मियों के साथ भाग जाने को मजबूर होती हैं।

सोचिये तो सही हमारी गाड़ी का एक पहिया दूसरे की गाड़ी में जुतकर चलने लगता है और हम लंगड़े रहजाते हैं। एक तरह से हमारा जीवन दुःखमय होजाता है और उनका विधर्मियों का सुखमय। हमारी जाति संख्या घटती है जिससे धर्मभी घटता है और उनकी संख्या बढ़ती है। छः लाख से नौकरोड़ संख्या में वृद्धि करना इसी का परिणाम है।

अब यह तो सिद्ध हो गया कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था किसी जमाने में भली भले ही रही हो परन्तु अब तो ह्रास का ही कारण है।

बन्धुओ ! यह भी जानने की बातें हैं कि धर्म दूसरी चीज है और सामाजिक व्यवस्था दूसरी। सामाजिक व्यवस्था जब चाहो तोड़ी जा सकती है। परन्तु धर्म का दूसरा रूप ही नहीं बनता—धर्म एक सरोवर है और सामाजिक व्यवस्था उसमें फूलने वाले पुष्प, पुष्पों को तोड़ कर कई कामों में लाया जा सकता है परन्तु तालाब अचल है।

सज्जनो ! जैन धर्म एक आत्म धर्म है। आत्म शुद्धि रखना उसका

मुख्य उद्देश्य है। रिवाजों को धर्म नहीं कहा जा सकता और न उनके बदल जाने से आत्म धर्म में कोई फर्क आता है:—जैसे नीबू का धर्म खट्टापन है, उसे आप जिस चीज के साथ खाइये, खट्टा ही स्वाद देगा। इसी प्रकार जैन धर्मका स्वरूप कभी भी सामाजिक व्यवस्थाओं के बदल देने से नहीं बदल सकता।

एक दूसरी बात और ध्यान में रखने की है कि बल से राज्यों को जीता जासकता है। परन्तु प्रजा के हृदय पर अधिकार नहीं जमाया जा सकता। अवश्य ही अधिकार जमाने के लिये प्रेम सहित उदार हृदय चाहिये। आज हमारी पंचायतों की दशा इसी से बिगड़ गई—कि उनके हृदय विशाल एवं प्रेम युक्त नहीं रहे। अत्याचार कठोर हृदय की उपज है। पंचायतों के हृदय कठोर थे—उन्होंने अपने अस्त्र से कार्य लिया—और उन्हें हार मिली परिणाम में।

हमारा जैन समाज हरा भरा हो—मैत्री से परिपूर्ण हो और हो ऐसा स्वच्छ वातावरण जिसमें किसीको दुःख न हो, यही हमारी भावना है।

समाज-सेवकः—

छत्रपाल जैन।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् के आठवें अधिवेशन के सभापति डाक्टर लक्ष्मीचन्द्र जैन, एम० ए०, एल-एल० बी०, पी० एच० डी० (लन्दन) का भाषण।

॥ श्री जिनाय नमः ॥

माननीय ब्रह्मचारी जी, स्वागतकारिणी समिति के सभापति महोदय और सभासद्गण, महिलाओं और सज्जनो !

एक अंग्रेज़ी कवि का कथन है कि कुछ लोग जन्म ही से बड़े होते हैं, कुछ अपने परिश्रम से बड़प्पन प्राप्त कर लेते हैं और कुछ लोगों को ज़बर्दस्ती बड़प्पन का सेहरा पहना दिया जाता है। आप महानुभावों की कृपा से आज मैं अपने को इसी अन्तिम श्रेणी में पाता हूँ। मैं नहीं कह सकता कि ऐसे महान् कार्य का भार मेरे निर्बल कन्धों से कहाँ तक चल सकता है, किन्तु मुझे यह भरोसा अवश्य है कि आप सब महानुभाव मेरी सहायता के लिये प्रस्तुत हैं और आप सब में जाति-सेवा की सच्ची लगन है। जिनमें सच्ची लगन होती है वे अपने से दुर्बल को अपने साहाय्य से सबल कर ही लेते हैं। इसी लगन के कारण कदाचित् आपने मुझे यह सेवा करने का अवसर दिया है। इसके लिये मैं आपका हृदय से कृतज्ञ हूँ।

महिलाओं और सज्जनो ! परिषद् के गत अधिवेशन को प्रायः अब एक वर्ष से कुछ अधिक हुआ। हमारे दुर्भाग्य से इस बीच में हमारे कई प्रमुख नेता नहीं रहे। अभी हाल में पं० मोतीलालजी नेहरू की असमायिक मृत्यु से हमारे देश की जो क्षति हुई है वह किसी प्रकार अनुमान नहीं की जा सकती। वे हमारे निर्धन देश के ऐसे अनुपम मोती थे कि उनकी आब का मोती अब दूसरा मिल ही नहीं सकता।

इसी वर्ष जैन समाज के भी कई रत्न जाते रहे। देहली के स्व० लाला सुल्तानसिंह तथा डाक्टर सर मोती सागर जैन और मेरठ के बा० रिखबदास ऐसे प्रसिद्ध नेता थे कि जिनपर समस्त जैन जाति को ही नहीं वरन् सभी को गर्व था। ऐसे नेताओं के बिना सचमुच हमारी समाज निस्तेज सी जान पड़ती है। आज हमारे परिषद् के परमोत्साही कार्यकर्ता पं० ब्रजबासीलाल जी को न देखकर भी हम बड़े दुःखी हैं। ऐसे सच्चे और पक्के कार्यकर्त्ता का मिलना बड़ा दुर्लभ है।

किन्तु यदि हमें सचमुच अपने नेताओं और मित्रों के वियोग का दुःख है तो हमको चाहिये कि उनके आदर्श को सामने रख कर कुछ सेवा और

त्याग करने का सच्चा प्रयत्न करें। मित्रो! अब समय केवल मौन खड़े होकर शोक के प्रस्ताव पास करने का नहीं है। और न केवल पुराने गीत गाने ही से काम चलने को है। यह तो बहुत समय तक हो चुका। अब हमारे सामने प्रश्न यह नहीं है कि हम कैसे थे किन्तु प्रश्न तो यह है कि **हम कैसे हैं**। पुनश्च प्रश्न यह नहीं है कि हमारे पूर्वजों ने क्या किया। प्रश्न तो यह है कि **हम क्या कर रहे हैं**।

बहिनों और भाइयों! यद्यपि मेरा अनुभव बहुत नहीं है, फिर भी मुझे कुछ देश और विदेश में भ्रमण करने का अवसर मिला है और देश और जाति की समस्याओं का थोड़ा बहुत मनन मैंने किया है। आप जानते हैं कि गत दस वर्षों में भारत में जितनी जागृति हुई है उतनी कदाचित् ही अन्य किन्हीं दस वर्षों में हुई हो और मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारे देश की अगले दस वर्षों की जागृति पिछले दस वर्षों से भी दसगुनी होगी। कम से कम हम सब की यही प्रार्थना है। किन्तु हमें सोचना यह है कि इस जागृति एवम् उन्नति में हम जैनियों का क्या स्थान है और हमारा क्या कर्तव्य है?

जन-संख्या

हमारे लिये यह बड़े खेद की बात है कि अन्य समाजों की अपेक्षा हम बहुत सी बातों में पीछे पड़े हुए हैं। सब से मोटी बात जन-संख्या ही की ले लीजिये। सन् १८८१ में हमारी संख्या १५ लाख थी, १८९१ में १४ लाख से कुछ अधिक, १९०१ में लगभग साढ़े तेरह लाख, १९११ में साढ़े बारह लाख और १९२१ में केवल ११,७८,००० । १९३१ की संख्या अब ली जा रही है, किन्तु (अर्थशास्त्र के आधार पर) मेरा अनुमान है कि अब हम केवल ११ लाख के लगभग रह गये हैं। यह उत्तरोत्तर कमी हमारे लिये कम चिन्ता की बात नहीं है। मेरे विचार में इस घटती के मुख्य कारण समाज में विद्या व धर्म ज्ञान का अभाव, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह आदि हैं।

पारस्परिक कलह

जहाँ हमारी संख्या इतनी गिर रही है, वहाँ हम दो ऐसे भागों में विभाजित हैं जो आपस में सदा एक दूसरे से लड़ते रहते हैं। श्वेताम्बर और दिगम्बर के आपस के झगड़ों से आप अपरिचित नहीं हैं। उससे हम

दोनों की कितनी हानि हुई है और हो रही है यह आप स्वयम् जानते ही हैं। किन्तु मर्ज़ इतना बढ़ गया है कि दिगम्बरियों में भी एकता दीख नहीं पड़ती। हमारा संगठन प्रायः नहीं के बराबर है। दो चार रोहतक सरीखे भाग्यशाली स्थानों को छोड़कर जहाँ देखिये वहीं समाज निर्बल, जर्जर, टूटी-फूटी दिखाई देती है। पञ्चायतों की बात तो जाने दीजिये। घरों में भी आपस में कलह व फूट ने घर कर लिया है। हमारा अहिंसा धर्म जो हमें विश्व-प्रेम का उपदेश देता है हमसे मीलों दूर है। यही कारण है कि स्थान स्थान से मुसलमानों व अन्य जातियों द्वारा किये गये अत्याचारों के समाचार हमें सुनाई देते हैं। राज्य में भी हमारा उचित सम्मान नहीं है। हमारा यह अधःपतन हमारे लिये बड़ी लज्जा की बात है। इसका रोकना केवल हमारे ही हाथ में है।

सज्जनो! मैं आपको सावधान किये देता हूँ। हम लोग यदि अब भी सम्हल जाँय तो अच्छा है। देश इस समय बड़ी तेज़ी से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। इस दौड़ में यदि हम कमर कस लें तो देश का भी कल्याण कर सकते हैं और अपना भी। हमें चाहिये कि हम अपने धर्म के सच्चे स्वरूप को स्वयम् समझें और दूसरों को समझावें।

अहिंसा धर्म

हमारे अहिंसा धर्म में क्या शक्ति है यह हमारे देश के सर्वपूज्य महात्मा गांधी जी ने प्रत्यक्ष दिखला दिया है। अहिंसा धर्म निर्बलों का धर्म नहीं है। उसके पालने से कमज़ोरी नहीं आती किन्तु उस अनन्त वीरत्व का सञ्चार होता है जिसका सामना संसार की कोई भी शक्ति नहीं कर सकती। हमारा कर्तव्य है कि हम ऐसे धर्म का जितना प्रचार हो सके अपने देश और अन्य देशों में करें। इस विषय में परिषद् के संरक्षक जैन जाति के अद्वितीय विद्वान् विद्या-वारिधि जैनदर्शनदिवाकर पं० चम्पतराय जी बैरिस्टर ने जो धर्म प्रचार का कार्य विलायत व योरुप में किया है और कर रहे हैं उसके लिये समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा। किन्तु इस कार्य में द्रव्य और कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। आपको विदित है कि स्वर्गीय रायबहादुर जुगमन्दरलाल जी जैनी धर्म ही प्रचार के लिये अपनी समस्त सम्पत्ति समाज को अर्पण कर गये हैं। इससे बढ़कर द्रव्य का क्या सदुपयोग हो सकता है! इस कार्य में अन्य भाइयों को उनका अनुकरण करना चाहिये।

संगठन

साथ ही हमें चाहिये कि हम अपना संगठन ठीक कर लें। आपस के झगड़ों को परस्पर मिलकर तय करलें और एकता के सूत्र में बँध कर कार्य करें। परिषद् ने समाज संगठन के विषय में जो किया है सराहनीय है, किन्तु अभी बहुत कुछ बाक़ी है। अखिल भारतवर्षीय परिषद् के अन्तर्गत हर एक प्रान्त में और हर ज़िले में परिषद् की शाखायें होना आवश्यक है। यह युग सामूहिक संस्थाओं का है। आजकल कोई भी समाज बिना सुसंगठन के सफल नहीं हो सकता।

शिक्षा

संगठन के लिये समाज में शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है। इस विषय में हम बहुत पीछे हैं। मैं ऊपर कह चुका हूँ कि शिक्षा की कमी हमारी जन-संख्या की कमी का एक विशेष कारण है। शिक्षा से मेरा अर्थ केवल अक्षर बाँच लेने या बही खाता लिख पढ़ लेने से नहीं है और न अंग्रेज़ी में बी० ए०, एम० ए० पास कर लेने से ही है। मेरे विचार में वही शिक्षा उचित शिक्षा है जिसमें लौकिक ज्ञान के साथ साथ धार्मिक ज्ञान का भी समावेश हो। धर्म के ज्ञान का अभाव होने के कारण हम बहुत से भाइयों को प्रमादवश खो देते हैं। यदि आप मुझे अपने विषय में कहने के लिये क्षमा करें तो स्वयम् मेरी और मेरे भाइयों की धर्म में रुचि का कारण प्रयाग दिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस ही है, जहां रहकर लौकिक शिक्षा के साथ साथ हमें धार्मिक शिक्षा भी मिल सकी। यदि हम आधुनिक संसार में समाजोन्नति चाहते हैं तो हमें चाहिये कि जैन छात्रालय और जैन स्कूलों की वृद्धि करें और जैन कालिज तथा एक जैन विश्वविद्यालय (Jaina University) स्थापन करने की शीघ्र योजना करें। इस विषय की चर्चा वर्षों से हो रही है किन्तु अब समय आ गया है कि अधिक विलम्ब न हो। इस विश्वविद्यालय में मेरे विचार में जैनोचित शिक्षा अर्थात् वाणिज्य, व्यापार सम्बन्धी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाय और धार्मिक शिक्षा व अन्वेषण अथवा खोज (Research) का समुचित प्रबन्ध रहे।

शिक्षा के विषय में एक बात और ध्यान देने योग्य है। समाज में स्त्री-शिक्षा की विशेष कमी है जो आज दिन हमारी निर्बलता का मुख्य कारण है। बिना माताओं के सुशिक्षित हुए, सन्तान का सुशिक्षित होना असम्भव है। इस ओर हमको पूरा प्रयत्न करना चाहिये।

सामाजिक कुरीतियाँ

यदि शिक्षा का उचित प्रबन्ध होगा तो हम में जो कई बुराइयाँ और कुरीतियाँ दीख पड़ती हैं, वे भी शीघ्र जाती रहेंगी। बाल विवाह और अनमेल विवाह की चर्चा मैं कर चुका हूँ। इन्हीं के कारण हमारी संख्या का ह्रास हो रहा है, इन्हीं के कारण हमारे गृहों में शान्ति का अभाव है और विधवाओं की वृद्धि है। बाल विवाह और अनमेल विवाह का कारण केवल अज्ञान नहीं। उनका एक कारण यह भी है कि जैन जाति के अन्दर अनेक उपजातियाँ भी हैं और उनमें आपस में विवाह नहीं होता। विवाह का क्षेत्र इस प्रकार संकुचित होने से कई लोगों को विवश होकर बाल विवाह का सहारा लेना पड़ता है। कई अनमेल विवाह हो जाते हैं। कैसी करुणाजनक अवस्था है! इस विषय में मुझे यह देखकर बहुत सन्तोष हुआ कि गत वर्ष परिषद् ने इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास किया था और इधर कई अन्तर्जातीय विवाह हुए भी हैं। किन्तु यह जानते हुए भी कि अन्तर्जातीय विवाह धर्म विरुद्ध किसी प्रकार नहीं हैं, अभी लोग हिच-कते हैं। यह संकोच जितने शीघ्र दूर हो जाय उतना ही अच्छा है।

विवाह सम्बन्धी कुरीतियों और व्यर्थ व्यय के विषय में भी मैं कुछ कहे बिना नहीं रह सकता। विवाह, मेरे विचार में, एक पवित्र सम्बन्ध है और आनन्द का अवसर है, किन्तु प्रायः देखा यह जाता है कि विवाह में धर्म का स्थान अधर्म या विधर्म ले लेता है, और आनन्द की जगह लड़ाई झगड़ा। हमें चाहिये कि हमारे विवाह जैन पद्धति के अनुसार हों और उनमें व्यर्थ व्यय बिलकुल बन्द कर दिया जाय। हमारा तो धर्म ही हमें सीधा सादा जीवन व्यतीत करने का उपदेश करता है और अपनी आव-श्यकताओं को कम करने को कहता है। एक सच्चा जैन विवाह तो अहिंसा के सिद्धान्त और मितव्ययता का आदर्श रूप होना चाहिये।

आर्थिक दशा

एक समय था कि हम लोग भारतवर्ष में सब से अधिक सम्पत्ति-शाली थे। आज भी हमारी जाति धनाढ्य कही जाती है और कुछ अंशों में यह ठीक भी है। किन्तु हम लोग बड़े कठिन समय में रह रहे हैं। आप जानते हैं कि आज देश भर में आर्थिक दुर्व्यवस्था है, व्यापार की बुरी दशा है। और जो आर्थिक हानि अब तक हुई है उसका अधिक भार स्वभावतः हम लोगों पर पड़ा है। आर्थिक विषयों का जो थोड़ा बहुत मैंने

अध्ययन किया है उससे मैं कह सकता हूँ कि आगे आने वाला समय जैन व्यापारियों और सेठों के लिये बहुत सुख का समय नहीं है। मुझे तो डर है कि यदि हम लोग शीघ्र अपने को न सम्हालेंगे और आधुनिक व्यापार की जटिल समस्याओं को सुलझा कर अपनी कार्य-प्रणाली में समयोचित फेरफार न करेंगे तो धीरे धीरे लक्ष्मी हमसे अप्रसन्न हो जायगी।

राजनैतिक समस्या

आर्थिक स्थिति का सम्बन्ध राजनैतिक व्यवस्था से कितना अधिक है यह बताने की आवश्यकता नहीं। एक का सुधार दूसरे पर निर्भर है। इसी हेतु इस समय देश भर में असहयोग आन्दोलन छिड़ा हुआ है। इस महायज्ञ में हमारी समाज के नेताओं ने भी आहुति दी है। परिषद् के गत् अधिवेशन के पूज्य सभापति सिंघई पन्नालाल जी और परिषद् के दो रत्न लाला नेमीशरण जैन बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, व बा० रतनलाल जी बी० एस-सी०, एल-एल० बी० आज जेल में हैं। जो त्याग इस बार हुआ है उससे यह सन्देह नहीं होता कि अब स्वराज्य स्थापित होने में अधिक विलम्ब है। किन्तु उस स्वराज्य को भोगने के लिये हम तभी योग्य कहे जा सकते हैं जब कि हम लोग देश-सेवा के कार्य में यथा शक्ति भाग लें। जात्योद्धार के साथ साथ देशोद्धार भी होना चाहिये। मैं तो यह कहूंगा कि जात्योद्धार से ही देशोद्धार है और देशोद्धार से जात्योद्धार।

सज्जनों! मैं अब आपका अधिक समय न लूँगा। मेरी केवल यही अन्तिम प्रार्थना है कि हम सब यहाँ मिलकर केवल प्रस्ताव ही पास कर के सन्तुष्ट न हो जायँ, किन्तु सचमुच उनको कार्य रूप में भी परिणत करने की योजना करें। तभी हमारा यह वार्षिक अधिवेशन सफल हो सकता है। रोहतक के भाइयों का उत्साह और सुन्दर प्रबन्ध देखकर मुझे इसकी पूर्ण आशा भी होती है।

जुविनाइल प्रेस, इलाहाबाद।

ॐ

भारतवर्षीय दि० जैन शास्त्रार्थ संघ

अम्बाला छावनी के

"उपदेशक विद्यालय"

के उद्घाटन-उत्सव पर

स्वागताध्यक्ष

श्रीमान् राय साहिब लाला नेमदास जैन

का

भाषण

ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुत पञ्चमी)

वीर निर्वाण सं० २४६२ : ता० २५-५-३६

The Printers Ltd., Ambala.



श्रीमान् राय साहिब लाला नेमदास जैन

शिमला।

श्री वीतरागाय नमः।

मंगलाचरण

मोह महातम दलन दिन-तप लक्ष्मी भरतार।
ते पारस परमेश मुझ-होउ सुमति दातार॥

पूज्य त्यागी-वर्ग, विद्वन्मंडली व माननीय सज्जनों तथा आदरणीय महिलागण!

आज श्रुतपंचमी का परम पावन दिवस है। प्राचीन काल में आज ही की शुभ मिति में श्री जिनवाणी की रक्षा का कार्य्य प्रारम्भ हुआ था। आज देश के कोने कोने में जैन-शास्त्रों का पूजन और भक्ति हो रही है। इस समय आप सर्व धार्मिक बन्धुओं को इस स्थान पर देखकर मेरा हृदय हर्ष से फूला नहीं समाता। आज इस मंगलमय सुवर्ण अवसर पर आप सज्जन इस जैन उपदेशक विद्यालय का उद्घाटन-कार्य के लिये एकत्रित हुए हैं। जैन समाज में बड़े बड़े प्रसिद्ध अनुभवी और योग्य विद्वान् उपस्थित हैं। क्या ही अच्छा होता कि आप मेरे से योग्य व्यक्ति को उन्हीं में से किसी एक को निर्वाचित करते? अब तो आप से मेरा यही निवेदन है कि आप मुझे अपना सहयोग और सहायता दें।

यह स्थान (अम्बाला) पंजाब प्रांत में जैन जनता की अपेक्षा मुख्य नगरों में से है। यहां के जैन मन्दिर, जैन-संस्थाएं और धार्मिक शैली प्राचीन, प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। यहां के धार्मिक उत्साही बन्धुओं ने आज से ६ वर्ष पूर्व श्री जैनशास्त्रार्थ संघ का अङ्कुरारोपण किया था। पहिले यह यहां की स्थानीय संस्था थी। किन्तु इसके विचारशील संचालकों के उद्देश्य और कार्य्य प्रारम्भ से ही उदार और विशाल थे। इसका कार्य्य क्षेत्र समस्त जैन समाज होगया। यही कारण था कि इसके शैशव-काल की २ वर्ष की आयु में ही इस संस्था का नाम

"श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रार्थ संघ" हो गया। धीरे धीरे यह संस्था पल्लवित पुष्पित और फलित होती गई. इसके मधुर-फलों का आस्वादन जैन समाज ने लिया। इस संस्था की उन्नति का प्रधान श्रेय यहाँ के साधर्मी भाइयों व इसके संरक्षक श्रीमान लाला शिब्बामलजी और इसके सुयोग्य महा-मंत्री पं० राजेन्द्रकुमारजी जैन न्यायतीर्थ को है; जिनके शुभ प्रयत्नों व कार्यों से यह प्रति दिन बढ़ती जारही है, ऐसी संस्था की समाज में बड़ी आवश्यकता थी। necessity is the mother of invention. अर्थात आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।

२०वीं सदी विकाश-युग है। इसके प्रारंभ होते ही संसार में उथल पुथल मच गई थी। भारतवर्ष में भी राजनैतिक धार्मिक सामाजिक आध्यात्मिक आन्दोलन करने वाली संस्थाएं क़ायम होने लगी। लेकिन जैन जनता सोई हुई सी थी। समाज सेवकों के व्याख्यान उस पर असर न कर सके। देश में सामाजिक व धार्मिक आन्दोल होने लगे जैन समाज भी इसके प्रभाव से बचा नहीं। जैन सभाएं स्थापित होने लगी, जिनमें जैन धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार तथा सामाजिक सुधारों की आशा थी। किन्तु असंगठन, अज्ञानता, कुरीतियों और अन्ध विश्वास ने जैन समाज की भीतरी अवस्था को जर्जरित कर दिया। समाज के नेताओं ने इन दोषों को हटाने का ज्यों ही प्रयत्न किया उसी समय मतभेद और "पंडितपार्टी बाबूपार्टी" के कलह रूपी भयंकर अजगर ने समाज रूपी भोली हिरणी को घेर लिया। जैन समाज की यह अवस्था लगभग २५ वर्ष से है। संसार का इतिहास बताता है कि विचार विभिन्नता हर देश और अनेक जातियों में हुई है, किन्तु जैन समाज की सी विषमयी विचार विभिन्नता कभी भी और कहीं भी नहीं हुई होगी! जैन-समाज की अवस्था को इसने बिलकुल निश्चेष्ट सा बना दिया है। एक नेता यदि पूर्व को ले जाने को चाहता है तो दूसरा उससे बिलकुल विरुद्ध पश्चिम को लेजाना चाहता है। शास्त्र की आज्ञा, संसार की गति, जाति की उन्नति और अवनति आदि को देखने और विचारने तक की इन्हें इच्छा नहीं होती! भोली समाज जाल में फंसी हुई हिरणी के समान कातर दृष्टि से अश्रुधारा बहा रही है। इस समय एक कवि का वचन याद आता है:-

यह घोर क्रन्दन नाद कैसा, निकट है या दूर है।
धरती से ले आकाश तक, दुख दर्द से भर पूर है॥

जैन समाज की इस अवस्था पर अजैनों को तरस आता है। किन्तु इस समाज के नेताओं के हृदय नहीं पसीजते! इस मतविभिन्नता को दूर करने के

लिये स्याद्वाद के सप्त-भंगों को हम क्यों नहीं विचारते ? भगवान् समन्तभद्र ने स्पष्ट कहा है। "भगवन् ! आप के वचन युक्ति और तर्क से अविरुद्ध हैं और सत्य की कसौटी पर कसे हुए हैं। अतः मैं उन को प्रमाण मानता हूं। यदि वे युक्ति और सत्य से विरुद्ध होते तो मैं कदापि नहीं मानता"। इस से यह ही ज्ञात होता है कि जैन धर्म सचाई को ही प्रमाण मानता है। जो सत्य है वह ही जैनधर्म है। "बाबा वाक्यं प्रमाणं" अन्धविश्वास, निरपेक्षता, कूटस्थता, आदि विषय जैनधर्म के विरुद्ध हैं। मुझे तो बाबू पार्टी या पंडित पार्टी की दलदल की कीच में फंसे हुए नेता या विद्वान को देख कर हार्दिक दुःख होता है।

मत विभिन्नता, विचार स्वतंत्रता यदि विचार और ज्ञान पूर्वक है तो जैन धर्म से विरुद्ध नहीं है। क्योंकि जैन धर्म वैज्ञानिक बातों को ही स्वीकार करता है। हमें कवि का यह वचन याद आता है :—

अब भी संभल जावें कहीं, हम हैं सुलभ सब साज भी।
बनना बिगड़ना है हमारे हाथ अपना आज भी॥

हे वीर देव ! हम आप के उपासक हैं और आपके ही निर्गीत सत्-मार्ग पर विचरते हैं। हमारी अवस्था हीन हो रही है। दशा शोचनीय है। प्रभु ! हमें आपकी जैसी धीरता और वीरता प्राप्त हो जाय। हम पुनः आप के पुनीत मार्ग को ग्रहण कर के सभी एकता व पवित्र भ्रातृ प्रेम के एक ही सूत्र में सुसंगठित हो कर भेद-भाव को भूल जावें। आपस के भेद-भाव को और कलह के भूत को दूर कर सभी गले मिल जावें और आपके सच्चे मत को ग्रहण कर के एक ही मंत्र से संसार में पवित्र जैन धर्म का डंका निनादित करें। संसार में शान्ति की लहर पैदा हो। सभी प्राणी धर्म के स्वरूप को जान कर आत्म शान्ति प्राप्त करें।

प्यारे जैन वीरो ! अब समय सचेत होने का है। यह युग वैज्ञानिक युग है। युक्तिवाद का युग है। आप को अपनी सामाजिक शैली को समुन्नत बनाना होगा। कुरीतियों को निर्मूल करना होगा। आपस की पार्टी बाज़ी व पक्षड़ को निकाल फेंकना होगा। तभी शुद्ध जैन धर्म का प्रचार हो सकेगा।

वर्तमान में सब से बड़ी आवश्यकता है कि जिन वाणी को संसार के प्रत्येक कोने में फैलाया जाए। हर एक देश के वासियों के लिये जैन धर्म के आदर्श सिद्धान्तों को ज्ञान के निमित्त उन्हें सरल बनाया जाय और विश्व की विख्यात भाषाओं में उन का अनुवाद किया जाय। वेदों तथा बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद यूरुप की प्रायः सभी भाषाओं में हो चुका है। किन्तु जैन धर्म के सैद्धान्तिक ग्रंथों का अनुवाद नहीं हुआ। कुछ कार्य्य स्वर्गीय जे. एल. जैनी व बैरिस्टर

चम्पतराय जी तथा बाबू अजितप्रशादजी एम. ए. भूतपूर्व जज लखनऊ ने किया है। अभी यह कार्य्य बहुत थोड़े रूप में है। हमें उचित है कि हम इस विषय में अपने अन्य मतवाले भाइयों से शिक्षा लें जो केवल भारत वर्ष में ही करोड़ों रुपयों की प्रतिवर्ष पुस्तकें वितरण करते हैं। जैन समाज का धन व्यर्थ व्यय और कुरीतियों में अधिक जाता है। यदि यह धन जैन शास्त्रों के भिन्न भिन्न भाषाओं में ट्रेक्ट प्रकाशित तथा प्रचार में लगाया जाय तो क्या ही उत्तम हो। इस समय देश में भी सरल भाषा में स्याद्वाद कर्मसिद्धान्त आदि जैन सिद्धान्तों को प्रदर्शित करने वाले नवीन ढंग से ट्रेक्ट पुस्तिकाओं को प्रकाशित कर अजैन विद्वानों में वितरण कराया जाय। जैन साहित्य सागर व्याकरण, न्याय, काव्य, सिद्धान्त आदि तरल तरंगों से भरपूर है। किन्तु मुझे दुःख होता है कि हम ने वर्तमान नवीन ढंग से कोई भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जिस में जैन सिद्धान्तों तथा सभी साधारण विषयों का जैनशास्त्र की अपेक्षा से वर्णन हो। ईसाइयों की 'बाइबल' है। आर्य्य समाजियों का "सत्यार्थ प्रकाश" है उसी प्रकार जैन सिद्धान्तों की एक पुस्तक विद्वानों की सम्मति से प्रकाशित होनी चाहिये। ऐसा होने से अजैन जनता में जैन धर्म के विषय में फैले हुए भ्रम दूर हो जायेंगे। मेरा समाज के विद्वानों से निवेदन है कि वे इस ओर अवश्य ध्यान दें।

किसी भी जाति के इतिहास पर उसके प्राचीन चिन्ह विशेष प्रकाश डालते हैं। उन्नत-जातियों के विद्वान् इसलिये प्राचीन चिन्हों की खोज में लगे रह कर अपनी जाति और संसार की महत्त्व-पूर्ण सेवा किया करते हैं। बौद्धों आदि के पुरातत्त्व-विभागों से जैन पुरातत्त्व विभाग किसी भी कदर कम नहीं है। Notes on Jain Art नामक पुस्तक में श्रीमान् आनन्द के कुमार स्वामी D.S.C. ने लिखा है "The Jain Paintings are not only very important for the student of Jain iconography and archaeology, and as illustrating customs, manners and costumes, but are of equal interest as being the oldest known Indian Paintings on paper" भावार्थ-जैन चित्र केवल जैन-शिल्प व उनके पहनाव, रीति-रिवाज के बतलाने के लिये ही उपयोगी नहीं है। किन्तु अबतक जितने कागज़ पर खिंचे हुए चित्र भारत में मिले हैं उन सब से पुराने हैं। भारत में सब से प्राचीन धर्म जैन धर्म है। जैनियों के अनेक ऐतिहासिक भग्नावशेष, शिलालेख, स्मारक, स्तूप आदि अमूल्य उपयोगी प्राचीनगौरव-चिन्ह अब तक अन्धकार के गर्त में पड़े हुए हैं। जैन जाति ने इस क्षेत्र में अब तक अधिक उन्नति नहीं की है।

साधारण समाज अभी इस गुरुतर कार्य्य की उपयोगिता नहीं समझती. और कुछ समझदार भाई समाज की कार्य्य-पद्धति वा अधोगति देखकर इस

कार्य्य में योग देने को उत्साहित नहीं होते। यही कारण है कि जैन जाति का ध्यान इस ओर नहीं गया है, किन्तु इस विषय की बड़ी आवश्यकता है। भारत वर्ष में बौद्धों की संख्या जैनियों के समान नहीं है और उनका साहित्य जैन साहित्य का दसवां अंश भी नहीं है। किन्तु सांची के स्तूपों, अलोरा की कन्दराओं तक्षशिला, गया आदि प्राचीन सम्मारकों के ही कारण आज देशी तथा विदेशी विद्वानों में बौद्ध धर्म की महत्ता तथा प्रतिष्ठा है। किन्तु जैनियों का भग्नावशेष साहित्य अब भी भारतीय साहित्य में ऊंचे पद पर है। जैन धर्म सार्वधर्म है इसके सिद्धान्त सत्य और वैज्ञानिक हैं। इसके श्री गिरनार, देवगढ़, मथुराजी आदि के अनेक प्राचीन स्तूप, स्मारक, शिलालेख, चित्र और प्राचीनतम प्रतिमाएँ उपलब्ध हैं। किन्तु इस धर्म की देश विदेश में क्यों इतनी प्रतिष्ठा नहीं है? मेरी सम्मति में इसका कारण यह है कि हमारी समाज ने इस विषय में कोई भी कार्य्य नहीं किया है। जैन समाज का करोड़ों रुपया प्रति वर्ष व्यर्थ व्यय और बहु व्यय के रूप में पानी के समान व्यय हो रहा है; किन्तु समाज की यह इच्छा नहीं होती कि खोज (Research) के लिये व्यय करें। इस पर यह ही याद आता है

"क्या कहें कुछ कहा जाता नहीं
चुप रहें पर चुप रहा जाता नहीं।"

जैन समाज को उचित है कि वह शीघ्र ही अच्छी रकम जैनपुरातत्त्व विभाग के लिये निकाले। और एक या दो संस्कृत ज्ञाता जैनग्रेजुएटों को ३ या ४ वर्ष तक अपने व्यय से पुरातत्त्व विभाग (आरकिलोजिकल डिपार्टमेंट) के अध्यक्ष के आधीन रख कर उन्हें दक्ष बनाया जाय जिससे वे जैन स्मारक खोजने में चतुर हो जाय। फिर वह सरकार की सलाह और जैन समाज के द्रव्य से बहुत लाभदायक खोज कर सकते हैं।

जैन समाज में धर्म प्रचार के समुचित साधन नहीं। या यों कहा जाय कि धर्म प्रचारकों का अभाव है तो कोई अधिक कहना नहीं है। कुछ सभाएँ एक या दो धर्म प्रचारकों को रखती हैं वे प्रधानतया सभा की आमदनी कराने के इरादे से रक्खे जाते हैं। जिस समाज में धर्म प्रचारक जैसे विद्वान् विचारशील व योग्य होंगे उसीके अनुसार उस धर्म का प्रचार होगा। जिन सज्जनों ने अन्य समाज के इतिहास को पढ़ा होगा उन्हें भली भांति मालूम होगा कि उन के सिद्धान्तों के प्रचार का कारण उनके आदर्श प्रचारक रहे हैं। अन्य समाजों में प्रचारकों को ट्रेनिंग देने की अनेक संस्थाएं हैं जिन में प्रचारकों को अनेकप्रकार की ट्रेनिंग दी जा रही है। जिससे उन के सिद्धान्तों का प्रचार अच्छा होता है।

जैन समाज में भी जैनशास्त्रीय ट्रेनिंग विद्यालय की बड़ीआवश्यकता थी। श्री देवगढ़ के अधिवेशन में इस विद्यालय को स्थापित करने के मुहूर्त्त का निर्णय हो चुका था। तथा समाज के उदार हृदय जिनवाणी भक्तों ने उदार-चित्त से योग्य धन प्रदानकिया है।

मुझे यह कहते हुऐ प्रसन्नता होती है कि जैनजनता को इस विद्यालय से बड़ा प्रेम है और इससे बड़ी बड़ी आशाएं हैं। जिस किसी महोदय से इस विद्यालय की सहायतार्थ अथवा चन्दा के लिये कहा गया। उन्हों ने बड़े प्रेम और उत्साह के साथ देना स्वीकार किया है। आप महानुभाव इसके उद्घाटन के लिये बहुत दूर से अनेक कष्टों को सहन कर ग्रीष्म् ऋतु में यहां पधारे हैं। आप का यह अदम्य-उत्साह और कार्य-तत्परता भविष्य में भी बनी रही तो इस कार्य्य में सफलता निश्चय है।

इस विद्यालय में जैन पण्डितों और विद्वानों को कार्य्य क्षेत्र में प्रवेश करने से पहिले व्यावहारिक-शिक्षा (Practical Training) दी जायगी। व्याख्यान देना, शास्त्रार्थ करना, गवेषणा पूर्वक जैन सिद्धान्तों के ट्रेक्ट लिखना, ऐतिहासिक अनुसंधान करना जैन भजनोपदेशकी आदि सिखाना इसका मुख्य ध्येय होगा। जैन समाज में इन सभी विषयों के ट्रेंड विद्वानों की बहुत आवश्यकता है। ऐसे ट्रेंड विद्वानों से जैन समाज का बड़ा कार्य्य होने की आशा है।

मुझे निश्चय है कि आप महानुभाव इस विद्यालय को आदर्श संस्था बनाने में अपना कर्तव्य समझेंगे। मुझे यह कहते हुए बड़ा हर्ष होता है कि आज श्रुतपञ्चमी के पवित्र दिन आप महानुभावों के समक्ष इस जैन उपदेशक विद्यालय के उद्घाटन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। मेरी श्री जिनेंद्र से यही प्रार्थना है कि यह जैन उपदेशक विद्यालय समाज की आदर्श संस्था बने। जैन समाज की इस संस्था के द्वारा जैनसमाज का कल्याण हो। यह होना तभी साध्य है यदि आप सर्व महानुभावों का इस संस्था के लिये इसी प्रकार उत्साह व प्रेम बना रहे।

जो २ उदार हृदय दानी महोदय इस विद्यालय के लिये दान देकर इस कल्पवृक्ष के अङ्कुरारोपण करने में सहायक हुये हैं मैं उनका अत्यन्त आभारी हूं। ऐसी गर्मी में दूर दूर से आप सज्जन अनेक कष्टों को सहन कर यहां पधारे हुये हैं अतः इसके लिये मैं तथा कार्यकारिणी समिति आप महानुभावों की आभारी है।

प्रिय सज्जनों! आप महानुभावों ने जो मुझे यह पद देकर सन्मानित किया है।

उसके लिये मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूं। इस उत्सव में पधारे हुए सज्जनों के उत्साह ने मेरे हृदय पर बड़ा प्रभाव डाला है। मुझे पूर्णाशा है कि इस संस्था के प्रति आपका यह धर्मप्रेम सदा बढ़ता ही रहेगा। मैं यहां के स्थानीय तथा बाहर से पधारे हुए धार्मिक-बन्धुओं का अत्यन्त-अनुग्रहीत हूं जो इस गर्मी में इतना कष्ट सहकर इस मंडप की शोभा को बढ़ा रहे हैं। यहां मैं उन सज्जनों का भी आभारी हूं जिन्होंने अपना अमूल्य समय इस उत्सव की आयोजना में लगाया है। अन्त में श्री जिनेन्द्रदेव से यही प्रार्थना है कि यह विद्यालय सफल और समुन्नत बने और उसके विद्यार्थी ऐसे बनें।

जग में रहकर धीर बनो,
धीर बनो बरवीर बनो।
बर वीर बनो अति वीर बनो,
अति वीर बनो महावीर बनो॥

॥ शुभमस्तु सर्व जगतः ॥